

ગુજરાત વિદ્યાપીઠ ગ્રંથાલય

[ગુજરાતી કોપીરાશિત વિભાગ]

અનુક્રમાંક ૧૭૪૨

વર્ષિક

પુસ્તકનું નામ ઈ. ૨૮૫૫ વીલિ

વિષય ડ- : ૪

ગુજરાત વિધાપીઠ ગ્રંથાલય
અમદાવાદ
ગુજરાતી કૌપીરાઈટ-સંગ્રહ
૧૭૪૨

૬-૨

श्री

छंद रत्नावलि.

कठण छंदोना अर्थ सहित.

लक्ष्मिनारायण देवती गौरीना आचार्य महाराज
श्री लक्ष्मीप्रसादजी महाराज श्री विश्वरीलालजी
महाराजनी आज्ञाधी.

छपावी प्रभिय करनार
मगनलाल कीकाभाइ देशी मित्रवाळा

सुरत.

मगनलाल कीकाभाइ पोताना देशी मित्र
एनजीन प्रिन्टींग प्रेसमां छपी.

आवृत्ती पहली

संवत् १९६३.

सने १९०६.



श्रीसहजानंदस्यामीश्वरुपाक्षधनत्रोवकनायपणजिताकारिणधमुडासि१८८८नाचेनमुदी

अक्षरातीत प्रगट पुरुषोत्तम श्रीसहजानंदस्यामी.

અનુક્રમણિકા.

વિષય	પાનું
૧ સત્સંગરૂપી કમલ વિશે	૧
૨ સત્સંગરૂપી કલ્પવૃક્ષ વિશે	૧
૩ સત્સંગરૂપી સુરજ વિશે	૨
૪ સત્સંગરૂપી ચંદ્ર વિશે	૩
૫ સત્સંગરૂપી સમુદ્ર વિશે	૩
૬ નાશવંત દેહ વિશે	૪
૭ અંતઃકાળે હરીનું નામ ન લેવાય તે વિશે	૮
૮ સંતને પીડા કરે તે વિશે	૮
૯ વન વિહાર વિષે	૯
૧૦ રાધીકાજી અને ભગવાનના વિજોગ વિશે	૨૨
૧૧ ઉપદેશ અંગ સિંહાવલોક	૩૧
૧૨ ભક્તિ અંગ સિંહાવલોક	૩૪
૧૩ રાધારમણ દેવની સ્તુતી	૪૦
૧૪ હરીમહીમા વિશે	૫૪
૧૫ સ્વટ વિદ્યાની કવિત	૬૩
૧૬ અષ્ટ વિદ્યાની કવિત	૬૫
૧૭ શમસ્યા પ્રશ્ન દોહા	૬૭
૧૮ શબ્દાલંકાર સર્વેયા	૬૮
૧૯ સિદ્ધેશ્વર મહાદેવજીનું ગીત	૭૩
૨૦ ધ્યાનાષ્ટક	૮૧

विषय	पानं
२१ हरिकृष्णाष्टक	८७
२२ रासाष्टक	९५
२३ दशअवतार रूपे स्तुती	१०३
२४ षट् दर्शन विशे	१११
२५ ज्ञानरूपी बाजी विशे	११८
२६ विश्वास विशे	१२०
२७ पूर्णानन्द स्वामिकृत ध्यान चिंतामणी	१२०
२८ टीका विशे	१३३
२९ छंद अर्थनाराच	१३३
३० थाल	१४२
३१ घनस्यामाष्टक	१६०
३२ माया पंचक	१६२
३३ उपदेश रत्नदिपक	१६४
३४ उपदेश चिंतामणी	१६९
३५ असंतको अंग	१७७
३६ फकीरको अंग	१९२
३७ गुरुदेवको अंग	१९२
३८ सुरमाको अंग	१९६
३९ साधुको अंग	१९८
४० उपदेश अंग	२००

अनुक्रमणिका.

३

विषय	पानुं
४१ असाधुको अंग.	२०७
४२ संतको अंग.	२०९
४३ बंदेको उपदेश अंग.	२१२
४४ मनको उपदेश अंग.	२१७
४५ मुकुंद वावनी.	२२२
४६ श्रीकृष्ण महिमा छक.	२३७
४७ कपटी भेष विशेष.	२३९
४८ हनुमानको स्तोत्र.	२४०
४९ नारायण कवच.	२४३
५० सत मुख.	२४८
५१ चालीस प्रकारना डाह्या.	२५४
५२ पद	२५७
५३ पंच भाषानुं पद	२६१
५४ श्लोको	२६२
५५ कळीजुगनो धर्म	२६७
५६ उपदेश विशेष	२७४
५७ असंतनुं अंग	२८४
५८ प्रगट प्रभुना महिमा वीशे	२९२
५९ रुषी पत्नीओना विवेक विशेष	२९८
६० उमा शीव संवाद ३०२	३०२

विषय	पानं
६१ अलीखां पठाणना. हेत विशे	३०४
६२ नरसिंह महेतानी द्रढता	३०५
६३ रावणना कपट वीशे	३०८
६४ होका वीशे	३०९
६५ अमरचंद क्रत कुंडलीया	३१०
६६ नानजी क्रत कुंडलीआ	३१५
६७ रुपसीभाइ क्रत विचार वीलास	३१७
६८ तुलसीदास क्रत सवैयां	३२३
६९ संत पारस चंदन वावना	३३३
७० याज्ञवल्क्य स्मृतिमांथी राजाने जाणवाना अंग	३४१
७१ दिनानाथ भट्ट क्रत भजना पटकम	३४६



श्री सहजानंद स्वामिने नमोनमः
श्री छंद रत्नावलि.

॥ सतसंगरूपी कमल विषे ॥

॥ सर्वैया ॥ ॥ उद्धव अंतर प्रेम तडागमें ॥ कश्च
 अंकुर विख्यात भयो हे ॥ जाल बह्यो अवतार निरं
 तर ॥ मुंदर मोक्ष सुगंध लयोहे ॥ वंद अलि सकंद
 पया मुनि दादर मंदने नाहि लयोहे ॥ ब्रह्ममुनि कहे
 या जगमें ॥ सतसंग सरोज विकसि रखोहे ॥ १ ॥
 ॥ अर्थ ॥ उद्धवनी अवतार एया जे राधानंद स्वामि
 तेवना अंतःकरणना प्रेमरूपी तलावयां अक्षरवाचना नि-
 वामी श्रीकृष्ण भगवानना स्वरूपनी अंकुर उगीने प्रख्यात
 थयो छे ॥ अने ते भगवानना अवताररूपी कमलनी
 अखंड मुंदरदांडी वची ॥ अनेतेमां मोक्षरूपी सुगंध छाड
 रखो ॥ तेथी ब्रह्मानंद स्वामि कहे छे के आ जगतयां
 सतसंगरूपी कमल प्रफुल्लित थइने रहुं छे ॥ अने मु-
 निना मंडलरूपी भमराए तेना सुगंधनी रस पीथो ॥
 पण अज्ञानीरूपी देडकाओये ते रस लीथो नहीं ॥ १ ॥

॥ सतसंगरूपी कल्पवृक्ष विषे ॥

॥ सर्वैया ॥ कोमल भूमि सो उद्धवके उर ॥ कश्च
 कपानिधि बीज द्रव्यो हे ॥ भक्ति रुग्यात विराग
 पियो जल ॥ धर्मके रक्षण पेड गह्यो हे ॥ प्रीत सु-

નીતિ મુજા મુક્તિ ફળ ॥ આગમ વેદમે પત્ર મહ્યો
 હે ॥ બ્રહ્મ મુનિ કહે યા જગમે ॥ મતમંગ સુરતમ જેર
 વહ્યો હે ॥ ૨ ॥ ॥ અર્થ-રામાનંદ સ્વામિના અંતઃકરણ
 રૂપી કોમલ ભૂમિમાં અનરધામના વાની દયાના
 સાગર શ્રી કૃષ્ણ ભગવાનના સ્વરૂપરૂપી વીજ
 મજવૃત રોપાયું ॥ તેણે ભક્તિ જ્ઞાન ઓ વૈરાગ્યરૂપી
 જલ પીયું ॥ તેથી ધર્મની રક્ષા કરનાર જ્ઞાન ઘડાયું
 ॥ ઓ પ્રેમ તથા મારી નીતીરૂપી ઢાલો થઈ ॥ અને
 મુક્તિરૂપી ફળ થયું ॥ અને શાસ્ત્ર તથા વેદરૂપી પાં-
 દડામાં તે ફળ વીંટાયેલું છે ॥ એ રીતે બ્રહ્માનંદ સ્વા-
 મિ કહે છે કે આ જગતમાં મતમંગરૂપી કલ્પવૃક્ષનું
 જેર વહ્યું છે ॥ ૨ ॥

॥ મતમંગ રૂપી સૂરજ વિષે ॥

॥ સંવેયા ॥ ॥ ઉઘવ ઊર મો પૂરવકી દિશ ॥ નૃરઝુંમે
 તમ દૂર નિકાસા ॥ દૂષ્ટ રહે મકુચાય કુમુદની ॥
 સજ્જન મેત મરોજ વિકાસા ॥ દયક્રિત લીન ભઈ ર-
 જનિ હરિ ॥ સૂકીત પ્રાત વિશ્યાત ઝાસા ॥ બ્રહ્મ
 મુનિ કહે યા જગમે ॥ મતમંગ મદોદિત સૂર પ્રકાસા
 ॥ ૩ ॥ ॥ અર્થ ॥ રામાનંદ સ્વામિના અંતઃકરણ રૂપી
 પૂર્વ દિશના જ્ઞાનના અજવાળાથી અજ્ઞાન રૂપી અંધારા
 ને વેગલું કાઢ્યું ॥ તેથી દૂષ્ટરૂપી કુમુદનીયો મંકોચા-
 ઈને રહી ॥ અને સજ્જન તથા સાધુરૂપી કમલ પ્ર-

फूलित थयां ॥ अने पाप रूपी रात्रि डगीने लीन
थईगई ॥ अने पुण्य रूपी प्रभातनो प्रकाश प्रख्यात
थयो ॥ ए रीते ब्रह्मानंद स्वाधि कहेछे के मतसंग-
रूपी मूरजनो प्रकाश सदा उदय थयो ॥ ३ ॥

॥ मतसंग रूपी चंद्र विषे ॥

॥ सवैया ॥ मुख पूर पीयूष भयूष दया ॥ सुबुद्धि स-
मता मूलता विलसी हे ॥ प्रेमी चकोर सो जोर रहे
द्रग ॥ ब्रंद मुनि नलिनि विकसिहे ॥ मोढ प्रताप प्रका-
सउते ॥ तम नाम भयो रुजनाव दिसीहे ॥ ब्रह्ममुनि
कहे या जगमें ॥ मतसंग मनुं निकलंक शशि हे ॥ ४ ॥
॥ अर्थ-भगवाननी दयारूपी चंद्रना कीरणोथी पूर्ण
मुखरूपी अमृत झरु ॥ तेथी सारी बुद्धि अने समता
रूपी वेळ सुशोभित थई छे ॥ अने प्रेमीजन रूपी च-
कोर ते श्रीकृष्ण चंद्र मामी द्रष्टि जोडीने रखा ॥
अने मुनिना मंडल रूपी कुमुदनीओ प्रफुलित थई छे
॥ अने ते भगवानना मोटा प्रतापरूपी प्रकाशथी अ-
ज्ञान रूपी अंधारुं नाश पाम्युं ॥ अने सर्व दिशाओ
मां ज्ञानरूपी अजवालुं थयुं ॥ ब्रह्मानंद स्वाधि कहे-
छे के आ जगत्मां जाणीये के मतसंग कलंक वार-
नो चंद्र छे ॥ ४ ॥

॥ मतसंग रूपी समुद्र विषे ॥

॥ सवैया ॥ ॥ नेम रू प्रेमकी पाल निरंतर ॥ सुंदर

નીર ભરે સુબુધી હે ॥ મક્ર કલોલ કરે મિલકેં મુની
 ॥ ત્યાગ ઉમંગ તરંગ વ્રધી હે ॥ ધીર તહાં સુખમેં વિ-
 લમે ॥ નિરજીવ નિકામ દિયે કુબુધી હે ॥ વ્રહ્મમુનિ
 કહે યા જગમેં ॥ સતસંગ સો અમૃતકો ઉદધી હે ॥ ૬ ॥
 ॥ અર્થ ॥ નિયમ અને પ્રેમની અઘંડ પાલ છે ॥ અને
 સુબુધિ રૂપી સુંદર જલ ભરેલું છે ॥ અને સંતરૂપી મ-
 ગર મલીને તેમાં કલ્લોલ કરેછે ॥ અને ત્યાગ તથા આ-
 નંદરૂપી મોજાં વધ્યાં છે ॥ ધીરજવાળા પુરુષો તેમાં
 સુખેથી હરે ફરેછે ॥ અને ધર્મરૂપી જીવ જેનામાં ન-
 હોય તેને વહાર કાઢી નાશવાની માતે તે સાગરનીછે
 ॥ વ્રહ્માનંદ સ્વામી કહેછેકે આ જગતમાં સતસંગ છે તે
 અમૃતના સમુદ્ર જેવો છે ॥ ૬ ॥

॥ નાશવંત દેહ વિપે ॥

॥ સવૈયા ॥ જ્યું જલમાંઈ લકીર પરિસો ॥ ટલીકે ટલીકે
 ટલીકે ટલીહે ॥ જ્યું મિસરી પયમાંઈ પરિસો મલીકે મ-
 લીકે મલીકે મલીહે ॥ દેવલ સીશ ચઢાઈ ધજા સો ॥
 હલીકે હલીકે હલીકે હલીહે ॥ વ્રહ્મમુનિ ત્યુંહિ દેહકી
 આયુ ॥ ચલીકે ચલીકે ચલીકે ચલીહે ॥ ૭ ॥ અર્થ ॥
 જેમ પાણીમાં લીટી પડી તેટલી ગઈ ॥ કેટલી ગઈ ॥
 કેટલી ગઈ ॥ કેટલી ગઈ છે ॥ અને જેમ દૂધમાં ટાંડ
 પડી તે મલીગઈ ॥ કે મલીગઈ ॥ કે મલીગઈ ॥ કે
 મલીગઈ છે ॥ અને દેવલના શિખર ઉપર ધજા ચઢાવી

॥ ते हाली ॥ के हाली ॥ के हाली ॥ के हाली छे ॥
 तेमज ब्रह्मानंद स्वामि कहेछे के शरीरनी आवरदा
 चालीगई ॥ के चालीगई ॥ के चालीगई ॥ के चाली
 गई छे ॥ १ ॥ नीचनके संग प्रीति करि सो ॥ मटीके
 मटीके मटीके मटीहे ॥ जूथकुं देखि त्रियानकि टोरि
 ॥ हटीके हटीके हटीके हटीहे ॥ मूरजदेखकें कुंद कली
 सो ॥ फटीके फटीके फटीके फटीहे ॥ ब्रह्ममुनि त्योंहि
 देहकी आयु ॥ घटीके घटीके घटीके घटीहे ॥ २ ॥
 ॥ अर्थ—नीच माणभोनी साथे प्रीति करी होय ते ॥ मटीगई
 ॥ मटीगई ॥ मटीगई ॥ के मटीगई छे ॥ युद्ध देखीने स्त्री-
 ओनी टोली हठीगई ॥ हठीगई ॥ हठीगई ॥ के
 हठीगई छे ॥ अने मूरजने देखीने डोलरनी कली
 फाटीके फाटीके फाटीके फाटी छे ॥ ब्रह्मानंद स्वामि
 कहे छे के तेमज देहनी आवरदा घटीके घटीके घटी
 के घटी छे ॥ २ ॥ सवैया ॥ भोमि निसानपें आयकें
 चोट ॥ लगीके लगीके लगीके लगीहे ॥ मारुतके अति
 जोरसं आग ॥ जगीके जगीके जगीके जगीहे ॥ चूलकी
 सीम चढाई तई सो ॥ धगीके धगीके धगीके धगीहे ॥
 ब्रह्ममुनि कहे तेसंहि देह भगीके भगीके भगीके भगीहे
 ॥ ३ ॥ अर्थ ॥ जेणे पृथ्वीनुं निशान कर्युं होय ॥
 मतलब के पृथ्वीनेज निशान जाणीने घा करे ॥ तो
 तेनी चोट लागी ॥ के लागी ॥ के लागी ॥ के लागी

छे ॥ मतलब के पृथ्वी उपर ताकीने घा करे ॥ ते
 खाली जायज नही ॥ गमे ते ठेकाणे पृथ्वी उपर बागे
 ॥ अने घणा पवनना जेअथी आग लागी ॥ के लागी ॥
 के लागी ॥ के लागी छे ॥ अने चूला उपर तवी च-
 दावी होय ते तपी ॥ के तपी ॥ के तपी ॥ के तपी
 छे ॥ तेमज ब्रह्मानंद स्वामिकहे छे के काया भागी ॥
 के भागी ॥ के भागी के भागी छे ॥ ३ ॥ ॥ संवैया ॥
 ॥ बद्धि रु दारू संजोग भडाको ॥ भयो के भयो के
 भयो के भयो हे ॥ ज्यादेके लार सवार चढ्यो सो ॥
 लह्यो के लह्यो के लह्यो के लह्यो हे ॥ चोरनके संग साहकुं
 चोर ॥ कह्योके कह्योके कह्योके कह्योहे ॥ ब्रह्ममुनि कहे गुं
 तन आयु ॥ गयो के गयो के गयो के गयो हे ॥ ४ ॥
 ॥ अर्थ—दारूना अने अग्निना संजोगथी भडाको थयो
 ॥ के थयो ॥ के थयो ॥ के थयो छे ॥ पगे चालनारनी
 पाछल तेने पकडवा सारु अस्वार चढ्यो होय ॥ तेणे
 तेने पकडी लीथो ॥ के लीथो ॥ ॥ के लीथो ॥ के
 लीथो छे ॥ चोरनी सोवते साहुकारने चोर कह्यो ॥
 के कह्यो ॥ के कह्यो ॥ के कह्यो छे ॥ तेमज ब्रह्मानंद
 स्वामिकहे छे के शरिरनुं आयुप्य गयुं ॥ के गयुं ॥ के गयुं
 के गयुं छे ॥ ४ ॥ संवैया ॥ काष्ठ चिनामहि बैठि मति
 सो ॥ जरीके जरीके जरीके जरीहे ॥ मित्रके अग्रखडि
 बकरी सो ॥ मरीके मरीके मरीके मरीहे ॥ ज्युं धरि या-

रके पास कटोरी भरीके भरीके भरीके भरीहे ब्रह्ममुनि
 कहे तेमेहि देह ॥ परीके परीके परीके परीहे ॥ ५ ॥
 ॥ अर्थ ॥ लाकडानी चितामां सति बेठी ते बली ॥
 के बली ॥ के बली ॥ के बली छे ॥ अने जेम मिहनी
 आगल बकरी उभी होय ॥ ते मुई ॥ के मुई ॥ के मुई
 ॥ के मुई छे ॥ अने जेम घडीआलनी पामे पाणीनी
 कुंडीमां कटोरी मूकी होय ॥ ते भराई ॥ के भराई ॥
 के भराई ॥ के भराई छे ॥ तेमजब्रह्मानंद स्वामि कहे छे
 के काया पडीके ॥ के पडी ॥ के पडी ॥ के पडी छे ॥ ५ ॥
 ॥ सवैया ॥ ज्युं अरी सैनमें उखको खेत ॥ लुख्यो के
 लुख्यो के लुख्यो के लुख्योहे ॥ ज्युं कपटि भिल हेत
 कियो सो ॥ तुख्यो के तुख्यो के तुख्यो के तुख्योहे ॥ जे
 मेहि तोलत धानको ढेर ॥ खुख्यो के खुख्यो के खुख्यो
 के खुख्योहे ॥ ब्रह्ममुनि कहे ल्युं यह देह ॥ लुख्यो के
 लुख्यो के लुख्यो के लुख्योहे ॥ ६ ॥ अर्थ ॥ जेम शत्रुनी
 फोजमां शेलडीनुं खेत आब्युं ॥ ते लुट्युं ॥ के लुट्युं ॥
 के लुट्युं ॥ के लुट्युं छे ॥ अने जेम वे कपटिये मलीने
 हेत कय्युं होय ते तुट्युं ॥ के तुट्युं ॥ के तुट्युं ॥ के
 तुट्युं छे ॥ अने जेम अनाजनो दगलो तोलतां तोलतां
 खयो ॥ के खुख्यो ॥ के खुख्यो ॥ के खुख्यो छे ॥ तेमज
 ब्रह्मानंद स्वामि कहेछे के आ देह लुट्यो ॥ के लुख्यो
 ॥ के लुट्यो ॥ के लुट्यो छे ॥ ६ ॥

॥ अंतकाले हरिनुं नाम न लई शकाय ते विपे ॥
 ॥ सवैया ॥ श्रीघनश्यामके अंधिसरोजमें ॥ देहछते जे-
 हि नेह करयोहे ॥ लोकनकी तजिलाज निरंतर ॥ अं-
 तरमें द्रवपक्ष धरयोहे ॥ अंतकि बेरजो नाम लियो न-
 हि ॥ तो पुनि सो निश्चे उगरयोहे ॥ ब्रह्ममुनि घनची-
 ठिगई घर पीछे लुटाय कहा विगरयो हे ॥ ७ ॥ अर्थ-
 प्रगट प्रभु श्री घनश्यामजीना चरण कमलमां जेणे
 देह छतां स्नेह कर्षां छे ॥ अने निरंतर लोकनी लाज
 तजीने भगवाननो अचल पक्ष अंतःकरणमां धार्योछे
 ॥ पछी तेणे कदापि अंतकालनी वखते भगवाननुं नाम
 लई शकायुं नहीं ॥ तो पण ते जन्म मरणथी जरूर
 उगर्षां छे ॥ जेमके ब्रह्मानंद स्वामि कहेछे के परदेश-
 मांथी कर्माईने हुंडी घेर पहांचाडी ॥ अने पाछळथी
 ते लुटायो ॥ तेमां तेनुं शुं वगडयुं छे ॥ ७ ॥

॥ संतने पीडा करे ते विपे ॥

॥ सवैया ॥ श्रीघनश्याम कहे मुन नारद ॥ अंतर सुख
 मेरो मत एहे ॥ भोसंग प्यार उदार सदा मन ॥ नाम
 उचार अहोनिश लेहे ॥ संत सचे जगमाई फिरे ॥ ति-
 नकुं दुख आय निरंतर देहे ॥ ब्रह्ममुनि भगवंत कह्यो
 मोई ॥ मोय भजे पुनि नर्कमें जेहे ॥ ८ ॥ ॥ अर्थ
 श्री कृष्ण भगवाने कह्युं के हे नारदजी सांभलो ॥
 शुद्ध अंतःकरणथी मारो मत ए छे जे ॥ कोई माणस

मारी साथे प्रीति राखे ॥ तथा मन उदार राखे ॥
अने दिवस ने रात मारा नामनो उच्चार करे ॥ पण
जो ते जगतमां साचा संत फरता होय ॥ तेने जईने
निरंतरदुःखदे तो ॥ ब्रह्मानंद स्वामी कहेछे के भगवाने
कहुं जे ॥ ते मने भजतो हशे तोपण नरकमां जशे ॥८॥
इति उपदेशी सवैया संपूर्ण ॥

॥ अथ वनविहार विषे मिथावलोकन ॥

॥ सवैया ॥ करतें हरिकंज फिरावतहे ॥ वन जावतहे
वछले घरतें ॥ घरतें मन घाट सुवाट मुनि ॥ छवि थाट
निराट अनुसरतें ॥ सरतें संग ग्वालन बाल मही ॥
व्रज पालन व्याल अमु हरतें ॥ हरतें धरतें मुख मोद
धुनी ॥ कहे ब्रह्ममुनि विनति करतें ॥ १ ॥ ॥ अर्थ
श्रीकृष्ण भगवान कबल हाथमां लईने फेरवेछे ॥ अने
वाछडां घेरथी साथे लईने वीचरेछे ॥ ते केवाछे ॥ तो
मुनीजनो जे छवीतो घाट घडेछे ॥ अर्थात् मनमां चि-
तवन करेछे ॥ एवी (निराट) अदभुत छविना ठाट
ने अनुसरता व्रंदावननी वाटमां वीचरेछे ॥ बली गो-
वालोना बालक साथे सरतां एटले चालतां व्रजना
पालनार भगवान सरपरूपे थईने आवेला अघामुरना
प्राण लेता विचर्या ॥ त्यारे ब्रह्मानंद स्वामि कहेछे के
आकाशमां शिवजी आदिक अने पृथ्वी उपर गोप
मुनी आदिकना मुख आनंदनी ध्वनीथी विनति क-

रवा लाग्या ॥ १ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ गहरी तरु शी-
 तल छाई घटा ॥ जमुना तट नीर थटा लहरी ॥ लहरी नंद-
 लाल मु ख्याल करे ॥ पट पीत पुनीत लिये पहरी ॥ पहरी
 पट कान मु पान करे ॥ द्रग देख विशेष अंध दहरी
 ॥ दहरी बहरी कहे ब्रह्ममुनि ॥ तजि अंव कदंबनकुं
 गहरी ॥ २ ॥ ॥ अर्थ-त्यां झाडजुंडनी शीतल अने घा-
 टी छाया छवराई छे ॥ अने जमुनांजीने कांठे पाणी
 नी लहेरोनो ठाठछे ॥ त्यां लेरी नंदलाल सारा खेल
 करेछे ॥ तेमणे पवित्र पीलां वस्त्र पहरी लीधांछे ॥
 ते लुगडां पहरीने श्रीकृष्ण भगवान जमनां जलनुं पान
 करेछे ॥ ते नजरे जोतांज घणा पापने वाली नांखेछे
 ॥ ब्रह्मानंद स्वामि कहेछेके पछी भगवान ते जमनांजीना
 (द्रग) धराथी बहन करीने एटले चालीने आंवानां
 झाड तजीने कदंबना झाडनुं ग्रहण कर्युं ॥ २ ॥ ॥
 सवैया ॥ ॥ अलके मुखपें लपटाय रहे ॥ अहिवाल
 मनुं सशीपें ललके ॥ ललके उर मोतिन माल हीये ॥
 शुभ केसर भाल किये तिलके ॥ तिलके शुभ फूल
 छवि नककी ॥ शुककी नक देखि परी हलके ॥ हलके
 ब्रजनार निहारनकुं ॥ कहे ब्रह्ममुनि घुमती अलके ॥ ३ ॥
 ॥ अर्थ-वालनी लटो भगवानना मुख उपर लपटाई
 रही छे ते जाणेके चंद्र उपर नागनां वच्चां लटके छे
 ॥ अने छाती उपर मोतीनी माला लटके छे ॥ अने

કપાલમાં સુંદર કેસરનું તિલક કર્યું છે ॥ અને નાકની
 છવિ સુંદર તલના ફુલ જેવી છે ॥ તે જોઈને પોપટની
 નામિકા હલકી પડી તે ભગવાનને નિરખવા સારુ
 વ્રજની સ્ત્રીઓ દોડી ॥ અને બ્રહ્માનંદ
 સ્વામિ કહે છે કે તેના ચોટલા ધુમતા ઇટલે લટકતા
 હતા ॥ ૩ ॥ ॥ સવૈયા ॥ ॥ રસિયા રંગ રાસ વિલાસ
 કરે ॥ કટી જોર પતિાંવરમે કમિયા ॥ કમિયા ભર
 નેન ચલાવત હે ॥ રંગ રીક્ષત મિજ રસબ્ધિયા
 ॥ વમિયા મુરતેં ગ્રહ ત્યાગ ચલી ॥ વ્રજનાર ઉજાર
 લચી શશિયા ॥ શશિયાદિક આનન કાન ધરે ॥ કહે
 બ્રહ્મ મનેહ ગલે રસિયા ॥ ૪ ॥ ॥ અર્થ-રસિક ભગ-
 વાને આનંદ રંગથી રામનો પ્વેલ કર્યો ॥ અને કેડે
 જોરથી પતિાંવર વાંધી લીધું ॥ અને ચંદ્રીને જોર ભર
 દૃષ્ટિ ચલાવે છે ॥ અને રંગમાં રીઝીને મીંજાઈને રસ
 વસ થયા છે ॥ તેની વાંસલીના સ્વરથી અને ચંદ્રમાને
 જોઈને વ્રજની સ્ત્રીઓ ઘર તજીને વનમાં ગઈ ॥ અને
 ચંદ્ર આદિકની શોભા શ્રી ક્રશ્ન ભગવાને પોતાના મુ-
 खમાં ધારણ કરી છે ॥ તેથી બ્રહ્માનંદ સ્વામિ કહે
 છે કે તે રસિયાના સ્નેહથી ગોપિયો ગલી ગઈ ॥ અર્થાત્
 લીન થઈ ગઈ ॥ ૪ ॥ ॥ સવૈયા ॥ ॥ વનમેં હરિ વેન
 વજાવત હે ॥ મુની ટેર સવ રહી સો તનમેં ॥ તનમેં
 મોય ચાહ અથાહ જગી ॥ રટ એક લગી ઉમંગી મનમેં

मनमें नवनीत लीये निकरी ॥ तुछ लाज करी न ड-
री जनमें ॥ जनमे ब्रह्म ब्रह्ममुनि उरमें ॥ तुरमें जुं च-
ली हरी जो वनमें ॥ ५ ॥ ॥ अर्थ-सखी सखीनी आ-
गल कहे छे के श्री क्रश्न भगवान वनमां वांसली
वगाडे छे ॥ ते जाणे के अपने बोलावता होय एवो
स्वर सांभलीने सर्वे गोपिकाओ (श्रोतनमें) सांभलवा
रही ॥ पण मारा शरीरमां तो अपार चाहना जागी
॥ अने ते परमेश्वरनी एकज रटना लागी ॥ अने मन-
मां आनंद पायी ॥ पछी हुं (नवनीत) सांखण लइने
वेचवाने वाने नीकली ॥ अने मनमांथी लज्जाने तुछ
करी ॥ अने माणसमां कोइथी डरी नहीं ॥ ब्रह्मानंद
स्वामि कहे छे के मनमां विरह (जाग्यो) उत्पन्न थयो
॥ तेथी (त्वरामां) उतावलमां ज्यां जे वनमां भगवान
हता त्यां चाली ॥ ५ ॥ ॥ सवैया ॥ कनिया छवि रू-
प अनुप बने ॥ शिर केश सुवेश नव घनीया ॥ घ-
निया अती वात कहात नहि ॥ नवरंग उमंग कसे
तनीया ॥ तनया रवि तीर अहीरनमें ॥ बलवीर लखे
मे गइ पनियां ॥ पनियां तजि ब्रंद मुनंद फिरे ॥
कहे ब्रह्ममुनि रस ले कनीयां ॥ ६ ॥ ॥ अर्थ-श्री
क्रश्न भगवाननी छविने कोइनी उपमा आपी शकाय नहीं
एवी बनी ॥ अने माये वाल मुशोभित नवीन वरसाद
नां रंग जेवा छे ॥ ए विषे अतिशे घणी वात कही शकाती

नथी ॥ तेमणे उमंगथी नवीन रंगनो पायजामो बांधी
लीथो छे ॥ अने मूरजनी पूत्री जमनांजीने कांटे गोवा
लीआओमां बलदेवजीना भाईने हुं पाणी भरवा गई
हती त्यां दीठा ॥ जेने वास्ते महा मुनियोनां मंडल
जोडा तजीने अडवाणे पगे फरेछे ॥ तोपण ब्रह्मानंद
स्वामि कहेछे के ते रसने कणिका मात्र ले छे ॥ ६ ॥
॥ सवैया ॥ हरिकी इग भाल रमाल छवि ॥ उर ढाल
मुचाल बनि करिकी ॥ करिकी पुनि वात नजात कही ॥
कसनी मनरंज पीतांबरिकी ॥ बरिकी बरि नारी उधारी
वकी ॥ अतिशे अघनी भगनी अरिकी ॥ अरिकी महिमा
कहे ब्रह्ममुनि ॥ मोरली धुनी तान मनोहरकी ॥ ७ ॥
॥ अर्थ ॥ भगवाननां नेत्र अने कपालनी छवि रमाल
छे ॥ छाती ढाल जेवी अने चाल हाथीना जेवी बनी
छे ॥ पीतांबरनी मनोरंजन बांधणी एवी छे के ते वात
कांड करी जाती नथी ॥ मोटायां मोटी स्त्री पृतनाने
उधारी ॥ ते अतिशय पापीणी अने शत्रुनी बेन हती
॥ ब्रह्मानंद स्वामि कहेछे के ते भगवाननी मोरलीनी
ध्वनिना मनोहर ताननी मोटाई एटले महिमा हे अली
हुं शुं कहुं ॥ ७ ॥ सवैया ॥ उरमें वन माल विशाल
लसे ॥ विलसे रमनी धुनि नेपुरमें ॥ पुरमें त्रय व्याप
रही मोरली ॥ वनवाजतहे मधुरे सुरमें ॥ सुरमें नरमें
नहि तुल छवि ॥ खुसि शेष महेश अंग्रि धुरमें ॥ धुरमें

પદ પાય રીઝાય હરિ ॥ ધરિ બ્રહ્મમુનિ મુર્તિ ઉરમેં ॥૮॥
 ॥ અર્થ ॥ તે ભગવાનની છાતીમાં મોટી વનમાલા શોભે
 છે ॥ અને પગના ઝાંઝરમાં પણ સુંદર ધ્વનિ શોભે છે
 ॥ અને એની મોરલીની ધુની ત્રણ પુરમાં એટલે ત્રિલો
 કમાં વ્યાપી રહી છે ॥ તે વનમાં મધુરા સ્વરમાં ગાગે
 છે ॥ દેવતાઓમાં કે માણસોમાં તેમની વરાવર કોઈની
 છાતિ નથી ॥ અને શેષ નાગ તથા મહાદેવજી તે ભગવા
 નના ચરણની રજમાં આનંદ પામે છે બ્રહ્માનંદ સ્વામિ
 કહેછે કે ગોપી કહેછે તે ચરણની રજ હું પામી ॥ અને
 મેં ભગવાનને રીઝવ્યા ॥ અને તેની મૂર્તિ અંતઃકરણમાં
 રાખી ॥ ૮ ॥ ॥ સવૈયા ॥ ॥ રજકીપતી દુષ્ટ
 હન્યો હથમેં ॥ હથમેં કુવરિ ત્રિયકું સજકી ॥
 સજકી રચના રંગમંડપમેં ॥ લાલિ કેસ ઘટા સુ છટા
 તનકી ॥ તનકી મહિમા નહિ જાત કહી ॥ બુદ્ધિ થાકત
 શેષ શંભુ અજકી ॥ અજકી છાતિ સૂવ વની બ્રહ્મા-
 નંદ તાહિકી ચાહ અંધિ રજકી ॥ ૯ ॥ ॥ અર્થ-તે ભ-
 ગવાને હાથે કરીને ધોવણના પાપી ધર્મને માસ્યો
 અને એજ હાથે કરીને કુવરજા સ્ત્રીને સાજી કરી ॥ અ-
 ને રંગ મંડપમાં કેસે રચના સજી હતી ॥ ત્યાં ભગવાને
 પોતાની છાતિની ઘટા દેખાડી ॥ તે ભગવાનની મૂર્તિનો
 મહિમા કહ્યો જતો નથી ॥ તે કહેતાં શેષનાગની શિવની
 અને બ્રહ્માની બુદ્ધિ થાકી જાય ॥ તે ભગવાનની આ-

जनी छवि खूब बनी छे ॥ अने ब्रह्ममुनि कहे छे के
 तेमना चरणनी रजनी चाहना मने थइ छे ॥ १ ॥
 ॥ सवैया ॥ ॥ चलरी सखि देखनकुं कनिया ॥ हुलभाय
 हिया पियेकुं मलरी ॥ मलरी अब मोय मुनाय कहो
 ॥ सब क्युं न कहो कहेगी कलरी ॥ कलरी कहि बात
 रिझात चितं ॥ हरि देखि छवि नजरि पलरी ॥ पल-
 री ॥ पलरी लखि के तव ब्रह्ममुनि ॥ मूर्ति भधुरि
 अति चंचलरी ॥ ॥ १० ॥ ॥ अर्थ-हे मखी श्री क्रश्न
 भगवानने नीरखवाने चाल ॥ ते प्रीतिमने मलवाधी
 हेयुं हुल्लास पामशे ॥ हे सखि मने मलीने हमणां बधी
 बात संभलावीने तुं कहे ॥ ते बधी बात केम नथी
 कहेती अने काल कहीश एम केम कहे छे ॥ कालनी
 बात कहीने मनने रीझवे छे ॥ ते भगवाननी छवि
 नेत्रना पलथी तें दीठी छे ॥ सारे ब्रह्ममुनि कहे छे
 के ते जोइने तुं भिजाइ हती ॥ अने ए चंचल भग-
 वाननी मूर्ति तें अंतःकरणमां धारी हती ॥ १० ॥
 सवैया ॥ ॥ बनतें व्रज आवत सास पिया ॥ लखि
 गोपत्रिया हुलसैं मनतें ॥ मनतें धन भाग अथाग म-
 नोहर सुंदर स्वाम छवि घनतें ॥ घनतें पुनि हस्त
 कठोर करे अग्र आदि मरे बिखरे तनतें ॥ तनतें कर
 लेप टरी कुबरी ॥ लखि ब्रह्ममुनिन कहि बनतें ॥ ११ ॥
 ॥ अर्थ-श्री क्रश्न स्वामि बनमांथी व्रजमां आवे छे ॥

तेमने नीरखीने गोवालनी स्त्रियो मनथी आनंद पामे
 छे ॥ अने पोतानुं अपार धनभाग्य माने छे ॥ अने
 ते सुंदर स्यामनी मनोहर छवि वरसादना रंग करतां
 पण (वर) उत्तम छे ॥ अने ते भगवाने लु-
 हारना घण करतां पण पोताना हाथ कठोर करी
 ने अघासुर आदिकना शरीर वीखी नाखीने मारी
 नाख्या ॥ ते भगवाने शरीरे कुवजाए चंदननो लेप
 कर्यो तेथी ते कुवडी मटी गई ॥ ब्रह्मानंद स्वामि
 कहेछेके ते लीला जेणे दीठी ते जाणे ॥ पण कथा-
 थी वनी शक्ती नथी ॥ ११ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ नख-
 में रंग लालमनी सु कनी ॥ अंगुरि सु दनी मुनिके
 लखमें ॥ लखमें पुनि कौक लखे जिनके ॥ पदकंज
 छवि द्रगके पखमें ॥ पखमें हरीकी सोई सा सही ॥
 विन पक्ष प्रतक्ष बुद्धि रखमें ॥ रखमें घनस्याम छटा
 उरमें ॥ कहे ब्रह्म विजोग अवे नखनें ॥ १२ ॥ ॥
 अर्थ भगवानना नखमां राती मणीनी कणीनी शोभा
 छे ॥ अने तेमनी आंगलीओ मुनिजनना (लक्षमां)
 ध्यानमां वनी रहीछे ॥ जेना चरणारविंदनी छवी ने-
 त्रनी पापणोमां लाखो मुनीयोमांथी कोईकज देखे ॥
 ते भगवानना पक्षमां एज नक्की साचो कहेवाय के जे
 बीजानो पक्ष न राखतां प्रत्यक्षमांज बुद्धि राखे ॥
 एम जाणीने घनश्यामनी छवी में अंतरमां राखी ॥

माटे हवे ब्रह्मानंद स्वामी कहेछेके तेमनो विजोग स्वामी
 शकातो नथी ॥ १२ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ पदमें उर्थ रेख
 रहि बिलसि ॥ निकसि मनु गंग गिरि हृदमें ॥ हृदमें
 लखिचित्त धरे उरमें ॥ मुनिब्रंद स्वछंद एहि मदमें
 ॥ मदमें अब देह सनेह तेहि विन ॥ व्यास लख्यो एहि
 कागदमें ॥ गदमें पुनि वेद करि विनति ॥ रति ब्रह्म-
 मुनि वेहि संपदमें ॥ १३ ॥ ॥ अर्थ-भगवानना चर-
 णारविंदमां उद्धरेखा शोभी रहीछे ॥ ते जाणे के पर्वत
 नी हृदमांथी गंगाजी नीकल्यां ॥ ते रेखानी हृदमां
 सोल चिन्ह जोईने मुनि मंडले अंतःकरणमां धर्या ॥
 अने तेना मदथी तेओ स्वछंद रहेछे ॥ ते शरीरमां
 स्नेहविना (मुदमां) आनंदमां रहेछे ॥ एम व्यास
 ऋषिये कागलमां लख्युं छे ॥ वली वेदे गद्यमां ते
 भगवाननी स्तुती करी ॥ अने ब्रह्मानंद स्वामि कहे
 छे के भगवान उपर प्रीति एज संपदा एटले समृद्धिमां
 समृद्धि मानी ॥ १३ ॥ ॥ सवैया ॥ कररी चलनी
 कटिकी कसनी ॥ लसनी मुगना फलकी लररी ॥
 लररी अब आय समीप लगे रहे ॥ आज निशि कुन-
 के घररी ॥ घररी जबवेन निराट कहे ॥ गहिकें पद
 बाट महि पररी ॥ पररी सबतें गुनपार हरि ॥ कहे
 ब्रह्ममुनि सु धनी कररी ॥ १४ ॥ ॥ अर्थ-जे भगवा-
 नना हाथनी चपलता अने केडनी बांधणी अने मो-

तीनी मेरनी शोभा ॥ ते ललीने हव आवीने मारा
 नेत्रनी आगल लागी रहीछे ॥ ते भगवान आजनी
 रात्रिये कोने घेर रखा हशे ॥ अने ज्यारे घरमां वांस्-
 लीनो अदभुत नाद सांभल्यो त्यारे ते स्वरनुं ग्रहण
 करीने ते तरफ हुं पगवाटे पडी ॥ ते भगवान त्रण
 गुणथी परछे अने सर्वथी पारछे माटे ब्रह्ममुनि कहेछे
 के तेनेज तुं (धनि) स्वाभि कर ॥ १४ ॥ ॥ सर्वथा ॥
 गहके वन मोर टकोर करे ॥ घनस्यामके कुंजगम
 रहके ॥ रहके कलु पाय विचार लता ॥ फल फूलन
 जल रही सहके ॥ सहके छन येनु सुवेन मुने ॥ एहि
 जानत रुख वखा सहके ॥ सहके गड ग्वालन वाल लीये ॥
 के ब्रह्ममुनि मग ले सहके ॥ १५ ॥ ॥ अर्थ-ब्रंदा-
 वनमां भगवाननी कुंज गलीमां रहीने मोर दहुका
 करी गाजी रखा छे ॥ त्यां भगवान (रह) एकांते
 रहीने कांड विचार पाम्या ॥ अने त्यां बेला फल फूल
 झुडी रखा छे ॥ अने सहकेछे ॥ अने प्रभातना क्षणमां
 गायोये सारी वांस्ली सांभली अने त्यां वननां (रुख)
 झाडवां वृष्टि सहन करी रखांछे मतलब के वरसाद
 थायछे ॥ त्यारे साथेनी गायो अने गोवालोना वाल-
 कोने लईने ब्रह्मानंद स्वाभि कहेछे के प्रभु रस्तो पक-
 डीन चालता थया ॥ १५ ॥ ॥ सर्वथा ॥ ॥ चलनी

* सुगंधी आवे छे.

अति चंचल रि हरिकी ॥ मनरंजन नेन उकी मलनी
 ॥ मलनी धिन केश करी मगरी ॥ कहि जात न पेच
 रुकी कलनी ॥ कलनी कहि भाति हन्यो गजकुं ॥
 पद चातुरता फुरता बलनी ॥ बलनी तव देखीत कंस
 भई ॥ कहे ब्रह्ममुनि छनियां चलनी ॥ १६ ॥ ॥ अर्थ—
 हे मखी भगवाननी चाल अति चंचल छे ॥ अने नेत्र
 नुं मलकुं मनोरंजन छे ॥ अने मेळ वगरना माथाना
 केशवडे करीने शिरपेचनी कला मचली कही शकाती
 नथी अने कीया प्रकारनी कलाये करीने ते भगवाने कंस
 ना हाथीने मार्यो हशे ॥ अने एनां पगलां भरवानी
 चातुरता अने बलनी स्फुरता छे ॥ ते दीठी तयारे ब्रह्म-
 मुनी कहेछे के कंसनी छाती निर्वल थईने चलायमान
 थई ॥ १६ ॥ मवैया ॥ ॥ पगीयां मनमोहनकी लखरी
 ॥ शिर स्वाम धरी सु जरी लगीयां ॥ लगीयां उरमें
 प्रीय पानरुंत ॥ रसवंत अतंत कति रगियां ॥ रगियां
 तेहि ओर सजोर भई ॥ दिश नंदकीशोर रती जगि-
 यां ॥ जगियां ब्रजवाभि हुलाभि भये ॥ कहे ब्रह्ममुनि
 रसधा पगियां ॥ १७ ॥ ॥ अर्थ—हे सखि मनमोहन
 भगवाननी पाघ जो ते केशभगवाने मस्तक उपर
 धरी छे ॥ अने तेभां जरियान लागेलुं छे ॥ ते मारा
 अंतःकरणमां प्राणथी बहाली लागी ॥ ते रसीली अ-
 संत कारीगरीथी रंगेली छे ॥ तेनी तरफ मारा श-

રીરની રગો જોરથી સેંચાઈ ॥ અને તે નંદજીના પુ-
 ત્ર તરફ પ્રીતિ જાગી ॥ અને વ્રજના વાસી લોકો
 જાગૃત થઈને આનંદ પામ્યા ॥ બ્રહ્માનંદ સ્વામિ કહે
 છે કે એવી તે પાગ રસમાં ભીંજાઈલી છે ॥ ૧૭ ॥
 ॥ સવૈયા ॥ ॥ ગલિયાં શુભ કુંજનની ગહરી ॥ લહરી
 લલિ નીર ધરા લલિયાં ॥ લલિયાં વ્રજુમાન સુજાન
 પીયા ॥ તિન કારન જોર ઘટા મલિયા ॥ મ-
 લિયાં મધુ ચંપક માલતિયાં ॥ પિય પ્યારીકું દેખ
 સુલી કલિયાં ॥ કલિયાં મુખ વાત કરે મધુરી ॥
 કહે બ્રહ્મ લગિ મનકું ગલિયાં ॥ ૧૮ ॥ ॥ અર્થ-કુંજ-
 ની ગલીઓ મારી ઘાટી છે ॥ તે જમનાજીના પા-
 ણીની લહેરોને જોઈને પૃથ્વી તરફ લલી છે ॥ ત્યાં
 વ્રજ ભાનુની લાડીલી રાધીકાજી તથા તેમના ચતુર-
 પતિ શ્રી કૃષ્ણ છે ॥ તે કારણથી જોરથી વરસાદની ઘટા
 મલી ॥ વલી તે પિયાને ને પ્યારીને દેખીને મલ્લિકા મધુ
 ચંપો અને માલતિની કલીઓ ઉઘડી ॥ અને તે વન્ને
 જણાં કલરવ ઇટલે હંસના વચ્ચાંના જેવા મધુર સ્વર-
 થી મુખે વાત કહે છે ॥ તે બ્રહ્માનંદ સ્વામિ કહે છે
 કે મનને ગલી લાગી ॥ ૧૮ ॥ ॥ સવૈયા ॥ ॥ શુકિયાં
 શિર પાગ કસુંબલકી ॥ વ્રજનાર નિહાર વ્રતી રૂકિ-
 યાં ॥ રૂકિયાં મનું લેખક ચીત્ર લખે ॥ કિધું રંભ-
 કે થંભ ઘટા મુકિયાં ॥ મુકિયાં દ્રગ પાન સુજાન

मुखं ॥ लखि साम छवि पलमें लुकियां ॥ लुकियां
तजि लाज समाज लीये ॥ कहे ब्रह्म पिया पदमें झु-
कियां ॥ १९ ॥ ॥ अर्थ भगवानने माथे कसुंबल रंग-
नी पाग झुकी रही छे ते जोईने व्रजनी स्त्रियोये तमां
पोताना मननी वृत्तिरोकी ॥ ते जाणे के रोकडी एटले
प्रत्यक्ष चित्रामणमां चितारे लखेली होय ॥ अथवा
केलना थांभलानी घटा ते करेली छे ॥ एवी बनी गई
॥ अने ते भगवानना मुखारविंदनुं पान ते नेत्रबडे करीने
कर्युं ॥ अने ते कश्चनी छवी जोईने नेत्रनी पांपणमां सं-
ताडी राखी ॥ अने लोकनी लाज तजीने सखियोनो
समाज साथे लईने ब्रह्मानंद स्वामि कहेछे के भगवा-
नना चरणारविंद उपर झुकी रही ॥ १९ ॥ ॥ सर्वैया
॥ ॥ बतियां घनश्याम कहो हममें ॥ रहे आज पीया
कुनके रतियां ॥ रतियां डग होय रहे मुखतें ॥ तुत-
लात हो वेन नई भतियां ॥ भतियां पुनि हार उठे
छतियां ॥ गतियां कुन प्रापत आ गतियां ॥ गतियां
पग शिथल होय रही ॥ कहे ब्रह्ममुनि कुन सो बति
यां ॥ २० ॥ ॥ अर्थ राधिकाजी कहेछे के हे घनश्याम
अमारी साथे बात करो के आज राते तमे कोने घेर
रहा हता ॥ तमारी आंखो राती बनीछे ॥ अने मुखे
वचन तोतलां नवी भातनां बोलोछो ॥ बली कोई
भातना हार छातीमां उठयाछे ॥ आवी गति तमे शी

गतिथी पाम्या ॥ तमारा पगनी चाल नरम थईने रहीछे ॥ ते ब्रह्मानंद स्वामि कहेछे के कोनी सोवतथी एम थयुं ॥ २० ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ मलना मलना करि पीर हिया घनश्याम पिया कहा संकलना ॥ कलना कलु पूरव मोय परी ॥ तुमरी रति आकृतीकों गलना ॥ गलनां विन छान सनेह किया ॥ उरमाई अछेह भई बलनां ॥ बल ना हमरो तुमपें कलुवे ॥ कहे ब्रह्म-मुनि अवतो मलना ॥ २१ ॥ ॥ अर्थ-हे प्रभु तमने मलबुं मलबुं एवी झंखना करीने हुं हैयामां पीडा पामी ॥ पण हे घनश्याम स्वामि एवी शी (संकलना) गोठवण तमे करीछे ॥ तेनी प्रथम मने कांई कल पडी नही ॥ के तमारी प्रीति ते शरीरना आकारने गली जाय एवीछे ॥ अने प्रथमथी गलणे गल्या बगर मतलबके विचार्या बगर में स्नेह करयो मतलब के विचार्या बगर में स्नेह करयो ॥ अने हवे छातीमां अपार बलतरा थई ॥ पण तमारा उपर अमारुं कांई बल चालतुं नथी ॥ माटे ब्रह्मानंद स्वामि कहेछे के हवे तो आवीने मलो ॥ २१.

॥ *राधिकानी अने भगवानना विजोग विषे ॥

* जाणेके हुंज राधिकानी छुं एवा भावथी ब्रह्मानंदस्वामिये आ विरहनु वर्णन करयुं छे.

॥ मिथावलोक सर्वैया ॥ ॥ पीयमें एही जाय कहो
मुखमें ॥ सहि जात न पिर ब्रहा हीयमें ॥ हियमें विन
भेटन भेट व्यथा ॥ सब जानमें काह कथा जियमें
॥ जियमें अब जानकी घातवनी ॥ कहा बात घनी
मुखमें कियमें नहि बेर बने ॥ ब्रह्मानंद ॥ देर मुनाय
कहो पियमें ॥ १ ॥ ॥ अर्थ—राधिकाजी केहे छे के
हे सखि मारा स्वाभि पामे जईने मोदेथी एटलुं केहे
के मारा हैयाथी विगहनी पीडा मही जाती नथी ॥
अने आ छातीये भेटया वगर पीडा भटती नथी ॥
तमे सर्व बात जाणोल्लो ॥ माटे जीभि करीने शी बात
कहीए ॥ हवेतो जीवथी जवानी घात वनीछे ॥ घणी
बात मोदेथी शी कहीये ॥ ब्रह्मानंद स्वामी केहेछे के
कोईनाथी (वार) मदद बनी शके एम नथी माटे
बोलावीने संभलावीने स्वामिने कहो ॥ १ ॥ ॥ सर्वैया
॥ ॥ मनकि सबजाननहार तुमे ॥ तन भेटन पीर भिटे
तनकी एही रीत जो प्रीत करे ॥ जेहि चात्रुक चित्त-
त्रपा धनकी ॥ धनकि विधि डंस लग्यो उरमें ॥ सहि
जात व्यथा न प्रतिदिनकी ॥ दिनकी निश-
कि ब्रह्मानंदके ॥ तुम पाम लगि व्रति मो मनकि ॥ २ ॥
॥ अर्थ—हे प्रभु तमे मननी बथी बात जाणनारछो ॥
माटे आ शरीरे ज्यारे हुं तमने भेट्रीश ॥ त्यारे शरीर-
नी पीडा भटशे ॥ (तनकी) लगारे जो एवी रीते

प्रीती करे तो जेम बपैयाना चित्तमां वरसादनी तरशा
 रहेछे ॥ एम थाय ॥ जेम घण नामनो जीवडो लाक-
 डानी अंदर डंख मारे ॥ तेम मारी छातीमां विरहनो
 डंक लाग्योछे अने रोज रोजनी पीडा सहन करी
 जती नथी ॥ ब्रह्मानंद स्वामि कोहेछे के रात अने दहाडो
 मारा मननी व्रत्ति तमारी पामे लागी रहीछे ॥ २ ॥
 ॥ सवैया ॥ पियरा नहि जानत पीर सखि ॥ मोय
 धीर धरात नहि हियरा ॥ हियरा बिनभेट भये अवतो ॥
 विधि कून कटे दुखके दियरा ॥ दियरा दिल द्योत
 नहि तबलुं जबलुं नहि ताप भिटे जियरा ॥ जियरा
 ब्रह्मानंद चाह जगी ॥ रट एक लगी पियरा
 पियरा ॥ ३ ॥ ॥ अर्थ-हे सखि मारी पीडा भगवान
 जाणता नथी अने मारार्थी हैयामां धीरज धराती नथी
 ॥ हवे तो हैयुं भगवानने मल्या वगरनुं थयुं माटे हवे
 दुःखना दहाडा कये प्रकारे कापीये ॥ ज्यांसुधी जी-
 वमांथी आ विरहनो ताप मटे नही त्यांसुधी * दिव-
 स मनमां प्रकाश करतो नथी ॥ ब्रह्मानंद स्वामि क-
 हेछे के जीवमां एवी चाहना जागी रही छे अने हे स्वामी
 हे स्वामि एवी एकज रटना लागी रहीछे ॥ ३ ॥ ॥ सवैया ॥

* मतलबके दिवसे पण अंतःकरणमां वेशुद्धि रुपी अंधारुं
 रहेछे.

कहीये किनमें दिल बात एहि ॥ अब साम विजोग
व्यथा सहिये ॥ सहिये जुत प्रेम प्रसे बिन मान ॥
विराम कैसें दिलमें लहिये ॥ लहिये विधि अंकनकी
गतियां ॥ छतियां ब्रह्म तापनमें दहिये ॥ दहिये ब्र-
ह्मानंद दोष किसे ॥ सब घात न प्रीतमकी कहिये
॥ ४ ॥ अर्थ-हवे आ मननी बात केने कहीये अने
भगवानना विजोगनी पीडा सहन करीये छीये ॥ न-
क्की प्रेमसहीत ए भगवाननो स्पर्श कर्या वगर मनमां
विराम शी रीते पायीये ॥ ब्रह्माना लखेला आंकनी
गति समजी लइये छीये अने विरहना नापथी छाती
बालीये छीये ब्रह्मानंद स्वामि कहे छे के केने दोष
दइये ॥ आ बधी घात, प्रीतमनीज कहीये अथवा
आ बधीज घात प्रीतमनी नहीं पण देवना आंकनो
वांक पण खरो ॥ ४ ॥ ॥ सवैया ॥ उरकी विपरीत
भइ गतियां ॥ जबतें सुनि ढेर बंसी सुरकी ॥ सुरकी
नरकि चित चाह टेंरी ॥ उनमें जु लगी जन आतु-
रकी ॥ तुरकि तेहि भेटत तिव्र उठे ॥ कछुवे चीत
डार दइ भुरकि ॥ भुरकि नीसाकी सुध भुल गइ ॥
पीय जान ब्रह्मानंदके उरकी ॥ ५ ॥ ॥ अर्थ-ज्यार
थी ए भगवाननी वांसलीना स्वरथी पोते अमने बो-
लावता होय एवुं अमे सांभळ्युं त्यारथी अमारा म-
ननी गति विपरित थई गई ॥ अने बीजा देवनी

अने माणसनी चाहना अमारा मनमांथी टली गई ॥
 अने जेव प्रेमातुर माणस होय तेवी प्रीति एनी साथे
 अमारे लागी ॥ अने तेमने भेटवाना तिव्र तर्क मनमां
 उठेले जाणे के कोई प्रकारनी भुरकी तेमणे नांखी
 होय ॥ अने सवारनी अने मांजनी मुध भुली गई ॥
 ब्रह्मानंद स्वामी कहेले के ते मारा मननी वान भग-
 वान जाणेले ॥ ५ ॥ सवैया ॥ ॥ घटमें घन डंस
 लग्यो सजनी ॥ नहिं नंदकिशोर पिया पटमें ॥ पटमें
 भरमास उदास रहूं ॥ लगी सास उमास बाहि रटमें ॥
 रटमें गति चात्रुककि जुं भई ॥ नहिं सीतल सास भुजा
 तटमें ॥ तटमें बटमें मग हुंढत हुं ॥ ब्रह्मानंद क्षीन भई
 घटमें ॥ ६ ॥ ॥ अर्थ—हे मखि मारा शरिरमां घण
 नामना जीवडाना जेवो विरहनो डंक लाग्यो छे ॥ केम
 के नंदना पुत्र श्रीकृश्न स्वामी (खाटमां) पलंगमां
 नथी ॥ तेथी (में) हुं छ महिना थयां उदास रहुंछुं
 ॥ अने श्वासो श्वासे तेमनी रटना लागी रहीछे ॥ ते
 रटनामां वापैयाना जेवी मारी गति थईछे ॥ अने शी-
 तल एवा श्रीकृश्न भगवान मारा हाथ पासे नथी ॥
 अने जमनाजिना कांठांमां तथा रस्तांमां ते भगवाननो
 मारग गोतुंछुं ॥ अने ब्रह्मानंद स्वामि कहेले के हुं श-
 रिरमां क्षीण थई गई छुं ॥ ६ ॥ ॥ सवैया ॥ सजनी
 नहिं स्याम सुजान पीया ॥ भरआत हिया अतिमें

दजनी ॥ दजनी कहा लेख लख्यो उलटो ॥ रहुं आ-
 तुर सोक दिवा रजनी ॥ रजनी मोय अंघ्रीसरोजहुकी
 ॥ केहि भांत रखुं तन आलजनी ॥ लजनी भोय
 मेल अकेल गयो ॥ ब्रह्मानंद पीर भई सजनी ॥ ७ ॥
 ॥ अर्थ-हे सजनी मुजाण एवा श्रीकृश्न स्वामि आंहीं
 नथी तेनी अतीशे दाइथी मारुं हँयुं भराई आवे छे
 अने द्विजनी एटले ते ब्रह्माणिये एवा शो अवलो लेख
 लख्यो के तेथी हुं दिवस ने रात शोकातुर रहुंछुं ॥ ते
 भगवानना चरण कमलनी रजनी मने आशा छे माटे
 आ शरीरे करीने शी रीते लाज राखी शकुं ॥ अने
 ते निर्लज मने मुकीने एकलो गयो माटे ब्रह्मानंद स्वा-
 मि कहेछे के हे सजनी मने पीडा थई अथवा ओढवा
 नी मुजनी ते मने पीडा रूप थई पडी छे ॥ ७ ॥ ॥
 सबैया ॥ ॥ कुनमें कहुं घातकि बात सखी ॥
 दहि देहपें लेपगयो लुनमें ॥ लुनमें भरअंक नसंक
 वसे करी प्रीति विलंब रहे उनमें ॥ उनमें नहिं भाल
 में लाभ आलि ॥ वनमाली गये कहा ओगुनमें ॥
 गुनमें पुनमें धन भेटतनुं ॥ ब्रह्मानंद बात कहे कुनमें
 ॥ ८ ॥ ॥ अर्थ-हे सखि एना दगानी बात हुं कोने
 कहुं मारुं शरीर बालीने उपर लूण लगावी गयो ॥
 अने ते (सलुणी) रसिली कुबजा साथे आलिंगन
 करीने निःशंक थईने त्यां रह्यो अने एनी साथे प्रीति

करीने रोकाइ रह्यो ॥ हे (आली) सखि ए भगवान
 नाथी मारा नशीबमां लाभ लखेलो नथी ॥ नही तो
 ते बनमाली मारा कया अवगुणथी तजीने गया ॥
 कोइ प्रकारना गुणथी के पूर्वना पुन्यथी ते जेमने भेटे
 तेनो देह धन्यछे ॥ ब्रह्मानंद स्वामि कहेछे
 के ते बात कौनी आगल कहीये ॥ ८ ॥
 ॥ सवैया ॥ ॥ बरहा तन तावत हे सजनी ॥ अब
 तो सुख अंतरमें न रहा ॥ न रहा सुख वास उदास
 फिरुं अरु प्रेमको पास गले परहा ॥ परहा घर आ-
 वनकी जुं कहि ॥ सुधहु न लहि तिनको डरहा ॥
 डरहा जबलुं नहि देख परे ॥ तबलुं कछुं वक्र भये
 गरहा ॥ गरहा डर नेक नहि उनके ॥ कहे ब्रह्ममुनि
 उमग्यो बरहा ॥ ९ ॥ ॥ अर्थ-हे सजनी मारा शरी-
 रने विरह तपावे छे ॥ अने हवे तो अंतःकरणमां
 सुख रह्युं नहीं ॥ अने घरमां पण सुख रह्युं नहीं ते-
 थी उदास थइने फरुं छुं ॥ अने प्रेमनो पासलो मारा
 गलामां पड्यो छे ॥ पर एटले शत्रुना हणनारे घेर
 आववानुं कछुं हतुं ॥ पण फरीथी शुध लीधी नहीं
 ॥ हायरे तेनो मने भय उपजे छे ॥ अने ते भयनो
 हणनार ज्यां सुधी मारी नजरे नहीं पडे खां सुधी
 हुं जाणुं छुं के मारा ग्रह काइक बांका थया छे ॥
 ब्रह्मानंद स्वामि कहे छे के ते ग्रह बांकानो तो डर

हुं लगारे ग्रहण करती नथी पण आ विरहनुं दुःख
 चडी आब्युं छे तेनो डर छे ॥ ९ ॥ ॥ संवैया ॥
 कुब्रि संग जाय विलंब रहे ॥ हम तो दुःख दूर झूर
 भइ दुब्रि ॥ दुब्रि इनकि अब बात सखि ॥ इन
 बातनतें करिकें तुं बरी ॥ तुं बरी ज्युंहि खार कलु
 न तज्यो उन संग करि लगनी खुबरी ॥ खुब्रि तन
 दासि विलासि भये ॥ कहे ब्रह्ममुनि विलंबेकुं बरी
 ॥ १० ॥ ॥ अर्थ-जइने कुबजानी साथे रोकाइ रखा
 ॥ अने हुं तो दुःखे झुरीने दुबली थइ गइ ॥ हे
 सखि हवे एनी बात दवावी राख अने एनी बातो
 करवामां तुं मोटी छे ॥ अने तुं बडी जेम लगारे
 कडवाश तजे नहीं ॥ तेवा गुणवाली कुबजा साथे
 तेमणे खुब प्यार कर्यो ॥ अने ते दासीना शरीर सा-
 थे खूब विलास करनारा थया ॥ अने ब्रह्मानंद स्वा-
 मि कहे छे के ते कुबजा पण (विलंबेकुं) रोकी
 राखवामां बडी हुशियार छे ॥ १० ॥ संवैया ॥ ॥ ठ-
 गनिकु नार मिलि पियकुं ॥ हमरे उर जार गये
 अगनि ॥ अगनी हमकुं सुगुनी कुबजा ॥ लगी वाहि
 के संग अती लगनी ॥ लगनी मुख सेज करेज बरे ॥
 भइ साचि कतांतहुकी भगनी ॥ भगनी मोय आस वि-
 लासहुकी ॥ कहे ब्रह्ममुनी अब तो ठगनी ॥ ११ ॥
 ॥ अर्थ-मारा स्वामिने कोइ ठगारी नारी मली तेथी ते

મારી છાતીમાં આગ લગાડીને ગયા મને અવગુણી ગણી
 અને કુવજાને મારા ગુણવાલી ગણી ॥ તેથી તેની માથે
 ઘણી પ્રીતિ લાગી ॥ અને જ્યારે મુખ સજ્યા મારી
 નજરે લાગેછે ત્યારે મારું કાલજું વલેછે ॥ અને જા-
 ણુંછુંકે તે સ્વરેશ્વરી જમની વેન થઈ લાગી છે વેન મને
 તે ભગવાન માથે વિલાસ કરવાની આશા છે ॥ પળ
 વ્રહ્મમુખિ કહેછે કે હવે તો હું ટકાઈ ॥ ૧૧ ॥
 ॥ સવૈયા ॥ ॥ દુઃખમાં દુઃખ એહિ વિદેશ પિયા ॥ ભર-
 આત હિયા પિયરી મુખમાં ॥ મુખમાં વ્રહ તાપ વિલાપ
 કરુ ॥ પિય આપનો જાય રહે મુખમાં ॥ મું સ્વમાં એહિ
 પીરમુ ધીર છતી ॥ નહિ મુજગતિ ન પતી રુઝમાં ॥ રુઝમાં
 રહનો મો મલો વ્રહ્માનંદ ॥ જાન વરો દહનો દુઃખમાં
 ॥ ૧૨ ॥ ॥ અર્થ-સ્વામિ પરદેશમાં હોય ॥ એજ મોટું
 દુઃખમાં દુઃખ છે ॥ અને એજ મુલ્ય પીડામાં હૈયું ભરાઈ
 આવેછે ॥ તેથી મુખમાં વિરહના તાપનો વિલાપ કરુંછું
 ॥ અને સ્વામિ પોતે તો મુખમાં જઈને રહા છે ॥ અને
 મારી છાતી ધીરજ ધરીને તે પીડા શું સ્વમાં શકે ॥
 મને કાંઈ ગતિ મુજની નથી ॥ કેમકે મારો સ્વામિ
 મારી રુઝમાં ઇટલે મારી મરજીમાં ચાલતો નથી ॥
 વ્રહ્માનંદ સ્વામિ કહેછે કે (રુઝ) કાઢીમાં રહેવું તે
 મારું પણ આવા દુઃખમાં વલવું તે મહા મુંડું જાણ ॥ ૧૨ ॥
 ॥ સવૈયા ॥ ॥ જરિઝું દિન રેન ન વેન હિયા ॥ પરદેશ

पिया अब क्या करिऊ ॥ करिहुं तन जारकें खाख
सखी ॥ एहि पीरमें धीर केमें धरिहुं ॥ धरिहुं शिर
जोगन भेख अवे ॥ भगवा करिकें जगमें फरि हुं ॥
फरिहुं कव देखीहुं नैननमें ॥ कहे ब्रह्ममुनि ब्रह्म
जरिहुं ॥ १३ ॥ ॥ अर्थ—दिवसने रात बलुंहुं अने हैया
भां चेत पडतुं नथी ॥ अने जागुंहुं के स्वामि परदेश
मांछे हवे हुं शुं करीश ॥ हे भखि आ शरीर वालीने
राख करीश केमके आयी पीडाथी धीरज शी रीते
धरी शकुं ॥ कांतो हवे माथे जोगननो वेश धरीने
भगवां बस करीने जगतमां फरीश ॥ ब्रह्मानंद स्वामि
कहेछे के हुं विरहमां बली मरीश मोटे ॥ भगवानने
आ आंखे फरीथी क्यारे देखीश ॥ १३ ॥

॥ उपदेश अंग सिहावलोक सवैया ॥

॥ रटरे एक नाम विरंजनको ॥ मन रंजन मेल
मवेह टरे ॥ हटरे विषया सुखते अ-
वतो ॥ घट जात छिन छिनमें घटरे ॥ सुख काज
अकाज भ्रमे ॥ सट लाज न होय रयो लटरे ॥ लटरे
जगमें सुध सोध हरि ॥ ब्रह्मानंद स्यामसदा रटरे ॥ १॥
॥ अर्थ—हे जीव अंजन जे माया तेणे रहित एवा एक
भगवानना नामनुं रटण कर के जेथी मन मेलथी रंगा-
एलुं होय ते बधो मेल टले ॥ अने हवे तो विषयना
सुखथी पाछो हट ॥ केमके आ शरीर क्षणक्षण वारमां

घटतुं जाय छे ॥ अने घट एटले दृढ सुखने वास्ते न
 करवाना काम करवाने भमेछे ॥ अने हे शठ तुं लोक
 नी लाजमां लटकी रहोछे ॥ हवे जगतथी पाछो ल-
 टीने शुध्व भगवाननो शोध कर अने ब्रह्मानंद स्वामि
 कहेछे के सदैव घनश्यामनुं रटन कर ॥ १ ॥ ॥ सवैया
 ॥ ॥ करले दृढ नेह हमापतिसें ॥ सुनी संत गीरा चि-
 तमें घरले ॥ धरले त्रीविधि क्रम पुंज सबे ॥ पल एक
 हि होत सही परले ॥ परले तट जानकी चाह
 रखे ॥ सतभंगत रीत अनुसरले ॥ सरले चित लोकन
 लाज तजी ॥ ब्रह्मानंद काज स्वयं करले ॥ २ ॥
 अर्थ-हे जीव लक्ष्मिजीना पति साथे दृढ प्रीति करी
 ले ॥ अने संतनी वाणी सांभलीने चित्तमां धरीले ॥
 जेथी (धरले) आगलनां व्रण प्रकारनां कर्मना ढगला
 (संचित प्रारब्ध क्रियमाण) करेला ते बधा एक
 पलमां नक्की प्रलय थई जाय ॥ अने जोतुं भवमागर
 ने सामे कांठे जवानी चाहना राखतो होय तो मत-
 संगनी रीतीने अनुसरले ॥ अने (सरल) पांशरा
 मनथी लोकनी लाज तजीने ब्रह्मानंद स्वामि कहे
 छे के पोतानु काम करीले ॥ २ ॥ ॥
 ॥ सवैया ॥ ॥ लखरे नररूप अनुप हरि ॥ तेहि ध्यान
 सदा उरमे रखरे ॥ रखरे दिन एक देहादि सबे ॥
 मनसें अब मेल विषे पखरे ॥ पखरे जमदूत खरे शिर-

पैं ॥ नहिं आवत लाज कतें नखरे ॥ नखरे धन धाम
 अकाम सवे ॥ ब्रह्मानंद साम छवी लखरे ॥ ३ ॥ ॥
 अर्थ-हे जीव जेनुं अनुपम रूपछे एवा नररूप अनुपम
 भगवानने नीरख अने तेनुं ध्यान निरंतर मनमां राख
 ॥ केमके एक दिवस एवो आवशे के आ देह आदिक
 बधुं रखडतुं रहेशें ॥ माटे हवे विषयनो पक्ष मनथी
 मूकीदे ॥ अने पाखरेला जमदूत माथा उपर उभा छे
 तोपण तने लाज आवती नथी ॥ अरे तारुं धन अने
 धाम वगेरे बधुं काई कामनुं नथी माटे तेने नांखीदे
 ॥ अने ब्रह्मानंद स्वामि कहेछेके बधुं तजीन भगवान
 नी छवि निरख ॥ ३ ॥ सवैया ॥ ॥ हकहे एक नाम
 हरि जगमें ॥ तेहि प्राप्त होनाकि यातकहे ॥ तकहे
 एहि छांड विपे सुखकुं ॥ तीनके नीत जीवतकुं धि-
 कहे ॥ धिकहे जमदुत तनायु गई ॥ कुबधि नर राम
 अजु न कहे ॥ नक हे के नहिं संत टेर कहे ॥ ब्रह्मा-
 नंद एक हरि हकहे ॥ ४ ॥ अर्थ-आ जगतमां एक
 परमेश्वरनुं नामज योग्य छे अने ते प्राप्त थवानो आ
 समय छे ॥ तेम छातां तेने छांडीने विषयना सुखने
 जे ताकशे तेना जीवतरने निस धिक्कार छे ॥ अने
 जमदूत धकशे एटले मलशे ॥ केम के शरीरनुं आयु-
 प्य जतुं रहेछे ॥ तोपण कुबुधि माणस हजु सुधी
 जीभि रामनुं नाम कहतो नथी ॥ साधु पुरुषो पोका-

रिने कहेछे के तारे नाक छेके नहीं ब्रह्मानंद स्वामि
 कहेछे के एक परमेश्वरनुं नामज खरुं छे ॥ ४ ॥ सवैया
 ॥ ॥ घरकी भुख बोलत डोल विषे ॥ अति बुद्धि
 बेकाई गई नरकी देह प्राप्य अप्राप्य आलोचत ॥
 सोचत चित विषे तरकी ॥ तरकी जुत काम विराम
 न पामत ॥ धाम धन ममता घरकी ॥ घरकी सुध
 सोध सो बोध गुरु ॥ ब्रह्मानंद सुध स्वयं घरकी
 ॥ ५ ॥ अर्थ-डोल घालीने हे माणम तुं धुरकीने
 मोढेथी बोलेछे अने तारी बुद्धि छेके बेचाई गई छे
 ॥ अने न पामी शकाय एवी नरनी देह पामीने झंख
 ना करेछे ॥ अने चित्तमां फिकर करीने विषयना
 तर्क करेछे ॥ कामनाए सहित तर्क करवामां विराम
 पामतो नथी ॥ अने घर धन अने जमीननी ममता
 राखे छे ॥ पण घरनी एटले प्रथमनी शुद्धीनो शोध
 कर ॥ अने गुरुनो बोध सांभल अने ब्रह्मानंद स्वामि
 कहेछेके पोताना खरा घरनो शोध कर ॥ ५ ॥

॥ भक्ति अंग सिंहावलोक सवैया ॥

॥ अटकी जिनके चित आय अहो निस ॥ नाथ सु-
 जान छवी नटकी ॥ नटकी भ्रम चाल तिसे उर
 अंतर ॥ साधन व्याध नहीं घटकी ॥ घटकी नही
 बार हजार संभारत ॥ तार लगी पलनां मटकी ॥
 मटकी ब्रह्मानंद आस तिसे ॥ एहिलोक प्रलोक नहि

अटकी ॥ १ ॥ अर्थ-जेना अंतःकरणमां रातादिवस
 नटवर एवा सुजाण कश्च स्वामिनी छवि आवीने ठ-
 री होय ॥ तेना मननी अंदर भ्रमणानी जाल टकी
 रहे नहीं ॥ अने शरीरनु सुख साधन करवानी व्याधि
 तेने रहे नहीं ॥ अने हजार बार एटले अनेक बार
 शरीरनी संभाल ते ले नहीं अने भगवाननी मूर्ति
 साथे एकतार दृष्टि लागी होय तेथी पांपणे मटकुं
 मारे नहीं ॥ ब्रह्मानंद स्वामि कहे छे के तेने बीजी
 वशी आशा मटी गई होय अने आलोकनी के पग-
 लोकनी आशा मनमां अटकी न होय १ ॥ सर्वैया
 ॥ उलटि अंखियां जगमें अतिमें ॥ लख माम
 स्वरूप भई सुलटी ॥ सुलटि भ्रंग रीत व्रति उनकी
 ॥ वसि व्यापक आप रहे समटी ॥ समटी तुल देह
 रु गेह सबे ॥ प्रभु कंज पदे रतीआं प्रगटी ॥
 प्रगटी उर जोल सद्योत पीया ॥ ब्रह्मानंद रिख भई
 उलटी ॥ २ ॥ अर्थ-आ जगतथी तेनी अतिशे
 उलटी दृष्टि थाय अने भगवाननु स्वरूप जोईने सबली
 दृष्टि थाय ॥ अने एना मननी वृत्ति भमरानी नीचे
 जेम एल लटकी रहे ॥ तेमज सारी रीते भगवाननी
 मूर्ति साथे लटकी रही होय अने ते भगवाननी मूर्तिमां
 व्यापक थईने पोते सामटी वशी रहे अने देह तथा
 घर आदिक बधामांथी समटी एटले एकठी थईने भ-

भगवानना चरणारविंदमां प्रीति प्रगट थाय ॥ अने
 तेना अंतःकरणमां भगवानना प्रकाशनी जोत सदा
 प्रगट थई तेथी ब्रह्मानंद स्वामि कोहे छे के आ जग-
 तनाथी तेनी रीत उलटी छे ॥ २ ॥ सवैया ॥ ॥
 दिलमें दिलदार वाहि संग प्यार ॥ ओहि मेरा यार
 वसे पलमें पलमें तेहि वार हजार संभारत ॥ तो हु
 अपार नये कलमें ॥ कल में जु गई छवि देखनकुं
 ॥ विधिरूप अनूप धरे बलमें ॥ बल में ब्रह्मानंदकुं
 जु मिले ॥ दिलदार मो यार वसे दिलमें ॥ ३ ॥
 अर्थ-अंतःकरणमां जे अंतरजामी रहे छे ॥ तेनी साथे
 सारे स्नेह थयो ॥ अने एज मारा प्रीतम मारी
 आंखिमां बड्या ॥ तेने हुं एक पलमां हजार वार
 संभारत छुं तो पण ते भगवाननुं रूप अपार छे ते क-
 ल्यावां आवतुं नथी ॥ ते छवि जोवा सारु काले हुं
 गई हती ॥ त्यारे उपमा न आपी शकाय एवा प्रका-
 रनुं रूप सबल धर्युं हतुं ॥ ब्रह्मानंद स्वामि कोहे छे
 के जे भगवान मने मल्या ॥ तेना उपर हुं बलहारी
 जाऊं छुं ॥ अने ते प्यारा मोटा मनवाला मारा मनमां
 बड्या ॥ ३ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ छुटियां शिर केशहुंने
 अलके ॥ झलके विच कुंडलमें थटियां थटियां अति
 लोल कपोलनपें ॥ अहि बाल रु मकर शशि तटियां
 ॥ तटियां फटियां द्रग देखतहि ॥ मुखचंदमें कुंद क-

लि घटियां ॥ घटियां जगता कति मंद व्रति ॥
 ब्रह्मानंद साम छटा छुटियां ॥ ४ ॥ अर्थ-भगवानना
 मस्तकना केशनी लट छटी छे ते कानना कुंडली
 वच्चे अथडाई झलके छे ॥ ते अति चपल लमणा उपर
 ठरी छे ॥ ते जाणे के मुखरूपी चंद्रनी कोर उपर स-
 रपनुं वच्चुं अने मगरनुं वच्चुं शोभे छे ॥ एमां सरपना
 जेवी लट छे ॥ अने मगरना गुंचलाने आकारे कुंडल
 छे ॥ बली ते मुखरूपी चंद्रमां डोलरनी कलीना जेवा
 दांतनी (घटना) रचना देखतां अंतःकरणनो (तटीयां)
 अज्ञानरूपी पडदो फाटी गयो तेथी जगतना आका-
 रनी अज्ञानपणानी टाति घटी गई ॥ अने ब्रह्मानंद
 स्वामि कहे छे के भगवाननी शोभा अथवा प्रकाश
 अंतःकरणमां छुट्यो एटले फेलाइ गयो ॥ ४ ॥
 ॥ सवैया ॥ ॥ मूर्ति मन मोहनकी मधुरी ॥ भगजात
 लखे इगसं दुरती ॥ दुरती नहिं नेक पले न छपे ॥
 पलट्ट नटरे जनके उरती ॥ उरती क्रभ जाल विशाल
 भगे ॥ छवि सुंदर साम लगी सुरती सु रति द्रव अं-
 धिसरोजहुसं ॥ ब्रह्मानंद चित्त बसे मुरती ॥ ५ ॥
 ॥ अर्थ-मनने मोह पमाडे एवा भगवाननी मूर्ति मधु-
 री छे ॥ ते भगवाननी मूर्तिने में रस्ते जतां वेगलेथी
 दीठी ॥ ते मूर्ति छानी राखतां एके पल छानी रे-
 हेती नथी ॥ केमके ते हरिजनना हृदयमांथी एक

पल खसे एवी नथी ॥ अने मनमां रहीने ते मूर्ति
 कर्मनी जालने भांगी नांखे छे ॥ एवी सुंदर श्याम-
 नी छविमां मारी सुरत लागी छे ॥ अने तेमना चरण
 कमल साथे दृढ सारी प्रीति लागी छे ॥ अने ब्रह्मा-
 नंद स्वामि कहे छे के ते मूर्ति मारा चित्तमां वशी
 छे ॥ ५ ॥ सवैया ॥ दृगमें छवि साम सुजाहुकी ॥
 उर्धरेख विशेष जुके पगमें ॥ पगमें ॥ क्रम पुंज
 समूरतसें ॥ दुख दूर गये जो अये दृगमें ॥ दृगमें पुन
 पूख देह किये ॥ मनरंजन आय मिले मगमें ॥ मगमें
 आव देह स्नेह कलु ॥ ब्रह्मानंद साम वसे दृगमें
 ॥ ६ ॥ ॥ अर्थ—सुजाण श्री कृष्णनी छवि मारी
 दृष्टिमां वशी तेमना चरणारविंदमां उर्द्ध रेखा विशेष
 जुकी रही छे ॥ तेथी एक पगलामांज मारा कर्मना
 जथा मूल सहित तेमज दुःखना दृगला दूर जता
 रखा ॥ में पूर्व भवना देहमां पुन्यना दृगला कर्या
 हशे ॥ तेथी मनरंजन भगवान मने रस्तामां आवीने
 मल्या ॥ हवे मने मारा देह साथे स्नेह कांड गमतो
 नथी ॥ अने ब्रह्मानंद स्वामि कहे छे के धनश्याम
 मारी दृष्टिमां वश्या ॥ ६ ॥ सवैया ॥ ॥ लखियां
 छवि कांनऊकि दुरतें ॥ पुरतें हृदि प्रेम चले सखियां ॥
 सखियां आति होय विलास करे ॥ एक तार लगे
 पीयसें अखियां ॥ अखियां छवि नेनसें पान करे ॥

प्रति अंग थटे न जुटे पखियां ॥ पखियां ॥ रखियां
 द्रग भालहुमें ॥ ब्रह्मानंद साम छवि लखियां ॥ ७ ॥
 ॥ अर्थ—श्रीकृष्ण भगवाननी छवि वेगलेथी में दीठी
 तेथी हे सखि मारा हृदयमां प्रेमनुं पूर वही चाल्युं ॥
 अने मारी आंखो ते स्वामिनी साथे एक तार
 लागी ॥ ते आंखो भगवाननी सखियो थईने अ-
 तीशे विलास करवा लागी ॥ अने ते अखंडित छ-
 वि में नेत्र बडे पीथी ॥ अर्थात् मनमां उतारी ॥
 अने मारी दृष्टि भगवानना अंग अंग प्रत्ये ठरी र-
 हेती हती ॥ अने पांपणो जोडाती न होती मतलब
 के मठकुं मारती न होती ॥ ब्रह्मानंद स्वामि कहे
 छे के मारा नेत्रनी पांपणो चडावीने कपालमां में
 राखी ॥ अने एवी खुल्ली आंखे भगवाननी छवि
 निरखी ॥ ७ ॥ सवैया ॥ ॥ गजरे झुक फूल हुके
 गलमें ॥ सब अंग सुचंग किये सजरे ॥ सजरे क्रम
 जाल विशाल सबे ॥ निज नाथ जिनुं सु लखे न-
 जरे ॥ नजरे जप जोग समाधिहुसैं ॥ जेहि चाहत
 शेष शंभू अजरे ॥ अजरे मद मोह टरे लखतें ॥
 ब्रह्मानंद चित चितें गजरे ॥ ८ ॥ अर्थ—भगवानने गजरा
 एटले फूलना बेरखा झुकी रहां छे तथा गळामां फूल झुकी
 रहां छे ॥ अने सर्वे अंग सजीने स्वच्छ करयां छे ॥ ऐवा
 पोताना स्वामिने जेणे नजरे निरखा होय ॥ तेनी कर्मनी

મોટી જાલ તે વધી (જરે) વલી જાય ॥ જે ભગ-
વાનની છવિને જોગ જપ ને સમાધી વડે નજરે જો-
વાને શેષ નાગ મહાદેવજી અને બ્રહ્મા ચઢાય છે ॥
અને તે જોતાં મદ અને મોહ અજર હોય તે પળ
ટલી જાય ॥ બ્રહ્માનંદ સ્વામિ કહે છે કે જે છવિને
ગજરાજેણ્ટલ હાથીએ ચિત્તમાં ચિતવન કરી હતી ॥૮॥

રાધારમણ દેવની સ્તુતિ ॥ દોહા ॥ ॥

રહો અંતર રાધારમણ ॥ સુંદર વર ધનડ્યામ ॥

ભવજલ પાર ઉતારાદિ ॥ નિગમસાર જેહિનામ ॥ ૧ ॥

અર્થ- સુંદર વર ધનડ્યામ એવા રાધારમણ દેવ
પારા અંતઃકરણમાં રહો ॥ જે ભગવાનનું નામ વેદનો
પાર છે અને તે ભવસાગરને પાર ઉતારે છે ॥ ૧ ॥

હરિગતિ છંદ ॥ ॥ જેહિ નામ આધા ગયંદ સાધા
જલ અગાધા અંતરે ॥ જવ જુડ સ્વાધા કરી હાધા
શરણ લાધા અનુસરે ॥ ધિટ ગે ઉપાધા ચેન વાધા
વંધ દાધા ધા કરી ॥ જય રમણ રાધા મિત્ર માધા
મિત્ર માધા હરન વાધા શ્રીહરી ॥ ૧ ॥ ॥ અર્થ-જે
ભગવાનનું અર્ધું નામ અથાહ પાણીની ગજરાજે સા-
ધ્યું ॥ તે હાથીને ઝ્યારે (જુડે) મગરે પકડયો અ-
ને સ્વાધા માંડયો હતો ॥ સારે તે હાથી ભગવાનના
શરણના લાભને અનુસર્યો મતલબ કે ભગવાનનું શરણ
માગ્યું ॥ તેથી તેની ઉપાધી ણ્ટલે દુઃખ મટી ગયું ॥

अने चेन एटले सुख वध्युं ए रीते भगवाने घाकरी
 एटले दोडीने ते हाथीनुं बंधन वाली नांख्युं ॥ मत-
 लब के मगरने मारीने. तेनुं बंधन मटाड्युं ॥ एवा
 हे राधारमण देव हे मित्ररूप माधव पीडाना हरनारा
 श्रीहरी तमारी जय थाओ ॥ १ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ वसु-
 देव द्वारे देह धारे भार टारे भोमके ॥ सुर काज
 मारे संत तारे द्वेषि मारे होमके ॥ सुरपति हंकारे
 मेघ वारे व्रज उगारे गिरि धरी ॥ जय रमन राधा
 मित्र माधा हरन बाधा श्रीहरी ॥ २ ॥ ॥ अर्थ-तमे
 वसुदेवने घेर देह धरीने पृथ्वीनो भार उतारयो ॥
 देवतानां काज सार्या संतने तार्या अने यज्ञना द्वेषि
 दैत्योने मार्या ॥ अने इंद्रे ज्यारे वार मेघने हकार्या ॥
 सारे गोवर्धने पर्वतने धारीने व्रजवासीने उगार्या ॥
 एवा हे राधारमण देव ॥ २ ॥ छंद ॥ ॥ बक लीन
 प्राणा शकट भानां जगत जाना जोरहे ॥ व्रज हो
 तुफाना व्योम तानां कंठ ठाना दो रहे ॥ अतिसं
 मुझाना मृत्यु माना करी विछाना शिल परी ॥
 जय रमन राधा मित्र माधा हरन बाधा श्री
 हरी ॥ ३ ॥ ॥ अर्थ तमे पृतनाना प्राण लीधा
 अने शकटासुरने भांगी नांख्यो ते तमारुं जोर
 वधा जगते जाण्युं ॥ सारे व्रजमां तोफान थयुं अने
 तमने दैत्य आकाशमां ताणी गयो सारे तेने कंठे बे

હાથ ખીડીને તમે રહ્યા ॥ સારે તે દૈસ અતિશે મુઝાયો
 ॥ અને પોતાનું મોત આવ્યું એમ માન્યું ॥ અને શીલા
 ઉપર બિછાનું કર્યું ॥ મતલબ કે પથ્થર ઉપર પછડાયો
 ॥ એવા હે રાધારમણ દેવ ॥ ૩ ॥ ॥ છંદ ॥ રાધા સુ
 ગોરી વય કિશોરી સાંજ ભોરી નીસરે ॥ તબ આત દો-
 રી અંગ લોરી દાન ચોરી શિર ધરે ॥ કરિ દ્રગ કઠોરી
 જોર જોરી વાહ મોરી બલ કરિ ॥ જય રમન રાધા મિ-
 ત્ર માધા હરન વાધા શ્રીહરી ॥ ૪ ॥ ॥ અર્થ-સારા
 ગોરા રંગનાં રાધિકાજી જેની ઉમર થતી જુવાનીમાં
 હતી ॥ તે સાંજ સવાર મહી વેચવા નીકલતાં હતાં ॥
 સારે તમે દોડી આવીને તેનું મુખ ઉઘાડું કરીને દાળની
 ચોરી તેને માથે મૂકતા હતા ॥ અને કઠોર દૃષ્ટિ કરીને
 તેની દૃષ્ટિની જોડે જોડીને બલ કરીને તેનો હાથ મરડ-
 તા હતા ॥ એવા હે રાધારમણ દેવ ॥ ૪ ॥ ॥ છંદ ॥
 ॥ નટવર તરંગી ચાલ ચંગી નવલરંગી નાથ જ્યું ॥
 લટકે કલંગી માનતંગી જીત જંગી હાથ જ્યું ॥ તનતેં
 ત્રિભંગી ગોપ સંગી ત્રિય ઉમંગી રૂક્ષરી ॥ જય રમન
 રાધા મિત્ર માધા હરન વાધા શ્રીહરી ॥ ૫ ॥ ॥ અર્થ-હે
 નૃસ્યકલામાં શ્રેષ્ઠ એવા અને મનના તરંગવાલા જેની
 ચાલ સુંદર છે એવા નવા રંગવાલા શ્રી ક્રશ્ન સ્વામિ ॥
 તમારી પાગમાં કલંગી લટકે છે ॥ અને તમે મોટા માન
 વાલા છો ॥ અને ઘણા જુદામાં જીતેલા એવા તમારા

हाथ छे ॥ तमे शरीरे व्रण ठेकाणे बलेला छो (डोके
 केडे अने पगने कांडे) अने गोवालानी साथे छो; अने
 गोपनी स्त्रियो उमंगे तमने जुवे छे ॥ एवा हे राधारमण
 देव ॥ ५ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ मुरली बजैया गोपैया लार-
 गैया वन फिरे ॥ बलदेव भैया संगलैया व्रज कनैया
 बीचरे ॥ बलिजात मैया नृत करैया कहत थैया फरि
 फरी ॥ जय रमन राधा मित्र माधा हरन बाधा श्री
 हरी ॥ ६ ॥ ॥ अर्थ-गोवालांमां रहीने मोरली बजाव-
 नारा अने जेनी केडे केडे गायो वनमां फरती हती ॥
 अने बलदेव भाइने साथे लड़ने हे कनैया तमे
 व्रजमां विचरता हता ॥ बली नृत्य करीने फरी-
 फरीने थेई थेईकार कहेता हता ॥ ते जोईने माता
 जमोदाजी बलीहारी जतां हतां ॥ मतलबके ओवारणा
 लेतां हतां ॥ एवा हे राधा रमण देव ॥ ६ ॥ ॥ छंद ॥
 ॥ पुतना ज्यु मारी नाथ्यो कारी धेनु चारी प्रीतसें ॥
 त्रिय गोप तारी व्रज विहारी रमन न्यारी रीतसें ॥
 द्विजदेव नारी समज सारी ॥ अचल यारि अनुसरी ॥
 जय रमन राधा मित्र माधा श्रीहरी ॥ ७ ॥ ॥ अर्थ
 -तमे माशी पूतनाने मारी तथा कालीनागने नाथ्यो
 अने प्रीतिए करीने गायो चारी ॥ हे व्रजमां विहार क-
 रनारा तमे जूदी तरेहथी रमण करीने व्रजनी स्त्रियोने
 तारी ॥ अने ब्राह्मण देवनी स्त्रियो एटले ऋषि पत्नि

યોની સમજણ સારી હતી તે તમારી સાથે અચલ પ્રીતિ
 ને વલગી રહી એવા હે રાધારમણ દેવ ॥૭॥ ॥ છંદ
 ॥ ॥ અહિ નથ્યો કાલા જહરબાલા સહિત તાલા
 નૃત કરે ॥ વિષ તોય ટાલા જીયત બાલા હરિ કપાલા
 નજ્જરે ॥ ગલ ફૂલ માલા સંગ ગ્વાલા વાત લાલા
 વાંસરી ॥ જય રમન રાધા મિત્ર માધા હરન વાધા
 શ્રીહરી ॥ ૮ ॥ ॥ અર્થ-જ્યારે તમે કાલી નાગને
 નાથ્યો ॥ અને તેનું ઝેર વાલી નાંચ્યું ॥ સારે તેની
 ફળા ઉપર તાલી દઈને નાચ કર્યો ॥ અને તે જમુના
 જાના પાણીનું ઝેર ટાલ્યું અને હે હરી તમે કૃપાલ
 નજરથી ગોપનાં વાલકોને જીવતાં રાખ્યાં ॥ હે લાલ
 તમે ગલામાં ફૂલની માલા ધરીને ગોવાલાઓની સાથે
 રહીને વાંસલી વગાડી ॥ એવા હે રાધા રમણ દેવ ॥ ૮ ॥
 ॥ છંદ ॥ ॥ વ્રજકે વિલાસી પ્રેમ પાસી વદન હાસી
 મંદજ્યું ॥ જુધકે અધ્યાસી દુષ્ટનાસી જન પ્રકાસી ચંદ-
 જ્યું ॥ રસરૂપરાસી નિત હુલાસી અરણ્યવાસી ત્રિય તરી
 ॥ જય રમન રાધા મિત્ર માધા હરન વાધા શ્રીહરી ॥ ૯ ॥
 ॥ અર્થ-હે વ્રજમાં વિલાસ કરનારા તમારા મુખનું જે
 હલવે હલવે હસ્યું ॥ તે પ્રેમના પાંખા જેવુંછે તમે યુદ્ધ
 કલાનો અભ્યાસ કરવા વાલા અને દુષ્ટનો નાશ કર-
 નારા અને વ્રજ જનમાં ચંદ્રની પેઠે પ્રકાશિતછો ॥ તમે
 રસના ને રૂપના તો સમુદાય છો ॥ અને નિત્ય આનંદમાં

रहोछो ॥ अने तमारा दर्शनथी बननी रहेनारी स्त्रियो
 भवसागर तरी एवा हे राधा रमण देव ॥९॥ ॥ छंद ॥
 ॥ प्रेमी खजीना रंग भीना तिलक दीना
 भालज्युं ॥ वसु कोप कीना जान दीना राखि लीना
 ग्वालज्युं ॥ ज्या कें अधीना लोक तीना प्रवीना सर
 वो परी ॥ जय रमन राधा मित्र माधा हरनवाधा
 श्रीहरी ॥ १० ॥ अर्थ-तमे प्रेमीजनना खजाना रूप छो
 अने भीने रंगे छो अने कपालमां तिलक करी दीधुं छे
 ॥ अने इंद्रे ज्यारे कोप कर्यो त्यारे तमे जीवतदान दइ
 ने गोवालियाओनुं रक्षण करी लीधुं ॥ स्वर्ग मृत्यु अने
 पाताल त्रणे लोक जेने आधिन छे अने सर्वोपरि प्रवीण
 तमे छो ॥ एवा हे राधारमण देव ॥ १० ॥ ॥ छंद ॥ व्रज
 नार वाली मुक्तमाली नयन लाली रेखहे ॥ फनि दम्यो
 काली करी बेहाली त्रिया उताली देखहे ॥ द्रह कीनखा
 ली पीर टाली चरित्र भाली श्रीवरी ॥ जय रमन राधा
 मित्र माधा हरनवाधा श्रीहरी ॥ ११ ॥ ॥ अर्थ-तमने व्र
 जनी स्त्रियो बहाली छे अने तमे मोतीनी मालावाला छो
 अने तमारा नेत्रमां राती रेखाओ छे ॥ अने तमे काली
 नागने दम्यो अने तेना बेहाल करथा ते तेनी स्त्रियो
 उतावली आवीने जोती हती ॥ अने जमुनाजीनो धरो
 नागने काढीने खाली कर्यो अने सौनी पीडा टाली एवां
 तमारां चरित्र भालीने लक्ष्मजीनो अवतार एवां रुक्म-

ણિજી તમને વરયાં એવા હે રાધારમણ દેવ ॥ ૧૧ ॥
 ॥છંદ॥ વનમેં વિલાસા હો હુલાસા રમત રાસા રંગમેં ॥
 કુલ દૈત્ય નાસા કરિ તમાસા અતિ ઉજાસા અંગમેં ॥
 મુનિબ્રહ્મ દાસા રાસો પાસા દર્શાસા ઊર સ્વરી ॥ જય
 રમન રાધા મિત્ર માધા હરનવાધા શ્રીહરી ॥ ૧૨ ॥ અર્થ-
 જ્યારે તમે રંગમાં રાસ રમ્યા ત્યારે વનમાં તમારા વિલા
 સથી આનંદ થયો ॥ તમે તમાસા કરીને દૈત્યના કુલનો
 નાસ કર્યો અને તમારા અંગમાં અતિસે પ્રકાશ દેખાડ્યો
 ॥ બ્રહ્માનંદ સ્વામિ કહે છે કે તમારા દર્શનની આશા મા
 રા મનમાં સ્વસ્વરી છે તે માટે મને તમારી પાસે રાસો ॥
 એવા હે રાધારમણ દેવ હે મિત્રરૂપ માધવ પીડાના હરનારા
 શ્રીહરી તમારી જય થાઓ ॥ ૧૨ ॥ ॥છપય॥ વાધા હરણ
 વ્રજેશ વેશ નર કુંજવિહારી ॥ લે મોરલી નિજ હાથ ॥
 નાથતારે નર નારી ॥ દિનાદિ ચરિત્ર ઉદાર ॥
 માર મહિ હરણ મુજા કર ॥ મનહર નંદકુમાર
 ॥ નાર કર પ્યાર નિરંતર રસ રૂપ ભૂપ રાધા
 રમન ॥ અજવ બનિ છવિં આજકી ॥ કહે બ્રહ્મમુનિ
 મમ ઊર સદા ॥ રહો મુર્તિ વ્રજરાજકી ॥ ૧૩ ॥ ॥
 અર્થ-પીડાના હરનારા હે વ્રજના ઇશ્વર તમે નરનો
 વેશ ધર્યો છે અને કુંજમાં વિહાર કરો છો ॥ હે નાથ
 તમે હાથમાં મોરલી લઈને પુરુષોને અને સ્ત્રીઓને
 ભવસાગરથી તાર્યાં ॥ તમે દિવસે દિવસે મોટાં

चरित्र करयां अने हाथे करीने पृथ्वीनो भार हरयो ॥
मनना हरनारा हे नंदना कुंवर तमारी साथे
व्रजनी स्त्रियोये निरंतर स्नेह करयो ॥ एवा रम ने
रूपवाला महाराजा हे राधा रमण देव तमारी आजनी
छवि अजायब जेवी बनी छे ॥ ब्रह्मानंद स्वामि
कहे छे के एवा व्रजराजनी छवि मारा मनमां सदा
वसो ॥ १३ ॥ ॥ रासाष्टक ॥ दोहा ॥ एक समय
शशि उदित अती ॥ होय मन अधिक हुल्लास ॥
यमुना तट व्रजनार जुत ॥ रच्यो मनोहर रास ॥ १ ॥
॥ अर्थ-एकः समे चंद्रमा अतिशे प्रकाशित थयो
सारे मनमां अतिशे आनंद पाभीने ॥ जमनाजीने कांठ
व्रजनी स्त्रियो सहित मनने हरे एवा भगवाने रास
रच्यो ॥ १ ॥ दोहा ॥ ॥ भरभर तन मज आभरण
॥ वर वन करण विहार ॥ कर कर ग्रह, नटवर कृष्ण
॥ सरसर अनुसर सार ॥ २ ॥ ॥ अर्थ-सारे गोपि-
काओ घराणां सर्जने शरीर भरीभरीन, सुंदर वनमां
विहार करवा सारु गइओ ॥ सारे नटविद्यामां श्रेष्ठ
एवा श्रीकृष्ण भगवाने हाथेहाथ ग्रहण करीने ॥ ज-
मनाजीना सारा कांठा उपर अनुसर्या एटले

* शरद पुनमनी मध्य रात्रियेज चंद्रमानो प्रकाश सौथी
वधारे होय छे.

વિચર્યા ॥ ૨ ॥ છંદ રેણકી ॥ ॥ સરસર પર સધર
 અમરતર અનુમર ॥ કરકર વરધર મેલ કરે ॥ હરિહર
 સુર અવર અછર અતિ મનહર ભરભર અતિ ઉર હરસ્વ
 ભરે ॥ નિરસ્વત નર પ્રવર પ્રવરગણ નીરજર ॥ નિકર
 મુકટ શિર સવર નમે ॥ ઘણ સ્વપટ ફરર ઘરર પદ
 ઘુઘર રંગભર સુંદરડ્યામ રમે ॥ જીયરં ॥ ૧ ॥ ॥
 અર્થ—તે જમનાજીના કાંઠા કાંઠા ઉપર સધર એટલે
 સારાં દેવતરુ એટલે કલ્પવૃક્ષનાં જેવાં ઝાડ જોર ક-
 રીને મતલબ કે ફલને ભરે નમીનમીને પૃથ્વીનો
 મેલાપ કરે છે ॥ ને તે મમે આકાશમાં હરિ એટલે
 હિંદુ શિવ; તથા વીજા દેવતાઓ અને અતિશે મનને
 હરણ કરે એવી અપ્સરાઓ તે ભરી ભરીને અંતઃકરણમાં
 અતિશે હરસ્વ ભરે છે ॥ અને નરરૂપે ગોવાલિયાઓ સાં
 પરવરી પરવરીને એટલે જડ જડને નિરસ્વે છે તથા નિર્જર
 એટલે દેવતાઓના જથા કે જેઓને માથે મુગટ ધરેલા
 છે તે નિકર એટલે જથાવંધ વર એટલે મોટેરા સહિત
 ભગવાનને નમે છે ॥ સાં ઘંણા શદ્ધ થાય છે લૂગડાં
 ફરર થાય છે ॥ અને પગના ઘુઘરા ઘરર વાગે છે અને
 રંગ ભર્યા સુંદર ડ્યામ રમે છે ॥ ૧ ॥ ॥ છંદ ॥ ॥ ઙ્ઙ-
 ઙ્ઙઙઙ ઙ્ઙઙઙ સ્વઙ્ઙઙ પદ ઙ્ઙાંઙ્ઙર ॥ ગોમ ધ્ઙઙઙ ગ્ઙ-
 ઙ્ઙઙ ગયઙે ॥ ત્ઙ્ઙઙઙ વજ તંત ઠ્ઙ્ઙઙ ટંકારવ ॥ ર્ઙ્ઙ-
 ઙ્ઙઙ સુર ઘ્ઙ્ઙઙઙ રયઙે ॥ ર્ર્ર્ર ર્ર્ર્ર અતિ ર્ર્ર્રઙઙ ઘ્ઙ્ઙઙ

बज त्रांसा ॥ भ्रमण भमरवत रमण भ्रमे ॥ घणरव
 पट फरर घरर पद घृघर ॥ रंगभर सुंदर श्याम रमे ॥ २ ॥
 ॥ अर्थ—झणणणणण झणण अने खणण एम पगनां
 झांझर वागे छे (गो) पृथ्वी धणण थाय छे ॥ अने
 गयण एटले आकाशमां गणणण एवो शद्ध थाय छे ॥
 अने तणणण एम सरोदानी तांत वागे छे अने
 टणण एम मंजिराना टकोरा थाय छे तथा बीजा वा-
 जाना रणकारा तथा घणकाराना स्वर ते रात्रिमां
 थाय छे ॥ ब्रह्म ब्रह्म त्रणण अने घ्रणण एम अतिशे त्रांसां
 वागेछे ॥ अने जेम भमरा भमेते रीते गोप ने गोपियो
 रमण करतां भमेछे ॥ त्यां घणा शब्द थाय छे ॥ २ ॥
 ॥ छंद ॥ झटपट पट उलट पलट नटवट झट ॥ लटपट
 कटघट निपट लले ॥ कोकट अति उकट बुटक गति
 घिनकट ॥ मन डर मतलट लपट मले ॥ जमुनांतट प्रगट
 अमट अट रट जूट सुरथट खे खट तेंण समे ॥ घणरव पट
 फरर घरर पद घृघर रंगभर सुंदर श्याम रमे ॥ ३ ॥
 ॥ अर्थ—झटपट लूगडां अवलां सवलां थई जाय छे अने
 नटनी पेठे झट लटपट थई जईने केडेथी शरीर अतिशे
 लले छे ॥ कोइ तो केडेथी अतिशे उत्कृष्ट रीते त्रण कटका
 एटले त्रिभंगीनी रीते घणी केड मरडेछे ॥ अने मनमांथी
 लोक लज्जानो डर मटी गयो छे ॥ अने परस्पर लटीने
 लपट थईने मली गयांछे ॥ जमुनाजीने कांठे प्रगट भ-

ગવાન અમટ એટલે અવિનાશી અટન એટલે ફરવામાં
 અને રટન એટલે ગાવામાં જોડાયા છે ॥ તે સમે
 દેવતાઓનો (થટ) જથો આકાશમાં ઉમ્મો છે ॥ ત્યાં ઘળા
 શબ્દ થાય છે ॥ ૩ ॥ ॥ છંદ ॥ ॥ ઘમ ઘમ અતિ ઘમક ઠમક
 પદ ઘૂઘર ॥ ધમધમ ક્રમ સમ હોત ધરા ॥ ભ્રમ ભ્રમ
 વત વિપમ પરિશ્રમ વત ભ્રમ સ્વમસ્વમ દમ અહિ વિફમ
 સ્વરા ॥ ગમગતિ અતિ અગમ નિગમ ન લહત ગમ ॥
 નટવટ રમઝમ ગમ મનમે ॥ ઘળરવ પટ ફરર ઘરર પદ
 ઘૂઘર ॥ રંગ ભર સુંદર શ્યામ રમે ॥ ૪ ॥ ॥ અર્થ-પગના
 ઘૂઘરાના ઘમ ઘમ ઘમકારા અને ઠમકારા અતિશે થાય
 છે ॥ અને ધમ ધમ એમ પગલાં માંડે છે ॥ તેથી પૃથ્વી
 ઊર્ચીનીચી હોય તે સરસ્વી થઈ જાય છે ॥ એમ મંડલને ફેર
 પુંદડી ફેરવે છે ॥ તેથી વિપમ એટલે સહન ન થઈ શકે એવો
 પરિશ્રમ એટલે મહેનત પડે એવી રીતે ભમાવે છે તેથી શેશ
 નાગ દુઃખ સાંખી સાંખીને વિફમ એટલે ભાન ભૂલીને
 ઉમ્મો રહ્યો છે ॥ જે ભગવાનનું જ્ઞાન અને ગતિ અતિશય
 છે તેનું પુરું જ્ઞાન શાસ્ત્ર કે વેદ લઈ શકતા નથી ॥ તે
 ભગવાન નટની પેઠે રમઝમનાં છે ॥ તેનું જ્ઞાન તેમનાજ
 મનમાં છે ॥ ત્યાં ઘળા શબ્દ થાય છે ॥ ૪ ॥ ॥ છંદ ॥
 ગત ગત પર ઉગત તૂગત નૃત પ્રિયગત ॥ રત ઉનમત ચિત
 વધત રતિ ॥ તતપર ધ્રત નચત ઉચત મુલ્લ થૈ તત ॥
 આવ્રત અતઉત ભ્રમત અતિ ॥ ધિધીતત ગત વજત મ્રદંગ

मूर उधधत ॥ कत भ्रत नरतत अतंत क्रमे ॥ घण स्व
 पट फरर घरर पद घूघर ॥ रंगभर सुंदर ड्याम रमे ॥
 ५ ॥ अर्थ-जूदी जूदी चाल उपर उक्ति एटले वाणी
 बोलेछे ॥ अने तेमज पिया एटले भगवान जेवी चाल
 चालेतेवी चाल उपर पोतानी चाल बीजाओ चालेछे ॥ अने
 सौ उन्मत्त रहेछे अने चितमां प्रीति वधेछे ॥ तत्परपणुं
 एटले हुंशियारी धरीने नाचेछे ॥ अने मुखेथी थेईतत
 थेईतत एम उचरे छे ॥ अने आम तेम अतिशे फुदडी
 फरेछे ॥ त्यां मृदंग धिधितत धिधितत एवी गतिथी
 वागेछे ॥ तेनो स्वर उधधत एटले उंचो थायछे ॥ अने
 सौने भ्रत एटले दास करी लीयां छे ॥ तेओ अत्यंत
 अनुक्रमे नाचेछे ॥ त्यां घणा शब्द थाय छे ॥ ५ ॥
 ॥छंद॥ धनगन तन नचत पवन प्रचल नथन ॥ सुमन गगन
 धुन मगन सुरा मनमन वर कण्ठ प्रशन धन तन मन ॥
 धन धन वन धन तास धरा ॥ विशरे तन भान खान
 पान विधि ॥ गान तान जेहिकान गमे घणरव पट फरर
 घरर पद घूघर ॥ रंग भर सुंदर ड्याम रमे ॥ ६ ॥ अर्थ-
 गोपी अने गोवाल शरीरे धन गन धन गन नाचे छे ॥
 (धन) ते स्थाने पवन चालतो नथी ॥ अने आकाशमां
 देवताओ मगन थइने धुनि करे छे ॥ अने सुमन एटले
 पुष्प वरसावे छे ॥ अने तेओ मनमां एम मानेछे के वर
 एटले सुंदर श्रीकण्ठ जेना उपर प्रसन्न थया छे ॥ ते-

ઓના તનને અને મનને ધન્ય છે ॥ તથા તે વ્રંદાવનને
 અને તે પૃથ્વીને પણ ધન્ય છે ॥ જેઓને તે ભગવાનું ગાન
 તાન ગમે છે ॥ તેઓને શરીરનું ભાન વીસરી ગયું અને
 સ્વાવા પીવાની રીત પણ વીસરી ગઈ સાંઘળા શબ્દ થાય
 છે ॥ ૬ ॥ ॥ છંદ ॥ ઢલઢલ રંગ પ્રગલ અઢલ જનપર
 ઢલ ઝલઝલ અળકલ તેજ ઝરે ॥ સ્વલસ્વલ મુજ ચુડ
 ચપલ અતિ સ્વલકત ॥ કાન કતોહલ પ્રવલ કરે ॥
 વલ વલ ગલ હસ્ત તુમલ ચલ ચિત વલ ॥ જુગલ જુગલ
 પ્રતિ રંગ જમે ॥ ઘણરવ પદ ફરર ઘરર પદ ઘૂઘર ॥
 રંગ ભર મુંદર ઝ્યામ રમે ॥ ૭ ॥ ॥ અર્થ—ત્યાં ભગવાન
 દયાથી પીગલીને દયાના રંગવડે વ્રજ જન ઉપર ઢલી
 ઢલીને અઢલક ઢલ્યા છે ॥ અને તેમના શરીરનું તેજ
 કલી શકાય નહીં ॥ એવું ઝલ ઝલાટ થઈ રહ્યું છે ॥
 ગોપિયોના હાથની ત્રીડિયો અતિ ચપલ અને સ્વલ સ્વલ
 એમ સ્વલવડે અને સાં શ્રીકૃષ્ણ ભગવાન મોટું કૌતક
 કરે છે ॥ એક વીજાને ગલે હાથ વાલીવાલીને તેમજ
 ચપલ ચિત તે પણ વલીવલીને મલી ગયાં છે અને વલે
 જળ વલે રંગ જામ્યો છે ॥ ત્યાં ઘળા શબ્દ થાય છે ॥
 ॥ ૭ ॥ ॥ છંદ ॥ ॥ સરવસ વસ મોહ દરસ સુરથિત શશિ
 ॥ અરસપરસ વ્રસ ચરસ અતિ ॥ કસકસ પદ હુલસ
 વિલસ ચિત આકસ ॥ રસવસ સુસહસ વરસ રતિ ॥
 દ્રસ નવ રસ સરસ મયો બ્રહ્માનંદ ॥ અનરસ મનસ તરસ

अथमे ॥ घणरव पट फरर घरर पद घृघर ॥ रंग भर
सुंदरस्थाम रमे ॥ ८ ॥ ॥ अर्थ—ते देखीने सर्व मोहने
वश थई गयां अने सूरज अने चंद्र पण स्थिर थया
अने गोपी तथा गोवालाने परस्पर ते राम रमवानी
तृष्णा तथा चडस अतिशय बध्यो छे ॥ लू-
गडां ताणीने पहेरी पहेरीने हुल्लासथी विलमे छे अर्थात्
रमे छे ॥ अने एक बीजाना चित्तनुं आकर्षण करे छे
॥ अने रसवस थइने खुशी थइने हमे छे अने प्रीतिनी
वृष्टि थइ रही छे ॥ ब्रह्मानंद स्वामि कहे छे, के नवरस
मय भगवाननुं दर्शन सारुं थयुं अने अनरस एटले
खोटो रस तथा मननी तृष्णा आथमी गइ ॥ त्यां घणा
शद्ध थाय छे. ॥ ८ ॥ ॥ छपय ॥ रमत मनोहर राम
॥ सदा सुख वास स्वतंतर ॥ प्रवल गोपजन पास ॥
कमल आभास शसिकर ॥ विहरत करत विनोद भोद
अंतर नहि मावे ॥ अरस परस एक तार दरस नवरस
दरसावे ॥ सुखरूप सदा अशरण शरण ॥ फनां करण
भव फंदके ॥ संत साथ सदा खेलत सहि ॥ नाथ सो
ब्रह्मानंदके ॥ १ ॥ ॥ अर्थ—सदा सुखना निवासरूप
अने स्वतंत्र भगवान मनोहर राम रमे छे ॥ ते गोपजन-
नी पासे बीजा जे महा बलिया हता ॥ तेओ जेम
चंद्रनी किरणोथी कमलनो आभास झांखो पडी जाय
तेम झांखा पडी गया ॥ ते गोपजन विहार करे छे ॥

ઘટલે ફરે છે ॥ અને વિનોદ કરે છે તેમજ તેઓના
 અંતઃકરણમાં આનંદ સમાતો નથી ॥ અને પરસ્પર એક
 દૃષ્ટિથી નવરમમય દર્શન દેખાડે છે તે ભગવાન સદા
 સુખરૂપ છે અશરણના શરણ છે ॥ અને ભવના બંધનને
 તોડી નાંખે એવા છે ॥ અને એજ બ્રહ્માનંદનો સ્વામિ
 હમણાં સંતોની સાથે સદા खેલે છે તે નક્કી છે ॥ ૧ ॥

॥ અમૃતધ્વનિ છંદ ॥ ॥ હરિ મહિમા વિષે ॥

॥ કમલ મુખક કર કમલ ॥ કમલ નાભિ અતરક ॥
 કર જગ બુધ જન શાંતિકર ॥ કુલ શુભ ધર્મ તિલક
 ॥ કુલ ધર્મ તિલક ॥ કમઠ ધરક ॥ કર્મ શુભક ॥
 ક્રોધ કરક ॥ કમર કસક ॥ કંસ વધક ॥ કથન
 અથક કૌલ નશક ॥ કપટ હરક ॥ કીર્તિ ધરક ॥
 ક્રત અતરક ॥ કલિજુગ ઢક કૌક લલક ॥ કરન
 અરક ॥ કહે વ્રહ્મ હક ॥ કમલ મુખક કર કમલ
 ॥ ૧ ॥ ॥ અર્થ-ભગવાનનું કમલના જેવું મુખ અને
 કમલના જેવા હાથ છે ॥ અને અતર્ક્ય ઘટલે વિચારમાં
 આવી શકે નહીં એવી કમલના જેવી નાભિ છે
 ॥ જગતને બોધ કરનારા અને હરિજનને શાંતિ
 કરનારા અને ધર્મકુલના તિલકરૂપ છે ॥ ધર્મ કુ-
 લના તિલક એજ કાચબાનું રૂપ ધરનારા ॥ અને શુભ
 કામ કરનારા ॥ અને ક્રોધ કરીને કેડ બાંધીને કંસને
 માર્યો ॥ અને જે ભગવાનનાં અપાર વાક્ય છે ॥ અને

वाम मार्गनो नाश करनारा ॥ कपट हरनारा ॥ अने
 कीर्तिनुं धारण करनारा ॥ अने जेना कृत्य अतर्क्य
 एटले तर्कमां आवी शके नहीं एवां छे ॥ कलियुगने
 ठांकी नांखनारा ते भगवानने कोइकें ज ओलख्या ॥
 अने सूर्यादिकने उत्पन्न करनारा छे ॥ ब्रह्मानंद स्वामि
 साचुं कहेछेके ते भगवाननुं मुख ॥ हाथ ॥ अने नाभी
 कमल जेवां छे ॥ इत्यादि ॥१॥ छंद ॥ ठाह धरठ ठीकहे
 ॥ ठोरहिठोर सुमठ ॥ ठाल जगठ ठाठपर ॥ ठरठव
 पद चित हठ ॥ ठरठव पद हठ ॥ ठरण जनठ ॥ ठीम
 कमठ ॥ ठंभ अगठ ॥ ठाट मथठ ॥ ठाम आमिठ ॥ ठलव
 सुरठ ॥ ठहर मथठ ॥ ठीक दतठ ॥ ठगण बलिठ ॥
 ठमक तनुठ ॥ ठान द्विजठ ॥ ठेल नभठ ॥ ठाड ब्रधठ ॥
 ठोर ब्रह्मठ ॥ ठाह धरठ ठीकहे ॥२॥ अर्थ—ते भगवान
 अचलपणुं धरनारा ठीकछे ॥ अने ठेकाणे ठेकाणे तेमनां
 सारां आश्रम छे ॥ आ ठाला एटले मिथ्या जगतथी
 जेनो ठाठ जूदो छे ॥ अने जेना चरणारविंदमां हठयोग
 वाला पोताना चितने ठरावीने स्थिर करे छे ॥ हठयोग
 वाला जेना पदमां ठरीने स्थिर थायछे ॥ अने जे भग-
 वान पोताना जनने ठरवानुं ठेकाणुं छे ॥ अने जेणे
 काचवानुं शरीर धार्युं हतुं ॥ अने (अग) मंथाचल पर्व
 तनो थंभ वांसा उपर धर्यो हतो ॥ अने समुद्र मथन
 करवानो ठाठ रच्यो हतो ॥ पंछी अमृतनुं ठाम देवता

ઓના હાથમાં જેણે ઠલવ્યું ॥ અને પોતે દેવો ને દૈત્યોની
 મધ્યે ઠેરી રહ્યા ॥ અને ઠીક એટલે યથાયોગ્ય જેને જેમ
 દેવું ઘટે તેમ દીધું ॥ વલી જે ભગવાનને (ઠમક) વામણુ
 શરીર ધરીને વલીરાજાને ઠગ્યો ॥ અને જે ઠેકાણે યજ્ઞ-
 માં બ્રાહ્મણોનું સ્થાનક એટલે વેઠક હતી ॥ ત્યાં વૈરાટ
 રૂપ કરીને આકાશને ઠેલ્યો ॥ અને ત્યાં (ઠાડ) ઉભા
 રહીને શરીર વધાર્યું ॥ તે ભગવાન બ્રહ્માનંદ સ્વામિને
 ઠરવાનું ઠેકાણું છે ॥ તે ભગવાન અચલપણું ધરનારા
 ઠીક છે ॥ इत्यादि ॥ ૨ ॥ ॥ છંદ ॥ ડંડ
 ઉડંડુ ડર નિડર ॥ ડઢ ધર દુઢ મહિ મંડુ ॥ ડગત
 ન અડગ બ્રહ્મંડ ડર ॥ ડર મર દૈત્ય પ્રચંડુ ॥ ડર દૈત્ય
 પ્રચંડુ ॥ ડાણ ઉડંડુ ॥ ડગ બ્રહ્માંડુ ॥ ડાપ અખંડુ ॥
 ઢક સુર ધંડુ ॥ ઢરણ વિતંડુ ॥ ઢઢણ પખંડુ ॥ ઢાલ
 જનંડુ ॥ ઢાલ કરંડુ ॥ ઢમર ધરંડુ ॥ ઢંભ વિધંડુ ॥
 ઢંસ કુખંડુ ॥ ઢોક્રે સુપંડુ ॥ ઢેર ડરંડુ ॥ ઢોર બ્રહ્મડુ
 ॥ ઢંડુ ઉડંડુ ડર નિડર ॥ ૩ ॥ ॥ અર્થ-જે ભગવાન
 કોઈથી ન હંડાય એવાને હંડનારા અને ભય પામેલાને
 નિર્ભય કરનારા ॥ અને દુઢ એટલે મજબૂત રીતે પૃથ્વી
 મંડલને વારાહરૂપે ઢાઢ ઉપર ધરનારા ॥ અને પોતે ચલે
 નહીં એવા અચલ છે ॥ અને આખું બ્રહ્માંડ જેની વીક-
 થી ઢરે છે ॥ અને પ્રચંડ દૈત્યો જેનાથી વી મરે છે
 ॥ (પ્રચંડ) જબરા દૈત્યો ઢરે છે ॥ જેને કોઈ હંડી

शके नहीं तेनी पासेथी पण दाण लेनारा अने ब्रह्मांड-
 ने डगावनारा अने जेनुं डहापण अखंड छे ॥ अने
 देवनुं खंडण करनारा असुरोने डंक देनारा (वितंड)
 वाद करनारा जेनाथी डरे छे ॥ अने पाखंडने
 दाटनारा ॥ अने हरिजनने बेसवानी डालरूप ॥ अने
 हाथ डोलावीने आडंबरना धरनारा ॥ अने (दंभ) दां-
 गनुं विशेषे खंडन करनारा ॥ अने कुभांडीओने डंस
 करनारा ॥ अने डुकर एटले वराहनुं सारुं शरीर धर-
 नारा ॥ अने जे भगवाननुं ऊर एटले हृदय सर्वने रहे
 वाना डेरा रूप अर्थात् आश्रय रूप छे ॥ ब्रह्मानंद स्वा-
 मि कहेछे के मने दोरनारा एटले हाथ झालीने चलाव
 नारा जे भगवान कोइथी न डंडाय एवाने डंडनारा ॥
 इत्यादि ॥३॥ ॥ छंद ॥ दाहकुमहू दाकज्युं ॥ दिम तेज
 बल अहू ॥ ढाल भक्त तन सहज ढल ॥ ढल अढलक
 परगहू ॥ ढल अढलक गहू ॥ दिग बुधि अहू ॥ ढलण
 जनहू ॥ ढक कुरहू ॥ ढौगि विमुहू ॥ ढकण उहहू ॥
 ढालु उरहू ॥ ढेर सुखहू ॥ ढाली जगहू ॥ ढक सुरमहू ॥
 ढाह कढहू ॥ ढेर रजहू ॥ ढवन पढहू ॥ ढालवषहू ॥ ढव
 ब्रह्महू ॥ ढाह कुमहू दाकज्युं ॥४॥ ॥ अर्थ-ढाक एटले
 खाखराना झाडने सहेजमां पाडी नांखे तेवी रीते कु-
 त्सीत मढ (महागढ ते मढ) एटले दैत्योना गढने पाडी
 नांखनारा ॥ अने तेजनुं तो दीमरूप अने अदभुत छे

વલ જેનું ॥ અને પોતાના ભક્તની ઢાલ રૂપ ॥ અને પો-
 તાના શરીરનો સહેજે એવો ઢાલ છે કે પારકા ઉપર
 ગાઢી રીતે ઇટલે મજબૂત રીતે અઢલક ઢલનારા ॥
 ગાઢી રીતે અઢલક ઢલનારા ॥ અને જેની પાસે અદ્ભુત
 બુદ્ધિ છે એવા ॥ પોતાના જનો ઉપર ઢલનારા ॥ અને
 કુત્સીત રહેને ઇટલે લતને ઢાંકનારા ॥ અને ઢોંગ કર-
 નારા ॥ વિશેષ મુરખોના (ઉઠ) તર્કને ઢાંકી દેનારા ॥
 અને જેની છાતી પોહોલી ઢાલ જેવી છે ॥ મુખના ઢગલા
 રૂપ છે ॥ અને આ જગતને ઢાલી નાંખનાર અર્થાત્
 નાશ કરનારા અને દેવતાઓના (મઢ) મહેલોનો પળ
 ઢાંકણ રૂપ અર્થાત્ રક્ષણ કરનારા ॥ અને અંતે પાડીને
 કાઢનારા પળ એજ અને રજનો ઢગલો કરનારા મતલબ
 કે પરમાણુંના જથ્થા રૂપે કરનારા ॥ અને ભવજલમાં
 (ઢબવું) તરવાનું મળાવનાર ॥ અને ધર્મની ઢાલ રૂપ
 અર્થાત્ ધર્મનું રક્ષણ કરનારા ॥ અને બ્રહ્માનંદ સ્વામિને
 તારનાર ॥ ઢાક ઇટલે શાંખરાના શાંકને જેમ સહેજમાં
 પાડી નાંખે તેવી રીતે ॥ इत्यादि ॥ ૪ ॥ છંદ ॥ તરત
 તુરત્ત તિમરતર ॥ ત્રિભુવન તરલ તલ્લત્ત ॥ તારણ જન
 બુધ તન ધરત્ત ॥ તન મન હરત વિપત્ત ॥ તન હરત વિ
 પત્ત ॥ તોડ અમત્ત ॥ તત્વકહત્ત ॥ ત્રિનયન નત્ત ॥
 ત્રિયમુરનૃત્ત ॥ તનક હસત્ત ॥ તલ્લલ વજત્ત ॥ તવન
 કરત્ત ॥ તટ જલ મત્ત ॥ તક્ર હરત્ત ॥ તકત મુરત્ત ॥

तान लहत्त ॥ तनुत स्वमत्त ॥ तुनल उकत्त ॥ तवब्रह्म
 भ्रत्त ॥ तरत तुरत्त तिमरतर ॥ ५ ॥ ॥ अर्थ-अज्ञानरूपी
 अंधकारथी तरतने तरत तारनार ॥ अने त्रण भुवनना
 उत्तम तखतना अधिकारी ॥ मतलबके त्रण भुवनना
 राजा जनने तारनारा ॥ बुद्धा अवतार धरनारा ॥ अने
 माणसोना शरीरनी अने मननी विपत्तिने हरनारा भ-
 गवान छे ॥ तननी विपत्ति हरेछे अने खोटा मतने तोडे
 छे ॥ अने तत्व एटले सार ज्ञानना कहेनारा अने जेना
 आगल त्रण नेत्रवाला महादेवजी पण नमेछे ॥ अने
 देवनी स्त्रियो नाच करेछे ॥ अने लगार हस्तें मोढे ताल
 बजावी स्तुति करेछे ॥ अने जमुनांजीना जलने कांठे
 उन्मत्त थईने जे भगवाने गोपीकाओनी छाशनुं हरण
 कर्युं ॥ अने ते भगवाननी सुरतने गोपिकाओए ताकीने
 तान लइने गान कर्युं ॥ ते भगवाने पोतानो मत विस्ता
 र्यो ॥ अने तेज रीति जेने मल्या तेना आगल वाणी
 कही ॥ एवा हे भगवान ब्रह्मानंद स्वाभि कहेछे के हुं तमा
 रो दास छुं ॥ अज्ञानरूपी अंधकारथी तरतने तरत ता
 रनार ॥ इसादि ॥ ५ ॥ ॥ छंद ॥ थिर समरथ्य थान
 थिर ॥ थकत शेष गुण कथ्य ॥ थिर चर प्रेरक अकल
 थल ॥ थट हटवण बल हथ्य ॥ थट हटवण हथ्य ॥
 थान परथ्य ॥ थंभ जगथ्य ॥ थूल तनथ्य ॥ थाप सुप-
 थ्य ॥ थानिं भरथ्य ॥ थित शुभ कथ्य ॥ थाह न गथ्य

॥ થન વક્રિ મધ્ય ॥ થૂક વિશ્વધ્ય ॥ થીર સુણધ્ય ॥
 થનક નચધ્ય ॥ થડ મુન મધ્ય ॥ થલ જલમધ્ય ॥
 થોમ વ્રહ્મધ્ય ॥ થિર સમરધ્ય થાન થિર ॥ ૬ ॥
 ॥ અર્થ—જે ભગવાન સદા સ્થિર એટલે અચલ છે અને
 સમર્થ છે ॥ અને જેનું રહેવાનું ઠેકાણું અક્ષરધામ તે પણ
 સ્થિર છે ॥ અને જેના ગુણ કહેતાં શેશનાગ પણ થાકી
 જાય છે સ્થાવર જંગમ પ્રાણિયોને પ્રેરણા કરનારા ॥
 અને જેનું સ્થાન કલાય નહીં એવું છે ॥ અને જેના હાથ
 એવા વલિયા છે કે અસુરોના મોટા થડને પણ હઠાવે
 ॥ મોટા ઠાઠને હઠાવે ॥ એવા હાથવાળા છે ॥ અને જેનું
 સ્થાનક માયાથીપર છે ॥ અને જગતના સ્થંભરૂપ છે ॥
 મતલબ કે જેને આધારે જગત રહ્યું છે ॥ અને જેનું શ-
 રીર પુષ્ટ છે ॥ અને સારા પંથનું સ્થાપન કરનારા ॥
 ॥ ભરત રાજાના સ્થાનકમાં એટલે ભરતચંદમાં જેનાં
 રૂઢાં વચન પ્રખ્યાત રહ્યાં છે અને જેની ગાથાઓનો
 પાર નથી ॥ અને જેણે પૂતનાના સ્તનને મધ્યાં એટલે
 ચૂંચી લીધાં ॥ અને તે સ્તન ઉપર જે વિશ્વ ચોપડીને
 આવી હતી તે થુકી કાઢ્યું ॥ જે ભગવાને સ્થિર રહીને
 ગોપિયોનાં ગીત સાંભળ્યાં ॥ અને વલી થનક થનક
 નાચ્યા ॥ અને જે ભગવાન પૃથ્વી અને આકાશના થડ
 રૂપ છે અને થલની અને જલની સાથે પણ રહે છે તે
 ભગવાને બ્રહ્માનંદ સ્વામિનો હાથ થોભ્યો એટલે જ્ઞાલ્યો

॥ जे भगवान सदा स्थिर एटले अचल छे ॥ इसादि
 ॥ ६ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ दोष अरह दिल दमन ॥ दुक्कीन
 दहन दरह ॥ दुर्गनिवास दिनेश दुनि ॥ दत्त स्वमत
 बेहद ॥ दत्त स्वमत बेहद ॥ दमत प्रमद ॥ इशत प्रवद
 ॥ दुक्त दहद ॥ दाम सुखद ॥ दिल बुधिप्रद ॥ दूर
 कुमद ॥ दूष्ट दुखद ॥ दांनि मरद ॥ दुरमति
 छद ॥ दरिद हरद ॥ दीन वरद ॥ दलण दरद
 दिसि धरद ॥ दास ब्रह्मद ॥ दोष अरह दिल दमन ॥
 ७ ॥ ॥ अर्थ—दिलदमन एटले मनमथ अर्थात् कामदेव
 आदिकना दोष एटले विकारने टालनारा ॥ पापरूपी
 दरदने बालनारा ॥ गढ़पूरमां रहेनारा ॥ अने दुनियाना
 मूर्यरूप ॥ तेमणे हद वगरनो पोतानो मत विस्तारी दीधो
 पोतानो मत बेहद विस्तारी दीधो ॥ अने जनोना प्रमादने
 दम्यो एटले मटाड्यो ॥ तथा प्रकर्ष रीते एटले उत्तम रीते
 (वदतां) भाषण करतां देखाया ॥ अने पापने बाल्युं अने
 पोताना दासने सुख दीधुं ॥ तथा मनमां बुद्धि आपी ॥
 अने खोटा मदन एटले गर्वने दूर करयो ॥ अने दुष्टने
 दुःख देनारा ॥ दान करवामां अथवा व्रजमां दाण
 लेवामां समर्थ ॥ अने खोटी बुद्धिने छेदनारा ॥ दरिद्र
 हरनारा ॥ गरिबने वरदान आपनारा ॥ पीडाने दलनारा
 एटले तोडनारा कांतिना धरनारा ॥ अने
 ब्रह्मानंद स्वामि जेनो दाम छे एवा भग-

વાન છે ॥ દિલદમન એટલે મનમથ અર્થાત્ કામદેવ આ
 દિકના દોષ એટલે વિકારને ટાલનારા ॥ ઇસાદિ ॥
 ॥ છંદ ॥ ॥ ધર્મ ધુરંદ્ર ધરનિધર ॥ ધર્મનંદ વપુ શુદ્ધ
 ॥ ધર વ્રત દૃઢ ઊર ધ્યાન ધર ॥ ધન ધન તનું ધર બુદ્ધ
 ॥ ધન ધન તનું બુદ્ધ ॥ ધર્મ વિશુદ્ધ ધરની પ્રબુદ્ધ ॥
 ॥ ધ્વંસ વિરુદ્ધ ॥ ધ્વેસી અબુદ્ધ ॥ ધ્યાત વિબુદ્ધ
 ॥ ધાવ ઊરુદ્ધ ॥ ધૌત પટુદ્ધ ॥ ધડક અઘુદ્ધ ॥ ધ્રત
 મત ઉદ્ધ ॥ ધ્વનિત અધુદ્ધ ॥ ધર ઊર મિદ્ધ ॥ ધનુષ
 ધરુદ્ધ ॥ ધસત ગમુદ્ધ ॥ ધર વ્રહ્મ મધ્ધ ॥ ધર્મ ધુરં-
 દ્ધ ધરનિધર ॥ ૮ ॥ ॥ અર્થ-ધર્મનું ધુંસરૂં ધરનારા
 અર્થાત્ ધર્મના આગેવાન ॥ તથા પૃથ્વીના ધારણ ક-
 રનારા ॥ અને ધર્મદેવના પુત્ર જેનું શરીર શુદ્ધ એટલે
 અમાયિક છે એવા ભગવાન ॥ અને દૃઢ વ્રતને ધરનારા
 ॥ જોગિયો જેનું ધ્યાન મનમાં ધરે છે એવા અને બુ-
 ધ્ધાવતાર ધરનારા ॥ ભગવાનને ધન્ય છે ॥ ધન્ય છે ॥
 બુદ્ધાવતાર ધરનાર ધન્ય છે ॥ ધન્ય છે ॥ જેનો વિ-
 શેષ શુદ્ધ ધર્મ છે ॥ પૃથ્વીના લોકોને બોધ આપ્યો
 ॥ અને વિરુદ્ધ મતનો નાશ કર્યો ॥ અને જે અજ્ઞાની
 છે તે તે ભગવાનના દ્વેષિ થાય છે ॥ અને જે જ્ઞાની છે
 તે ધ્યાન કરે છે અને તે ઝંચી ગતિયે ધાય છે ॥
 એટલે, જાય છે ॥ તે ભગવાને ધોણાં વસ્ત્ર પ-
 હેસ્યાં છે ॥ અને જેનાથી અઘ એટલે પાપ ધડકે છે

अथात् वीएछे ॥ ते भगवाने उध्व मतनुं धारण करयुं
छे ॥ अने जगतमां जेने विषे अधध एवी आश्चर्य ध्वनि
कहेवाय छे ॥ अने सिद्ध पुरुषो अंतःकरणमां जेनुं ध्यान
धरे छे ॥ रामकृष्ण रूपे धनुष धारण करीने अथवा
चरणारविंदमां धनुषनुं चिन्ह धारण करीने (गो) पृथ्वी
मध्ये धस्या ॥ एवा भगवाननुं ब्रह्मानंद स्वामि ध्यान
धरेछे ॥ धर्मनुं धुंसरुं धरनारा ॥ इत्यादि ॥ ८ ॥

॥ खट विधानी कवित ॥

॥ १. पीक २. कंज ३. कीर ४. कुरंग ५. भ्रंग ६. शशि शो
भा ॥ १. कंठ २. मुख ३. नाक ४. नेत्र ५. भ्रंज ६. भाल लेखीये
॥ १. वसंत २. शरद ३. हिम ४. शशीर ५. मधुप ६. दुज ॥
१. अंब २. अंबु ३. बिंब ४. पब्ब ५. कंज ६. संज पेखीये ॥
१. ब्रही २. वात ३. व्रीड ४. वक्र ५. वाद स्वाद ६. राह ग्राह
१. जोर २. भोर ३. ठोर ४. दोर ५. कोर ६. गोर रेखीये ॥
१. क्रीड २. क्रांत ३. कुंज ४. कृष्ण ५. कोश ६. सदोश कीन
॥ ब्रह्मानंद राधे तन स्वाधे खट देखीये ॥ १ ॥ ॥ अर्थ—रा
धीकाजीना छ अंगने छ प्रकारनां विशेषणवाली उपमा-
ओ आपी होय ते खट विधानी कवित कहेवाय ॥ १.
कोयल ॥ २. कमल ॥ ३. पोपट ॥ ४. हरण ॥ ५. भमरो
॥ अने ॥ ६ ॥ चंद्रना जेवी शोभा धरनारा ॥ १. राधि-
काजीनो मधुरो कंठ ॥ २. मुख ॥ ३. नाक ॥ ४. नेत्र ॥
५. भमर ॥ अने ६. कपाल गणाय ॥ १. ते कोयल वसंत

ઋતુની ॥ ૨ કમલ શરદઋતુનું ॥ ૩ પોપટ હેમંતઋતુનો
 ॥ ૪ હરણ શિશિરઋતુનું ॥ ૫ ભમરો વસંતઋતુનો ॥
 અને ૬ ચંદ્ર વીજા પશ્વવાડિયાનો અરથો અને જેનાં શિંગ
 નીચાં હોય એવો ॥ ૧ વલી તે કોયલ આંવામાં રહેલી
 ॥ ૨ કમલ પાણીમાં રહેલું ॥ ૩ પોપટ પાકા *ધીલોડા
 ઉપર રહેલો ॥ ૪ હરણ પર્વતમાં રહેનારું ॥ ૫ ભમરો
 કમલમાં રહેનારો અને ॥ ૬ ચંદ્ર સાંજની વચ્ચેનો દેખીએ
 એવા ॥ ૧ વલી તે કોયલ વિરહી એટલે ટોલાથી વિજો-
 ગી થયેલી ॥ ૨ કમલ વાયુથી હાલતું ॥ ૩ પોપટ લજ્જા
 પામેલો ॥ ૪ અને હરણ વાંકી દષ્ટિ કરતું હોય ॥ ૫
 ભમરો ॥ ગણગણાટ કરતો તથા સ્વાદ લેતો હોય તેવો
 ॥ અને ૬ ચંદ્ર અરથો રાહુએ ગળેલો હોય તેવો ॥ વલી
 ૧ તે કોયલ જોરથી બોલતી હોય તેવી ॥ ૨ કમલ પ્રભા
 તના પહોરનું ॥ ૩ પોપટ એક ઠેકાણે બેઠેલો ॥ ૪ હરણ
 દોડતું ॥ ૫ ભમરો કમલનીકોર ઉપર ભમતો ॥ અને
 ૬ ચંદ્ર ચિતરેલા અર્ધ ગોળ જેવો ॥ અને તે કોયલ
 ક્રીડા કરતી એટલે રમતી હોય તેવી ॥ ૨ કમલ મનો-
 હર ॥ ૩ અને પોપટ જાડના ઝુંડમાં રહેલો ॥ ૪ હરણ
 કાલીયાર જાતનું ॥ ૫ ભમરો કમલના દોડા ઉપર ભ-
 મતો હોય એવો ॥ ૬ અને ચંદ્ર દોષા રાત્રિ સહિત હોય
 એવો બ્રહ્માનંદ સ્વામિ કહે છે કે રાધિકાજીના શરી-

* થોલું.

रमां उपर लखेलां छए वानां स्वाधिन करेलां देखाय
छे ॥ १ ॥

॥ अष्ट विधानी कवित ॥

॥ १ गज २ हंस ३ रंभ ४ मिथ, ५ मुक ६ मृग
७ अली ८ व्याल ॥ १ ग २ ति ३ जंघा ४ लंक ५
नाक ६ द्रग ७ भृह ८ वेनीहे ॥ १ मद् २ मान ३ म-
ध्य ४ मारु ५ मुन ६ संजु ७ मत ८ मिळे १ धी २ र
३ दल ४ बल ५ फल ६ चल ७ दल ८ फेनीह ॥
१ मास २ श्वेत ३ स्युल ४ शूर ५ शोभ ६ शंक
७ बंक ८ छेल ॥ १ रू २ प ३ रस ४ रोश ५ तोष
६ फु ७ वं ८ मुरधेनीहे ॥ १ नी २ क ३ नन्न ४ छोट
५ मुद्द ६ मोद ७ भकरंद ८ मनी ॥ ब्रह्मानंद राधे
ब्रजचंद मुखदेनीहे ॥ २ ॥ ॥ अर्थ-राधिकाजीना आठ
अंगने छ छ प्रकारनां विशेषणवाली उपमाओ आपी
होय ते अष्टविधानी कवित कहेवाय ॥ १ हाथी २
हंस ३ केल ४ सिंह ५ पोपट ६ हरण ७ भमरो अने
८ सरपना जेवां राधिकाजीनां अंग छे ॥ तेषां १
हाथी २ हंस ए वेना जेवी चाल ३ केलना जेवी
झांघ छे ॥ ४ सिंहना जेवो केडनो लांक ॥ ५ पो-
पटना जेवुं नाक ॥ ६ हरणना जेवां नेत्र ॥ ७ भ-
मरानी पांखोना जेवी भमरो ॥ अने ८ सर्पना जेवो
चोटलो छे ॥ १ ते हाथी मदमां आवेलो ॥ २ हंस

માન મરોવરનો ॥ કેલ મધ્ય ભાગની ॥ ૪ સિંહ
 મારવાડ દેશનો ॥ ૫ પોપટ મૌન એટલે બોલ્યા વગર
 રહેલો ॥ ૬ હરણ મુંદર ॥ ૭ ઉન્મત્ત થયેલો ભમરો
 ॥ ૮ અને સર્પ મલયાચલ પર્વતમાં રહેનારો ॥ વલી તે
 ૧ હાથી ૨ હંસ ધીરે ધીરે ચાલનારા હોય તેવા ॥
 ૩ અને કેલ લગાર વલેલી ॥ ૪ સિંહ ચાલતાં પા-
 લો વલતો હોય તેવો ॥ પોપટ ફાલ ઉપર બેઠો હોય
 તેવો ॥ ૬ હરણ ચંચલ હોય તેવું ॥ ૭ ॥ અને ભ-
 મરો કમલની પાંચડી ઉપર, ભમતો હોય તેવો ॥
 ૮ અને સરપ ફેળ ચડાવેલી હોય તેવો ॥ વલી તે
 ૧ હાથી કાલો ॥ ૨ ને હંસ ધોલો ॥ ૩ કેલ જાડી
 ॥ ૪ સિંહ શૂરો ॥ ૫ પોપટ શોભીતો હોય તેવો
 ॥ ૬ હરણ શંકા પામેલું એટલે ત્રાસ પામેલું હોય તેવું
 ॥ ૭ ભમરો પાંચો વાંકી રાખી હોય તેવો અને ૮
 સરપ હેલાઈમાં ડોલતો હોય એવો ॥ વલી તે ૧ હાથી
 ૨ હંસ રૂપાલા હોય એવા ॥ ૩ અને કેલ રસ ભરેલી ॥
 ૪ સિંહ ક્રોધિત થયેલો ॥ ૫ પોપટ સંતોષ પામેલો ॥
 ૬ હરણ અને ૭ ભમરો ફરતાં હોય તેવાં ॥ અને ૮
 સરપ (સુરભિ) ચંદનના ક્ષાડમાં રહ્યો હોય એવો ॥
 વલી તે ૧ હાથી અને ૨ હંસ મનોહર હોય તેવા ॥
 ૩ કેલ નમેલી ॥ ૪ સિંહ નાની ઉમરનો ॥ ૫ પોપટ
 થુદ્ધ જાતિનો ॥ ૬ હરણ આનંદમાં હોય તેવું ॥ અને

७ भयरो सुगंध लेतो होय तेवो ॥ ८ मर्प माथे मणी
होय तेवो ॥ ब्रह्मानंद स्वामि कहेले के एवा अंशवा अं
राधिकाजी श्री कृष्ण भगवानने मुख देवावा अंछे ॥ २ ॥

॥ समझ्या प्रश्न दोहा ॥

॥ राखे कर दरपन लीयो ॥ निज मुख कौतक जान ॥
तव प्यारी श्रीकृष्णकुं ॥ पृच्छत प्रश्न मुआन ॥ १ ॥

॥ अर्थ-राधिकाजीए पोताना मुखारविंद विषे कांड
कौतक जेवुं जाणीने ते जेवा मरु हाथमां दर्पण लीयुं
॥ सारे (आन) अन्य एटले बीजी बहाली सविये
श्रीकृष्ण भगवानने पृच्छयुं के ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

॥ भक्षवदन दौ निकटहे ॥ अंतर क्षुधा मरोप ॥ चाह
अति खावत नही ॥ कहो भाम कुण दोष ॥ २ ॥ अर्थ-
खावानो खोराक अने मुख वे पामे पामे छे ॥ अने
मनमां भूख अने तेथी थएली रीस पण छे ॥ तेथी
खावानी चाहना घणी छे तो पण हे भगवान कहो के
शा दोषथी ते खातुं नथी ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ विंव अनार
तियार दौ ॥ कीर अशीर सुहात ॥ हंस भक्ष विंव
भानसें ॥ निज भखनाहिं चखात ॥ ३ ॥ ॥ अर्थ-सारे
उत्तर आप्यो के पाकुं घोलुं अने दाडम ए बेय तैयार
छे अर्थात् पाका घोला जेवा राता राधिकाजीना होठ
छे ॥ अने दाडमना बीज जेवा दांत छे ॥ जेनी पामे

નાક રૂપી પોપટની ચાંચ છે ॥ અને તે પોપટ મૂલ્યો
 અને અધીરો સ્થિર થઈને રહેલો શોભે છે ॥ પણ તે
 વન્ને હંમનો મક્ષ હોય એવું માન આવવાથી પોતાનો
 મક્ષ છતાં ચાચી શકતું નથી ॥ અર્થાત્ હોઠને રાતા
 કમલની પાંચડી જેવા દેખે છે ॥ અને દાંતને મોતી
 જેવા દેખે છે ॥ અને કમલની પાંચડી તથા મોતી તે
 વન્ને હંમનો સ્વોરાક છે ॥ એમ જાણીને પોપટ સ્વાનો
 નથી ॥ ૩ ॥

॥ અથ શબ્દાલંકાર સર્વયા ॥

॥ યા મગરી મગરી તગરી ॥ નગરી નગરી મગરી વગરીહે ॥
 વાટ પરી ડગરી ડગરી સ્વગરી સ્વગરી કગરી અગરીહે ॥
 મીસ મરી ગગરી પગરી ॥ પગરી ઘુવરી ડગરી મુ ગરી
 હે ॥ વ્રહ્મમુનિ દ્રગરી દગરી ॥ લગરી લગરી ફગરી
 રગરીહે ॥ ૧ ॥ ॥ અર્થ—એક સમે ગોપિયોએ જમોદાજી
 આગલ જઈને ફરિયાદ કરીકે તમારો બાલક વ્રંદાવ-
 નમાં અમને હેરાન કરેછે ॥ માટે તમે વનમાં જઈને તેને
 ઠવકો થો તે માંભલીને જમોદાજિયે વનમાં જઈને ઠવ-
 કો દીધો ॥ સારે ભગવાને ગોપિયોનો વાંક કાઢીને
 કહ્યું ॥ તેનો અર્થ આ નીચે લખેલા સર્વૈયામાં છે ॥
 આ મારગે મારગે મેં તેઓને તગડી તેઓ નગરીમાં પેઠી
 નહીં ॥ અને તે સઘલી (વગડી) સ્વોટી છે ॥ તે આંહી-
 થી રસ્તે પડીને ડગલું ડગલું ભરતી હતી ॥ પણ તે પં-

खीणी मानी पंखीणी जेवी अने कागडीओसां आगळी
एटले आगल वधे एवी छे ॥ माथे गागर भरेली हती ॥
अने पगलां भरती हती ॥ तेना पगनां झांझरनी घुघरी
उछलीने (भू) भोंय पडी गई छे ॥ ब्रह्मानंद स्वाभि
कहे छे के भगवाने कहुं के ते नेत्रनी दगावालीने
फगी जातां लगार लगार में (रगडी) हेरान करी
छे ॥ १ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ में अटकी अटकी नटकी
॥ चटकी चटकी मटकी फटकी हु ॥ घुंवटकी घटकी
रटकी ॥ लटकी लटकी तटकी कटकी हु ॥ ज्यां
पटकी थटकी थटकी खटकी खटकी हटकी हटकी
हु ॥ ब्रह्म लज्या झटकी झटकी वटकी वटकी झट-
की झटकी हु ॥ २ ॥ ॥ अर्थ-ये तेओने अटकावी
अटकावीने राखवा मांडी पण ते टकी नहीं अर्थात्
रही नहीं अने चटक चटक चालवा मांडीने मटकी
पोतानी मेले फोडी नांखी ॥ तेमनी पोताना घुंव-
टानी शरीरनी के बोलवानी के चोटलावी लट
जे केडना किनारा उपर लटकी रहेली तेनी
॥ तथा जेवी रीते लूगडांना थाट माटनी तथा
गोवाळानो थट मल्यो हतो तेनी पण खटक ए
टले फिकर तेमना मनमांथी हटी गई ॥ तेमज
बीजा चरणसां कहेली वावतेनी खटक पण ह-
टी गइ ॥ ब्रह्मानंद स्वाभि कहे छे के भगवाने कहुं

के ते गोपियोए पोतानी लाज खंखेरी खंखेरीन व-
 टकी वटकीने एटले घुस्मे थइ थइने जती रही जती
 रही ॥ २ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ जोवनमें वनमें दिनमें
 ॥ घनमें तनमें कनमें मनमें जुं ॥ माखनमें खनमें न-
 नमें ॥ धनमें धनमें उनमें गनमें जुं ॥ आपनमें पन-
 में रनमें ॥ छनमें छनमें जनमें अनमें जुं ॥ ब्रह्म-
 मुनि फनमें थन ॥ भेडनमें भनमें भनमें चनमें ज्युं
 ॥ ३ ॥ ॥ अर्थ—ते गोपियो भर जुवानीमां व्रंदावन
 मां दिवसमां अने वरसाद चढेलो होय तेवाभां श-
 रीरमां कानमां अने मनमां अने माथे माखणनां गो-
 रम लीधेलां तेनी भगरूरीमां एक क्षण मात्र पण
 नमती नहोती ॥ अने वली एमना गणमां एटले ज-
 थामां गायोना धणना तथा पैशाना गर्वमां तेओ
 नमती नहोती ॥ वली तेओअे आप आपमां प्रतिज्ञा
 लीधेली तेमां ते रणवगडामां क्षण क्षणवारमां गोवाल
 आदिक माणसोमां तेओ अनम्र जणाती हती ॥ ब्र-
 ह्मानंद स्वाभि कहे छे के भगवाने कहुं के जेमफणी
 एटले नागना जथामां स्थानक करनारा (मेड) दे-
 डका भणवामां एटले फक्त बोलवानाज भानमां
 अने चणवाना एटले चारो करवाना भानमां ॥ अ-
 नम्र रहे तेम तेओ अनम्र हती ॥ ३ ॥ ॥ सवैया ॥
 मुखपें अलके झलके ललके ॥ व्रज त्रिय मीलकें क-

लके कल कही ॥ कुंडलके तलके चलके मनु मीन-
हुके बलके हलकेही ॥ नारि चली जलके छलके ॥
गलके नलके बलके दलकेही ॥ ब्रह्ममुनि पलके फ-
लके भलके ॥ सलके डलके ढलकेही ॥ ४ ॥
॥ अर्थ-तेओना मुख उपर लट झलकती अने लट-
कती हती ॥ एवी ब्रजनी स्त्रियो मलीने कलकल क-
लकल करवा लागी ॥ एना तुल्य एटले बे सरखां
कुंडलना चलकाटमां मानीए के मांछलां गोल बल्यां
होय ॥ अने हालतां होय एवी शोभा हती ॥ ते
नारियो पाणी भरवाना छलथी एटले कपटथी चाली
॥ तेना गलानी नली बलीने दिलनी बात कहेती
हती ॥ ब्रह्मानंद स्वामि कहे छे के भगवाने कहुं जे
एनी आंखनी पांपणोनं फलकवुं एटले फरकवुं भली
रीतनुं हतुं ॥ अने आंखना सलकारा थता हता ॥
डोला डलकता हता ॥ अने भमरो ढलकती हती
॥ ४ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ नहीं बात पहांनयकी पयकी ॥
लयकी लयकी वयकी वयकीरी ॥ या तयकी तयकी
अयकी ॥ मयकी मयकी भयकी भयकीरी ॥ हे ग-
यकी गयकी गयकी सयकी सयकी वयकी वयकीरी
॥ जो खयकी कयकी कयकी ॥ कहे ब्रह्ममुनि जय-
की जयकीरी ॥ ५ ॥ ॥ अर्थ-एनी बात पाणी भ-
रवानी के दूध वेचवा जवानी नहीं पण तेमने ले

લાગેલી ॥ તે લેની ને લેની તથા તેની જુવાનીની ઉ-
 મરની ને ઉમરનીજ વાત હતી ॥ જે સ્ત્રિયો તાકી
 તાકીને આવેલિયો તેની માયાની ને માયાની અર્થાત્
 કપટની ને કપટની તથા ભયની ને ભયનીજ વાત
 હતી ॥ વલી તેના વાપને ઘેર હાથી ને ઘોડા હોય તે-
 ની તથા વલદને ગાયો સેકડે સેકડાં હોય તેની મગરુ-
 રીથી વહેકી વહેકી ગઈ હોય એવી હતી ॥ બ્રહ્માનંદ
 સ્વામિ કહે છે કે ભગવાને કહ્યું જે એમાંની મેં કોયની
 કોયની (ક્ષયની) હાની કસ્યાની વાત જો કોઈ કહે-
 તી હોય તો તેમની જીતની ને જીતની કહેવાય ॥ ૫ ॥
 ॥ મંવેયા આંખુવરી સુવરી લુવરી દુવરી દુવરી બુવરી
 ગુવરી છે ॥ હે જું વરી જુવરી લુવરી ॥ હુવરી હુવરી ઉ-
 વરી તુવરી છે ॥ મેં બુવરી શુવરી ભુવરી નુવરી ॥ નુવરી
 હુવરી ફુવરી છે ॥ બ્રહ્મમુનિ થુવરી મુવરી કુવરી ॥ કુ-
 વરી કુવરી કુવરી છે ॥ ૬ ॥ ॥ અર્થ-એની આંખો
 વડી સૂવ લવાડ છે અને શરીરે દુવલી દુવલી તથા
 કોઈ બોવડી અને ગોવરી છે ॥ તે વડી જવરી છે અને
 છોવામાં એટલે મને અડવા આવવાને તો જેમ દુશાવી
 દુશાવીને તુંવડી રાખિયે ॥ તો પણ ઉછલી આવે તેમ
 આવતી હતી ॥ તે બોવડીને મેં પૃથ્વી તરફ શોકાવી
 સારે તે ફૂવડ નવલી નવલી થઈને ઝુંબી રહી ॥ બ્રહ્મા-
 નંદ સ્વામિ કહે છે કે ભગવાને કહ્યું જે તેઓ થુંકારવા

योग्य अने बडी मां बलेली ॥ (कुंबरी) बालकी ए
बालकी पण (कुबडी) बांकी बांकी छे ॥ मतलब के
एओनोज बथो बांक छे मारो बांक नथी ॥ ६ ॥

॥ मिद्धेश्वर महादेवजीनुं सपाखरु गीत ॥

॥ धरा उपरा अगाध धरा ॥ हरानरा रूप घरा ॥
अमरा नमरा कंध भ्रमरा अमीर ॥ करा खेम गेम
हरा कामरा विनाशकरा ॥ भरा भरा क्रीत भरा बुधिरा
गंभीर ॥ १ ॥ अर्थ-तेमिद्धेश्वर महादेवनी मूर्तिजनागठना
मंदिरभां पधरावेली छे ॥ ॥ पृथ्वी उपर जेना घर
अपारछे एवा हे हर एटले महादेव नरनुं रूप धरवा
वाला ॥ अने देवताओ जेना आगळ पोतानां कांध
नमावेछे ॥ तथा मर्भना जाणनारा अमीरो पण नमा-
वेछे ॥ तमे क्षेम करनारा दुःखना हरनारा ॥ अने काम
देवना नाशकरनारा ॥ अने भरी भरीने जगतमां कीर्ति
भरनारा अने गंभीर बुद्धिवालाछो ॥ १ ॥ ॥ गीत ॥
॥ सागरा रागरा लेत नागरा श्रेगार सरा ॥ आगरा
सागरा चिन भागरा अथाह ॥ ज्यागरा अधीश रुद्र
सदा ध्यान प्रजागरा ॥ बाघरा अंबरा वेण बागरा
सुवाह ॥ २ ॥ अर्थ-तमे रागना समुद्रछो अने तमे चतुर
पणार्थी सारो शणगार धरी ल्योछो ॥ अने सागीओमां
आगेबानछो तमारा नशीबना चिन्ह अपार छे ॥ अने हे
रुद्र तमे यज्ञना अधिष्ठाताछो ॥ अने निरंतर ध्यानना धर-

નારા ઉત્તમછો ॥ અને વાઘનું ચર્મ ધરનારા તથા પોતાના
 વચન રૂપી વાગને સારી રીતે વહન કરોછો ॥ અર્થાત્ કહેલાં
 વચન પાલોછો ॥ ૨ ॥ ગીત ॥ ડંમરા મ્રમરા ફરા દેશ્વ ભેશ્વ
 આડંબરા થરથરા અથરાહો ડરા કાલ ઠીક-જરા જીત
 જામ જરા અજરા હલાહલ જરા ॥ જરાતરા અંગપરા
 નાં જરા નજીક ॥ ૩ ॥ ॥ અર્થ-તમારા ડમરુના શબ્દ
 ના મર્મથી ફરીને તમારા ભેશ્વનો આડંબર દેશ્વને ॥
 કાલ અસ્થિર થઈને થરથર ધ્રુજે છે ॥ અને ડરે છે તે
 ઠીક છે ॥ તમે જરા એટલે બુઢાઈને જીતનારા ॥ જામ
 એટલે રાજાછો ॥ તથા ન જીરવાય તેને જીરવી રાશ્વ-
 નારા જેમકે હલાહલ ફેરને જીરવનારાછો ॥ અને ત-
 મારા અંગ ઉપર જરાતરા એટલે લગાર પળ (જરા)
 બુઢાઈ (નજીક) પાસે આવી શકતી નથી ॥ ૩ ॥
 ॥ ગીત ॥ વરા દેણ સતીવરા શેશ્વરા સરીત વરા ॥ પરવરા
 જોગેશ્વરા ઉચરા અપાર ॥ સીરા ગંગ નીરશ્વરા મુનિબ્રહ્મ
 અનુસરા ॥ સિધેશ્વરા દેવશ્વરા ઉધરા સંસાર ॥ ૪ ॥ ॥
 અર્થ-હે વરદાનના આપનારા ॥ પાર્વતિના સ્વામિ તમા-
 રી જડના તોરારૂપે ગંગાજી છે ॥ અને અપાર જોગેશ્વરો તમ-
 ને સર્વોપરી કહે છે ॥ અને તમારા મસ્તક ઉપરથી ગંગાનું જલ
 ફેરે છે ॥ અને બ્રહ્માનંદ સ્વામિ તમને અનુસરે છે ॥ અર્થા-
 ત્ તમે જેનું ધ્યાન કરો છો તેનું તે ધ્યાન કરે છે
 ॥ અને હે સિધ્ધેશ્વર દેવ તમે સંસાર સાગરમાંથી ઉ-

ध्यार करनारा खरा छो ॥ ३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पार-
 वती पति अति प्रबल ॥ विमल सदा नरवेश ॥ नंदि
 संग उमंग नीत ॥ स्मरत जेहि गुण शेष ॥ १ ॥
 ॥ अर्थ-हे पार्वतीना स्वामि महाबलवान जेना सदा
 निर्मल पुरुषनो वेश छे ॥ पोठियानी साथे निते आ-
 नंदमां रहो छो ॥ अने जेना गुण शेषनाग स्मरण
 करे छे ॥ एवा तमे छो ॥ १ ॥ ॥ त्रिभंगी छंद ॥
 ॥ समरत जेहि शेषा ॥ दिपत सुरेशा ॥ पूत्र गणेशा
 ॥ निज प्यारा ॥ ब्रह्मांड प्रवेशा ॥ प्रसिध परेशा
 अजर उमेशा ॥ उदारा ॥ बेहद नर वेशा ॥ कृत शिर
 केशा टलत अशेशा अघरेशा ॥ जय देव सिधेशा
 ॥ हरन कलेशा ॥ मगन हमेशा माहेशा ॥ १ ॥ ॥
 अर्थ-शेषनाग जेनुं स्मरण करे छे ॥ अने बधा
 देवोना ईस रुपे तमे दीपो छो ॥ अने पोतानो बहालो
 पूत्र गणपीत छे ॥ तमे प्रसिध परमेश्वर छो ॥ अने
 ब्रह्मांडमां प्रवेश करो छो ॥ हे उमाना ईश तमे अ-
 जर एटले घडपण रहीत छो ॥ अने उदार मनवा-
 ला छो ॥ तमारो नरनो वेश बेहद छे ॥ अने माथे
 सुंदर जटा करी छे ॥ तमारा दर्शनथी कांई बाकी
 रहे नहीं ॥ एम पापनी रेखाओ टली जाय छे ॥ एवा
 हे सिधेश्वर देव तमारी झय थाओ ॥ तमे कलेशना
 हरनारा छो अने हे महेश्वर तमे सदा आनंदमां रहो

છો ॥ ૧ ॥ ॥ છંદ ॥ ભક્તન થટ ભારી ॥ હલક
 હજારી ॥ કનક અહારી ॥ સુખકારી ॥ શિર ગંગ
 સુધારી ॥ દૃઢ બ્રહ્મચારી ॥ હર દુઃખ હારી ॥ ત્રિપુરારી
 ॥ રહે ધ્યાન સુમારી ॥ બ્રહ્મ વિહારી ॥ ગિરજા
 પ્યારી ॥ જોગેશા ॥ જય દેવ સિધેશા ॥ હરન કલેશા
 ॥ મગન હમેશા ॥ માહેશા ॥ ૨ ॥ ॥ અર્થ-ભક્તોનો
 ખોર જમાવ જેની આગલ રહે છે એવા ॥ અને
 હલકમાં એટલે છોલમાં હજારો રીઢિના દેનારા
 ॥ અને હે સુખકારી તમે થતુરાનો આહાર કરો છો
 ॥ તમે મસ્તક ઉપર ગંગાજી થર્યા છે ॥ અને તમે દૃઢ
 બ્રહ્મચારી છો ॥ એવા અને દુઃખના હરનારા હે હર
 તમે ત્રિપુરાસુરના શત્રુ છો ॥ તમને ધ્યાનની સુમારી
 રહે છે ॥ અને ભવિદાનંદ બ્રહ્મમાં વિહાર કરો છો
 ॥ અર્થાત્ તેમાં મન પ્રવેશ કરો છો ॥ અને તમને પાર્વતી
 જી વહાલાં છે ॥ અને જોગિયોના ઈશ્વર છો એવા હે
 સિધેશ્વર દેવ ॥ ૨ ॥ ॥ છંદ ॥ ॥ કૈલાસ નિવાસી ॥
 જોગ અધ્યાસી ॥ રિધિ સિધિ દાસી ॥ પતિકાસી ॥
 ચિદ વ્યોમ વિલાસી ॥ હિત જુત હાસી ॥ રટત પ્રયા-
 સી સુખરાસી ॥ મુનિં સહસ્ર અઠ્યાસી ॥ કહિ અવિના-
 સી ॥ જેહિ દુઃખ ત્રાસી ॥ ઉપદેશા ॥ જય દેવ સિધેશા
 ॥ હરન કલેશા ॥ મગન હમેશા ॥ માહેશા ॥ ૩ ॥
 ॥ અર્થ-હે કૈલાસમાં રહેનારા તમે જોગનો અભ્યાસ ક-

રો છો અને રિધ્ધિ અને સિધ્ધિ એ વે તમારી ઢામિયો
 છે અને તમે કાશીપુરીના પતિ છો તમે ચિદાકાશમાં
 વિલાસ કરો છો અને તમારું હસવું ભક્તોના હિત એટલે
 કલ્યાણ યુક્ત છે અને હે સુખના રાણિ એટલે સમુદાય
 તપસ્વિઓ તમારું રટણ કરે છે અને અઘાશી હજાર
 રુષિઓ તમને અવિનાશી કહે છે અને જે દુઃસ્વથી ભય
 પામે છે તેઓને તમે ઉપદેશ કરો છો એવા હે સિધ્ધેશ્વર
 દેવ૦ ॥ ૩ ॥ ॥ છંદ ॥ ॥ ગૌરી નિત સંગા ॥ અતિ
 શુભ અંગા ॥ હાર મુયંગા ॥ શિર ગંગા ॥ રહવત નિજ
 રંગા ॥ ઉઠત અથંગા ॥ ગ્યાન તરંગા ॥ અતિ ચંગા ॥
 ઉર હોત ઉમંગા ॥ જય ક્રત જંગા ॥ અચલ અમંગા ॥
 આવેશા ॥ જય દેવ મિથેશા ॥ હરન કલેશા ॥ મગન
 હમેશા ॥ માહેશા ॥ ૪ ॥ ॥ અર્થ—તમારી સંગે ગિરજા-
 જી નિય રહે છે તેનું અંગ અતિશે સુંદર છે અને તમે
 સર્પના હાર પહેર્યા છે ॥ તથા મસ્તકે ગંગાજી ધર્યા છે
 ॥ તમે પોતાના આત્મ સ્વરૂપના રંગમાં રહો છો અને
 તમારા મનમાં જ્ઞાનના તરંગ અપાર ઉઠે છે તે અતિશય
 પવિત્ર છે તમે યુધ્ધમાં જ્યારે જય કરો છો ॥ ત્યારે મન-
 માં ઉમંગ થાય છે અને તમારો (આવેશ) પ્રવેશ અચલ
 અને અમંગ છે ॥ એવા હે સિધ્ધેશ્વર દેવ૦ ॥ ૪ ॥
 ॥ છંદ ॥ ॥ નાચત નિશંકા ॥ મૃગમદ પંકા ॥ ઘમ-
 ઘમ ઘમકા ॥ ઘુઘરુકા ॥ ઢોલૂકા ઢમકા ॥ હોવત

હંકા ॥ ડમડમ ડમકા ॥ ડમરૂકા ॥ રણતૂર રણંકા ॥
 ખેર ભણંકા ॥ મગન ઝળંકા ॥ મહરેશા ॥ જય દેવ
 મિથેશા ॥ હરન કલેશા ॥ મગન હમેશા ॥ માહેશા
 ॥ ૫ ॥ ॥ અર્થ-તમે નિઃશંક થઈને નાચો છો ॥ ત્યાં
 કસ્તુરીનો કાદવ થાય છે ॥ અને પગે ઘુચરાના ઘમઘમ
 ઘમકારા થાય છે ॥ ત્યાં હોલના ટમકારા
 અને મગના હુંકારા થાય છે ॥ અને ડમરૂ-
 ના ડંકા ડમડમ વાગે છે ॥ રણશીંગાના રણકારા
 થાય છે ॥ અને નોવતના મળકારા થાય છે ॥ તેના
 આકાશમાં ઝળકારા ડંડા થાય છે ॥ એવા હે મિથ્યે
 શ્વર દેવ ॥ ૫ ॥ છંદ ॥ ॥ મળિધર ગલ માલા ॥
 મૃપ મુજાલા ॥ શીશ જડાલા ॥ ચરિતાલા ॥ જગમૂલ
 પ્રજાલા ॥ શૃલ દયાલા ॥ જન પ્રતિપાલા ॥ જોરાલા
 ॥ ડગ ત્રિતય કરાલા ॥ દારફળાલા ॥ રહત
 કપાલા ॥ રાકેશા ॥ જય દેવ મિથેશા ॥ હરન કલેશા
 ॥ મગન હમેશા ॥ માહેશા ॥ ૬ ॥ અર્થ-તમારા ગલામાં
 સર્પની માલા છે ॥ હે લાંબા હાથવાળા રાજા માથે જડા-
 વાળા તમે ચરિત્ર કરવાવાળા છો ॥ આ જગતનું મૂલ
 વાલનારા એટલે નાશ કરનારા અને હાથમાં ત્રિમુલ
 વાળા અને પોતાના ભક્ત જનને પાલનારા અને બલવાળા
 છો ॥ તમારું ત્રીજું નેત્ર વિકરાલ છે ॥ અને તમારે સર્પ-
 ના દાર છે અને તમારા કપાલમાં ચંદ્રમા રહે છે ॥ એવા

હે સિદ્ધેશ્વર દેવ ॥ ૬ ॥ ॥ છંદ ॥ સ્વલકત શિર
 તીરા ॥ અદલ અમીરા ॥ પીરન પીરા હર પીરા ॥
 વિહરત સંગ વીરા ॥ ધ્યાવત ધીરા ॥ ગૌર શરીરા ॥
 ગંભીરા ॥ દાતાર રિધીરા ॥ બ્રાહ્મ બુધીરા ॥ કાંત મિ
 થીરા ॥ શિર કેશા ॥ જય દેવ સિધેશા ॥ હરન ક-
 લેશા ॥ મગન હમેશા ॥ માહેશા ॥ ૭ ॥ ॥ અર્થ-ત-
 મારા મસ્તક ઉપરથી ગંગાજલ સ્વલસ્વલ વહે છે ॥
 અને તમે અદલ હનસાફવાલા અમીર છો ॥
 પીરના પીર છો ॥ અને પીડાના હરનારા છો ॥ ત-
 મારી સાથે કેટલાક વીર વિહાર કરે છે ॥ ઇટલે
 ફરે છે એન ધીર પુરુષો તમારું ધ્યાન ધરે છે ॥ ત-
 મારું શરીર ગૌરા રંગનું છે એન તમે ગંભીર છો ॥
 તમે રિધિના દાતાર છો અને બુધિના જહાજ
 છો ॥ અને સિધિના સ્વામી છો ॥ અને તમારે
 મસ્તકે જટા છે ॥ એવા હે સિધેશ્વર દેવ ॥ ૭ ॥ ॥
 છંદ ની નર રૂપ બનાયા ॥ અકલ અમાયા ॥
 કાયમ કાયા ॥ જગરાયા ॥ તન કામ જલાયા ॥
 સાંવ સુહાયા ॥ મુનિ ઉર લાયા ॥ મન ભાયા ॥ સિ-
 થેશ્વર છાયા ॥ જન સુખ પાયા ॥ મુનિ બ્રહ્મ ગાયા
 ॥ ગુણ લેશા ॥ જય દેવ સિધેશા ॥ હરન કલેશા
 ॥ મગન હમેશા ॥ માહેશા ॥ ૮ ॥ અર્થ-તમે
 પોતાનું નર રૂપ બનાવ્યું છે ॥ તમે અકલિત

અને અમાયિક છો ॥ તમારી કાયા * અઘંડ રહેછે ॥
 અને તમે જગતના રાજા છો ॥ તમે કામદેવનું શરીર
 વાલ્યું હે સાંવ તમે શોભિત થયા ॥ મુનિજનોએ તમને
 અંતઃકરણમાં ધરયા ॥ અને તેઓના મનમાં તમે ગમ્યા ॥
 હે મિધેશ્વર દેવ તમારી છાયામાં તમારા જન સુખ પા-
 મ્યા ॥ બ્રહ્માનંદ મુનિયે તમારા લેશમાત્ર ગુણગાયા
 ॥ એવા હે મિધેશ્વર દેવ ॥ ૮ ॥ ॥ છપય ॥ ॥ જય
 જય દેવ મિધેશ ॥ શેશ નિશ દિન ગુણ ગાવે ॥ દ-
 રસ પરસ દુઃખ દૂર ॥ મૂર જન અંતર લાવે ॥ અણ-
 મય અકલ અપાર ॥ સાર સુંદર જગ સ્વામિ ॥ અ-
 ગણિત કીન ઉધાર ॥ નાર નર ચૈતન ધામી ॥ નર
 રૂપ ભૂપ મૂર્તિ નવલ ॥ નહિ સંખ્યા જેહિ નામકી ॥
 કહે બ્રહ્મભુનિ બલિહરિમં ॥ મિધેશ્વર જગ સામકી ॥ ૧ ॥
 ॥ ॥ અર્થ—હે મિધેશ્વર દેવ તમારી જય થાઓ જય
 થાઓ રાત અને દિવસ શેશ નાગ તમારા ગુણ ગાય
 છે તમારા દર્શનથી અને તમારા સ્પર્શથી દુઃખ દૂર
 જાયછે ॥ માટે દેવતાઓ અને માણસો તમને અંતરમાં
 સંભારેછે ॥ તમે નિર્ભય છો ॥ અકલ છો ॥ અને અપાર છો
 તમે સર્વનો સાર રૂપાલા અને જગતના સ્વામિ છો હે
 ચૈતનમય ધામવાલા તમે અગણિત પુરુષોનો અને સ્ત્રિ-
 યોનો ઉધાર કર્યો ॥ હે મહારાજ નર રૂપ આ તમા-

री नत्री मूर्तिछे अने जेना नामनी संख्या नथी ॥ ब्र-
ह्मानंद स्वामि कहेछे के एवा जगतना स्वामि सिद्धे-
श्वर उपर हुं बलिहारी जाउंछुं ॥ १ ॥

॥ अथ ध्यानाष्टक ॥ चरचरी छंद ॥

देखत बड भाग लाग ॥ पोत सरस नवल पाग ॥
अंतर अनुराग जाग ॥ छवि अथाग भारी ॥ अति
विशाल तिलक भाल ॥ निरखत जन हो निहाल ॥
उंनत त्रय रेख जाल ॥ काल व्याल हारी ॥ विलसित
भुंह साम बंक ॥ चितत उर जात शंक मृगमद भर
बीच पंक ॥ अंक भ्रमर ग्यानी ॥ जय जय घनसाम
साम ॥ अंबुज द्रग क्रत उदाम ॥ सुंदर मुख धाम नाम
सामरे गुमानी ॥ १ ॥ ॥ अर्थ-श्रीजी महाराजना भ-
स्तक उपर सारा पोतनी नविन पाग छे ॥ तेनी
छवि अथाग भारेछे ॥ ते जोतां जोनारना
अंतःकरणमां प्रीत जागे छे ॥ अने ते देखनारना
मोट्यां भाग्य लागे छे ॥ वली घणुं मोटुं कपाल छे ॥
तेमां तिलक करेलुं छे ते निरखतां हरिजन निहाल
थाय छे ॥ वली ते उंचा कपालमां त्रण रेखाओनी
जाल छे ॥ ते कालरूपी सरपने हरावे एवी छे ॥ अने
काली भमरो वांकी, शोभे छे तेनुं चितवन करतां
मननी शंका एटले भय जतो रहे ॥ ते जाणे के कस्तु-
रीना भर कादव वच्चे ज्ञानी भमरानुं चिन्ह करेलुं

હે ॥ અર્થાત્ કસ્તુરીનું તિલક છે ॥ અને તેની પાસે
 ભમરાના ચિન્હ જેવી ભમરો છે ॥ એવા હે ઘનશ્યામ
 સ્વામિ તમારી જય થાઓ ॥ જય થાઓ ॥ તમારાં
 કમલ જેવાં જેવ છે ॥ અને તમારાં કાન ઘોટાં છે ॥
 અને તમારું નામ સુંદર મુખનું ધામ છે ॥ એવા હે કમલ
 ઘોટા ધાનવાલા તમારી જય થાઓ ॥ ૧ ॥ ॥ છંદ ॥
 ॥ શ્રોત કોન દ્રગ છકીર ॥ તીક્ષ્ણ ચતુઃ કામ તીર ॥
 નાના છવિ દીપ કીર ॥ ધીર ધ્યાન ભાવે ॥ કુંડલ
 શુભ શ્રવણ કીન નૌતમ ક્રાંતિ અતિ નવીન ॥ બનહુ
 હેમ જુગલ બીન ॥ ચંદ્ર મિલન આવે ॥ ગુણનીધી
 કપોલ ગોર ॥ ચિતવત ચિત હેત ચોર ॥ તાકે વિચ
 દછન કોર ॥ જોર તિલ નિભાની ॥ જય જય ઘન-
 મામ મામ ॥ અંબુજ દ્રગ ક્રત ઉદામ ॥ સુંદર મુખ
 ધામ નામ ॥ સામેરે ગુમાની ॥ ૨ ॥ ॥ અર્થ-તમારા
 નેત્રના સૂણાની લીટી કાન સુધી છે અને તે નેત્ર
 એવાં તિક્ષ્ણ છે કે જાણે કામદેવનાં વાણ હોય ॥
 અને નાકની શોભા દીવાની શગ જેવી અથવા પોપ-
 દના નાક જેવી છે ॥ તે ધીર પુરુષો ધ્યાનમાં ધરે
 છે ॥ કાનમાં સારાં કુંડલ કરેલાં છે ॥ તેનું કામ
 ઉપમા આપી શકાય નહીં એવું નવીન છે ॥ તે માનિ-
 યે કે ભોનાનાં બે માંછલાં મુખરૂપી ચંદ્રને મલવા
 આવ્યાં છે ॥ ગુણના મંડાર એવા ગોરા ગાલ છે ॥

ते जोतां मन चोरी ले छे ॥ तेनी बच्चे जयणी कोर
 वे तलनी निशानी छे ॥ एवा हे घनश्याम ॥ २ ॥
 ॥ छंद ॥ मंदमंद मुख हसंत ॥ दारिम सम पंति दंत
 ॥ समरत साहंत संत खंत चंत करकें ॥ लोभित चित
 अधर लाल ॥ विलसित विट्ठम प्रवाल ॥ राजत अति-
 शय रसाल ताल वंभी थरकें ॥ अंकक फल चिबुक
 जान ॥ कंबु सम कंठमान ॥ धारत शिव आदि
 ध्यान ॥ आन उर न आनी ॥ जयजय घननाथ नाथ ॥
 अंबुज द्रग कत उदास ॥ सुंदर मुख धाम नाम ॥ सागरे
 गुमानी ॥ ३ ॥ ॥ अर्थ-बली मुखारविंद थोडुं थोडुं
 हसतुं छे ॥ अने दांतनी पंक्ति दाडमनां बीज जेवी
 छे ॥ महांत साधुओ मनमां खांत धरीने तेनुं स्मरण
 करे छे ॥ चित्तने लोभावे एवा होठ राता छे ॥
 ते विट्ठम मणी तथा : परवाला जेवा शोभे छे
 ॥ तेना उपर वांसली धरी छे ॥ तेना तालथी ते अ-
 तिसे रस भरेला विराजेछे ॥ आंवाजा फल जेवी
 दाढी जणाय छे ॥ अने शंख जेवो गलानो घाट छे
 ॥ तेनुं शिव आदि ध्यान धरे छे ॥ अने बीजुं कांई
 मनमां आणता नथी ॥ एवा हे घनश्याम ॥ ३ ॥
 छंद ॥ ॥ दीर्घ अति दोरडंड ॥ मोतिन भुजबंध
 मंड ॥ खल दलबल कर बीखंड ॥ अरिप्रचंड मारे
 ॥ हियपर बन नवलहार ॥ शोभित अति जलज

સાર ॥ દેખત જન વારવાર અઘ અપાર ટારે ॥ પ્રૌ-
 ઢ ઉંચ ઉર પ્રથુલ ॥ ॥ ફહરે સુખ ગંધ ફૂલ ॥ મનિ
 ભર નંગ વર અમૂલ ॥ દૂલરી ॥ વચ્ચાની ॥ જય જય
 ધનસામ સામ ॥ અંબુજ દ્રગ ક્રત ઉદામ ॥ સુંદર
 સુખધામ નામ ॥ સામરે ગુમાની ॥ ૬ ॥ ॥ અર્થ-હંડ
 જેવા હાથ ઘણા લાંબા છે ॥ તે ઉપર મોતીનાં વાજુવંધ
 માંડેલા છે ॥ તે હાથવડે દૈત્યના લશ્કરનું બલ સ્થંડન
 કર્યું ॥ તથા મોટા શત્રુઓને માર્યા ॥ હૈયા ઉપર નવીન
 વનમાલા છે ॥ અને અતિશે શોભિતાં સારાં કમલ ધ-
 ર્યાં છે ॥ તેને હરિજન વારેવારે નિરખે છે ॥ એન પો-
 તાનાં અપાર પાપને ટાલે છે ॥ મોટી ઉંચી અને પોહોલી
 છાતી છે ॥ તે ઉપરથી સારાં ફૂલનો ગંધ ફેલાય છે
 ॥ અને મણિયો ભરેલી તથા મોટાં અમૂલ્ય નંગવાલી
 દુગદુગી વચ્ચાણવા યોગ્ય પહેરી છે ॥ એવા હે ધનશ્યામ ॥
 ॥ ૬ ॥ ॥ છંદ ॥ ઉદર તુંગ અતિ અનૂપ ॥ ગુણવત
 તિલ સામ ગૂપ ॥ નામિ માનૂ પ્રેમકૂપ ॥ રૂપ અજવ
 રાજે ॥ શોભિત હૃદ કટિ પ્રદેશ ॥ કાંચી નંગજટિત
 વેશ ॥ ચિંતત ઉરગેં મુનેશ ॥ અઘ અશેષ ભાંજે ॥ ઉરુ
 અતંત રૂપવાન ॥ ગરુડ પિઠ શોભમાન ॥ નિજ જન
 જોહિ ધરત ધ્યાન ॥ પ્રાન પ્રેષ્ટ જાની ॥ જયજય
 ધનસામ સામ ॥ અંબુજ દ્રગ ક્રત ઉદામ ॥ સુંદર સુખ-
 ધામ નામ ॥ સામરે ગુમાની ॥ ૬ ॥ અર્થ-પેટ ઉંચું

અતિ સુંદર છે ॥ તે ઉપર ગુણવાન કાલા તિલ
 ગુપ્ત ઇટલે રૂવાટાંમાં ઢંકાણલા છે ॥ અને નાભિ જા-
 ને કે પ્રેમનો કૂવો છે ॥ તેનું રૂપ અજાયબ જેવું શો-
 ભેછે ॥ કેડની જગ્યાએ શોભાની હૃદ એવો કંદોરો નંગ
 જડાવ સરસ છે ॥ તેનું મુનિશ્વર મનમાં ચિંતવન કરે-
 છે ॥ તેથી વધાં પાપ ભાગી જાયછે ॥ સાથલ અતિશે
 રૂપાલાંછે ॥ તે ગરુડના વાંસા ઉપર શોભાયમાન થાય
 છે ॥ જેનું પોતાના જન પ્રાણથી વહાલા જાણીને ધ્યાન
 ધરેછે ॥ એવા હે ઘનશ્યામ ॥ ૫ ॥ ॥ છંદ ॥ જાનું
 દૌ રૂપવંત ॥ લાલિત કર શ્રી અતંત ॥ સ્મરત જેહિ
 મુનિ અનંત ॥ અંત જન્મ આવે ॥ જન મન પ્રિય જુગલ
 જંગ ॥ રોમ અલ્પ અજવ રંગ ॥ ચિતવત ચિત ચઢત
 રંગ ॥ અતિ ઉમંગ પાવે ॥ ગુલ્ફન છવિ અધિક શોભ
 ॥ સ્થિતિ ચલ મન દેત થોભ ॥ નિરખત ઉર મિટત
 ક્ષોભ ॥ લોભ આદિ ગ્લાની ॥ જય જય ઘનસામ મામ
 ॥ અંબુજ દ્રગક્રત ઉદામ ॥ સુંદર સુખધામ નામ ॥ સા-
 મરે ગુમાની ॥ ૬ ॥ ॥ અર્થ—વે ઢીંચણ રૂપાલાં છે તેને
 લક્ષ્મિજિયે વહુ લડાવેલાં ઇટલે સેવેલાં છે ॥ જેનું અ-
 પાર મુનિયો સ્મરણ કરેછે ॥ તેથી જન્મ મરણનો અંત
 આવેછે ॥ વે જાંગો હરિજનના મનને વહાલી લાગેછે ॥
 તેના ઉપર અજાયબ જેવા રંગની થોડી થોડી રૂવાંટી
 છે ॥ તેને જોતાં મનમાં પ્રેમનો રંગ ચડેછે ॥ અને તે

જોનાર અતિશે આનંદ પામેછે ॥ મોટી ઘુંટીયોની છવિ
 વધારે શોભેછે તે ચંચલ મનની સ્થિતિને અટકાવી દેછે
 ॥ વલી તે જોતાં મનની દિલગીરી મટી જાયછે ॥
 અને લોભ આદિક શાંખાશ પામેછે ॥ એવા હે ઘનશ્યામ
 ॥ ૩ ॥ ॥ છંદ ॥ ॥ ચરન પ્રષ્ટ ચિત્ત હરાત ॥ તરુ
 તમાલ છાવિ લજાત ॥ સમરત તતકાલ આત ॥ રાત
 પ્રાત મનમેં ॥ જાકું નિત શેષ ગાત ॥ અજહુ પુનિ
 નહિ અઘાત ॥ તુલસી જેહિ સ્થલ રહાત પાત માનું
 જનમેં ॥ નલ્લ ઉતંગ રંગ લાલ ॥ શોભિત મનુ દીપમાલ
 ॥ રાજત કિધું ચંદ્રવાલ ॥ રૂયાલ કરત ધ્યાની ॥
 જય જય ઘનસામ સામ ॥ અંબુજ દ્રગ ક્રત ઉદામ ॥
 સુંદર સુખ ધામ નામ ॥ સામેરે ગુમાની ॥ ૭ ॥ ॥
 અર્થ—અને ચરણારવિંદનો ઉપલો ભાગ મનને હરીલેછે
 ॥ તેને જોતાં તમાલના શાકની છવિ લજાયછે ॥ તે
 રાતે અને સવારે સંભારતાં તરતજ મનમાં સાંભરી આ-
 વેછે જેના ગુણ હમેશાં શેષ નામ ગાયછે ॥ પણ હજી
 સુધી તે ધરાતો નથી ॥ અને જે ચરણારવિંદ-
 ના પ્રષ્ટ ઉપર તુલસી રહે છે ॥ તે માનિયે કે સાં
 રહેવા સારુંજ જન્મ પામી છે ॥ રાતા રંગના ઉપડતા
 નલ્લ છે તે જાણે કે દીપમાલા શોભે છે ॥ અથવા
 જાણિયે કે નાના નાના ચંદ્ર વિરાજે છે ॥ એવો
 (રૂયાલ) વિચાર ધ્યાનિયો કરે છે ॥ એવા હે ઘન-

શ્યામ ॥ ૭ ॥ ॥ છંદ ॥ ॥ વિલસિત ચરણારવિંદ
 ॥ કોમલ અતિ પ્રેમ કંદ ॥ ધ્યાવત ભવ મિટત ફંદ
 છંદ સ્તવન વોલે ॥ પ્રસરત જેહિ પદ પ્રસંગ ॥ પુન્ય
 ભરિત સરિત ગંગ ॥ અઘ વિનાશ પર્મ અંગ હો ઉતંગ
 ઢોલે ॥ રાજત મહિં ઉર્થ રેખ ॥ વજ્રાદિક સહિત પ્રેખા ॥
 બ્રહ્માનંદ દેખ દેખ લેખત કુરબાની ॥ જય જય
 ઘનસામ સામ ॥ અંબુજ દ્રગ ક્રત ઉદામ ॥ સુંદર સુખ
 ધામ નામ ॥ સામરે ગુમાની ॥ ૮ ॥ ॥ અર્થ-કમલ જેવા
 ચરણ શોભે છે તે અતિશે કોમલ છે અને પ્રેમનાં મૂલ
 જેવાં છે તેનું ધ્યાન કરતાં ભવનો (ફંદ) ફાંસો મટી
 જાય ॥ અને વેદ જેની સ્તુતિ કરે છે ॥ જે ચરણારવિંદના
 પ્રસંગથી પુન્ય ભરેલી ગંગા નદી ફેલાઈ છે ॥ તેનો અંગે
 સ્પર્શ કરવાથી પાપ નાશ થાય છે ॥ અને તે ઉત્તમ થઈને
 ફરે છે ॥ તે ચરણારવિંદમાં ઉર્દ્ધરેખા શોભે છે ॥ અને
 વજ્ર આદિકનાં ચિન્હ સહિત દેખાથ છે ॥ બ્રહ્માનંદ
 સ્વામિ તેને જેઈને પોતાનું સરવશ કુરવાન ક-
 રવાનું ગણે છે ॥ એવા હે ધનશ્યામ ॥ ૮ ॥ ॥

અથ હરિકૃષ્ણાષ્ટક ॥ ચરચરી છંદ ॥

ધર્મ વર્મ મર્મધાર ફરન મરન હરનહાર ॥ ચરન શરન
 કરન પાર ॥ અતિ ઉદાર સોહે ॥ હિત ક્રત ચિત
 તિત હુલાસ ॥ રટત મિટત વિકટ પાસ ॥ પ્રેમ
 નેમ અતિ પ્રકાસ ॥ દાસ હાસ મોહે ॥ છાંબ અનુપ

રૂપ બનિત ॥ હરષ ઓધ શોક હનિત ॥ ધન ધન
 જુવાની ખનિત ॥ અગનિત નરનારી ॥ જયજય
 હરિકૃષ્ણ રાજ જગકર વર ગુણ જહાજ ॥ પ્રગટ
 સંગ લે સમાજ ॥ ॥ કાજ ભક્તકારી ॥ ૧. ॥ અર્થ-હે
 ધર્મના વાસ્તવરૂપ મર્મના ધરનારા ॥ અને જનમ
 મરણનું દુઃખ હરનારા ॥ પોતાના ચરણને
 શરણે આવનારને પાર ઉતારનારા ॥ તમે અ-
 તિશે ઉદાર અને શોભાયમાન છો ॥ તમારા મનમાં
 જનનું હિત કરવાનો નિત્ય (હુલ્લાસ) આનંદ
 છે ॥ તમારા નામનું રટન કરતાં ભયંકર જમનો
 પાશ મટી જાય તમે પ્રેમ અને નિયમનો અતિશે પ્રકાશ
 કર્યોછે ॥ તમારું હૃદયું દાસને મોહ પમાડેછે ॥ ઉપમા
 અપાય નહીં એવી તમારી છબી બનીછે તે હરખના
 સમુદાય કરેછે ॥ અને શોકને હણેછે ॥ અને અગણિત
 પુરુષો અને સ્ત્રીઓ ધન્ય છે ॥ ધન્ય છે ॥ એમ વાણી
 બોલેછે ॥ એવા હે હરીકૃષ્ણ મહારાજ તમારી જય થાઓ
 ॥ જય થાઓ ॥ હે જગતની ઉત્પત્તિ કરનારા ॥ તમે
 શ્રેષ્ઠ ગુણના *જહાજ રૂપ છો ॥ અને મુનિ મંડલનો સ-
 માજ સાથે લડીને તમે પ્રગટ થયા છો ॥ અને ભક્ત જ-
 નનાં કારજ કરનારા છો ॥ ૧. ॥ ॥ છંદ ॥ ॥ પ્રેમ કંદ

ચંદ્ર જોર ॥ નિરખ હરપ જન ચકોર ॥ ભુજગ ગાત
 રાત ભોર ॥ અથ કઠોર તોરે ॥ પ્રાનેપત ક્રત હરત પાપ
 ॥ દરસ પરસ અતિ દુરાપ ॥ ટલત ત્રિવિધ ત્રિવિધ તાપ
 ॥ વ્યાપ સબહિ ઠોરે ॥ અગ જગ અજ ગજ આરૂઢ ॥
 પ્રસરન જસ કિરન પ્રૌઢ ॥ મત ક્રત નહિ મનત મૌઢ
 ॥ ગૂઢ ચરિત ભારી ॥ જય જય હરિક્રશ્ન રાજ ॥ જગકર
 વર ગુણ જહાજ ॥ પ્રગટત સંગ લે સમાજ ॥ કાજ ભક્ત
 કારી ॥ ૨ ॥ અર્થ—તમે પ્રેમના મૂલ રૂપછો ॥ તથા ચંદ્ર-
 માની જોડ ગણીયે એવું તમારું મુખછે ॥ તેને નિરખીને
 હરિજન રૂપી ચકોર હરખેછે ॥ અને શેશ નાગ રાત અને
 દહાડો તમારા ગુણ ગાયછે ॥ અને મહા કઠોર પાપને
 તોડી નાખેછે ॥ તમારી પ્રાર્થના કરવાથી પાપ હરોછો
 ॥ તમારું દર્શન અને તમારો સ્પર્શ અતિ દુઃખે પ્રાપ્ત
 થાય એવો છે ॥ કે જેથી નાના પ્રકારના ત્રિવિધ
 તાપ ટલી જાય છે ॥ અને તમે સર્વ ટેકાણે અંતરજામી
 પળે વ્યાપક છો ॥ તમે (અગ) સ્થાવર (જગ) જંગમ-
 રૂપી સૃષ્ટિમાં જન્મ ધરતા થકા અજન્મા છો ॥ અને
 તમે હાથની અસ્વારી કરી છે ॥ અને તમારા જસની
 માટી કીરણો જગતમાં પ્રસરી છે ॥ અને મત કરનારા
 મૂર્ખ લોકો તમને માનતા નથી તમારાં ચરિત્ર ભારે
 ગુપ્ત છે ॥ એવા હે હરિકૃષ્ણ મહારાજ ॥ ૨ ॥
 ॥ છંદ ॥ મંગલ વલ પ્રબલ મૂલ ॥ દરશન જન વિધન

દૂર ॥ સમજત શુધ વિબુધ સૂર ॥ પૂર સુક્રત પાવે ॥ નિ
 રસ્વત ચિતકોં નિરોધ ॥ બુધિકર સુખ ભર પ્રવોધ ॥
 સરસ લહત લેત શોધ ॥ જોધ ક્રોધ જાવે ॥ ગેમ
 ગહન દહન ગ્યાન ॥ દુઃખહર સુખ દેત દાન ॥
 ત્રણવત જગ કરન તાન ॥ માન જર ઊરવારી ॥ જય
 જય હરિકૃષ્ણરાજ ॥ જગકર વર ગુણ જહાજ ॥ પ્ર-
 ગટત સંગ લે સમાજ ॥ કાજ ભક્તકારી ॥ ૩ ॥ ॥
 અર્ધ-તમારું બલ કલ્યાણનું જોરાવર મૂલ છે ॥
 અને તમારાં દર્શનથી હરિજનનાં વિગ્ન દૂર થાય છે ॥
 એમ નાનાં પ્રકારનાં પંડીતો અને દેવતાઓ શુદ્ધ
 રીતે સમજે છે ॥ તેથી તેઓ પૂરાં પુન્ય પામે છે ॥ ત-
 મારી છબિને નિરસ્વતાં મન તેમાં અટકે છે ॥ અને
 તમારો ઉપદેશ બુધિ કરે એવો તથા સુખ ભરે એવો
 છે ॥ તે સારમાં સાર જાણીને શોધી લે તેના મનમાં-
 થી ક્રોધાદિક જોડ્યા જતા રહે ॥ તમારું જ્ઞાન મોટા
 અજ્ઞાનને વાલી નાખે એવું છે ॥ અને તે દુઃખને
 હરે છે અને સુખનું દાન આપે છે ॥ અને દેહાભિ-
 માનની જડ ઊઠાડી નાખીને આ જગતને તરસલા
 વરોવર કરવાનું તાન રાખે છે ॥ એવા હે હરિકૃષ્ણ
 મહારાજ ॥ ૩ ॥ ॥ છંદ ॥ ॥ તનું વન ઘન ત્રિગુન
 તીત ॥ નૌતમ મ્રમ અજવનીત ॥ પ્રનિપત રત
 નવલ પ્રીત ॥ વિશ્રમીત વાની ॥ વરદ મરદ અતિ

प्रवीन ॥ अरद दरद जन अधीन ॥ कलबल खल
 निबल कीन दीनन सुख दानी ॥ सुंदरवर कांति
 सरस ॥ बेन नेन पीयुष वरस ॥ पाप ताप मिटत
 परस ॥ तरस नरस टारी ॥ जयजय हरिकृश्न राज ॥
 जग कर वर गुण जहाज ॥ प्रगटत संग ले समाज
 ॥ काज भक्तकारी ॥ ५ ॥ ॥ अर्थ-तमारुं शरीर
 वरसादना जेवुं अने मायिक त्रण गुणथी जूहुं
 बनेलुं छे ॥ अने तमारो मर्म अजायब जेवो सदा उ-
 त्तम छे ॥ अने नविन प्रीतिथी स्तुति करवामां वा-
 णी देवी रहे छे ॥ पण ते थाकी जाय छे (पण पार
 पामती नथी) ॥ हे वरदानना आपनारां नररूप
 तमे अतिशे प्रवीण छो ॥ तमारे आधिन जे जन
 थाय ॥ तेनां दरद नाश करो छो ॥ अने कलाथी त-
 था बलथी दुष्टेने तमे निर्बल कर्या छे ॥ अने ॥ तमे
 गरीबोने सुख देनारा छो ॥ तमारी कांति सुंदर
 श्रेष्ठ अने रसिक छे ॥ तमारा नेत्रमां अने वचनमां
 अमृत वरसे छे ॥ अने तमारो स्पर्श करवायी पाप
 तथा ताप मटी जाय छे ॥ अने नरसी तृश्नाने टाली
 नाखे छे ॥ एवा हे हरिकृश्न महाराज ॥ ६ ॥
 छंद ॥ ॥ नवल प्रबल कमल नेन ॥ वीर धीर अ-
 मल बेन ॥ दनुज दुष्ट कष्टदेन ॥ मेन सेन मारे ॥ जय
 धुनि मुनी व्रंद साथ ॥ दुखहर वरदान हाथ ॥ जन

અધીન દીનનાથ ॥ કે અનાથ તોરે ॥ નિજ જન ધન
 સુખ નિકેત ॥ વિમુખન દુઃખ શોક દેત ॥ હરત વિપત
 અમિત હેત ॥ લેત જગ ઉગારી ॥ જયજય હરિકૃષ્ણ
 રાજ ॥ જગકર વર ગુણ જહાજ પ્રગટત સંગ લે સમાજ
 ॥ કાજ ભક્તકારી ॥ ૬ ॥ અર્થ-નવીન કમલ જેવાં
 અને જોરાવર તમારાં નેત્રછે ॥ વીરરસ તથા ધિરજ
 ભરેલાં તમારાં નિર્મલ વચન છે તે દુષ્ટ જનને
 અને દૈત્યોને દુઃખ દેનારાં છે ॥ અને કામદેવની સેનાને
 મારી નાંખેછે ॥ તમે સંત મંડલની સાથે જયકારની
 ધુની કરોછો ॥ અને તમે હાથે કરીને દુઃખ હરવાનું
 વરદાન આપોછો ॥ અને હે ગરીબના નાથ તમારે આ-
 ધીન જે જન થાયછે એવા કેટલાએક અનાથને તમે
 તારયાછે ॥ તમે પોતાના જનના ધનરૂપ તથા સુખના
 ઘરરૂપ છો ॥ અને વિમુખ જનોને દુઃખ તથા શોક
 આપોછો ॥ વલી તમે જગત ઉપર અપાર હેત રાખીને
 વિપત્તિ ટાળે વિપત્તિ હરીને વચાવી લ્યોછો ॥ એવા
 હે હરીકૃષ્ણ મહારાજ ॥ ૬ ॥ ॥ છંદ ॥ ॥ દ્રગ વિશાલ
 લાલ કંજ રસ પ્રકાર દાસ રંજ ॥ રતિ પતિ ધ્રતિ
 ગરવ ગંજ તેજ પુંજ રાજે ॥ હોત જોત દુક્ત હાન ॥
 પુરુષ સરસ જગ પુરાન ॥ ધરત સનક જનક ધ્યાન
 ॥ લલિત અગ્યાન ભાજે ॥ કોમલ દિલ અતિ કપાલ
 ॥ પ્રફુલિત ચિત પ્રણત પાલ ॥ સરવસ વસ જસ વિશા-

લ ॥ જાલ જગત જારી ॥ જય ॥ ૬ ॥ ॥ અર્થ—રાતા
 કમલ જેવાં અને મોટાં તમારાં નેત્ર છે ॥ અને નવ પ્ર-
 કારના રમથી તમે દાસને રંજન કરોછો ॥ અને કામ-
 દેવની કાંતિને તથા અભિમાનને તોડી નાખે એવો ત-
 મારા તેજનો સમુદાય વિરાજેછે ॥ તમે જગત કરતાં
 પુરાણ એટલે જૂના પુરુષ સારાછો ॥ ને તમને જોતાં
 પાપનો નાશ થાયછે ॥ અને સનકાદિક તથા જનક વિદેહી
 તમારું ધ્યાન ઘરે છે અને તમને દેખીને અજ્ઞાન નાશી
 જાયછે ॥ તમારું મન અતિશે કોમલ અને દયાળુ
 છે ॥ અને તમારું ચિત સદા પ્રફુલ્લિત રહેછે ॥
 અને તમે આશ્રિત જનના પાલનારાછો ॥ અને
 સર્વ તમારે વશ છે તથા તમારો જશ મોટો
 છે ॥ અને જગતની જંજાલને બાલનારાછો એવા હે હરિ-
 કૃષ્ણ મહારાજ ॥ ૬ ॥ ॥ છંદ ॥ નિતનિત ધ્રત
 રૂપ નેક ॥ અકલ સકલ વ્યાપ એક ॥ તપત વિપત ક-
 પત ટેક ॥ શુધ વિવેક દાતા ॥ ધેય અગમ નિગમ ધ્યા-
 ત ॥ ગોર રુદય ચોર ગાત ॥ ચિત ધ્રત શુભ ક્રત
 સુચાત ॥ તાત ધર્મ ત્રાતા ॥ જુગ જુગ પ્રતિ સુભગ દેહ ॥
 ॥ નટવર ઘટ નવલ નેહ ॥ ગુનનિધિ સિધિ સુબૃધિ મેહ
 ॥ અતિ અછેહ યારી ॥ જય જય હરિ કૃષ્ણરાજ ॥ જ-
 ગકર વર ગુણ જહાજ ॥ પ્રગટત સંગ લે સમાજ ॥ કાજ
 ભક્તકારી ॥ ૭ ॥ ॥ અર્થ—રોજ રોજ તમે સારું રૂપ

ધરોછો ॥ તમે અકલિત છો ॥ અને અંતર્યામીપણે સર્વત્ર
 વ્યાપક છો ॥ અને તમે એકજ પરમેશ્વર છો ॥ તમારા
 જેવો વીજો કોઈ નથી ॥ માણસના મનને તપાવે એવી
 વિપત્તિને કાપવાની ટેક તમે, ધરો છો ॥ અને તમે
 શુદ્ધ વિવેકના દેનારા છો તમે ધ્યાન કરવા યોગ્ય
 છો ॥ શાસ્ત્ર તથા વેદમાં તમારુંજ ધ્યાન કહ્યું છે ॥
 તમારાં શાસ્ત્ર ગોરા રંગનાં અને હૃદયને ચોરી છે એવાં
 છે ॥ તે ચિત્તમાં ધરવાથી શુભ શુચી એટલે પવિત્ર
 કરે છે ॥ અને ધર્મ પિતાનું રક્ષણ કરનારા તમે છો
 ॥ તમે જુગ જુગ પ્રત્યે મારો દેહ ધારણ કરો છો ॥
 અને નટમાં શ્રેષ્ઠ એવી કાયા નવિન સ્નેહથી ધારો છો
 ॥ તમે ગુણના મંડાર છો ॥ તથા સિદ્ધિના અને
 સારી બુદ્ધિના ધરૂપ છો ॥ અને અતિશે અપાર
 મિત્રતાવાળા છો ॥ એવા હે હરિકૃષ્ણ મહારાજ ॥ ૭ ॥
 ॥ છંદ ॥ ॥ ઉત્પતિ સ્થિતિ પ્રલય પલક ॥ ઝગમગ
 તન કાંતિ ફલક ॥ અતુલિત વ્રત શીશ અલક ॥
 તિલક માલ દીને ॥ વામ કામ કરન વાધ ॥ ગા-
 વત શ્રુતિ કહિ અગાધ ॥ ચિત્તત વ્રત હો સમાધ ॥
 સાધ અભય કીને ॥ પ્રાન ભક્ત જગત પ્રેર ॥ જગ
 કવીન કીન જેર ॥ બ્રહ્માનંદ બેરબેર ॥ હેરત છવિ
 પ્યારી ॥ જય જય હરિ કૃષ્ણરાજ ॥ જગકર વર ગુણ
 જહાજ ॥ પ્રગટત સંગ લે સમાજ ॥ કાજ ભક્ત કારી ॥

॥ ८ ॥ ॥ अर्थ-तबे एक पल्लवां जगतनी उत्पत्ति
स्थिति अने प्रलय करो छे ॥ तमारा शरीरनी कां-
ति झगमग झगमग एम झलके छे ॥ जेनी
तुल्य कोइ न आवे एवा तमारा मस्तकना केश
बलेला छे ॥ अने कपालमां तिलक करी दीधुं छे ॥
वास एठे वांको एवो जे कामदेव तेने तबे बंधन कर-
नारा छे अने वेद तबेने अपार कहीने भाष्य छे ॥
तमारुं चितवन करतां तरत समाधी धाय छे ॥ अने
तबे घणा नाधुओने निर्भय करया छे ॥ तबे भग-
ना तथा जगतना प्राणरूप अर्थात् अंतर्यासी छे ॥
अने जगतना कवियोने अर्थात् पंडितोने तबे
जेर कर्या छे अर्थात् जीती लीया छे ॥ ब्रह्मानंद
स्वाधि वारेवारे ते तमारी प्यारी छविने निरखे छे ॥
॥ एवा हे हरिकृष्ण महाराज ॥ ८ ॥

॥ अथ रामाष्टक ॥ चरचरी छंद ॥

॥ एक निशिशिशि अति उजास ॥ प्रौढ शरदरतु प्रकाश ॥ रमन
रास जगनिवास ॥ चित विलास किने ॥ मोरलिधुन अति
रसाल ॥ जेहरे सुर कर गोपाल ॥ तान मान सुभग
ताल ॥ मन भराल लिने ॥ व्रज त्रिय सुन भर उछाव
॥ बन ठन तन अति बनाव ॥ चितवत गत नृत
उठाव ॥ हावभाव साचे ॥ हरिहर अज हेरहेर
विकसत सुर बेरबेर ॥ फरगट घट फेरफेर ॥ नटवर

નાચે ॥ ૧ ॥ ॥ અર્થ-એક રાત્રિમાં ચંદ્રમાનો ઉજાસ
 ઘણો થયો ॥ અને તે ચંદ્ર મોટો શરદ ઋતુનો પ્રકાશિત
 હતો અર્થાત્ પૂનમનો હતો ॥ તે સમે આજ્ઞા જગતમાં જેનો
 નિવાસ છે એવા શ્રીકૃષ્ણ ભગવાને રાસ રમવાનો પો-
 તાના મનમાં વિલાસ કર્યો એટલે ઉમંગ ધર્યો ॥
 સારે ગોપાલ એટલે શ્રીકૃષ્ણે અતિ મોટા સ્વરથી
 મોરલીનો નાદ કર્યો ॥ તેમાં તાન માન અને સરસ
 તાલ લાવીને હંસનાં મન રેંચી લીધાં ॥ તે સ્વર
 માંભલીને વ્રજની સ્ત્રીયો ભર ઉમંગથી શરીરે અતિશે
 શણગારના બનાવથી બનીઠળીને નાચવાની ચાલનો
 ઉઠાવ મનમાં સાચા હાવ ભાવથી ચિતવવા લાગી
 ॥ સાં (હરિ) ઈંદ્ર અથવા વિશ્નુ (હર) શિવ અને
 વ્રહ્મા આદિક દેવો આવીને વારેવારે નિરખવા લાગ્યા
 ॥ તેમજ વારેવારે તે ગોપિયોના ગાવાનો સ્વર પણ
 સુલો થતો હતો ॥ અને શરીરે વારેવારે ફુદડી ફરી
 ને નટવર એવા જે ભગવાન તે નાચવા લાગ્યા ॥ ૧ ॥
 ॥ છંદ ॥ ॥ ઠેઠે વજ ત્રંબક ઠોર ॥ ચેંચેં સરનાયી
 સોર ॥ ધેંધેં વજ પ્રગવ ઢોર ॥ ધેંધેં બોલે ॥ ઝુક ઝુક
 ઝુક વજત શંજ ॥ ટુક ટુક મંજિર રંજ ॥ ટુક ટુક
 ઉમંગ વંગ ॥ અતિ ઉમંગ ઢોલે ॥ ટ્રગડદા ટ્રગડદા પ-
 સ્વાજ ॥ થ્રગડદા થેથે સમાજ ॥ કડકડદા કડકડદા
 ટુકડ ટુકડ ॥ ઘન થટ રાચે ॥ હરિહર અજ હેર હેર

॥ विकसत सुर बेरबेर ॥ फरगट घट फेर फेर ॥ नट-
 वर नाचे ॥ २ ॥ ॥ अर्थ-ते ठेकाणे ठेंठें एम त्रंवाळु
 वागवा लाग्यां ॥ अने चेंचें एम शरणाईओना सोर
 थवा लाग्या ॥ अने धें धें ए रीते ढोलक वागे छे
 ॥ अने मोटो ढोल धें धें एम वोले छे ॥ झुकझुक एम
 झांझ वागे छे ॥ अने टुकटुक एवा शब्दथी मंजिरा
 मनरंजन करे छे ॥ तेमज डुकडुक ए रीते उपंग नामनुं
 वाजुं तथा मोर चंग वजवे छे ॥ अने घणा उमंगथी
 फरे छे ॥ अने द्रगडदा द्रगडदा ए रीत पखाज वागे
 छे ॥ अने ते गोपी अने गोवालानो समाज ध्रगडदा
 अने थेइ थेइ नाचे छे ॥ अने कुकडदा कुकडदा
 एम नरयां वागे छे तथा तृकट घन एम पण
 वागे छे ॥ तेथी जोवा मल्लो थट खुशी थाय छे ॥
 सां ईंद्र शिव ब्रह्मा आदिक देवो आवीने ० ॥ २ ॥
 छंद् ॥ संतन अभिराम धाम ॥ क्रमत रमत भ्रमत
 काम ॥ प्रमत श्रमत नमत ग्राम ॥ वाम हाम
 लोभे ॥ अटन घटन अति उदाम ॥ धनगन तन ठाम
 ठाम ॥ तज विश्राम अति विश्राम ॥ साम सुंदर
 शोभे ॥ जमुनाके नीर तीर ॥ खेलत बलवीर
 वीर ॥ चहुंवट थट सघट भीर ॥ काटि सुधीर काचे
 ॥ हरि हर अज हेरहेर ॥ विकसत सुर बेरबेर ॥
 फरगट घट फेरफेर ॥ नटवर नाचे ॥ ३ ॥ अर्थ-

તે ભગવાન સંત પુરુષોના મનને ઠરવાના સુંદર
 ધામ રૂપ છે ॥ તે કદમ ભરે છે ॥ અને રમે છે ॥
 તેને જોઈને વામદેવ પળ ભ્રમમાં પડે છે ॥ અને
 ઉન્મત્ત એવા ગોવાલિયાના ગ્રામ એટલે સમુદાય
 થાકી જઈને ભગવાનને નમે છે ॥ અને વામા એટલે
 તે ગોપિયોની હિમત ભગવાનને જોઈને લોભાઈ
 જાય છે ॥ અતિ ઉત્તમ રીતે શરીરે ફરે છે
 ॥ અને ઠેકાણે ઠેકાણે શરીર થનગન થનગન નાચે
 છે ॥ તે વિસામો લેવાનું તજીને અતિશેજાં ભ્રમણ
 કરે છે ॥ તેમાં શ્રી કૃષ્ણ ભગવાન સારા શોભે
 છે ॥ એ રીત જમનાંજીના જલના કિનારા ઉપર
 બલવીરના भाई રમે છે ॥ અને ચારે તરફ રસ્તા-
 ઓમાં માણસોના થટની ઘણી ભીડ થઈ છે ॥
 અને તે સારા ધીરજવાન ગોવાલિયાઓએ કેડે
 કાછડા વાળ્યા છે ॥ ત્યાં ઈંદ્ર શિવ બ્રહ્મા આદિક
 દેવો આવીને ० ॥ ૩ ॥ ॥ છંદ ॥ જલલલ તન
 કાંતિ જલક ॥ સ્વલલલ ભુજ ચૂડ સ્વલક ॥ સલલલ
 જોં હિ વીજ સલક ॥ ભલક માલ સાજે
 ॥ અટપટ લટ છૂટ અલક ॥ ત્રટ ઘટ શુભ કીન
 તલક ॥ હટહટ ઘટ ટુગટ હલક ॥ નટ વિલાસ
 રાજે ॥ તન તન પ્રતિ સુગત તાન ॥ જનજન મન
 એક જાન ॥ ક્રત ઉત મુખ કાન કાન ॥ માન ગાન

माचे ॥ हरिहर अज हेर हेर ॥ विकसत मुर बेरबेर
 ॥ फरगट घट फेरफेर ॥ नटवर नाचे ॥ ४ ॥ अर्थ—
 अने झललल एम गोपियोना शरीरनी कांति झलंक
 छे ॥ अने तेमना हाथना चुडा खललल एम खलंक
 छे ॥ अने ॥ बीजलीनी पेठे सललल एम सलंक
 छे ॥ अने तेमणे पोताना कपालनो भभको सज्यो
 छे ॥ तेमना चाटलानी लट वांकी चंकी हूटी
 पडी छे ॥ अने शरीरना किनारा उपर
 अर्थात् कपालमां सारां तिलक एटले आडयो
 करेली छे ॥ अने शरीरे हठी हठीने त्रिभंगी
 चालनी पेठे हाले छे ॥ तेथी नटना जेवो खेल
 शोभे छे ॥ प्रत्येक शरीर धारी सारी गति करीने
 तान ले छे ॥ अने प्रत्येक माणसनां मन मलीने
 जाणे एकज थई गयां छे ॥ अने मोढेथी उक्ति
 एटले वाणी हे कान हे कान एम करे छे ॥ अने
 गानना मानमां मची रहां छे त्यां इंद्र शिव ब्रह्मा
 आदिक देवो आवीने ॥ ५ ॥ ॥ छंद ॥ ॥
 घममम घुघरु धमंक ॥ ठममम झंझर ठमंक ॥
 धममम मम भू धमंक ॥ गत निशंक गावे ॥ झग
 झग झग झगमगाट ॥ थग थग थैथैत थात ॥ नौ-
 तम पग द्रग निराट ॥ ललित नाट लावे ॥ लथवथ
 हथ गूथ लीन ॥ पथ पथ पिय सथ प्रविन ॥ कथ

કથ ગ્રથ શેશ કનિ ॥ જુથ નવિન જાચે ॥ હરિહર
 અજ હેરહેર ॥ વિકસત સુર વેરવેર ॥ ફરગટ ઘટ
 ફેર ફેર ॥ નટ્વર નાચે ॥ ૬ ॥ અર્થ-ઘમઘમ
 એમ ઘુઘરા ઘમકે છે અને ઠમઠમ એમ ઝાંઝર
 ઠમકે છે ॥ અને ઘમમમમમ એમ પૃથ્વી ઘમકે
 છે ॥ અને નિઃશંક થઈને ગતિ કરીને ગાય છે ॥
 તે ભગવાનની કાંતિનો ઝગમગાટ ઝગઝગી રહ્યો છે ॥
 અને થગથગ તથા થેઈ થેઈ એવા નૃસનો થાટ મચ્યો
 છે ॥ અને સૌથી સરસ ચરણ શોભે છે તથા નેત્ર પળ
 અદ્ભુત શોભે છે ॥ અને સુંદર નૃસનો ભેદ લાવે છે તે
 ગોપી અને ગોવાલાણ લથથ થઈને એક બીજાના હાથ
 ગુંથી લીધા છે ॥ અર્થાત્ આંકડા મીડયા છે ॥ અને તે
 પ્રવીણ ગોપિયો રસ્તે રસ્તે શ્રીકૃષ્ણ સ્વામિની સાથે
 ફરે છે ॥ તે લીલાનું કથન કરી કરીને શેષ નાગે ગ્રંથ
 બનાવ્યો તે નવા નવા મુનિયો વાંચવાને માગે છે ॥ સાં
 ઈંદ્ર શિવ બ્રહ્મા આદિક દેવો આવીને ० ॥ ૬ ॥ ॥
 છંદ ॥ નૌતમ છવી નંદનંદ ॥ મુખ મુહાસ મંદમંદ ॥
 દંપતિજુત દ્રંદ દ્રંદ ॥ જગત વંદ ડોલે ॥ વિનતા સુર
 વ્રંદવ્રંદ ॥ નિરખત આનંદ કંદ ॥ ગતિ અતિ સ્વચ્છંદ
 છંદ ॥ જય જય વોલે ॥ જુગલિત કર જોર જોર ॥
 ઠમક ઝમક ઠોરઠોર ॥ વિમલ તાન તોર ઘોર મોરલી
 વાચે ॥ હરિહર અજ હેરહેર ॥ વિકસત સુર વેરવેર ॥

ફરગટ ઘટ ફેરફેર ॥ નટવર નાચે ॥ ૬ ॥ ॥ અર્થ-
 નંદના પૂવની છવિ અતિશે ઉત્તમ વની છે ॥ અને
 તેમનું મુખારવિંદ થોડું થોડું હસતું છે ॥ અને તે જગત
 ને વંદવા યોગ્ય એવા ભગવાન પ્રિયા અને પ્રિયનાં જોડે
 જોડાં બનીને ફરે છે ॥ સાં દેવની સ્ત્રિયો ટોલે ટોલે
 મલીને આનંદના થડ રૂપ એવા ભગવાનને નિરખે છે ॥
 તે ભગવાન અતિશે સ્વચ્છંદ પળે ગતિ કરે છે ॥ તે
 જોઈને (છંદ) વેદ જયજયકાર બોલે છે ॥ અને તે જો-
 ડલાં હાથે હાથ જોડયા છે ॥ અને ઠેકાળે ઠેકાળે
 ઠમકારા અને ઢમકારા થાય છે ॥ અને નિર્મલ તાન
 તોડે છે ॥ અને ઘળા ઘોરથી મોરલી વજાવે છે ॥ સાં
 ઈંદ્ર શિવ વ્રહ્મા આદિક દેવો આવીને ॥ ૬ ॥ ॥
 છંદ ॥ ॥ લાલ છવિ સુરપતિ લજીત ॥ ગુણ ગાન તાન
 ગીત ॥ પિયે પ્રિયા સહિત પ્રીત ॥ સમરે જીતે શોભે ॥
 રમત શ્રમત અજવ રીત ॥ ચકિત શુકિત થકિત ચીત
 લલિત હલિત મલિત લીત ॥ નિરખ મીત લોભે ॥ ટુંવ ટુંવ
 એક લગન ॥ વિમલિત દ્રગ જાત વિચન ॥ તક તક ચક
 હોત તગન ॥ પ્રૌઢ મગન પ્રાચે ॥ હરિહર અજ હેર હેર ॥
 વિકસત સુર વેરવેર ॥ ફરગટ ઘટ ફેરફેર ॥ નટવર નાચે
 ॥ ૭ ॥ ॥ અર્થ-તે ભગવાનની છવિને જોઈને ઈંદ્ર લજાય છે ॥
 અને તેમના ગીતનું ગાન તથા તાન ગુણ રીતનું છે ॥
 તે પ્રિયા અને પિયુ પ્રીતિયે સહિત છે ॥ પણ સ્મર

એટલે કામદેવને જીતી લીધો હોય એવા શોભે છે
 ॥ તે અજાયબ રીતે રમે છે ॥ અને ભમે છે ॥ અને
 મનમાં ચક્રિત થઈને અર્થાત આશ્ચર્ય પામીને શુકે
 છે ॥ અને વલી થાકી જાય છે ॥ તેમજ સુંદર રીતે
 હલીમલી લીધું છે ॥ તે નિરખવાને તેમના મિત્રોનાં
 મન લેભાય છે ॥ લુંબીશુંબીને એકરૂપ થઈ ગયા હોય
 એમ લાગે છે ॥ અને નેત્ર શોભાયમાન છે ॥ તે જોતાં
 વિદ્ય જતાં રહે છે તેમના કાનમાં તગન એટલે કુંડલ તક
 તક એમ ચકચકી રહ્યાં છે ॥ તે જોઈને પ્રાચીન કાલ-
 ના મોટા મુનિયો મગ્ન થાય છે ॥ સ્યાં ઇંદ્ર શિવ
 બ્રહ્મા આદિક દેવો આવીને ॥ ૭ ॥ છંદ ॥ તત
 તત તત હોત તાન ॥ અચુંબિત ગત આન આન ॥
 ધુરજટિ ઘટ છુટત ધ્યાન ॥ કાન વાન સુનેતે ॥ ગેહ
 રિ ધુન હોત ગાન ॥ મંગલ સુર માન માન ॥ મુલ
 માન સ્વાન પાન ॥ પ્રાન જાન બનેતે ॥ ધીધકટ નૃત ધાર
 ધાર ॥ ત્રિ મિત તહાં સતાર તાર ॥ બ્રહ્માનંદ વારવાર
 ॥ ચરનન ચિત રાચે ॥ હરિહર અજ હેરહેર ॥ વિકસત
 સુર વેરવેર ॥ ફરગટ ઘટ ફેરફેર ॥ નટવર નાચે ॥ ૮ ॥
 અર્થ-સ્યાં તત તત તત એમતાન લેવાનો શબ્દ થાય છે
 ॥ અને અચુંબિત એટલે આગલ કોઈએ કહેલી નહીં
 એવી જૂદી જૂદી ગતિ લાવે છે ॥ અને તે ગીતની વાણી
 કાને સાંભલીને શિવજીના શરીરનું ધ્યાન છૂટી જાય

छे ॥ एवा घाटा स्वरथी गान थायछे ते सांभलीने
देवताओए मंगलकारी मानी मानीने शरीरनुं तथा
खावा पीवानुं भान भुली जईने ते भगवाननी स्तुति
भणतां भगवानने पोताना प्राण जेवा जाण्या ॥ अने
धिधिकट एवी ढबनो नाच धरीधरीने स्त्रियो एटले
गोपियो अने मित्र एटले गोवालाओ तालीए ताली
दईने हसेछे ते जोईने ब्रह्मानंद स्वामिनुं मन ते भग-
वानना चरणारविंदोमां राचेछे ॥ सां ईंद्र शिव ब्रह्मा
आदी देवताओ आवीने० ॥ ८ ॥

॥ अथ दश अवतार रूपें श्रीजी महाराजनी स्तुति ॥
॥ दोहा ॥ ॥मच्छ कच्छ वाराह मण नरसिंघ वामन नाम
॥ कर फरसि रघुपती कृष्ण ॥ बुधनीकलंक प्रणाम ॥१॥
मच्छकच्छ अने वाराह कहीए ॥ तथा नरसींघजी अने
वामनजी जेनां नामछे ॥ तथा हाथमां फरशी धारी
एवा फरशुराम रघुनाथजी श्रीकृष्ण बुद्ध तथा नि-
कलंकने प्रणाम करुंछुं ॥ १ ॥ दोहा ॥ वेद संखासुर
ले वटे ॥ वाणी घटे सो ब्रह्म ॥ तोय उदधि चाडण वटे
॥ प्रगटे मच्छ प्रथम ॥२॥ अर्थ-संखासुर नामनो दैत्य
वेद लईने वटी गयो ॥ तेथी ब्रह्मानी वाणी घटी गई
॥ सारे समुद्रने चालववा वास्ते तेने कांठे प्रथम मच्छ
रूपे भगवान प्रगट्या ॥२॥

॥ રૂપ મુકુંદ છંદ ॥

॥ પ્રથમે ધર રૂપ અનૂપ પ્રથિપર ॥ કાયમ મચ્છ સ્વયં
છકલા ॥ જલ લોધ કરે મહા જોધ પતિ જગ ॥ કારણ
સોધ લઈ કમલા ॥ શિર છેદ શંખાસુર વેદ લિયે સવ
॥ મેટળ સ્વેદ વિરંચિ મહિ ॥ અતિ આનંદ કંદ મુનિંદ
આરાધત ॥ સો સહજાનંદ રૂપ સહી ॥ ૧ ॥ અર્થ-પૃથ્વી
ઉપર (સમુદ્ર પૃથ્વી ઉપર છે માટે પૃથ્વી ઉપર કહ્યું)
પ્રથમ મચ્છની કાયાનું રૂપ ઉપમા ન આપી શકાય એવું
ધરયું ॥ તે પોતાની ઇચ્છાથી કલાનો અવતાર કહેવાય
॥ મોટા યોધ્યાઓના સ્વામિ એવા મચ્છદેવે સમુદ્રના
જલનું આલોડન એટલે મથન કર્યું ॥ અને જગતને
વાસ્તે પૃથ્વી રૂપી દોલત શોધી લીધી ॥ અને સંસ્વાસુર
દૈત્યનું માથું કાપીને તેની પાસેથી વધા વેદ પાછા લીધા
॥ અને બ્રહ્માનો તથા પૃથ્વીનો સ્વેદ મટાડ્યો ॥ એવા
અતિશે આનંદના થડ રૂપ અને મુનિના ઈંદ્ર જેનું આરા-
ધન કરેછે તે આજ સહજાનંદ સ્વામી રૂપે તક્કી થયા
છે ॥ ૧ ॥ છંદ ॥ કછ ધાર વપૂ અવતાર રસાકજ ॥
સાર લાહિ મથયા સગરં ॥ કરતાર ચક્રંબર રાહ કપે સર
અંમ્ર અમી વિષ દે અસુરં ॥ વડવાન ઘટં વંધિવાન કિયો
વલ ॥ ત્રિસધિ રૂપ અનૂપ તહિ ॥ અતિ આનંદકંદ મુ-
નિંદ આરાધત ॥ સો સહજાનંદ રૂપ સહી ॥ ૨ ॥ અર્થ-
પછી લક્ષ્મી દુર્વામા ઋષિના શ્રાપથી સમુદ્રમાં પડી

હતી ॥ તે લક્ષ્મીને વાસ્તે કાચવાના દેહનો અવતાર
 ધર્યો અને માગર મથન કરીને લક્ષ્મીની સુધ લીધી તે
 જગત કર્તારે હાથમાં ચક્ર ધરીને રાહુનું માથું કાપ્યું ॥ અને
 દેવોને અમૃત પાચું અને અસુરોને ક્ષેર જેવી મદિરા
 પાઈ ॥ વલી તે સમે વલે કરીને વડવાનલ અગ્નિને ઘડામાં
 બંધીવાન કર્યો ॥ એવાં ત્રણ પ્રકારનાં અનુપમ રૂપ ધરીને
 ત્યાં કામ સાધ્યાં ॥ એવા અતિશે આનંદના થડરૂપ ૦
 ॥૨॥ છંદ ॥ હરિ હોય વારાહ હૃણ્યો હરણાયક ॥ નાયક
 લાયક નૂર નલં ॥ ઘરવાલ લઈ પ્રતિપાલ ડઠાં ધર
 ॥ રહ્યાત વિશાલહ કાલ સ્વલં ॥ જગનાથ નમો સમરાથ
 જગો જગ ॥ આથ જનં ગુન ગાથ અહી ॥ અતિ આ-
 નંદકંદ મુનિંદ આરાધત ॥ સો સહજાનંદ રૂપ સહી
 ॥ ૩ ॥ અર્થ-પછી ભગવાને વારાહરૂપે થઈને હિરણ્યા-
 ક્ષ દૈત્યને માર્યો ॥ તે ભગવાન સર્વેના ઉપરી લાયક
 અને તેજના નલરૂપ વન્યા ॥ તેમણે પૃથ્વીને વાલી
 લઈને તે પ્રતિપાલન કરનારા ભગવાને દાઢ ઉપર ધરી
 ॥ તે વાત પ્રચ્યાત છે ॥ અને તે મોટા દુષ્ટના કાલ
 રૂપ છે ॥ એવા હે જગતના નાથ તમને નમસ્કાર કરું
 છું ॥ તમે જુગો જુગમાં સમર્થછો ॥ તમે હરિજનની
 (આથ) પુંજી રૂપછો ॥ અને શેષનાગ તમારા ગુણ
 ની ગાથા ગાયછે ॥ એવા અતિશે આનંદના થડરૂપ ૦
 ॥ ૩ ॥ ॥ છંદ ॥ ॥ પ્રગટે નરસિંઘ અવીહ પ્રથિપર

॥ ત્રાસ નિવારણ દાસ તણ ॥ પ્રલ્હાદ હિતં અસુરાંધ
 પ્રહારણ ॥ વેશ કરાલ ભયાલ બળં ॥ હરણાકંસ માર
 ઓધાર જનં ॥ હરિકે જશ વાર ઉચાર કહિ ॥ અતિ
 આનંદ કંદ મુનિંદ આરાધત ॥ સો સહજાનંદ રૂપ સહી
 ॥ ૪ ॥ ॥ અર્થ-પછી પ્રલ્હાદ રૂપી પોતાના દાસનો
 ત્રાસ નિવારણ કરવાને જેના જેવો બીજો કોઈ નથી
 ॥ એવા નૃસિંહરૂપે પૃથ્વી ઉપર પ્રગટ્યા ॥ પ્રલ્હાદના
 હિતને વાસ્તે મદમાં અંધ થયેલા અસુરને મારવા સારુ
 મહા વિક્રાલ ભયંકર વેશે બન્યા ॥ હીરણ્યકશ્યપુને
 મારીને જનનો ઉદ્ધાર કર્યો ॥ એવા ભગવાનનો જશ
 વારે વારે ઉચ્ચારીને કહું છું ॥ એવા અતિશે આનંદ
 ના થડરૂપ ॥ ૪ ॥ ॥ છંદ ॥ ॥ સુરરાજ કજં મહા-
 રાજ સુધારણ ॥ વામણ અંગ મુચંગ બળં ॥ દ્વિજ દિન
 ચલંબલ આગલ દાપત ॥ ત્રીન ક્રમં ઘર દેત્રિપણં ॥
 વર લે વધ વ્યોમ સુ ભોમ ભરે બલ ॥ દાવ
 રસાતલ રાજ દર્દ ॥ આતિ આનંદ કંદ મુનિંદ
 આરાધત ॥ સો સહજાનંદ રૂપ સહી ॥ ૫ ॥ અર્થ-પછી
 મહારાજ ઈંદ્રનું કાજ સુધારવાને વાસ્તે પવિત્ર વામન
 અંગે બન્યા અને ગરીબ બ્રાહ્મણ થઈને ચાલ્યા ॥ અને
 બલી રાજા આગલ જઈને કહું કે ત્રણ પગલાં પૃથ્વી
 આપવાની પ્રતિજ્ઞા કર ॥ પછી એવું વરદાન લઈને આ-
 કાશમાં વધીને પૃથ્વી ભરી લીધી ॥ અને બલી રાજાને

रसातलमां दाव्यो ॥ अने सांनुं राज आप्युं ॥ एवा
 एवा अतिशे आनंदना थड रूप० ॥ ५ ॥ छंद ॥ धन
 धाम द्विजं फसराय तनं ॥ धर हेत पिता निज मातहणं
 ॥ कर पाण फसि नक्षत्राण करे धर ॥ तोड भुजा सह-
 स्त्राण तणं ॥ किरतार अपार प्रकार बहुकर ॥ वार
 केहि अवतार बहि ॥ अति आनंदकंद मुनिद आराधत
 ॥ सो सहजानंद रूप सही ॥ ६ ॥ अर्थ-पछी जे ब्राह्म
 णने घेर परशुरामनो देह धरयो ॥ ते ब्राह्मणना घरने
 धन्य छे ॥ ते फरशुरामे पिता उपर हेत राखीने पोतानी
 माने मारी नांखी ॥ अने हाथमां (कृपाण) तरवार
 जेवी फरशी धरीन नक्षत्रि पृथ्वी करी ॥ अने सहस्त्रा-
 र्जुनना हजार हाथ तोडी नाख्या ॥ ते जगतकर्तारि
 बीजा पण केटलाएक अवतार लईने अनेक प्रकारथी
 घणीवार एटले बहु सहायता करी छे ॥ एवा अतिशे
 आनंदना थडरूप ॥ ६ ॥ छंद ॥ होय नाथनरं रघुनाथ
 सुरां हित ॥ ईशजग दश शिश अरं ॥ सुध सित ल-
 ई बुध जीत निशाचर ॥ क्रीत जगं सप्रबित करं ॥
 धनुषं धर भार उतार सबे धर ॥ नार रुषि अविधारन
 हि ॥ अति आनंदकंद मुनिद आराधत ॥ सो सहजानंद
 रूप सही ॥ ७ ॥ अर्थ-पछी देवताओना हितने वास्ते
 ते नाथ नररूपे रामचंद्रजी थया ॥ ते जगतना ईश्वर
 दस माथावाला रावणना (अरि) शत्रु थया ॥ तेमणे

સીતાજીની સુધ લીધી ॥ અને રાક્ષસ સાથે જુધ્ધ જી-
 યા ॥ અને જગતમાં કીર્તિ (પ્રવિશ્ત્ર) વિસ્તારવાલી
 કરી ॥ અને ધનુષ ધરીને પૃથ્વીનો વધો ભાર ઉતાર્યો
 ॥ અને ગૌતમ કાપિની સ્ત્રી અહલ્યાનો ઉધ્ધાર કર્યો ॥
 એવા અતિશય આનંદના થડ રૂપ ॥ ૭ ॥ છંદ ॥ ક્રપ્ત
 અવતાર ઓધાર જનં હરિ ॥ કંસ સંહાર વિહાર કિયં ॥
 વછવાલ વ્યાલનથે વિસવેસર ॥ રીક્ષત બાલ ગોપાલ
 રીયં ॥ વસુ કોપ અનોપ કિયો વ્રજેપં તવ ॥ ગોપ રથે
 ગિરિરાજ ગ્રહિ ॥ અતિ આનંદકંદ મુનિંદ આરાધત ॥
 સો સહજાનંદ રૂપ સહી ॥ ૮ ॥ અર્થ—વલી ક્રપ્ત અવતાર
 ધરીને જનનો ઉધ્ધાર કર્યો ॥ અને તે હરિયે કંસનો
 સંહાર કર્યો ॥ અને વ્રજમાં વિહાર કર્યો અને તે વિશ્વે
 શ્વરે વાછડાં અને બાલક સાથે જડને (વ્યાલ) સરપને
 નાથ્યો ॥ તેથી સાં રહેલા ગોવાલના બાલકો રીક્ષયા ॥
 વલી ઈંદ્રે વ્રજ ઉપર અતિશે કોપ કર્યો ॥ સારે ગોવ-
 ધન પર્વતનું ધારણ કરીને ગોવાલિયાઓનું રક્ષણ કર્યું
 ॥ એવા અતિશય આનંદના થડ રૂપ ॥ ૮ ॥ છંદ ॥
 પ્રગટે બુધ સો સુધ વોધ પ્રકાસણ ॥ જોધ મને અવરોધ
 જગં ॥ સવ મત્તતરં ઉપરંત વ્રતંશત ॥ ભૂર ઉમંત અસંત
 ભગં ॥ નિસપ્રેહિ નિકામ નસ્વાદ નલોભીય ॥ માન
 વિના વ્રતમાન મહિ ॥ અતિ આનંદકંદ મુનિંદ આરાધત
 ॥ સો સહજાનંદ રૂપ સહી ॥ ૯ ॥ અર્થ—વછી શુધ્ધ જ્ઞાન

प्रकाश करवा सारु बुद्ध रूपे प्रगट थया अने जगतमां
मन रूपी जोध्यानो अवरोध करयो ॥ मतलब के मनने
वश करयुं ॥ बीजा सर्वे मतने माथे अने सर्वापरि व्रत
धारण करयां ॥ अने भूरलोकमां साचा साधुओने उ-
न्मत्त कस्या ॥ अने असंतने भगाडी मूक्या ॥ अने
वली ते साधुने एवा करया के निस्प्रेही निष्कामी निः
स्वादी अने निर्लोभी थइने अभिमान तजीने वर्तमान
पालवा खबरदार रह्या ॥ एवा अतिशय आनंदना थड
रूप ॥९॥ ॥छंद॥ जब होसिय रोर करोर महाजग ॥
होय कलु ध्रम लोप होमि ॥ असुराण जुराण भयाण
वधे अल ॥ द्वेष शुभेष देखे धरमि ॥ धजराज चढे नि-
कलंक चक्रं धर ॥ भय हरभी जयकार भही ॥ अति
आनंद कंद मुनिंद आराधत ॥ सो सहजानंद रूप सही
॥१०॥ ॥अर्थ-वली ज्यारे जगतमां महाकूर रोल वर-
तशे ॥ अने कलियुग होवाथी धर्मनो लोप थशे ॥ अने
(अल) पृथ्वीमां भयानक जोरावर असुरो वधशे ॥ अने
तेओ सारा भेखधारीने देखीने द्वेष धरशे ॥ सारे निक-
लंक रूपे चक्र धरीने वावटो लईने महाराज चडशे ॥ अने
भयहरीने पृथ्वीमां जयजयकार करशे ॥ एवा अतिशय
आनंदना थडरूप ॥१०॥ ॥छंद॥ अवतार अनेक लिया अ
विन्यासीय ॥ लाख अलेख अवे लेयसी ॥ सहजानंदरूप
अनूप सबे हिय ॥ व्यापक रूप रयो विलसी ॥ नित

નીમત રૂપ અનૂપ નિરંજન ॥ લાડુય તાકિહિ ઓટલ-
 હિ ॥ અતિ આનંદ કંદ મુનિંદ આરાધત ॥ સો સહજા-
 નંદ રૂપ સહી ॥ ૧૧ ॥ ॥ અર્થ-તે અવિનાશી ભગવાને
 અનેક અવતાર લીધા ॥ અને હવે વલી ગણી ન શકાય
 એટલા લાઘવ અવતાર લેશે ॥ તે સર્વેમાં ઉપમા ન આપી
 શકાય એવા શ્રી સહજાનંદ સ્વામીનું રૂપ વ્યાપક રૂપે
 શોભી રહું છે ॥ અર્થાત્ શ્રીજી મહારાજ સર્વે અવતારના
 અવતારી છે ॥ અને તે અંજન જે માયા તેણે રહિત એવા
 જે ભગવાન ઉપમા આપી શકાય નહીં એવા વલી નિઃ-
 રૂપ અને નૈમિત્તિક રૂપ ધરનારા ॥ એવા શ્રીજી મહા-
 રાજનું લાડુ વારોટે (બ્રહ્માનંદ સ્વામિ) શરણ લીધું ॥
 એવા અતિશય આનંદના થડ રૂપ ॥ ૧૧ ॥ છપય ॥ ॥ એહિ
 મછ એહિ કછ ॥ એહિ શુકરતનુ ધાર્યો ॥ એહિ વને નર-
 સિંઘ ॥ દુષ્ટ હરનાકંસ માર્યો ॥ એહિ વામન વપુ કિન ॥
 લીન પદતીન ભુવન ત્રય ॥ એહિ ફરસિધર રામ ॥ એહિ
 રઘુપતિ કિય જગજય ॥ એહિ ક્રષ્ણ બુધ ન કલંક એહિ ॥
 તેહિ ભેટત ભવ ભ્રમ ટલે ॥ કત નેક રૂપ લાડૂ કહે ॥
 સો યહ સહજાનંદ મલે ॥ ૧૧ ॥ ॥ અર્થ-એજ
 મચ્છ અને એજ કચ્છ અને એજ વરાહનો
 દેહ ધાર્યો ॥ અને એમણેજ નૃસિંહ રૂપે થઈને
 દુષ્ટ હિરણ્યકશ્યપુને માર્યો ॥ અને એમણેજ વામન દેહ
 ધરીને ત્રણ પગલામાં ત્રણ ભુવન ભરી લીધાં ॥ અને એજ

फरशीना धरनारा फरशुराम थया ॥ अने एमणेज रा-
मचंद्रजीनुं रूप धरीन जगतमां जय करथो ॥ एज कृष्ण
बुद्ध अने निकलंक पण एज ॥ तेमने मळतां संसारमां भम-
वानुं मटी जाय लाडु वारोट कहेछे के जेणे अनेकरूप करथां
त सर्वना अवतारी आज सहजानंद स्वामि मने मल्या ॥ १ ॥

॥ पट दर्शन विषे ॥

॥ साखी ॥ ॥ देख्यां सब दुभियानमे ॥ पट दरमनकुं
खोज ॥ वर्णाश्रम वेपारके ॥ सब डोलत ले बोज
॥ १ ॥ ॥ अर्थ-ब्रह्मानंद स्वामि कहेछे के वधी
दुनियांमां छ दर्शनेने खोलीन में जोयां ॥ पण ते
सर्वे पोत पोताना वरणना अने आश्रमना व्य-
वहारना भार उपाडीने भमेछे ॥ १ ॥ ॥ साखी ॥
॥ पंडीत सन्यासी प्रसिध ॥ जोगीजंगम जान ॥ शेख
भक्त अरु सेवडा ॥ सर्वमें खेंचा तान ॥ २ ॥ ॥ अर्थ-
(१) पंडित एटले ब्राह्मण ॥ (२) सन्यासीरूपे प्रसिध
छे ते ॥ (३) जोगी एटले कानफटा ॥ (४) जंगम
जे शिवना उपासक घंट बजावता फरेछे ते जाणो ॥
(५) शेख भक्त एटले फकिर ॥ (६) सेवडा एटले
जैनना गोरजी ॥ ए सर्वेमां ताणा खेंच रहीछे ॥ मतलब
क सर्वे पोतपोतानो मत खेंचेछे ॥ २ ॥ ॥ साखी ॥
आंटी छुटे न अंतरे ॥ मिटेन मनका खेद ॥ काम क्रोध
मद लोभ वस ॥ वक्ता श्रोता वेद ॥ ३ ॥ ॥ अर्थ-ए-

મનાં અંતરમાં પડેલી આંટી છુટતી નથી ॥ અને મનનો
 શ્વેદ મટતો નથી ॥ અને જે બ્રાહ્મણો વેદના કહેનારા
 અને સાંભળનારા છે ॥ તેઓ પણ કામ ક્રોધ મદ અને
 લોભને વશ છે ॥ ૩ ॥ ॥ છંદ ત્રિભંગી ॥ ॥ મદ વેદ
 પદંદા ॥ સંધ્યા વંદા ॥ કર્મન પંદા ॥ ઉચ્છંદા ॥ ઓંકાર
 જપંદા ॥ મુન્ય રહંદા ॥ અંતર મંદા ॥ મુકુંદા ॥ પુની કથા ક-
 હંદા ॥ લોક ઠગંદા ॥ વિકલ ફીરંદા ॥ વર્તેદા ॥ સદ્ગુરુકા વં-
 દા ॥ બ્રહ્માનંદા ॥ સાચ કહંદા ॥ સવ હંદા ॥ ૧ ॥ ॥ અર્થ-
 બ્રાહ્મણ વેદ મળેછે સંધ્યાવંદન કરેછે ॥ અને કર્મની જા-
 લમાં લટકી રહેછે ॥ કોઈતો ઝંકાર જપેછે ॥ અને મૌ-
 નરહેછે ॥ પણ તે મૂર્ખ અંતઃકરણમાં મુંઝાયછે ॥ વલી
 કથા કહીને લોકોને ઠગેછે અને વ્રતિ ઇટલે આજિવિ-
 કાને વાસ્તે ગાંડા થઈને ફરેછે ॥ સદ્ગુરુનો વંદો બ્રહ્માનં-
 દ સર્વેની સાચે સાચી વાત કહેછે ॥ ૧ ॥ ॥ છંદ ॥ ॥
 સંન્યાસ સદ્ગુરુના ચિત્ત ન થરૂતા ॥ ફિરત વગુતા ॥ જગ ચૂતા
 માયાકે પૂતા ॥ નગર રહૂતા ॥ ધરન વિભૂતા ॥ ધન ધૂતા ॥ મૈ-
 શ્વ અરુ મૂતા ॥ જપત સંજુતા ॥ રંડિરૂતા ॥ નતરંદા ॥ સદ્ગુરુકા
 વંદા ॥ બ્રહ્માનંદા ॥ સાચકહંદા ॥ સવહંદા ॥ ૨ ॥ ॥ અર્થ-સ
 ન્યાસી જે હોયછે તેના મન ક્ષણ માત્ર સ્થિરતા
 પામતાં નથી ॥ અને તે જગતરૂપી કાદવમાં ચુલી જઈને
 વગોવાતા ફરેછે ॥ તેઓ નાગા રહેછે પણ માયાના
 પૂત્ર છે અને વિભૂતિ ધરે છે પણ ધનના ધૂતના-

રા છે ॥ ખૈરવ અને ભૂતના મંત્રે પળ મેલા જપે
 છે ॥ અને રાંડની (રતિ) પ્રીતિને તરી શક્તા નથી
 ॥ સદ્ગુરુનો બંદો ॥ ૨ ॥ ॥ છંદ ॥ ॥ જગકાવત
 જોગી સવ વિધિ ભોગી અંતર રોગી અથ ઓથી ॥
 મદમાંસ ખસોગી ભૂત જપોગી લજ્યા સ્વોગી કાધોગી
 ॥ તનકાન ફટોગી વેશુધ્ય હોગી ફરતહે પૂંગી ફૂંકંદા
 ॥ સદ્ગુરુકા બંદા બ્રહ્માનંદા સાચ કહંદા સવ હંદા
 ॥ ૬ ॥ ॥ અર્થ-વલી જગતમાં જોગી કહેવાયછે ॥
 પળ તેઓ સરવે પ્રકારે ભોગી હોય છે એના અંતઃ
 કરણ વિષયાદીકના રોગી અને પાપના (ઓષ)
 ઢગલા જેવાં હોયછે ॥ મદિરા ને માંસનો ભક્ષ કરેછે
 ॥ અને ભૂતનો જપ કરેછે ॥ અને લાજ સ્વોઈ નાસેછે
 અને કામના (ઓષ) ઢગલાછે ॥ શરીરે કાલ ફડા-
 વેછે અને બેમાન થઈ જાયછે ॥ અને શિંગડી ફૂંકતા ફરતા
 ફરેછે ॥ સદ્ગુરુનો બંદો ॥ ૩ ॥ ॥ છંદ ॥ અરુ જંગમ
 કહાવે લીંગ લટકાવે ઘંટ વજાવે શિવ ગાવે ॥ પુનિ
 ખીસ મંગાવે પૈસા પાવે ત્રપત ન આવે તન તાવે ॥
 ફિર સ્વાન ભસાવે લોક હસાવે ખેલ લજાવે
 ખરમંદા ॥ સદ્ગુરુકા બંદા બ્રહ્માનંદા સાચ કહંદા
 સવહંદા ॥ ૪ ॥ ॥ અર્થ-વલી જંગમ કહેવા-
 યછે ॥ તે પોતાના માથા ઉપર શિવના લિંગ લટકા-
 વેછે ॥ ઘંટ વજાવીને શિવના ગુણ ગાયછે ॥ વલી ખીસ

માગેછે ॥ પૈસા પામેછે ॥ તોપણ તૃપ્તિ થતી નથી ॥
 તેથી શરીર તપાવેછે ॥ વસ્તીમાં ફરીને કૃતરાં મસા-
 વેછે ॥ લોકને હસાવેછે ॥ અને તે પોતે ભરમાણા
 પોતાના ખેલને લજાવેછે ॥ સદ્ગુરુનો બંદો ॥ ૪ ॥ ॥
 છંદ ॥ ॥ અરુ ફકિરા ફરતા કલમા ભરતા અંતર
 જરતા નહિં ઠરતા ॥ જિવનકું મરતા સંક ન ધરતા
 જું હર કરતા નહિ ડરતા ॥ બોલત વરવરતા કંઠ
 હુકરતા પછીમ ધરતા ધૂમંદા ॥ સદ્ગુરુકા વંદા બ્રહ્મા-
 નંદા સાચ કહંદા સવહંદા ॥ ૫ ॥ ॥ અર્થ—વલી
 ફકીરો ફરેછે ॥ તેઓ કલમો ભણેછે ॥ તેમના અંતઃ-
 કરણ વલતાં હોયછે ॥ પણ ઠરતાં નથી ॥ અને જીવડાં
 મારતાં શંકા ધરતા નથી ॥ અને જેમ હર એટલે શિવ
 સંહાર કરે તેમ સંહાર કરતાં બીતા નથી ॥ અને કંઠ
 ઘોઘરો કરીને વડવડતા બોલેછે ॥ અને પશ્ચિમ દિશા
 એ માથું ધરીન ધુમેછે ॥ અર્થાત્ પશ્ચિમ દિશાને ન-
 મેછે ॥ સદ્ગુરુનો બંદો ॥ ૫ ॥ ॥ છંદ ॥ ॥ આશ્વ-
 ત અરિહંતા જંતા જંતા કર્મ કથંતા ભરમંતા ॥ વિષ-
 યે વરતંતા કંચન કાંતી ॥ અંતર શાંતા નહિ અંતા ॥
 અરુ કર્મ કરંતા નહીં ડરપંતા નહીં ભગવંતા ઉચરંદા
 ॥ સદ્ગુરુકા વંદા બ્રહ્માનંદા સાચ કહંદા સવહંદા ॥ ૬ ॥
 ॥ અર્થ—તેમજ જતિયો અરિહંત અરિહંત એમ બોલે છે ॥
 તથા અરે જંતુ મરશે જંતુ મરશે ॥ એમ કહે છે ॥

अने कर्मनी मुख्य बात कहीने लोकोने भमावे छे ॥
 अने पंच विषयमां वरते छे ॥ तथा सोनुं. अने स्त्रीथी
 अंतःकरणमां शांति पामता नथी ॥ अने कर्म करतां
 कांड बीता नथी ॥ अने भगवाननुं नाम बोलता नथी
 ॥ सद्गुरुनो बंदो ॥ ६ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ कहावत वैरा-
 गी लुब्ध्या लागी अंतर आगी त्रियरागी ॥ ज्वाला
 वीष जागी माया पागी अकल वेकागी निर्भागी ॥
 बांधत घर बागी लज्या सागी धन अरु दांगी धा-
 रंदा ॥ सद्गुरुका बंदा ब्रह्मानंदा साच कहंदा सब-
 हंदा ॥ ७ ॥ ॥ अर्थ-वली केटलाएक वैरागी कहेवाय
 छे पण तेमने लोभ लागेलो होय छे ॥ अने स्त्री
 उपर प्रीतिवाला होय ॥ तेथी तेमना अंतःकरणमां
 कामनी आग सलगती होय छे ॥ तेमने पंच विषय-
 नी झाल लागेली अने मायामां भिजाएला होवार्थी
 ते अभागीआओनी अकल वेचाइ गइ होय छे ॥
 तेओ घर अने बाग बनावे छे अने लाज तजीने
 पैसा तथा दांगपणुं धारण करे छे ॥ सद्गुरुनो
 बंदो ॥ ७ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ भक्तीके भगला बातन
 फगला अंतर दगला विष दगला ॥ देखत दगदगला
 ॥ डोलत नगली थिरठव पगला ॥ जगठगला बाहर
 गती बगला अंतर कगला वाका संगला छांडंदा ॥
 सद्गुरुका बंदा ब्रह्मानंदा साच कहंदा सबहंदा ॥ ८ ॥

॥ અર્થ-ભક્તિનો, વેષ ધરનારા અને વાતમાં ફગી
 જનારા અને અંતઃકરણમાં દગાવાલા તથા વિષયના
 ઢગલા જેવા નાગા થઇને ફરતા ફરે ॥ પળ સ્ત્રી આ-
 દિક સામું ઢગડગ જોઈ રહે ॥ અને તે જગતને ઢગનારા
 થિર ઠરાવીને પગલાં માંડે ॥ તેમની બહારની ચાલ
 ચલગત બગલા જેવી ॥ અને અંતઃકરણ કાગડા જે-
 વાં હોય ॥ એવાનો સંગ છોડી દેવો જોડ્યે ॥ સદ્ગુરો
 બંદો ॥ ૮ ॥ ॥ છંદ ॥ ॥ ગલ ધારત, માલા અંતર
 કાલા વિષે વિહાલા ચિત ચાલા ॥ મજબૂત મસા-
 લા ત્રપત રસાલા ઠાકુર થાલા પંડપાલા ॥ મન ક્રોધ
 કરાલા જરત જંજાલા ॥ અંતર ઠાલા મુઝૂંદા ॥ સદગુ-
 રુકા બંદા બ્રહ્માનંદા સાચ કહંદા સર્વહંદા ॥ ૯ ॥ અર્થ-
 ગલે માલા ધારે અને તેનું અંતઃકરણ કાલું હોય છે ॥
 અને પંચવિષયથી બેહાલ થયો હોય એવા તેના ચિત્તના
 ચાલા હોય ॥ સૂબ મશાલા અને તૂસ થાય એવી રસવાલી
 રસોઈથી ઠાકોરજીના થાલને બાને પોતાના પંડને પાલ-
 નારા ॥ તેના મનમાં તો વિકરાલ ક્રોધ હોય ॥ અને
 સંસારની જંજાલમાં બલતો હોય ॥ અને અંતઃકરણ જ્ઞાન
 વગરનું ઠાલું મુઝાતું હોય ॥ સદગુરુનો બંદો ॥ ૯ ॥
 ॥ છંદ ॥ વૈરાગાં ઝંડી દેસત મંડી ॥ આતમ સ્વંડી ક્રમ
 કંડી ॥ ઊર જડતા ઝંડી મમતા મંડી ટીલા ઢુંઢિ પાશ્વં
 ડી ॥ રાસત ઘર રંડી સર્વ વિધિ છંડી પથરા પિંડિ

पूजंदा ॥ सदगुरुका बंदा ब्रह्मानंदा साच कहंदा सब-
हंदा ॥१०॥ अर्थ-बली केटलांक वैरागीना छुंड देखवा
मां भांड जेवां होय ॥ अने आत्मज्ञाननुं खंडन करीने
कर्मकांडमां लागेलां होयछे ॥ एना अंतःकरणमां उंडु
अज्ञानपणुं होय ममतमां मंडेला अने ते पाखंडीओ टीला
टपकां करेछे ॥ अने शास्त्रमां कहेली बधी विधि छो-
डीने घेर रांड राखीने पथरा पींडीने पुजेछे ॥ (मतलब
के जेम धेडनो स्पर्श थाय त्यां ब्राह्मण रहे नहीं ॥ तेमज
व्यभिचारी के व्यसनी पूजा करनारा होय ॥ त्यां देव
रहे नहीं ॥) माटे एवा देवने मानवा ते पथराने मानवा
बराबर छे ॥ सद्गुरुनो बंदो ॥१०॥ ॥ छंद ॥ नावत
जल नीका धारत टीका गल कंडीका तुलसीका ॥ अरु
मिठा जीयका कपटी हियका नाहिन टीका मुरखीका
॥ बाना हरजीका वीकल बिलिका ॥ किकर त्रियका
विषकंदा सद्गुरुका बंदा ब्रह्मानंदा साच कहंदा सबहंदा
॥११॥ अर्थ-जइने सारा जलमां न्हाय अने टीलां करे ॥
तथा गले तुलसीनी कंडी राखे ॥ तेओ जीभना मीठा
पण हैयाना कपटी ॥ कूकडीनां बच्चां जेवा अज्ञानी
ठीक वरतता नथी ॥ ते हरिनुं बानुं घेरे पण बिला-
डीनां बच्चांनी पेठे विकल थईने फरे ॥ अने स्त्रिना
चाकर तथा पंच विषयना थड रूप होय छे ॥ सद्गुरुनो
बंदो ॥ ११ ॥ ॥ छंद ॥ भेषनके धारी सबमें

રાહારી અંતર ભારી અહંકારી ॥ બોલત મુખ ગારી
 રાહત નારી ॥ માયા યારી ॥ વ્યાપારી ॥ જવ મંગલ
 કારી ॥ ગુરુ મિલ્યારી ॥ ભ્રમના ટારી જગ ફંદા ॥
 સદ્ગુરુકા બંદા બ્રહ્માનંદા સાચ કહંદા સવહંદા ॥૧૨॥
 ॥ અર્થ-૧ રીતે ભેલેના ધરનારા સર્વ પ્રકારે સુવાર
 મેલેલા છે ॥ તો પળ અંતઃકરણમાં ભારે અહંકારી છે
 મોઢે ગાલો વોલે સ્ત્રી રાખે ॥ માયાના યારી ॥ અને
 કેટલાએક વેપારી પળ હોય છે ॥ પળ મને જ્યારે ક-
 લ્યાણકારી ગુરુ મળ્યા ॥ સારે જગતનો ફાંસો તથા
 ભ્રમણા ટાલી નાંચી ॥ સદ્ગુરુનો બંદો ॥ ૧૨ ॥
 ॥ છપય ॥ ॥ ગુરુ પૂરન અદ્વૈત ॥ મિલે જવ ભર્મ
 મિટાયે ॥ ગુણાતિત દે જ્ઞાન ॥ અસત અગ્યાન નસા-
 યે ॥ કરુણાસિંધુ ક્રપાલ ॥ હાથ જવ સિરપર દીને
 ॥ કાલ વ્યાલ વિકરાલ ॥ તાહિસેં નિર્ભય કિને ॥
 સંસાર વિઘન સવ મેટકેં ॥ પાર કિયા ભવફંદસેં ॥
 કહે બ્રહ્માનંદ મમતા ટરિ સદ્ગુરુ સહજાનંદસેં ॥ ૧ ॥
 ॥ અર્થ-પૂરા અદ્વૈત ઇટલે તેમના જેવો બીજો કોઈ
 નહિ ॥ એવા ગુરુ જ્યારે મળ્યા ॥ સારે ભ્રમણા મ-
 ટાડી ॥ માયિક ત્રણ ગુણથી જૂદા એવા પરમેશ્વરનું
 જ્ઞાન આપીને અસત અને અજ્ઞાનનો નાશ કર્યો ॥
 ॥ દયાના સાગર હોય એવા દયાલુ જ્યારે માથા
 ઉપર હાથ મૂક્યો ॥ સારે વિકરાલ કાલરૂપી સરપ-

थी निर्भय कस्यो ॥ अने संसारनुं विघन बंधुं मटाडी
ने भवना फांसाथी पार उतारयो ॥ ब्रह्मानंद स्वामि
कहे छे के एवा सद्गुरु श्री सहजानंद स्वामिना प्र-
तापथी संसारनी ममता टली गइ ॥ १ ॥

॥ ज्ञानरूपी बाजी विषे कुंडलियो ॥

॥ बंदे बाजी बेशहे ॥ खुब जुक्ति करी खेल ॥
सार अकेली मरतहे ॥ तातें तुं रख बेल ॥ तातें तुं
रख बेल ॥ दाव दे समझ विचारी ॥ तीन चारकुं
साग ॥ पंच खट जीत खेलारी ॥ दाखत ब्रह्मानंद
॥ सप्त अठ नव दश खंदे ॥ सब ताजि निज घर
आय ॥ बेशहे बाजी, बंदे ॥ १ ॥ ॥ अर्थ—हे बंदा
ज्ञानरूपी बाजी बेश छे ॥ माटे तुं खूब जुक्ति करीन
खेल ॥ तेमां सार एटले सोगठी एकली होय ते मरे
छे ॥ पण *जुग होय ते मरतो नथी ॥ ते माटे तुं
सद्गुरुनी बेल राख ॥ अने सद्गुरुनी बेल राखीने समजी
विचारीने दावदे ॥ अने काम क्रोध अने लोभ ए
त्रणने तथा चार अंतःकरणनी मायिक वृत्तिओने
तजीने पंच विषय ॥ छ उर्मि (भूख॥ तरश॥ मोह॥ शो-
क ॥ जरा ॥ मृत्यु) रूपी खीलाडीओन जीत ॥ ब्रह्मा
नंद स्वामि कहेछे के जेम बाजीमां ९६ खंड एटले
घरछे ॥ तेम ज्ञान बाजीमां सोना आदिक सात धा-

તુની વાસના તથા આઠ પ્રકારની સિધ્ધિની તથા નવ પ્રકારની નિધિની વાસના તથા દસ ઇન્દ્રિયો રૂપી સ્વંદ એટલે ઘરછે ॥ તે વધાને ઓલંધીને પોતાને ઘેર આવ્ય ॥ અર્થાત આત્મજ્ઞાન પામ્ય ॥ અથવા ભગવાનના ધામને પામ ॥ હે બંદા એવી જ્ઞાનની વાજી વેશછે ॥ ૧ ॥

॥ વિશ્વાસ વિષે સવૈયા ॥

॥ દેવ તરુવરકી છડ્યાં ફલિહે ફલિહે ફલિહે ફલિ-
હેરી ॥ જ્યું ઉદથી જલમં નદીયાં મલિહે મલિહે મલિહે
મલિહેરી ॥ જ્યું હરી ભેવત પાપ મંવે જલિહે જલિહે
જલિહે જલિહેરી ॥ બ્રહ્મમુનિ અંન પાન મદા મલિહે
મલિહે મલિહે મલિહેરી ॥ ૧ ॥ ॥ અર્થ-કલ્પવૃક્ષની
છાયા ફલશે ॥ ફલશે ॥ ફલશે ॥ ને ફલશેજ ॥ અને
જેમ મમુદ્રતા પાણીમાં નદીઓ મલશે ॥ મલશે ॥ મ-
લશે ॥ ને મલશેજ ॥ અને જેમ ભગવાનને સેવતાં પાપ
નો ઢગલો વલશે ॥ વલશે ॥ વલશે ॥ ને વલશેજ ॥
તેમજ બ્રહ્માનંદ સ્વામિ કહેછે કે અન્ન અને પાણી સદા
મલશે ॥ મલશે ॥ મલશે ॥ ને મલશેજ ॥ માટે પ્રભુનો
વિશ્વાસ રાખવો ॥ ૧ ॥

॥ અથ પૂર્ણાનંદ સ્વામિકૃત ધ્યાન ચિંતામણિ ॥
॥ દોહા ॥ ॥ નવ શીખ સુંદર નાથકિ ॥ મૂર્તિ મનો-
હર જોય ॥ યથાશક્તિ વરનન કરું ॥ ચરન કમલ

चित प्रोय ॥ १ ॥ ॥ अर्थ-श्रीजी महाराजनी नख-
 थी शिखा पर्यंत सुंदर मूर्ति जेछे ॥ तेमना चरणार-
 विंदमां चित परोविने मारी शक्ति प्रमाणे वर्णन
 करुंछु ॥ १ ॥ दोहा ॥ ॥ प्रभुपद कोमल जलजवत ॥
 भक्त भमरता पाय ॥ सुखद सुगंधि लहत नित ॥
 जुगल चरन चित लाय ॥ २ ॥ ॥ अर्थ-श्रीजी महा-
 राजना चरण कमल जेवा कोमलछे ॥ तेमां भक्तजननां
 मन भमरा रूपे थईने ॥ ते बन्ने चरणने चित्तमां ला-
 वीने नित्य प्रत्ये सुखदायक सुगंधी लेछे ॥ २ ॥ ॥
 छंद मधु भार ॥ मोहंत मोय ॥ प्रिय अधिक मोय ॥
 तेहि चित प्रोय वरनुं हुं दोय ॥ १ ॥ ॥ अर्थ-ते चरणं
 शोभेछे ॥ ते मने वधार प्रियछे ॥ तेमां चित परोवीने
 बन्ने चरणनुं वर्णन करुंछु ॥ १ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ पदतल सुठार
 ॥ कोमल उदार ॥ उर एकतार ॥ राखुं समार ॥ २ ॥
 ॥ अर्थ-चरणनां तलियां सारा ढालवालां छे ते कुमलां
 अने उदार छे ॥ ते अंतःकरणमां एक तारनी रीते संभारी
 ने राखुं ॥ २ ॥ ॥ छंद ॥ तेहि मध्य चैन ॥ नित प्रीति देन
 ॥ महि जोरिनेन ॥ वरनुं सो एन ॥ ३ ॥ अर्थ-ते चरणमां
 चिन्ह छे ते नित्य प्रीति आपे एवां छे ॥ तेमां दृष्टि जो-
 डीने सुंदर वर्णन करुंछु ॥ ३ ॥ ॥ छंद ॥ पद दच्छनमांहि
 ॥ लच्छन स्नेहाही ॥ नव कहत ताहि ॥ उपमा लजाहि
 ॥ ४ ॥ अर्थ-जमणा चरणमां जे चिन्ह शोभेछे तेनी

સંખ્યા નવ કહેવાયછે ॥ તેને જોતાં સર્વ ઉપમાઓ લા-
 જેછે ॥ ૪ ॥ ॥ છંદ ॥ સોહંત સ્તુ ॥ શુભ કોણ અષ્ટ
 અઘ ઓઘ નષ્ટ ॥ કાટંત કષ્ટ ॥ ૫ ॥ ॥ અર્થ-તેમાં
 સારુ ૧અષ્ટકોણ શ્રેષ્ઠ શોભેછે ॥ તે પાપના ઢગલાનો
 નાશ કરેછે ॥ અને કષ્ટને કાપેછે ॥ ૫ ॥ ॥ છંદ ॥
 ॥ જવ જંબુ રેખ ॥ શ્રણિ સ્વસ્તિ પેશ ॥ નિત દેશ દેશ
 ॥ દ્રગ સુફલ લેશ ॥ ૬ ॥ ॥ અર્થ-અને ૨જવ તથા
 ૩જાંબુ અને ૪ઉર્ધ રેશ ૫અંકુશ તથા ૬સાથીયો દેશા-
 યછે ॥ તે રોજ જોઈ જોઈને નેત્ર સુફલ થયાં ॥ એમ
 ગણિયે છીયે ॥ ૬ ॥ ॥ છંદ ॥ ॥ ધ્વજ કુલિશ કંજ ॥
 સુંદર સુરંજ ॥ મદ મોહ ગંજ ॥ અઘ અંધ મંજ ॥ ૭ ॥
 ॥ અર્થ-૭ધ્વજા ૮વજ્ર અને ૯કમલ સુંદર મનોરંજન
 છે ॥ તે મદને અને મોહને ગંજન કરેછે ॥ તથા પાપ-
 રૂપી અંધારાને તોડી નાખેછે ॥ ૭ ॥ ॥ છંદ ॥ ॥
 પદ વામ સાત ॥ લચ્છન રહાત ॥ નિતદીન રાત ॥
 મુનિ ચીત લાત ॥ ૮ ॥ અર્થ-ઢાઢા ચરણમાં સાત
 ચિન્હ રહ્યાંછે ॥ તેને મુનિયો રાતને દહાડો હમેશાં
 મનમાં ધારેછે ॥ ૮ ॥ ॥ છંદ ॥ ॥ શુભ ધનુષ્ય
 મીન ॥ ગોપદપ્રચીન ॥ લશ્વ કોણ તીન ॥ કર કામ
 સ્ત્રીન ॥ ૯ ॥ ॥ અર્થ-તે રુદું ૧ધનુષ ૨માછલું અને
 ગાયના ૩પગલાનું ચિન્હ ॥ અને ૪ત્રિકોણનું ચિન્હ
 જોતાં કામાદિકને ક્ષીણ કરી નાખે ॥ ૯ ॥ ॥ છંદ ॥

નમ કુંભ ચિંદ્ર ॥ શિર ધર ફનિંદ્ર ॥ મનમેં નરિંદ્ર ॥
 હોવત અનિંદ્ર ॥ ૧૦ ॥ ॥ અર્થ-આકાશનું ચિન્હ ॥
 દકલશનું ચિન્હ ॥ તથા ૭અર્ધચંદ્રનું ચિન્હ જોતાં
 એવાં ચરણારવિંદ શેષ નાગ પોતાના માથા
 ઉપર ધારણ કરેછે ॥ તેથી પોતાના મનમાં-
 તે નાગનો રાજા અજ્ઞાનરૂપી નિંદ્રા તજે છે ॥ ૧૦ ॥
 ॥ છંદ ॥ ॥ શુભ જુગલ ચરન ॥ આનંદ કરન ॥
 જન લેત સરન ॥ ભવ ભીતિ હરન ॥ ૧૧ ॥ ॥ અર્થ-
 એવાં સારાં બે ચરણ આનંદ કરે એવાં છે ॥ તેનું શર-
 ણ જે જન લે તેના ભવનો ભય હરે છે ॥ ૧૧ ॥
 ॥ છંદ ॥ ॥ અંગુલિ રુચીર ॥ ઊર ધરત ધીર ॥
 મુનિ સૂર વીર ॥ ભવ હરત પીર ॥ ૧૨ ॥ ॥ અર્થ-
 વલી સુંદર આંગલીઓ ધીર પુરુષ અંતઃકરણમાં ધરે
 છે ॥ તથા મુનિજનની અને શૂરવીરોની ભવની પીડા
 હરે છે ॥ ૧૨ ॥ ॥ છંદ ॥ ॥ નલ પંક્તિ દોય ॥
 ક્ષલકંત સોય ॥ જન જોય જોય ॥ ચિત્રીત હોય
 ॥ ૧૩ ॥ ॥ અર્થ-નલની બે પંક્તિયો છે તે ક્ષલકે છે
 ॥ તેને જોઈને હરીજનો વિસ્મિત થાય છે ॥ ૧૩ ॥ છંદ ॥
 ॥ દક્ષિણ અંગુષ્ઠ ॥ નલ લલિત જૂઠ ॥ પુલકીત પૂઠ ॥
 મુનિ જોત સુઠ ॥ ૧૪ ॥ ॥ અર્થ-જમણા પગના
 અંગુઠામાં ચિન્હ પૂજવા યોગ્ય છે ॥ તે (સુઠ) સુંદર
 જોતાં મુનિજનોનાં શરીર રોમાંચિત થઈને પુઠ થાય છે

॥ ૧૪ ॥ ॥ છંદ ॥ ॥ ગુલફાં સુચાર ॥ વરતુલાકાર
 ॥ ઉરવીચ સાર ॥ રઘવીહૃ ઉતાર ॥ ૧૫ ॥ ॥ અર્થ-
 ચારે ઘુંટીઓ ગોલાકાર છે ॥ તેને મારા અંતઃકરણમાં
 ઉતારીને સારી રીતે રાઘવીશ ॥ ૧૫ ॥ ॥ છંદ ॥ ॥
 શુભ શુદ્ધ અંગ ॥ નેપુર પ્રસંગ ॥ નાના સુરંગ ॥ મહિ
 જટિત નંગ ॥ ૧૬ ॥ ॥ અર્થ-ચલી તે સારા અને પવિત્ર
 અંગ સાથે શ્રાંશ્વર છે ॥ તેમાં નાના પ્રકારના રંગના
 નંગ જડેલાં છે ॥ ૧૬ ॥ ॥ છંદ ॥ ॥ શ્રાંશ્વર ઘટીત ॥
 ક્ષનકત ક્ષટીત ॥ રત્ને જટીત ॥ ઉપમા હટીત ॥ ૧૭ ॥
 ॥ અર્થ-તે શ્રાંશ્વર સારા ઘાટનાં છે ॥ અને ક્ષટક્ષટ ક્ષણકારા
 કરે છે તે રત્ને જડેલાં છે ॥ અને તેનાથી વધી
 ઉપમાઓ હોય છે ॥ ૧૭ ॥ ॥ છંદ ॥ ॥ જન વ્રંદ જોત
 ॥ નિત ચીત પ્રોત ॥ મન મલ સુ ધોત ॥ દિલ હોત
 દ્યોત ॥ ૧૮ ॥ ॥ અર્થ-હરિજનનાં મંડલ નિસ્ય જોઈ
 જોઈને તેમાં મન પેરોવે છે ॥ તેથી મનનો મેલ ધોવાઈ
 જાય છે ॥ અને અંતઃકરણમાં પ્રકાશ થાય છે ॥ ૧૮ ॥
 ॥ છંદ ॥ ॥ જંવા રૂ જાનુ ॥ નિત ચિત ઠાનું ॥ રંભા સમાનું
 ॥ ઉરૂ પ્રમાનું ॥ ૧૯ ॥ ॥ અર્થ-વે જાંઘો તથા વે ઢીંચણ નિસ્ય
 ચિત્તને ઠરવાનું ઠેકાણું છે ॥ અને સાથલ કલના થંભ જેવા છે
 ॥ ૧૯ ॥ ॥ છંદ ॥ ॥ કટિ તટ અમીત ॥ ઉપજાત
 પ્રીત ॥ હરલેત ચીત ॥ પટ ચોલ પીત ॥ ૨૦ ॥ ॥
 અર્થ-કેડનો લાંક ઘળી પ્રીતિ-ઉપજાવે છે ॥ તે ઉપર

पीलुं पीतांबर पहेंयुंछे ॥ ते चित्तने हरी लेछे ॥ २० ॥
 छंद ॥ ॥ कांची कलाप ॥ सोभा अमाप ॥ ॥ हरलेत
 ताप ॥ नित प्रीति आप ॥ २१ ॥ ॥ अर्थ-कंदोरांनी
 रचनानी शोभा अपारछे ॥ तेना उपर प्रीति राख-
 नारना तापने हरी लेछे ॥ २१ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ नाभि
 व्रतूल ॥ सोहत अतूल ॥ त्वंदा प्रथूल ॥ प्रद प्रेम मू-
 ल ॥ २२ ॥ ॥ अर्थ-नाभि गोलछे तेनी शोभा अ-
 तुल्य छे ॥ तथा दुंद मोटी छे ॥ ते प्रेम उपजवानुं
 मूलछे ॥ २२ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ त्रिवली सहीत ॥ उदर
 कहीत ॥ राजी सुरीत ॥ सोहत अमीत ॥ २३ ॥ ॥
 अर्थ-अने पेट व्रण बांटा सहित कहेवाय छे ॥
 तेथी उंचे रुंवाटांनी (राजी) पंक्ति सारी रीतनी छे
 ते अपार शोभेछे ॥ २३ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ शुभ उर उ-
 तंग ॥ सुंदर सुचंग ॥ देखंत दंग ॥ कोटी अनंग
 ॥ २४ ॥ ॥ अर्थ-छाती सारी उपडती छे ॥ ते
 सुशोभित अने पवित्रछे ॥ तेने जोतां क्रोड का-
 मदेव आश्चर्य पामे ॥ २४ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ स्तन उ-
 भय सार ॥ सोभा अपार ॥ मुनि बारवार ॥ उर लेत
 धार ॥ २५ ॥ ॥ अर्थ-सारां बे स्तननी शोभा अ-
 पारछे ॥ तेने वारेवारे मुनिजनो मनमां धारी लेछे
 ॥ २५ ॥ ॥ छंद ॥ पुनि उर विलास ॥ वैजंतिमा-
 ल ॥ निरखि नीहाल ॥ मुनिजन मराल ॥ २६ ॥ ॥

અર્થ-વલી છાતી ઉપર મોટી વૈજયંતી (કંઠથી
 પગનાં કાંડા સુધી પહોંચે તે) માલા છે ॥ તે જોઈને
 મુનિજન રૂપી હંમ નિહાલ થાય છે ॥ ૨૬ ॥ ॥છં-
 દ ॥ ॥ હિય વામ સ્વચ્છ ॥ ઓપત શ્રીવચ્છ ॥ દિલ
 લચ્છ લચ્છ ॥ ડોલંત દચ્છ ॥ ૨૭ ॥ ॥ અર્થ-હૈયા
 ઉપર કાંઈક ડાઘી તરફ નિર્મલ શ્રીવત્સનું (ભ્રગુ-
 લાંછન) ચિન્હ શોભે છે ॥ તેનો લક્ષ અંતઃકરણમાં
 કરી કરીને ડાઘા જનો ડોલતા ફરે છે ॥ ૨૭ ॥ ॥
 છંદ ॥ ॥ ગલમાંદિ ડાર ॥ ગુલાવ હાર ॥ હિયમે નિ
 હાર ॥ તિલ સ્યામચાર ॥ ૨૮ ॥ ॥ અર્થ-અને ગ-
 લામાં ગુલાવના હાર નાંખ્યા છે ॥ વલી છાતીમાં ચાર
 કાલા તલ નિહાલીને જોઈએ છિએ ॥ ૨૮ ॥ ॥ છં-
 દ ॥ ॥ શુભ કંઠ નીલ ॥ વિચ એક તીલ ॥ દેખંતદી-
 લ ॥ સુખ હોત કીલ ॥ ૨૯ ॥ ॥ અર્થ-અને કંઠ વચ્ચે લી-
 લા રંગનો એક સારો તિલ છે ॥ તેને જોતાં દિલમાં ન-
 ક્કી સુખ થાય ॥ ૨૯ ॥ ॥ છંદ ॥ તિલ અઠ ઓર ॥
 ઢિગ કંઠ ઠોર ॥ જન કરત દોર ॥ મૃગમદકિ ચોર ॥
 ૩૦ ॥ ॥ અર્થ-વલી તે કંઠની પાસે બીજા આઠ તિલ
 છે ॥ અને તે ભગવાનને અંગે કસ્તુરીની ચોલ હરિજનો
 દોડીને કરે છે ॥ ૩૦ ॥ ॥ છંદ ॥ ॥ ભુજ દોય ડંડ ॥ લં-
 વિત પ્રચંડ ॥ ઝરમધ્ય મંડ ॥ રત્નિં અચંડ ॥ ૩૧ ॥ ॥
 અર્થ-ડંડ જેવા બે હાથ લાંબા અને પ્રચંડ છે ॥ તે અંતઃકરણ

मां मांडीने अखंड हुं राखीश ॥३१॥ छंद ॥ भल युगल
 अंस ॥ मंसल उतंस ॥ कंधर प्रमंस ॥ भय लखित भंस ॥
 ॥३२॥ अर्थ-भला बे खभा पुष्ट अने ऊंचा छे ॥ अने
 कांध प्रशंसा करवा जेवी छे ॥ तेने जोतां भय भागी
 जाय छे ॥ ३२ ॥ ॥ छंद ॥ बेउ बाहुकोर ॥ भुजबंध
 जोर ॥ चित लेत चोर ॥ शुभ मोन बोर ॥ ३३ ॥ ॥
 अर्थ-बे बाहु उपर बे बाजुबंध बांधेला छे ॥ तेनां सोना-
 नां बोर चित्तने चोरी लेछे ॥ ३३ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ कंकन
 बलीत ॥ लख चित चलीत ॥ मुनि मनकुं जीत ॥ नित
 धरत चीत ॥ ३४ ॥ ॥ अर्थ-कांडे कडां सुंदर छे ते जोतां
 चित्त चले छे ॥ तेणो मुनिजनोनां मनने जीती लीधांछे ॥
 तेथी मुनियो नित चित्तमां धरेछे ॥ ३४ ॥ ॥ छंद ॥
 ॥ करतल म्रदुल ॥ मनहु अमूल गुल्लाव फूल ॥ रुचिरा
 अंगूल ॥ ३५ ॥ ॥ अर्थ-हाथीलियों कोमल छे अने ते
 मानो के अमूल्य छे ॥ अने आंगलियों गुलाबना फूल
 जेवी सुंदर छे ॥ ३५ ॥ ॥ छंद ॥ मणि कणि समान ॥
 नख कांतिवान ॥ मुनि एक तान ॥ नित धरत ध्यान
 ॥ ३६ ॥ ॥ अर्थ-अने मणिनी कणी जेवा कांतिवाला
 नख छे ॥ तेनुं मुनिजन एक तानथी नित ध्यान धरेछे
 ॥ ३६ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ श्रुचि म्रदुल दीव ॥ लखि चिबूक
 ग्रीव ॥ सनकादि शीव ॥ अटकात जीव ॥ ३७ ॥ ॥ अर्थ-
 पवित्र कोमल अने दिव्य दाढी तथा गर्लु छे ॥ ते जोईने

મનકાદિક તથા શિવજી પોતાના આત્માને સાં અટકાવે
 છે ॥૩૭॥ ॥છંદ॥ મૃદુ અથર રક્ત ॥ લલિત મગન ભક્ત
 ॥ મુખ એમો મક્ત ॥ જલજાત જક્ત ॥ ૩૮ ॥ ॥
 અર્થ-કોમલ રાતા હોઠ છે ॥ તે જોઈને ભક્ત જન મગન
 રહેછે ॥ જગતમાં જેવું કમલ શોભે તેવું મુખાર્વિંદ મુક્તજનો
 કહેછે ॥ ૩૮ ॥ ॥છંદ ॥ ॥ મુખ મંદ હામ ॥ નિરંજન
 તામ ॥ તન ત્રામ નામ ॥ મન મગનદામ ॥ ૩૯ ॥ ॥
 અર્થ-મુખ થોડું થોડું હમતું છે ॥ તે નિરંજન દાસજન
 મનમાં મગન થાય છે ॥ અને તેનો ત્રાસ નાશી જાય છે
 ॥ ૩૯ ॥ ॥છંદ ॥ ॥ કલિ કુંદ દંત ॥ ઉપમા મીલંત ॥
 શ્રુતિ શ્રુતીવંત ॥ સુંદર દિપંત ॥ ૪૦ ॥ ॥ અર્થ-હોલરની
 કલીના જેવી દાંતની ઉપમા મળેછે ॥ તે દાંત પવિત્ર
 અને કાંતિવાળા સુંદર શોભેછે ॥ ૪૦ ॥ ॥છંદ ॥ ॥
 મણિ ભર અમોલ ॥ ફલકંત લોલ ॥ કુંડલ કપોલ
 ॥ જન દેખ ડોલ ॥ ૪૧ ॥ ॥ અર્થ-કાનમાં કુંડલ અમુ-
 લ્ય મણિયે ભરેલાં ચપલ ફલકે છે ॥ તે લમણા ઉપર
 આવેલાં તે જોવાને હરિજન દોડેછે ॥ ૪૧ ॥ ॥છંદ ॥
 ॥ શુભ કરન વામ ॥ તિલ એક સ્યામ ॥ લલિત અષ્ટ
 જામ ॥ કરં નષ્ટ કામ ॥ ૪૨ ॥ ॥ અર્થ-ઢાવા કાનમાં
 સુંદર કાલો એક તલ છે ॥ તે આઠે પહોર જોઈને કા-
 માદિકનો નાશ કરેછે ॥ ૪૨ ॥ ॥છંદ ॥ ॥ નાસા
 નવીન ॥ મણિ દીપ ચીન ॥ દિગ વિદુશીન ॥ ચિંતત

પ્રવીન ॥ ૪૩ ॥ ॥ અર્થ-અને નવિન નાશિકા જાણોકે
 દીપક મીણજેવી છે ॥ તેની પામે શીળું ટપકૂં છે ॥ તે
 પ્રવીણ જન ચિંતવે છે ॥ ૪૩ ॥ ॥ છંદ ॥ ॥ દલ કમલ
 નેન ॥ ॥ મુખ મદન મેન ॥ મુખ મધુર વેન ॥ ઉપજાત
 ચેન ॥ ૪૪ ॥ અર્થ-કમલની પાંખડી જેવાં નેત્ર છે ॥
 અને તે નેત્રનો અણસારો મુખનું સ્થાનક છે ॥ અને મુખે
 મધુર વચ્ચન બોલે છે ॥ તે મુખ ઉપજાવે છે ॥ ૪૪ ॥
 ॥ છંદ ॥ કુટિલા રસાલ ॥ ભ્રકુટિ વિસાલ ॥ ફલકંત
 માલ ॥ ત્રય રેખ જાલ ॥ ૪૫ ॥ અર્થ-અને મોટી વાંકી
 ભ્રકુટિયો રસ ભરી છે ॥ અને કપાલમાં ત્રણ રેખાઓ-
 નો જયો ફલકે છે ॥ ૪૫ ॥ ॥ છંદ ॥ ॥ સોભા
 અથાગ ॥ નિરખંત પાગ ॥ અનુરાગ જાગ ॥ જન ધન્ય
 ભાગ ॥ ૪૬ ॥ અર્થ-અને પાગની અથાગ શોભા નિરખ-
 વાથી પ્રીતિ ઉપજે છે ॥ અને માણસો પોતાનાં ધન્ય ભા-
 ગ્ય ગણે છે ॥ ૪૬ ॥ ॥ છંદ ॥ ॥ સોડ ધર્મ નંદ ॥ આ-
 નંદ કંદ ॥ નૈષ્ઠિક વંદ ॥ ભવ હરત ફંદ ॥ ૪૭ ॥ ॥
 અર્થ-તે ધર્મના પુત્ર આનંદના થડ છે ॥ તે નૈષ્ઠિક
 વ્રહ્મચારિયોને વંદવા યોગ્ય છે ॥ અને ભવના
 પાંસાની પીડા હરે છે ॥ ૪૭ ॥ ॥ છંદ ॥ અતિસ
 દયાલ ॥ જન પ્રતીપાલ ॥ કંપંત કાલ ॥ આગ્યા
 સંભાલ ॥ ૪૮ ॥ અર્થ-તે ભગવાન જનના પ્રતિપાલ-
 નાર અતિશે દયાલુ છે ॥ અને તેમની આજ્ઞા

સંભાલવાને કાલ કંપ છે ॥ ૪૮ ॥ છંદ ॥ ॥
 મોડે કૃષ્ણ દેવ ॥ આપે અમેવ ॥ ધરિયેમિ
 દેવ ॥ નર કરત મેવ ॥ ૪૯ ॥ ॥ અર્થ-તેજ પો-
 તે શ્રી કૃષ્ણ દેવ અમેદ છે ॥ મતલબ કે જુદા નથી
 એવી દેવ ધારીને દીરજન મેવા કરે છે ॥ ૪૯ ॥ ॥
 છંદ ॥ ॥ મોડે ઘનશ્યામ ॥ જન અમિરામ ॥ નર
 ઠરન ઠામ ॥ સુખ ધામ નામ ૫૦ ॥ ॥ અર્થ-અને
 તેજ ઘનશ્યામ જનને રંજન કરે છે ॥ તેમનું
 નામ સુખનું ધામ છે ॥ અને જનોને ઠરવાનું ઠે-
 કાણું છે ॥ ૫૦ ॥ છંદ ॥ ધર મનુષ્ય વેમ ॥
 મયેહે મુનેષ ॥ કાટત કલેમ ॥ જનકે અશેષ ॥
 ॥ ૫૧ ॥ અર્થ-તે મનુષ્યનો વેષ ધરીને મુનિના
 ઈશ્વર થયા છે ॥ અને માણસના મમગ્ર કલેશને
 કાપે છે ॥ ૫૧ ॥ ॥ છંદ ॥ અતિશે અલક્ષ ॥
 નિજ ભક્ત પક્ષ ॥ બલબુદ્ધિ લક્ષ ॥ દેખે ન દક્ષ ॥
 ૫૨ ॥ ॥ અર્થ-તે ભગવાન અતિશે લક્ષમાં આવે
 નહીં એવા છે ॥ અને પોતાના ભક્તનો પક્ષ રાખે
 છે ॥ અને ઢાઢ્યા પુરુષો બુદ્ધી વલથી પોતાના
 લક્ષમાં પણ દેખી શક્તા નથી ॥ ૫૨ ॥ છંદ ॥
 ભુવનેમ મૂષ ॥ સુંદર અનૂષ ॥ મયે મનુષરૂપ ॥
 મહે સિત મૂષ ॥ ૫૩ ॥ અર્થ-તે ભગવાન ત્રિમુ-
 વનના અધિપતિના રાજા છે ॥ અને ઉપમા આપી

शकाय नहीं एवा सुंदर छे ॥ पण मनुष्यरूपे
 थईने टाढ़ अने तडको सहन करे छे ॥ ५३ ॥ ॥
 छंद ॥ ॥ तेहि कृष्ण चंद ॥ सुंदर स्वछंद ॥ कलि
 मल विखंद ॥ लखिहे नमंद ॥ ५४ ॥ ॥ अर्थ-ते
 रुडा कृष्ण चंद्र स्वतंत्र छे ॥ अने ते कलियुग रूपी
 मलनुं खंडन करे छे ॥ पण मूर्ख लोको तेने देखी
 शकता नथी ॥ ५४ ॥ छंद ॥ ॥ ऐसे अमाप पूरन
 प्रताप ॥ जपिहुं मे जाप ॥ हरने त्रिताप ॥ ५५ ॥
 अर्थ-एवा भगवाननो मापी न शकाय एवो
 संपूर्ण प्रताप छे ॥ तेना नामनो जप त्रिविधि ताप-
 हरवाने वास्ते हुं जपीश ॥ ५५ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ ए-
 से अनंत ॥ कर खूब खंत ॥ चितवंत चंत ॥ मा-
 हंत संत ॥ ५६ ॥ ॥ अर्थ-ए रीति अमंत महां-
 त संतो चितमां खांते करीने ते भगवानने चितवे छे
 ॥ ५६ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ शिव शेष गात ॥ सनकादि
 ध्यात ॥ चित चात चात ॥ नाहिन अधात ॥ ५७ ॥
 ॥ अर्थ-वली शिवजी अने शेष नाग तेमना गुणनुं
 गान करेछे ॥ अने सनकादिक ध्यान करेछे ॥ अने
 तेओ चितमां चाहता चाहता तृप्त थता नथी ॥ ५७ ॥
 ॥ छंद ॥ मुनिवर मुजान ॥ हो सावधान ॥ बस करत प्रा-
 न ॥ प्रभु मिलन तान ॥ ५८ ॥ ॥ अर्थ-वली डाढ़ा
 मुनिवरो सावधान थईने प्राणायाम करीने प्राणने बस

કરેછે ॥ તેનું તાન ભગવાનને મલવાનુંછે ॥ ૫૮ ॥ ॥
 ॥ સોઈ પ્રગટ પાય નિત નીત તાય ॥ ચિત લાય
 લાય ॥ મુનિ પૂર્ણ ગાય ॥ ૫૯ ॥ ॥ અર્થ-તે પ્રસક્ત
 ભગવાનને પામીને ॥ નિત્ય નિત્ય તેને ચિતમાં લાવી
 લાવીને પૂર્ણાનંદ મુનિ ગાયછે ॥ ૫૯ ॥ ॥ છપય ॥
 ॥ શ્વેત વસન તન ડ્યામ ॥ નામ ઘનડ્યામ ॥ નિરંતર
 રટત કટત ભવ ફંદા ॥ કંદ મુખ મદન મનોહર ॥
 અમલ કમલ દલ નેન ॥ વેન મુખ વદન મુધાસે
 ॥ અકલ સકલ મુખ ધામ ॥ કામ લલિત ગ્રામ્ય વિ-
 નાસે ॥ શ્રી ભક્તિ ધર્મ સુત કૃષ્ણકું નિરલ નિરલ
 ઊરમેં ધરું ॥ પૂર્ણાનંદ કહેવ ખિતમેં નિત નિત ચિત
 ચિતન કરું ॥ ૧ ॥ ॥ અર્થ-શ્વેત વસ્ત્ર પહેર્યાંછે ॥
 અને શરીર વર્ષાદિના જેવું શામ છે અને નિરંતર તે-
 મનું નામ ઘનશામછે ॥ તે નામનું રટન કરતાં ભવનો
 પાંસો કાપી નાંખેછે ॥ અને તે મુખનું થડ છે ॥
 તથા કામદેવના મનને પળ હરે એવા છે ॥ નિર્મલ ક-
 મલની પાંખડી જેવાં નેત્રછે ॥ અને મુખે અમૃત જેવાં
 વચન વોલેછે ॥ તે ભગવાન કલી ન શકાય એવા છે
 ॥ તથા સર્વે મુખના ધામ છે ॥ તેમને જોતાં ગ્રામ્ય
 કામના એટલે માયિક વાસના નાશ પામે ॥ એવા
 શ્રી ભક્તિ ધર્મના પુત્ર શ્રીકૃષ્ણને નિરલ નિરલીને
 મનમાં ધરુંછું ॥ પૂર્ણાનંદ સ્વામિ કહેછે કે પ્રીતે

करीने रोज रोज चित्तमां चितवन करुं छुं ॥ १ ॥

इति श्री पूर्णानंद स्वामिकृत ध्यान चिंतामणीनी
टीका संपूर्ण

॥ अथ टीका विषे ॥ ॥ कवित ॥

॥ सतमंगी शिरोमणि लायक लोधीका धणी
॥ भक्ति पत्रतणी जेने भक्ति भली भावी छे ॥ भक्त
अर्धमिह नाम जेने वाला घनश्याम ॥ तेणे परमार्थ
काम टीका आ करावी छे ॥ संवत ओगणीशंसं चा-
लीशनी साल शुभ ॥ जेठमासी खासी अमावासी
ज्यारे आवी छे ॥ सुंदर श्रीपुरनामे धर्मनंदतणे थामे
॥ रही दलपतरामे आ टीका बनावी छे ॥ १ ॥



॥ दोहा ॥ ॥ भक्ति धर्म मुनिवृंदकुं ॥ जान्यो भयो
ज्युं श्राप ॥ असुर सबे मिल एक होय ॥ प्रसिध
करतहे पाप ॥ १ ॥

॥ छंद अर्थ नाराच ॥

॥ भये गुरुसु आयके ॥ रहे अघोष छायेके ॥
अहारि मद्य मंसके ॥ कुटुंबि केसि कंसके ॥ १ ॥
विचीत्र चिन्ह धारियां ॥ तके पराइ नारीयां ॥ नचीत
जोग जापमें ॥ प्रसिध प्रीत पापमें ॥ २ ॥ करंत बोध
नारकुं ॥ चहे विषे बिकारकुं ॥ अमत्य नित्य बोल-
ही ॥ महंत होय डोलही ॥ ३ ॥ जपंत भूत डाकनी

॥ त्रिया विकार ताकनी ॥ अनंत दोष अंगमें ॥ जि-
 यंत मान रंगमें ॥ ४ ॥ अनंत काम अंधे ॥ क्रोधी-
 अनम्र कंधे ॥ विरूप सब वैष्णवा ॥ करे अघं-
 नवा नवा ॥ ५ ॥ न जान आन शक्तितें ॥ गिरात
 कृष्ण भक्तितें ॥ असत्य बोध देतहे ॥ लगे जुमानुं
 प्रेत हे ॥ ६ ॥ कृतू हिंस कारहे ॥ अनंत जंत
 मारहे ॥ भजंत जाप भैरवी ॥ विख्यात वेद वैर-
 वी ॥ ७ ॥ भरीष्ट मानके भरे ॥ कुबूधि काम कि-
 करे ॥ नरेश शीष्य ताहिंके ॥ करत पाप चाइके
 ॥ ८ ॥ * भुपाल कामके भरे ॥ धमे रहित मंदिरे ॥
 विना पराध डंडही ॥ सुधर्म देखि खंडही ॥ ९ ॥
 दोहा ॥ ॥ ऐसे गुरु मिल जगतमें ॥ वरतायो
 पाखंड ॥ धर्म हटायो वेद जुत ॥ वाढयो पाप प्र-
 चंड ॥ १ ॥ अधर्म करत निशंक होय ॥ गुरु शि-
 ष्य जगके मांड ॥ निग्र कर्मके उदयते ॥ मेघ
 अल्प वर्षाई ॥ २ ॥ एहि विधि भूपर असुरको
 ॥ अतिशैं भयो कलेश ॥ ता पिछे सुखकर धर्म
 ॥ प्रगटे पूरव देश ॥ ३ ॥ धर्म प्रगट जग होईकें ॥ जन
 सुख करहिं अपार ॥ ब्रह्ममुनि तेहिं वरनन करे ॥ सुनत

* काम विकारना भरेला राजाओ रैयतना वरमां धसेछे एटले
 व्यभिचार करवाने जायछे.

होत भव पार ॥ ४ ॥ ॥ छपय ॥ ॥ जन्मत हरि जय-
 कार ॥ भयो त्रिलोकीमाई ॥ व्योम घटावे मान ॥ रहे
 थट वदत वधाई ॥ ब्रह्म ईश सुरराज ॥ पुष्पवृष्टि झडलावे
 ॥ मारद नारद शेष ॥ मिद्ध चारण हुलमावे ॥ कोई
 वाचत नाचत गान करि ॥ वाजत वाजां गगनमें ॥ सुख
 करण हरण दुख जगतको ॥ प्रगटे प्रभु शुभ लगनमें
 ॥ १ ॥ ॥ छंद ॥ मोतिदाम ॥ करे अति मंगल ओत्मव
 कीध ॥ द्विजं शुभ दान बहु विधि दीध ॥ दशे दिश
 होय रह्यो जयकार ॥ पुरंजय ओत्मव ओघ अपार ॥ १ ॥
 मवे मील संत सो देत आशीश ॥ वदे अज वेद नचे
 अति ईश ॥ गुनिजन गात मवे मुद होय ॥ फुले सिध
 चारण गांध्रव सोय ॥ २ ॥ बनं मुभ नंदनके फुल लाय
 ॥ किये झर ताहिसचि पति आय ॥ फुले वृशदिव प्रभु
 मुख पेख ॥ रहे सब फूल लखि पदरेख ॥ ३ ॥ भये
 सरितासर निर्मल नीर ॥ भये मन निर्मल संत सुधीर ॥
 उडुगण मोत उडुगज सोय ॥ मोह्यो नभमें अति नि-
 र्मल होय ॥ ४ ॥ फुले नरनार हरिकुं निहार ॥ करे
 जयकार सो वार हिवार ॥ बजे देव दंदाभि ताहिके
 संग ॥ गजे भुवके पणवादि उमंग ॥ ५ ॥ छटे दिन
 जन्महुसैं सो क्रव्याद ॥ आये बालग्रह जो कहे कांदगाद
 ॥ कियो हरिकुं हनने महा क्रूर ॥ देखि द्रग ताहि
 भगायेउ दूर ॥ ६ ॥ करे हरिबाललिला बहु भात ॥ के

ते अज शेष शंभू शकुचात ॥ भये सो त्रिमासहुके ज्युं
 भुमंड ॥ तबे एक आये मुनि मारकंड ॥ ७ ॥ *भुवी
 तीनकुं जोतसी धर्मजानं ॥ महा तीनको जुं कियो सं-
 नमानं ॥ वदेवाहिमें धर्म युं मुद होय ॥ कहो मम पूत्र-
 हुके नाम जोय ॥ ८ ॥ तबे बहु वीथ करे विधिबेद ॥
 भला शुभ जानन अक्षर भेद ॥ दिनं सुभ वार घडि
 शुभ देख ॥ लेह अति उत्तम अक्षर लेख ॥ ९ ॥ विच-
 क्षण जोस लखे ग्रह ग्राम ॥ धरे हरि आदि नीके चहुं
 नाम ॥ पाये प्रभु अष्ट व्रशे उपवीत ॥ पढे तातमें वेद-
 शास्त्र पुनीत ॥ १० ॥ भये वर्ष अग्यारहुके भगवान ॥
 दियो मात तातहुकं निज ज्ञान ॥ मुनिशापहुमे छोडोय सो
 दोउ ॥ रखे पास निजं लखे ज्युं न कोउ ॥ ११ ॥ अ-
 नंत उधारण अंतर लाय ॥ निज ग्रह जान दियो
 छटकाय ॥ मिस नावको जुं महाप्रभु लेह ॥ चले सो
 कुटुंबी नजानेउ तेह ॥ १२ ॥ महा मन तुछ विषे सुख
 मेल ॥ करे अटनं भुवी साम अकेल ॥ ग्रह प्रभु त्याग
 अथागहि ऊर ॥ सरयु उतरे श्रीहरि जलपूर ॥ १३ ॥
 वनं पर्वतादिक घाटि अनेक ॥ तालं सरितादि उल्लंघे
 हरेक ॥ कियो पुलहाश्रममें तप भार ॥ अरु महायोग

* पृथ्वीमां नेने धर्मदेवे जोशी जाण्या अने तेनुं मोटुं
 सनमान करयुं ॥

मध्यो जगधार ॥ १४ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ प्रगटेउ श्री
 महाराज जब ॥ भयो हरख त्रैलोक ॥ दाम वाम रत
 भेष जग ॥ तेहि उर बढेउ शोक ॥ १ ॥ ॥ छंद भुजंगी ॥
 ॥ सुणो सुखकारी कहूं बात सारी मनुजाकृती धार
 राजे मुरारी ॥ महा तेज पिंडे प्रचंडे प्रतापे थिरू दास
 वासं निजं पास थापे ॥ १ ॥ जगं तारणं वीचरे दीन जांणी
 ॥ प्रथिनाथ जाणे नही मूढ प्राणी कृपानाथ ॥ सानंद
 आनंदकारी ॥ धरं भार उतारवा देह धारी ॥ करे केद
 वेरी जगं काम क्रोधं ॥ जला बोल जोराण उडंड जोधं
 ॥ भ्रता भूम जाणे नहिं मंद भागी ॥ रहि घेर माया
 त्रिया देह रागी ॥ ३ ॥ भजे ओर देवं गया बाट
 भूलू ॥ अदेखो न देखे ज्युंही सुर ऊलु ॥ पूरा भाव
 वंता भूवी सोज प्रांणी ॥ आयकें हरिकुं नम भाव
 प्राणी ॥ ४ ॥ निजं मतके व्रत सबे तजिकें ॥ रहे
 श्रीहरिके पदं सो रजिकें ॥ करंही गुणातीत सो नाथ
 नाथं ॥ सुने भाग वंता जनं स्याम साथं ॥ ५ ॥ क-
 पाधार राजे कला जोर कांती ॥ सही देखते होत
 आतंत शांती ॥ बट्टीकाश्रमे जोहती रीत बाधी ॥
 कलीके समे आय साक्षात साथी ॥ ३ ॥ लखे को
 नहीं चिन्ह धारे अलक्षं ॥ प्रतीपाल संतां द्रवंधी
 पक्षं ॥ सबे अंग चंगी रही छाया शोभा ॥ लखे रूप
 भागे मदं काम लोभा ॥ ७ ॥ तनं धार आये सबे

संत त्यागी ॥ रता श्रीहरिसैं मता ध्यांन रागी ॥ कहूं
 लक्षणं ताहि आनंदकारी ॥ भरे भावहुके कला ग्यान
 भारी ॥ ८ ॥ हरि कीध अग्या धरी शीम
 लीधी ॥ कली मध्य पुरातनी रीत कीधी ॥
 अलक्षं धरे चिन्ह चिते अरोगी ॥ जगंतार दाता
 असाधार जोगी ॥ ९ ॥ व्रतं पंच धारि महासूर
 बीरा ॥ ध्रुतीवंत आतंत शोभंत धीरा ॥ मुणो
 पंचही व्रतके नाम सारे ॥ द्रढं धीर अंगं मुनिराज
 धारं ॥ १० ॥ ॥ दोहा ॥ निर लोभि निस्काम
 पुनि ॥ निस्वार्दि निरधार ॥ निस्प्रैहि निर्मानता
 ॥ मुनिवर करत विचार ॥ १ ॥ ॥ छंद भुजंगी
 ॥ तजे दोष रूपी सबे बात त्यागी ॥ भजे देव
 नारायण मोक्ष भागी ॥ १ परत्रिय क्रिया २ द्यूतही
 ३ मद्य पानं ॥ हते ४ जीव मृनो ज्युंही मांस खानं ॥ १ ॥
 ५ कनं कादि धातू तणो यो खजानो ॥ जरू पंच थाने
 कलवाम जानो ॥ करे प्रीत सेवे कलू थान कोई ॥ हिये
 तासहुके कलीवाम होइ ॥ २ ॥ अविद्या अघंवाम जाणि
 अनीती ॥ रूडी संत-दृकि करी मूध रीती ॥ अविद्या
 तजे जो हरि पास आवे ॥ जरा म्रत्यु जाको महारोग

* सोना आदिक धातुनो जे खजानो इत्यादि पांच स्थान-
 कमां जरूर कालियुगनो वास जाणो.

जावे ॥ ३ ॥ कलीवास जे ते सबे दूर कीने ॥ लखे
 साम धामं अभेथान लीने ॥ हरिवाक्य वासी नरं नार
 जे ते ॥ तरं हो गये पार संसार ते ते ॥ ४ ॥ हरिवा
 क्य त्यागे कहूं ठोर जावे ॥ पडे फंद माया-
 गले दूख पावे ॥ मुनिकाज ते हि करे वाक्य वासा ॥
 अमारं लखे त्याग संसार आमा ॥ ५ ॥ कली कालमें
 सत्यकी रीत कीधी ॥ लखे नेक जीवे महा मोक्ष लीधी
 ॥ अबे लोभमो स्वर्ग मृत्यु पताला ॥ सबकुं लिये बहु
 भांति बेहाला ॥ ६ ॥ सुरंआसुरं नाग मानुष वाकुं ॥
 मरावंत मांहोमांही लोभताकुं ॥ तेहि जीतकि रीत नीकी
 करीकें ॥ कहूं चित्तमें श्रीहरिकुं धरीके ॥ ७ ॥ दोहा ॥
 चउद लोकके बीचमें ॥ फिरत लोभकी फोज ॥ ताहि
 लागिकि रीत कहूं अति जाको जगओज ॥ १ ॥ छंद
 संजृता ॥ हरिचर्ण उरमें धारकें ॥ कहूं बात एक विचा-
 रकें ॥ जग काम झाल कठोरहे ॥ पुर तीनमें बडजोर
 हे ॥ १ ॥ दिल होत आविर जाहिके ॥ तन नाश लज्या
 ताहिके ॥ नहि जोत गोत अगोतकुं ॥ गालिजात छोट
 अछोतकुं ॥ २ ॥ कलिकाम जेजोहि रितमें ॥ बदी हुं में
 पूरण प्रीतमें ॥ मुनि जीत काम अरु मानकुं ॥ थिर
 पांमही हरिथानकुं ॥ ३ ॥ कर एकवारीहि भोजनं ॥
 तरुवाम भूमहि आसनं ॥ ईसरीत रहेजन जाहिकुं
 ॥ बनमांय मारत ताहिकुं ॥ ४ ॥ इह काम वेरिय

जीवको ॥ दुखरूप चोर दर्ईवको ॥ विहरंत कोटिक
 वामसें नहि होत पूरण कामसें ॥ ५ ॥ ब्रध रोगी अं-
 ध बधीरकुं ॥ धन हीन कायर वीरकुं ॥ कुलहीन दुर्बल
 दीनहे ॥ सब काम किकर कीनहे ॥ ६ ॥ ॥ क्रत रीत
 कोनाहि अंत जुं ॥ तजे काम जो विधि मंतजुं ॥ जग स-
 र्व हारत कामसें ॥ जनसाग हे अभिरामसें ॥ ७ ॥
 तज काम प्रभुपद प्रीतकुं ॥ सवहि कहुं अब री-
 तकुं ॥ मुनि जीत रीत मनोजकुं ॥ सब सोवताव-
 हुं चोजकुं ॥ ८ ॥ ॥ छंद अर्थ भुजंगी ॥ ॥ चले
 स्नानकाजा लिये साथ साजा ॥ तने संग ताजी
 ॥ नचे रंग बाजी ॥ १ ॥ अतंता उझांणा ॥ वेहे भ्रग
 डांणा ॥ जरी साज जेपे ॥ अछे अंग ओपे ॥ २ ॥
 कपि रीत झंप ॥ नीजं छाहि कंपे ॥ अति तेगवंता ॥
 अकामे उडंता ॥ ३ ॥ तनं रूप ताता ॥ करे व्योम वाता
 ॥ भरे जोर फाली ॥ नचे मांहि थाली ॥ ४ ॥ छविदार
 चंगा ॥ कुदे जुं कुरंगा ॥ रसीमें फरेला ॥ मसाला
 चरेला ॥ ५ ॥ दिमंता दिवाला ॥ *छति पुर ढाला संधे
 वाग साचे ॥ नटां रीत नाचे ॥ ६ ॥ रते श्वेत रोजे
 ॥ मढा शील सोजे ॥ पटादा रपीले ॥ नली साम
 नीले ॥ ७ ॥ किते रंगकारे ॥ भरे जोर भारे ॥ तिखे
 खूब ताजा ॥ रिझे देखि राजा ॥ ८ ॥ बडा जोध

*पुरी ढालना जेवी घोडानी छानीछे.

बंका ॥ धरे नहि संका ॥ प्रभुमाथ प्रीती ॥ रहे
 मृध रीती ॥ ९ ॥ हरीदास पूरा ॥ सदा अंग मूरा
 ॥ सवे निमराखे ॥ मिथ्या नांहि भाखे ॥ १० ॥
 लीये हाथ भाला ॥ किये नाथ वाला ॥ नहि निम
 चुके ॥ उडे टुक टुके ॥ ११ ॥ सदा शिल माचे ॥ नहि
 निम काचे ॥ हरि केफ भाते ॥ रहे राम राते
 ॥ १२ ॥ हरिके हजुरी ॥ प्रीति अंग पूरी ॥ परा पार
 पाला ॥ ब्रजा धीश वाला ॥ १३ ॥ गुनि संत ग्यानी
 ॥ अतंता अमानि ॥ भरे प्रेम भारि ॥ बडे ब्र-
 ह्मचारी ॥ १४ ॥ ग्रहि त्यागि जे ते निति के नि-
 के ते ॥ सवे रंग भीने ॥ हरी संग लिने ॥ १५ ॥
 कहे होरी होरी ॥ उडे रंग झोरी ॥ चले नाथ मेरी
 ॥ जनं जुथ घेरी ॥ १६ ॥ त्रिया गोख टाढ़ि ॥
 लखी प्रीत बाढ़ि ॥ झरुखे निहारे ॥ धनं
 धाम वारे ॥ १७ ॥ कबु आप हेरे ॥ त्रिया फूल
 बेरे ॥ बदे जीतवानी ॥ जगनाथ जानी ॥ १८ ॥
 छडीदार टेरे ॥ बहु बेर बेरे ॥ चले संग गाते ॥ मा-
 हा मोद माते ॥ १९ ॥ नदि तिर आये ॥ हरी चीत
 भाये ॥ तरु बेलि तिरा ॥ सुगंधी समीरा ॥ २० ॥
 तहां तिर सारी ॥ फूली फूल वारी ॥ अलिखे सु-
 गंधी ॥ रहे तार संधी ॥ २१ ॥ छपय ॥ जय-
 जय हरि दिनेश ॥ वेश नटवर प्रिये बानी ॥ भक्ति

धर्म कुमार ॥ पारकीने भव प्रानी ॥ व्रत नैष्ठिक
महावीर ॥ धीरजन चरन उपासे ॥ प्रतिदिन
अधिक प्रताप ॥ दश जेहि पाप विनासे ॥
सुख मिथु बंधु दिनन मदा ॥ लीजे चरण लगायकें
धनस्याम हरि अहो निश वसो ॥ ब्रह्ममुनि उर
आयकें ॥ १ ॥

अथ थाल

॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जातें मन वाणि थके ॥ शकेन
गुण काहि शेष ॥ मो प्रभु द्रगगोचर फिरे ॥ वपु
धर नटवर वेष ॥ १ ॥ रहे जाके एक रोममें ॥ को-
टि कोटि ब्रह्मंड ॥ हरि व्रजमें लघु बाल होय
॥ खेलत रहत अखंड ॥ २ ॥ अश्वमेधादि आदिले
॥ जेज्ञ व्रत न होय ॥ आहिरणीकि छामकुं ॥ स्वा-
दु पिवत मोय ॥ ३ ॥ मज्जन मनरंजन मदा ॥
रतिपति गंजन रूप ॥ कर्मंजन जिमत कृष्ण ॥
व्यंजन पाक अनूप ॥ ४ ॥ ॥ छंदनाराच ॥
अनूप चित्रके अवाम ॥ नेक वाम निर्मलि ॥ हरंत
त्राम १ वक्रहाम ॥ दास पास मंडलि ॥ सुगंधनीर
स्नान धीर ॥ भक्त भीर चहुं भरे ॥ जिमत नाथ

२ समराथ ॥ संतहाथ सुंदरे ॥ १ ॥ ३ पवित्र पाक
 शाल भाल ॥ पाठ ढाल प्रीतसें ॥ विशाल हेम थालमें ॥
 रमाल प्रीम रीतमें ॥ चत्वार अंन लेह्य चोश भक्ष
 भोज ले धरे ॥ जिमंतनाथ समराथ ॥ संत हाथ
 सुंदरे ॥ २ ॥ तलेल लडुका तयार ॥ मार धात
 शरकरा ॥ कंसार स्वादमें अपार ॥ फार घृत फाफ-
 रा ॥ विलोक लोक बारवार दया धार नजरे ॥ जि-
 मंत नाथ समराथ ॥ संत हाथ सुंदरे ॥ ३ ॥ सुस्वा-
 दु मेव मुक्षमा ॥ पुषा तलेल पुरियां ॥ पुनित मी-
 ष्ट दुध पाक ॥ लेखडे हजुरियां ॥ गिरिष्ठ शिष्ट ई-
 ष्टके ॥ अनेक भाति अपरे ॥ जिमंत नाथ समराथ
 ॥ संत हाथ सुंदरे ॥ ४ ॥ बरंज खांतमें बनाय ॥
 ॥ प्रेम जुक्त पिरमे ॥ खुआसु गाढ माल पुड
 ॥ खात चात रवीरसें ॥ महा अनुष मोतिया ॥
 शिरा करे घी शकरे ॥ जिमंत नाथ समराथ ॥ सं-
 त हाथ सुंदरे ॥ ५ ॥ लजत दार लाफसी ॥ बने
 अल्लि जलेबियां ॥ गले गगन गांठिये ॥ रखे मेवा
 रकेबियां ॥ प्रचुरके गुलाब पाक ॥ प्रवास प्रवरे

१ मुखारविदनुं हंसवुं त्रासने हरे छे. २ समर्थ. ३ पवित्र
 पाकशाला एटले रसोडुं भालीने त्यां प्रीतिण करीने पाटलो
 दाल्यो.

॥ जिमंत नाथ समराथ ॥ संत हाथ सुंदरे ॥ ६ ॥
 मेसुब खूब मीष्टता ॥ सुस्वादु लाडु सेवरा ॥ खरे
 गिरिष्ठ खाजले ॥ धीयाल श्रेष्ठ घेवरा ॥ पुनीत
 दूद पेंडका ॥ गिरिष्ठ नंत दैथरे ॥ जिमंत नाथ स-
 मराथ ॥ संत हाथ सुंदरे ॥ ७ ॥ बने अनुप वरफियां
 ॥ पतास सक पारीयां ॥ विविध स्वाद वेष्टिता ॥
 सुगंधसं समारियां ॥ थिरा खरा तले लठोर ॥ ओर
 नेक दुसरे ॥ जिमंत नाथ समराथ ॥ संत हाथ सुंदरे
 ॥ ८ ॥ अदु अनुप मरकियां ॥ सुकोमलि सावेणियां
 सुगंध मिश्र मुखडी ॥ पुनित सुत्रफेणिया ॥
 तले पाकटोपरां ॥ कलेव शाकरे करे ॥ जिमंत
 नाथ समराथ ॥ संत हाथ सुंदरे ॥ ९ ॥ साटा द्विभात
 शोभिता ॥ प्रमिच तूप पोलियां ॥ रसाल नर्म रो-
 टिल ॥ बहु घत तेण बोळियां ॥ भोजननेक भात
 भात खात पीरमे खरे ॥ जिमंत नाथ समराथ ॥ संत हाथ
 सुंदरे ॥ १० ॥ रुचिरुचि लेत ग्रास ॥ हास जुक्त हे
 रहे ॥ पुनीत नीर हेम पात्र ॥ दास पास ले रहे ॥
 पुनी पुनी पिवंत साम ॥ वाम प्रीतसे लरे ॥ जिमंत
 नाथ समराथ ॥ संत हाथ सुंदरे ॥ ११ ॥ हवेज
 खूब डारकें ॥ भुंजेल घत भुजियां ॥ विविध भांत
 कावडा ॥ रसिक साम रजीयां ॥ पकेलं धी पको-
 डियां ॥ प्रमाण नेक सर्फरे ॥ जिमंत नाथ समराथ ॥

संत हाथ सुंदरे ॥ १२ ॥ गरम स्वादु गांठिया ॥
 कलितलेल आकरि ॥ पुरे हवेज पृडले ॥ वडिसु
 मीश्र पाकरि ॥ विशालके फुलवडी ॥ चण तलेल
 चरपरे ॥ जिमंत नाथ समराथ ॥ संत हाथ सुंदरे
 ॥ १३ ॥ टंका मुवा तंदूलजा ॥ वीविध भांत भा-
 जियां ॥ वघारदे लवंगसें ॥ तलेल घत ताजियां ॥
 अलवि सुपान पानलि ॥ लुंणि तलेल लालरे ॥ जिमंत
 नाथ समराथ ॥ संत हाथ सुंदरे ॥ १४ ॥ सुनील
 चील सुंदरा ॥ पणंजकुंज पतियां ॥ गंभिर स्वादु
 गोहली ॥ तलेल खूब ततीयां ॥ नवीन के निलोतरी
 ॥ अनेक भांत ईतरे ॥ जिमंत नाथ समराथ ॥
 संत हाथ सुंदरे ॥ १५ ॥ मुला बैताक भोगरि ॥ वा-
 लोल घी वघारियां ॥ रसालहि रतालुवां ॥ केशुरणां
 समारियां ॥ फली नवीन ग्वारकी ॥ चोलाफली अनुं-
 सरे ॥ जिमंत नाथ समराथ ॥ संत हाथ सुंदरे ॥ १६ ॥
 भिडि डोडि द्विभांतकी ॥ कंकोडके कारेलियां ॥ का-
 जु नवीन कोचलां ॥ मामूक पास भेलियां ॥ भडथशाक
 चिभडां ॥ सिंचेल घतसेलरे ॥ जिमंतनाथ समराथ संत हाथ
 सुंदरे ॥ १७ ॥ निराट स्वादु नीलवा ॥ तलेल खूब तूरीयां ॥
 रसाल नेक राईतां ॥ करेतलेकचूरियां ॥ प्रचूर तीक्ष पा-
 पडे ॥ कडी मथे दधिकरे ॥ जिमंत नाथ समराथ ॥ संत
 हाथ सुंदरे ॥ १८ ॥ कोलां कणंक कुंभियां ॥ बहु

विधि वणायकें ॥ धरे तलेल दधियां ॥ चूंकार घृत
 चायकें ॥ तमंकार दार ताजियां ॥ त्रकारियां तरे
 तरे ॥ जिमंत नाथ समराथ ॥ संत हाथ सुंदरे ॥
 ॥ १९ ॥ प्रभिधके प्रकारके ॥ आचार नेक आनकें
 ॥ रमाल अंव राईति ॥ अंबोल बोल टानकें ॥
 काजु आयेल केरियां ॥ सथुल मुल गरमरे ॥ जि-
 मंत नाथ समराथ ॥ संत हाथ सुंदरे ॥ २० ॥ आदा
 अद्रक आथणां ॥ काजु तलेल काचरि ॥ लजंत
 दार डेबुवां ॥ भ्रचां धमंक आकरि ॥ विविध केर
 वांसके ॥ सवाद लेत मादरे ॥ जिमंत नाथ सम-
 राथ ॥ संत हाथ सुंदरे ॥ २१ ॥ टजे खारक राईति
 ॥ कलि तले कटेरियां ॥ तिखी तमंक चटणि ॥
 केलां सुपक केरियां ॥ मेवा मैरुक मांखण ॥
 अनेक स्वाद अंतरे ॥ जिमंत नाथ समराथ ॥ संत
 हाथ सुंदरे ॥ २२ ॥ अवल दाल अडदकी ॥ चणा
 चोला मटोरियां ॥ खाभि चडेल खीचडि ॥ कसे-
 ल धी कटेरियां ॥ बघार मुंग जरदवान ॥ तान
 मान सत्वेरे ॥ जिमंत नाथ समराथ ॥ संत हाथ
 सुंदरे ॥ ॥ २३ ॥ समूत्र अंव शालके ॥ बनाय भांत
 भांतमें ॥ अनेक रंगरंगके ॥ खासे पकाय खांतमें
 ॥ अपार शाक उमदे ॥ विविध पाक विस्तरे ॥ जि-
 मंत नाथ समराथ ॥ संत हाथ सुंदरे ॥ २४ ॥ अ-

नुप दुध आवटेळ ॥ धोत मशरी धरि ॥ भोजन नेक
 भांतके हसंत लेत श्रीहरि ॥ करंत दास वास्वार
 मनुवार आदरे ॥ जिमंतनाथ समराथ ॥ संत हाथ सुंदरे
 ॥ २५ ॥ सुआचमन लेत माम ॥ खूब व्रत होयकें ॥
 नवीन नीर जमुना ॥ पुनीत हस्त धोयकें ॥ करे कुर-
 ला बहु प्रकार ॥ वक्र अबुजे वरे ॥ जिमंत नाथ
 समराथ ॥ संत हाथ सुंदरे ॥ २६ ॥ अवळ लुंग एलची
 ॥ काथो चुनो सोपारियां ॥ बनाय पात बीडिका
 ॥ सु मुखवास धारियां ॥ महा प्रसाद लेत दास
 ॥ त्रास पास सोदरे ॥ जिमंत नाथ समराथ ॥ संत
 हाथ सुंदरे ॥ २७ ॥ चरच अंग चंदन ॥ करे सु
 आडकेभरे ॥ आरोप कंठ फुल माल ॥ अग्रवतीयां
 धरे ॥ उतार दीप आरती ॥ अहो कपाल उचरे
 जिमंत नाथ समराथ ॥ संत हाथ सुंदरे ॥ २८ ॥
 अजब खाट उपरे ॥ रसीक माम राजही ॥ छविस्व-
 रूप देखकें ॥ अनेक काम लाजही ॥ निज गुलाम
 ब्रह्मानंद ॥ पाय आयकेंपरे ॥ जिमंत नाथ समराथ
 ॥ संत हाथ सुंदरे ॥ २९ ॥ छपय ॥ ॥ एहि विध
 जिमे अघाय ॥ बने घनस्याम बराजे ॥ प्रतिदीन
 अधिक प्रताप ॥ छवि सुंदर अतिछाजे ॥ हरस्व
 मनोहर हास ॥ दास उर त्रास निवारन ॥ प्रफुलित
 वदन प्रकास ॥ विविध जन मोद वधारन ॥ सज

अंग वसन भुषण सुभग ॥ वपु नर धर जग वीचरे ॥
 ॥ एहि छाबि आय ॥ अहो निशबसो ॥ ब्रह्मानंदके
 अंतरे ॥ १ ॥ दोहा ॥ देखत सहज समाधिमें ॥
 ॥ प्रगटज्युं अक्षरधाम ॥ एहि विधि अपने दासकुं
 ॥ देखावत घनस्याम ॥ १ ॥ बहत तहां विरजा
 विमल ॥ गो गोपनके वृंद ॥ नीर झकोल कलोल
 नित ॥ गावत ॥ मिल वृजचंद ॥ २ ॥ छंद
 ब्रोटक ॥ ॥ विरजा शुभ नीर भरी गहरी ॥ अति-
 ऊठत हे जलकी लहरी ॥ तिन स्नानहि होवत
 सुधमती ॥ तन चैतन होय स्वछंद गती ॥ १ ॥ अ-
 ति शोभित हे तट दोय तहां ॥ बहु भांति मनीनकि
 खांनि जहां ॥ मानि नील रु फाटक इंद्रमनी ॥ कम
 नीय मनोहर हीरकनी ॥ २ ॥ विरजा बहे नीर
 अथाह सदा ॥ तिन तीर नही दुख शोक कदा ॥
 बहु नंग. सुरंगित घाट बने ॥ मानि लाल
 विशाल सोपान धने ॥ ३ ॥ तिनके पर ब्रक्ष रु वे-
 लि जुकी ॥ मनु सुंदर छाव वितानहुकी ॥ सब
 कंचन तीर सुनीर बहे ॥ रमनीक तहां खग वंद
 रहे ॥ ४ ॥ झलके सुभ रंग सु नंग जरे ॥ निरखे
 मनु नेन अनेक करे ॥ रमनिक छाबि आति-
 छायरही ॥ नित सुंदर रूप कहात नहि ॥ ५ ॥ विर-
 जातट थाट सुधेननके ॥ वष नाद मनुं ख मेघनके ॥

गहरे सुर होवत गोपिनके ॥ तन ते हरिप्रीय मदा-
 तिनके ॥ ६ ॥ लगि भीर सु गोपिन ग्वालनकी ॥
 लगनी अति अंतर लालनकी ॥ मिल गोपिक ग्वाल-
 हि स्नान करे ॥ गुन गात हरि मन मोद भरे ॥ ७ ॥
 रतनुं करि कंचन कूँभ जटे ॥ त्रिये नीर भरे सरिता
 सु तटे ॥ नर नारि सबे जल झीलतहे ॥ रस रूप
 हरिगुनमें रतेहे ॥ ८ ॥ हरिक्रीडनके शुभ थानक हे
 ॥ मनि मोति मनोहर मानक है ॥ तरु शोभित सुंदर
 तीरनमें ॥ मिलखेल अहीर अहीरनमें ॥ ९ ॥ मिल
 धूमत गोपिन मंडलियां ॥ करमें शुभ चंपककी कलि-
 यां ॥ विरजा सब धामकुं धेर रही ॥ तिनकी छवि
 में कलु लेश कही ॥ १० ॥ ॥ दोहा ॥ कही विरजा
 संक्षेपकरि ॥ हरिकेलिको स्थान ॥ विहरत गोपि
 गोप सब ॥ करत रहत गुन गान ॥ १ ॥ विरजा
 पार विहारजुत ॥ शोभित गिरिशतभृंग ॥ गढजिमि
 श्रीगोलोकको ॥ रह्यो ओप नवरंग ॥ २ ॥ उंचो
 जोजन कोटि एक ॥ दशगुन चोडो जान ॥ पारि-
 जातिक आदितरु ॥ प्रसरे अधिक प्रमान ॥ ३ ॥ का-
 मधेनुके दंड पृनि ॥ गिरिपर रहत अपार ॥ अनुलित
 शोभा देखके ॥ मगन हेरत नरनार ॥ ४ ॥ क्रीडा
 स्थानक कुशके ॥ रह्यो रत्नकरिमंड ॥ सो गिरिवरके
 शिखरपर ॥ अद्भुत रास अखंड ॥ ५ ॥ रसप्रद मं-

डल रासके ॥ जोजन दश विस्तार ॥ गोलसुभग प्र-
 कारजुत ॥ च्यार च्यार सबद्वार ॥ ६ ॥ छंद पथरि ॥
 ॥ गो लोकहृके चहुं आसपार ॥ ब्रंदावन शोभित
 सुख विल्यास ॥ तरु बेलि मनु तनु मुक्तधार ॥ हरि
 पुजन हित भये बहु प्रकार ॥ १ ॥ वन छायरहि त-
 हां विविध बेल ॥ बहु फूल जाय जुथी चंबल ॥ म-
 लीका मुछाय सुंदर सुवास ॥ माधवी पुष्प अतिशे
 प्रकाश ॥ २ ॥ केतकी हार मृंगारकुंद ॥ तेहि गंध-
 लपट रहे भ्रमरब्रंद ॥ पुनि लवंग लता अनुलित अ-
 नूप ॥ फल मिष्ट द्राख सुंदर रसरूप ॥ ३ ॥ पुंनी
 नांग नांगकेसर प्रफूल ॥ झुक झुम रहे अलिब्रंद झुल
 ॥ मंदार देवतरु कोविदार ॥ पिप्पला पृंगि पाटल
 अपार ॥ ४ ॥ अतिरूप अशोकरु सफल अंब ॥
 बहु फूल झुल सुंदर कदंब ॥ जांबु ननीप अरु पा-
 रिजात ॥ पुनि पनस तनस चंदन सुपात ॥ ५ ॥ ना-
 रंग खजूरी नालीरकेर ॥ ॥ बहु भाति बने जंबेरबेर
 ॥ तरु सामरूप सुंदर तमाल ॥ शोभीत बकुल वि-
 ल्वदिशाल ॥ ६ ॥ वटपुष्प नीवचंपक सुहाय ॥ थल
 कमल रहे धरे विमल छाया ॥ कल्हार कंज उत्पल
 अपार ॥ दीपंत अधिक मकरंद दार ॥ ७ ॥ रस-
 मत्त भ्रमर तहां करत गान ॥ खग विविध करत
 हरिगुन बखान ॥ मीना कपोत अरु कंच मोर ॥

तहां करत नाद सुंदर टकोर ॥ ८ ॥ सारंग कूंज
 कोकिल सुहार ॥ चक्रवाक हंस हरिगुन उचार ॥
 तहां विविध कृप बापी तडाग ॥ कीच गात गोप
 तहां विविध राग ॥ ९ ॥ गोबाल गोपि गौधन अ-
 माप ॥ बन रह्यो सर्व तेहि शब्द व्याप ॥ हरि कोलि
 करन कूंजनकटीर ॥ बहे सुरभि मंद शीतल समीर
 ॥ १० ॥ बल्लवपम धेनु अरु गोपि गोप ॥ अति वि-
 मल रह्यो तहां शब्द ओप ॥ बतीश विपन ॥ तेहि
 मध्य अनूप ॥ एकैक हूतें अति सरसरूप ॥ ११ ॥
 फुले फूल निरंतर अति अनंत ॥ तहां सदा रहत
 रतुवर वसंत ॥ ज्यो आय करत एहि बन प्रवेश ॥
 कोउ भांति रहत नहि तेहि कलेश ॥ १२ ॥ दोहा ॥
 ॥ एहि विधि वृंदावन कह्यो ॥ हरिकेलिको स्थान ॥
 विहरत गोपी गोप सब ॥ करत रहत गुन गान
 ॥ १ ॥ ताकेपर गोलोककी ॥ शोभा बान अपार ॥
 सुंदरपुरके सदनकि ॥ अतिशय छवि उदार ॥ २ ॥
 ॥ छंद त्रोटक ॥ बहुरंगित नंग सु धाम मही ॥ म-
 निलालहुकी छवि शोभि रही ॥ जन मंडित नंग उ-
 मंग लेह ॥ शुभ मंदिर धाम प्रकास रहे ॥ १ ॥
 सुमनी झुक गोख विशोक सदा ॥ महा शोभितदास
 विलास मुदा ॥ मनि मानकषे करि चोक भरे ॥
 कमनीय प्रवालन थंभकरे ॥ २ ॥ सुनि देखत चाह

अथाह जगी ॥ छवि भारि अटारिसु व्योमलगी ॥
 मनिफाटक हाट कपाट जरे ॥ जन देख विशेष उ-
 मंग भरे ॥ ३ ॥ मलियागर गार अगार मही ॥
 अति वास अवासन छाव रही ॥ कस्तुरीयके सरगंध
 भरे ॥ मद अंग सुगंध छके भमरे ॥ ४ ॥ पुखराज
 अमोलिक नील मनी ॥ मनि इंद्र विचीत्र प्रकार
 धनी ॥ शुभ तोरन अंग अशोकनके ॥ मनु
 चोरनहार मुनि मनके ॥ ५ ॥ कहु चीवन-
 के बहु पंखि करे ॥ जन देखत सख प्रतित धरे
 ॥ शुभ मंडप चीत्र विचित्र बने ॥ जन बैठ अटा
 अपने अपने ॥ ६ ॥ तिन उपर कुंभ कनकहुके
 ॥ जुत मानक नौतम रीतहुके ॥ नहि होत प्रमा-
 न थके अजही ॥ छवि देखत मूर शशी लजही
 ॥ ७ ॥ हरेहु जु पताक मुनी मनकुं ॥ मनु लेत हि
 ठेर हरी जनकुं ॥ तिनके पर चीवन मोर किये ॥ जन
 देखत अंग उमंग लिये ॥ ८ ॥ प्रति द्वारन रंभ सु-
 थंभ धरे ॥ विहरे हरिदास हुलास भरे ॥ कस्तु-
 रीय केसर कुंकुमके ॥ छडकावहुतें अलि गंध
 छके ॥ ९ ॥ अति गाढ अल्पम रूप अटा ॥ छवि
 धार रही मनु आय छता ॥ जनव्रंद अनंदहुसे
 विलसे ॥ हरिको मुख देखि हसे विकसे ॥ १० ॥
 सुख वास अवास हरी जनके ॥ तन काम वि-

कार नहीं तिनके ॥ बहु भांति न भोग अरोग
जहां ॥ करहें हरिदास विलास तहां ॥ ११ ॥ रत-
नुं जुत भूषन अंग धरे ॥ विन क्रोध सुबोध
सदा विहरे ॥ छवि मान विमान कि पंगतियां
॥ द्रग देख विशेष बढे रतियां ॥ १२ ॥ हरिदास-
नके हित साम रचे ॥ ॥ मन रंजन अलौकिक भीर
मचे ॥ लाखि मारग राज समाज लिये ॥ हरि-
रूप निहारन मोद हिये ॥ १३ ॥ नित उठत मो-
दहुकी लहरी ॥ जन व्रात सुगात धुनी गहरी ॥
विन पार बजार तहां प्रसरे ॥ पच रंगन नंग
सु वाट जरे ॥ १४ ॥ लर तोरन मोतिन मालनके
॥ रचि थंभ अचंभ प्रवालनके ॥ मन मोहन भा-
रि अटारि-मली ॥ अति पात सुगंध मदांध अ-
ली ॥ १५ ॥ ग्रह पास तहां लघु वाग खुले ॥ फहरे
शुभ गंधित फूल फुले ॥ वनि नीर भरीं तित वा-
वरियां ॥ पुखराज पिरोज कि पावरियां ॥ १६ ॥
हृदहोज जरे शुभ हीरनके ॥ ख होवत कोकिल
कीरनके ॥ आत नंग जरे शुभ अंगनमें ॥ रति रीझ
मुनीवर रंगनमें ॥ १७ ॥ खुब लाल प्रवालन-
की खटियां ॥ मुक्ताफल मानकमें जटियां ॥
क्रत चीत्र विचित्र कमारनमें ॥ घनमार प्रचार
प्रति घरमें ॥ १८ ॥ झुकि मोतिनकी लर जारिनमें

॥ अति शोभित नारि अटारिनमें ॥ क्रत नेन
 कुरंगनमें कजरा ॥ गहिहाथन फूलनके गजरा ॥ १९ ॥
 म्रगलोचनि नार अपार मली ॥ हरि पूजन आवत
 जात चली ॥ नव जोवन नारि अटारि चढे ॥ हरि
 देखत अंग उमंग बढे ॥ २० ॥ ॥ दाहा ॥ ॥ ललित
 विमल गोलोकमें ॥ एहि विधि धाम अनूप ॥ मंगलपद
 अति तेज मय ॥ रमिक मनोहर रूप ॥ १ ॥ सब गो-
 पीनके सदन मध्य ॥ गथा ग्रह सुखकंद ॥ राजत
 एहि विधि रूप मय ॥ ज्युं उडगन महि चंद ॥ २ ॥
 छंद पथरी ॥ ॥ एहि भांति रहे सब सदन ओप ॥
 गुन गात आत हरखात गोप ॥ राधिका भुवन सब
 मध्य शोभ ॥ तेहि देखि बढत मन अधिक लोभ ॥ १ ॥
 प्राकार कनक पोडश प्रचंड ॥ प्रतिद्वार गोप रहे हिं
 अखंड ॥ सब कहु ताहि अनुक्रम सहीत ॥ प्रति दिवस
 बढत हरि चरनप्रीति ॥ २ ॥ रहे वीर भानुं तहां प्रथम
 द्वार ॥ लक्ष रहत अनूचर गोप लार ॥ रहे द्वितिये द्वार चंद्र
 भानुवीर ॥ लख पंच गोप चाकरमुधीर ॥ ३ ॥ पुनी तृतिये
 द्वार तहां मूरज भान ॥ नव लाख गोप अनूचर प्रमान
 ॥ वसुभानुं चतुर्थ द्वारपाल ॥ दशलक्ष गोप अनु-
 व्रत मुमाल ॥ ४ ॥ रहे देव भानुं पंचमसु प्रोल ॥ ईश्या-
 रलक्ष चाकर अडोल ॥ षष्ठमे द्वार पुनि शक्र भान ॥
 लखवार गोप अनूचर बखान ॥ ५ ॥ चित्र भानू द्वार

सप्तम प्रवीन ॥ दश तीन लक्ष अनुव्रत नवीन ॥ अष्टमे
 द्वार सुंदर अनूप ॥ रहे वीरसु पारशद विमल रूप ॥६॥
 लख चौद गोप अनुव्रत हमेश ॥ नंग जडित अंग भूषण
 मूवेश ॥ पुनि मूवल द्वार नवमे अभंग ॥ दश पंच लक्ष
 तेहि गोप संग ॥ ७ ॥ दशमे जु सुदामां वीर देख ॥
 लख बीस गोप अनुव्रत मु लेख ॥ नंग जडित अंग
 भूषण नवीन ॥ प्रभु चरन कमल रत अति प्रवीन ॥८॥
 दश एक द्वार पर अंशुदाम ॥ चोबीस लक्ष तेहि गोप
 पास ॥ दश दोय द्वार अर्जुन प्रवीन ॥ लखतीस गोप
 तेहि संग लीन ॥ ९ ॥ दश तीन द्वारपर भूत विशाल
 ॥ पैंतीस लक्ष अनुचर गोवाल ॥ पुनि देव प्रस्थ दश चतुर्द्वार
 ॥ चालीस लक्ष अनुभ्रत उदार ॥१०॥ दश पंच द्वार पर रूप-
 भजान ॥ पंचास लक्ष अनुचर प्रमान ॥ सोलमे द्वार
 सुंदर श्रीदाम ॥ एक कोटि गोप अनुव्रत मूनाम ॥११॥
 हरिनिकट रहत ललीतादियाम ॥ पुनि प्रसिध प्रसिधके
 कहहुं नाम ॥ ललिता रुजया शशिकला जान ॥ माधवि
 अरू यमुना प्रमान ॥१२॥ जाह्नवि सुशिला रति पुनीत
 ॥ शशिमुखी कुंतिहरिचरन प्रीत ॥ स्वयंप्रभा पद्म मुखि
 कदंब माल ॥ अरू सुखा सुभा मधुमति रसाल ॥१३॥
 सरस्वति अरू पद्मा रू गंग ॥ सुमुखीही सर्व मंगल सुरंग
 ॥ भारति पारिजाता सुभाम ॥ कमलाहि एक हरिचरन
 काम ॥ १४ ॥ नंदनी सुभग नंदा अनूप ॥ पुनि कृष्ण

प्रिया सुंदर सरूप ॥ कोटान कोटि वय करि किशोर ॥
 शुभ हाव भाव सुंदर सुगौर ॥ १५ ॥ प्रति अंग नंग भू-
 षन अपार ॥ सज रहत सदा सोरहिसंगार ॥ धुनि होत
 पाय नेपुर अभंग ॥ तन देख लजत तेही कनक रंग ॥
 १६ ॥ कुच चर्च कंकू अतिलंब केश ॥ विकसायमान
 सुकुमार वेश ॥ हिय लसत निरतर रवहार ॥ नालेर
 शीश अति बेनिभार ॥ १७ ॥ बाजंत्र नाद होवत विशाल
 ॥ रतिवंत गीत गावत रसाल ॥ चित चोर वजत उपंग
 चंग ॥ मनु मेघ धूनि गरजत म्रदंग ॥ १८ ॥ राधिका
 भुवन एहिरीति जान ॥ रंगराग अलोकिक होत तान
 ॥ गढ बाहर बनि परिखा अतंत ॥ अति उंडि अणं कल
 जल प्रजंत ॥ १९ ॥ गढगोल अलोकिक बीन प्रमान ॥
 छविराज दुर्ग विस्तारमान ॥ परिखाके तीर चहुं ओर
 आय ॥ छविवंत कल्पतरु रहे छाया ॥ २० ॥ चित चोर
 बनेउपवन अनूप ॥ झुकरहि छाहि नहिं लगत धूप ॥
 सवतें जुं अजब सुंदर अचंभ ॥ कंगुरे रत्नमनिहेमकुंभ
 ॥ २१ ॥ सब गोपी राधिका रमा तोल ॥ पतिवर्त धर्म
 राखत अडोल ॥ पतिभाव एक श्रीकृष्ण साथ ॥ तेहि
 देत नवल सुख नवल नाथ ॥ २२ ॥ गोलोक धाम एहि
 विधि विशाल ॥ गुन गान करत हरि गोपि ग्वाल ॥
 नहिं कांम कुंमति अंतरकलेश ॥ संताप शोक दुखनाहिं
 लेश ॥ २३ ॥ शुभ कुंकुम केसर अति सुवास ॥

लेसुरभिं गंध उर धर हुलास ॥ घनसार अगर
 म्रगमद अपार ॥ हरि दरश जात ले पुष्पहार ॥ २४ ॥
 दोहा ॥ ॥ मोरहि पोरि उलंघकें ॥ चोक विलोकत
 आय ॥ शोभा अगनित ताहि की ॥ मुख बनि नहि
 जाय ॥ १ ॥

॥ छंद हरिगीता ॥

तेहि चोक महि अति सुखद सुंदर ॥ अधिक
 तेज अपार हे ॥ रुचि चंद्रकोटि समान उज्ज्वल ॥ तेज
 पूज उदार हे ॥ तेहि नाम अक्षर ब्रह्म अगनित
 कहतहे मुनि वंद जूं ॥ अरु विमल आदि रु अंत वर-
 जित ॥ गुणातीत स्वच्छंदजूं ॥ १ ॥ पुनि काल पुरुष
 प्रधान आदिक ॥ जक्त कारन जेहजूं ॥ इन सबनको
 यह अचल आश्रय ॥ सकल व्यापक तेहजूं ॥ सत
 चीद आनंद कंद सुंदर ॥ अचल वस्तु अनूपहे ॥
 रमनीक सुंदर तेज रासी ॥ रुचिर सुंदर रूप हे ॥
 २ ॥ तेहि मध्य मंदिर कृष्णको ॥ रसरूप सुखकर
 राजहीं ॥ तहां हेमकि बलभि मनोहर ॥ चीत्र मनिमय
 छाजही ॥ जन मूदित होत सजोत मंदिर ॥ अधिक
 सबके उपरी ॥ जटि चटकदार उदार चुनी ॥ लट
 मोतिनकी लरी ॥ ३ ॥ अरु विविध नंग सुरंग नौतम
 ॥ रत्न संजुत थंभहे ॥ पुनि सीत मंद सुगंध सुंदर
 ॥ आत वात अचंभहे ॥ मनि दाम अधिक उदाम

॥ मनहर ॥ चर्तुमाल मोहामनी ॥ तहां करत पद
 झनकार झंझर ॥ राधिकादिक कामनी ॥ ४ ॥ दोहा
 ॥ ॥ वंदन बार प्रकार बहु ॥ अनि संजुन चहुं पास
 ॥ चामर श्वेत निकेत शुभ ॥ तंग सुरंग प्रकाश
 ॥ १ ॥ कलश मनोहर रत्नके ॥ तोरन आभू अशोक
 ॥ मृगमद चंदन अगरके ॥ अति सुगंध हरिओक
 ॥ २ ॥ सुंदर गिरि शत शृंगते ॥ उंचो हरि आवास
 ॥ धूप दीप मंगल सकल ॥ तेहि जुत अधिक प्र-
 काश ॥ ३ ॥ मंगलय्य प्रतिद्वारण ॥ कुंभ कतंक
 दरशाइ ॥ फल दलकुंकुम जूत करि ॥ धरे विविध
 तहां लाइ ॥ ४ ॥ विविध भेज तहां रत्नकी ॥ पुष्प-
 न भेज अपार ॥ भोग द्रव्य पूरन भूषन ॥ रत्न पात्र
 अवार ॥ ५ ॥ ॥ दोहा ॥ शरद पुरन शशि मुख
 कबल ॥ विविध पूष्यके हार ॥ केसर चंदन चर्च
 तनुं ॥ दिव्य वस्त्र अलंकार ॥ १ ॥ एहि करि शोभा
 नयल अति ॥ नीरखत रही समीप ॥ मंत्र कही मुख
 कहतहे ॥ अर्पहुं आरती दीप ॥ २ ॥ श्रीकृष्णाय नम
 हुं कही ॥ प्रीति अधिक उर धार ॥ देतहुं नाथ प्रद-
 क्षणा कीजेहु अंगीकार ॥ ३ ॥

छंद हरिगीता

॥ गोविंद माधव दयालय प्रभु ॥ दीन हित नरतनु
 धरी ॥ श्रीमंत मन द्रग हरपदायक ॥ दिव्य मुर्ति

श्रीहरि ॥ मणि निल इंद्र मु अंग मनहर ॥ वीनती
 अवधारियें ॥ श्रीवासुदेव श्रीरुक्मिणीवर ॥ मोय-
 नाथ उगारियें ॥ १ ॥ कंसादि दुष्टन दमनकारक ॥
 प्रणतबंधू एकजुं ॥ कामोदकी कर कमल सुंदर ॥ शं-
 खचक्र प्रवेकजुं ॥ श्रीद्रोणकापुर इंद्रपूरन ॥ काम
 कुबुधि निवारियें ॥ श्रीवासुदेव श्रीरुक्मिणीवर ॥
 मोयनाथ उगारियें ॥ २ ॥ सुख हरष कंद स्वछंद
 सुंदर ॥ द्रंद फंद विनाम है ॥ रतु शरदचंद मु विव
 मुखमोहि ॥ मंदमंदमुहामंद ॥ भूव भार वृषवल नाश
 कारक ॥ बंधू अहि दुख दारियें ॥ श्रीवासुदेव श्री
 रुक्मिणीवर ॥ मोयनाथ उगारियें ॥ ३ ॥ भामानुं
 रंजन इंद्रमदहर ॥ लाये पारिजात जुं ॥ जेहि पृथ प्र-
 धुमन यज्ञ बहु कत ॥ सभा सुगट मुहात जुं ॥ त्रिय
 शोल सहस्रके कांत सुंदर ॥ काम मम अरि मारियें ॥
 श्रीवासुदेव श्रीरुक्मिणीवर ॥ मोयनाथ उगारियें ॥
 ४ वसहेत पारथ सारथी भयं लीन पांडव पक्षजुं ॥
 कक्षा मनोरथ ईष्ट सुग्न प्रद ॥ वनेहो मर व्रक्षजुं ॥
 देवेंद्रबंधु मु गरुडध्वज ॥ कर धनुष क्रोध प्रहारीयें ॥
 श्रीवासुदेव श्रीरुक्मिणीवर ॥ मोय नाथ उगारियें
 ॥ ५ ॥ शुभ धर्म पंथ म्रजाद रचना ॥ करन तनपर
 होमदा ॥ नित दान द्विजकुं करन पूरन ॥ हरन
 भंकट आपदा ॥ गुण कोष तेष अदोष गिरिधर ॥

रोष दोष बिमारीयें ॥ श्रीवासुदेव श्रीरुक्मिणीवर ॥
 मोय नाथ उगारियें ॥ ६ ॥ करुना महोदधि उदधि
 भवके ॥ पारकरन अपार हो सुकल्यान कृत जन
 पतित पावन ॥ नाम परम उदारहो ॥ ततखेव मम अ-
 हंमंवर ॥ द्विजदेव दरद विदारीयें ॥ श्रीवासुदेव
 श्रीरुक्मिणीवर ॥ मोय नाथ उगारियें ॥ ७ ॥ सं-
 मार करिकें खीन नर ॥ चलि चरन आयो रावरी ॥
 तेहि करन रक्षन सदा ततपर ॥ उधव प्रति निज
 बुधि धरी ॥ प्रतिपाल ब्रह्मानंदकुं हरि ॥ क्रिपा न-
 जर निहारीयें ॥ श्रीवासुदेव श्रीरुक्मिणीवर ॥ मोय
 नाथ उगारियें ॥ ८ ॥ ॥ घनश्यामाष्टक ॥ ॥ सवैया ॥
 साहभयो उमराह भयो पतसाह भयो जगशिषनयो हे ॥
 रागि भयो बड भागि भयो वितरागि भयो वन
 जाय रह्योहे ॥ मानि भयो निरमानि भयो परमा-
 नि भयो जसवास लयोहे ॥ ब्रह्म मुनि घनशाम-
 को आश्रय जो न भयो तो कछु न भयोहे ॥ १ ॥ ना-
 रि मिलि फूलवारि मिली जु अटारि मीलि महि
 काच ढल्योहे ॥ पुत मीले घर सुत मिले बहु दुत
 मीले निज बेन पल्योहे ॥ खान मिले अरु पान मि-
 ले सनमान मिले कहुं भाग्य खुल्यो हे ॥ ब्रह्ममुनि
 घनशामको आश्रय जो न मिल्यो तो कछु नमि-
 ल्योहे ॥ २ ॥ भोग लियो रु उद्योग लियो तन

जोग लियो बिन रोग जियोहे ॥ जान लियो क-
हु तांन लियो बहुदान लियो गजराज कियो हे ॥
बाज लियो गजराज लियो सब माज लियो ज-
स गाज रयोहे ॥ ब्रह्ममुनि वनशामको आश्रय
जो नालियो तो कछु न लियो हे ॥ ३ ॥ त्यागि व-
न्यो अनुरागि वन्यो बडभागि वन्यो अरिमे
न हन्यो हे ॥ सर वन्यो मगर वन्यो धनपूर
वन्यो चकडर मुन्यो हे ॥ तालि वन्यो अरु
ख्यालि वन्यो सुख पालि वन्यो बड भारलि ग-
न्यो हे ॥ ब्रह्ममुनि वनशामको भवक ॥ जो नव-
न्यो तो कछु न वन्यो हे ॥ ४ ॥ धाम कियो कहंका-
म कियो जग नाम कियो जम व्याप रयो हे ॥
दान कियो मनमान कियो अभिमान कियो
करके झुकियो हे ॥ दाव कियो कहु भाव कियो
ठहराव कीयो कहु राज लियो हे ॥ ब्रह्ममुनि वन
शामको आश्रय जो न कियो तो कछुन कियो हे
॥ ५ ॥ गीत पढ्यो जग गित पढ्यो नृप नित प-
ढ्यो तन रंग चढ्यो हे ॥ भाम पढ्यो अनु भाम
पढ्यो रस रास रु न्याय प्रकास द्रढ्यो हे ॥ के-
द पढ्यो बहु भेद पढ्यो सब वेद पढ्यो पढि मा-

न वदयोहे ॥ ब्रह्म मुनि घनशामके नामकुं ज्ञान
 पद्यों तो कहतु नपद्यों हे ॥ ६ ॥ देश गयो परदेश
 गयो धर भेष गयो नहु धाम रयो हे ॥ कामि ग-
 यो अरु जारि गयो तन घामि गयो अति पंथ
 भयो हे ॥ भोक गयो मुर लोक गयो विधि लोक
 गयो मन रोक ठयो हे ॥ ब्रह्म मुनि घनशामके
 आश्रय जो न गयो तो कहन गयो हे ॥ ७ ॥ जा-
 ग कस्यो पुन्य भाग कस्यो सब त्याग कस्यो क-
 हु राग धर्योहे ॥ न्यास कस्यो उपवास कस्यो वन-
 वास कस्यो तहां प्यास मर्योहे ॥ जाप कस्यो मुर
 थाप कस्यो मु विलाप कस्यो तन ताप पर्योहे ॥
 ब्रह्ममुनि घनशामको आश्रय जो न कस्यो तो कहतु
 न कस्योहे ॥ ८ ॥

॥ अथ माया पंचक ॥

लपय ॥ ॥ को करत अपवास ॥ कोउक अन खात
 अलुना ॥ कोउ खात फठ कंद ॥ कोउ बालन कोउ
 मुना ॥ को ठाढ़ तप करत ॥ कोउक उंघ शिर झुले
 ॥ मनकन कुं मख मान ॥ मोक्ष मार्गमें भुले ॥ वास-
 ना हृद त्यागे विना ॥ विफल करत वनवासहे ॥ कह
 ब्रह्ममुनि हरि प्रगट विन ॥ सब मायाके दास हे ॥ १ ॥
 जदीयां बूटीं जाय ॥ कोय कीमिया बनावे ॥ काहुके
 बस बीर ॥ कोउ सममान जगावे ॥ कोउक नागा

फिरत ॥ कोउ तापत नित धुनी ॥ कोउक मनकी
 कहत ॥ कोउ कहे हुईरु हुनि ॥ धारि भेष भेद पाये
 बिना ॥ मरत भूख अरु प्यासहे ॥ कहे ब्रह्ममुनि हरि
 प्रगट बिन सब माया के दासहे ॥ २ ॥ अग्री बाज्रि
 करत ॥ घोर कोउ होत अघोरी ॥ कोउक वाचा निध
 ॥ देत धन छोरा छोरी ॥ कोउक करत जलमेन ॥
 कोउक पावक महि पेमे ॥ कोउक पीवत पौन ॥ गफा
 गिरिवर महि बेमे ॥ पेसंत कोउक पातालमहि ॥ उडत
 कोउ आकाशहे ॥ कहे ब्रह्ममुनि हरि प्रगट बिन सब
 मायाके दासहे ॥ ३ ॥ करत सरोदा कूट ॥ कालकष्टन-
 कुं बाधे ॥ ईडा पिंगला आदि ॥ पंच भूतन स्वर साधे
 ॥ म्रतक जीवावत कोय ॥ कोय विद्या सब जाने
 निकट देखावत दूर ॥ दूरकुं निकटहीं आने ॥ नवनि-
 धि अरु अष्ट हि सिधि ॥ रहत निरंतर पासहे ॥ कहे
 ब्रह्ममुनि हरि प्रगट बिन ॥ सब मायाके दासहे ॥ ४ ॥
 करा मात कोउ करत ॥ कोउक जग सिध्य कहावे
 कोउक साधत कल्प ॥ जरिण जोवन दरशावे ॥ कोउ
 हिमालय गलत ॥ कोउक गिरिवर ते गिरही ॥ कोउक
 काशी जाय ॥ धारि करवत शिरमरही ॥ मुख चार
 वेद अरु शास्त्र षट ॥ अहोनिश रखत अध्यासहे ॥
 ॥ कहे ब्रह्ममुनि हरि प्रगट बिन ॥ सब मायाके
 दासहे ॥ ५ ॥

॥ अथ उपदेश रत्न दिपक ॥ ॥ दोहा ॥

॥ फूलया नर निश दिन फिरे ॥ शिरें न मुजत काल ॥ आइ अ-
चानक पक रही ॥ ज्युं मुसेकुं व्याल ॥ १ ॥ जोवन धनके
जारमें ॥ उर धारत अभिमान ॥ सबे चवीना कालका
॥ कहा खान सुलतान ॥ २ ॥

॥ छंद भुजंगीनी चाल ॥

॥ कहा खान सुलतान उपमा कहावे ॥ सबे संपति जुक्त
जुगमें मुहावे ॥ उदे अस्तलुं आपकि आण फेरी ॥ दिनं
एक होसि सबे खाख ढेरी ॥ १ ॥ कहा पाम मंत्रि रहेजु
प्राविना ॥ बुद्धिवंत मुजे सबे चोज झिना ॥ सदा राज
काजं मनमें लगेरी ॥ दिनं एक० ॥ २ ॥ कहा द्वार
वाजंत्र निशाण वाजे ॥ घनघोर मानुं जेहि मेथ गाजे ॥
सदा रागरंगं उमंगं भरेरी ॥ दिनं एक० ॥ ३ ॥ दिलं
रंज सारंज राजे दलिचा ॥ सदा अंबरं अंग शोभे ज-
रिचा ॥ जटे नंग आभूषणं अंग पेरी ॥ दिनं एक० ॥
४ ॥ वने इंद्र ज्युंहि सभामे विराजे ॥ करे चमरं के शिरे
छत्र छाजे ॥ छडिदार उचारहि बेरिबेरि ॥ दिनं एक०
॥ ५ ॥ तनं सारखारंगनातान तोडे ॥ जेपे फ्रितवंदिजनं
हाथ जोडे ॥ घरे राज भोमि रहे जुथ घेरी ॥ दिनं एक०
॥ ६ ॥ अखाडा मंडे मल्लनिखान आगे ॥ लले आय
भोमि सबे पाय लागे करे संक वंके गढे आपकेरी
॥ दिनं एक० ॥ ७ ॥ गुणि गान सारं अति तांन गावे ॥

सदा पंडितं काव्य गाथा मुनावे ॥ कडा जुड सामंत
 शोभे कचेरी ॥ दिनं एक० ॥ ८ ॥ रहे मेज फुलां वि-
 छा जाम सरबं ॥ खजिना सचंगा नंगा अर्ब खर्व ॥
 मने आप भुमे नहि तोल्य मेरी ॥ दिनं एक० ॥ ९ ॥
 सदा पाव चंपा रहे दास संगं ॥ चुआ चंदनं गंध
 लेपंत अंगं ॥ रहे अंध धंधं मदा केफ लेगी ॥ दिनं
 एक० ॥ १० ॥ जटे नंग हिराकनंकां महेछां ॥ अति
 चित्र भिते विचित्रं अवछां ॥ मदावेस गोखे कर
 शोख हेरि ॥ दिनं एक० ॥ ११ ॥ दिखेंज आगे खडे
 दास दासि ॥ स्वमाजिह बोले करंता खयासि ॥ जयं
 कारवारं हजारंजोपरि ॥ दिनं एक० ॥ १२ ॥ झुले
 फुल हिंडोलमें आठ जामं ॥ बने दाम कामं आत
 रूपवामं ॥ सदा भूषणं अंगनंगं मजेगी ॥ दिनं एक०
 ॥ १३ ॥ प्रतापां लखे त्राम मेवाम पाये ॥ नरंताथ हाथं
 जटे माथनामे ॥ फरंमाण मक्के नहि काय फेरि ॥ दिनं
 एक० ॥ १४ ॥ मुखं पालबेठे चले जुय संगं ॥ रयं मुदरं
 बेल जुते तुरंगं ॥ तिखे साद आगे छडिदारंगेरि ॥ दिनं
 एक ॥ १५ ॥ रणंजित सामंत दिपे रडाला ॥ जुयं वार
 खागे झडे आग झाला ॥ फिरे न कबु पिठवंका अफेरि ॥
 दिनं एक० ॥ १६ ॥ तुरिवेगवंता जरिमा जटाणां ॥
 देयंता उडांणां जेहि म्रम डांणां ॥ सचं वाग रागां

नटांजुं नचेरि ॥ दिनं एक० ॥ १७ ॥ * हठाला पटाला
 दांताला हजारं ॥ गुंढाला बने मेघ मालं समारं
 ॥ झरंता मदेखंभठानं झुलेरि ॥ दिनं एक० ॥ १८ ॥
 लगे साथ सेनावण पार लारां ॥ कडा जुड सामान
 उंटां कतारां ॥ नगारां रणंतुर वाजे न फेरि ॥ दिनं
 एक० ॥ १९ ॥ बणावे किलाके चितं चाह वंका ॥
 सवे देख शत्रु मने होत संका ॥ भंडारा अति शोर
 शिशा भरेरि ॥ दिन एक० ॥ २० ॥ खाइ खोद चोडि
 सजे तोपखानां ॥ बुरज्जे बुरज्जे ठवेवे प्रमानां ॥
 जडे लोहक पाट भारे जंजीरि ॥ दिनं एक० ॥ २१ ॥
 बहु थाट भिडो हटां हो बजारां ॥ करे हाट पाट अति
 चित्रकारां ॥ वेपारां लखां होत संजा सवेरि ॥ दिनं
 एक० ॥ २२ ॥ प्रजा जास वासे रहे सांम प्यारी ॥ करे देत
 द्रव्यं अति सुखकारी ॥ अहोनिश उभे धनिकें अंगेरी ॥
 दिनं एक० ॥ २३ ॥ दिसं देश वाजे जसं जास डंका ॥

* हठाला अने जेना शरीर उपर पटा पाडेली अने
 दांतवाला हजारो गुंढाला हाथी शमारेली मेघमाला जेवा
 बनेला होय ते मदमां झुलता बांधवाना थांभलाने ठेकाणे
 झुली रव्या होय पण ते बधा एक दीवस राखनी दगला
 थड जाशे. १८

समापें लखां दान न होत मंका ॥ २७ ॥ असाधार दातार आ-
 क्रंत बेरी ॥ दिनं एक ॥ २४ ॥ बने व्रथ नाना बगिचा
 विलास ॥ खुले फुल झुले लता लुंव स्वामं ॥ अति लत
 गंधं सुगंधं छकेरि ॥ दिनं एक ॥ २५ ॥ हजारं फुहारा छुंटे
 निर होजं ॥ मिले मंडाल छेल माणंत योजं ॥ जलं निर्मले
 किडंत बेगंबरि ॥ दिनं एक ॥ २६ ॥ दिशंदेश फेरि
 अदलां दुहाड ॥ सुभं साज बाजं बिगजे मदाड ॥
 समाने अंतेंते दुरंगं मजेरी ॥ दिनं एक ॥ २७ ॥ कुलें
 उंच जन्मं तनं चमंतकारि ॥ धनाढयं छवि पुजहि छत्र
 धारि ॥ पुराणां कथिता माहिता पठेरी ॥ दिनं एक ॥ २८ ॥
 प्रविना कला सोल धारा प्रवाहं ॥ सभाजित पंडित
 चितं उछाहं ॥ अति मान देशं विदेशं वधेरी ॥ दिनं एक
 ॥ २९ ॥ दलिचा बने साह बेठ दुकाने ॥ मजेहें अवासं
 निवासं सुथाने ॥ जमे होत कोडुं कहावं अवेरी ॥ दि-
 नं एक ॥ ३० ॥ कहावंसमं आप उद्योतकारी ॥ भड
 कितं देशो दिशं बहृत भारी ॥ कोटि धन संख्या
 ग्रहे द्रव्येकी ॥ दिनं एक ॥ ३१ ॥ जवानि
 छके पिड उडंड २जेलि ॥ प्रतापें अंतेंते करंता पेटे-
 लि ॥ प्रजा संक माने चले आप प्रेरी ॥ दिनं एक ॥
 ३२ ॥ पिडं तेजवंतं अयंतं प्रताप ॥ थपे आ-

१ असाधारण दातार होय अने शत्रुओंने अकलावे एवा होय.

२ तोफानी.

पसो कोसके ना उथापि ॥ बडा कर्तवता भिम-
 ना बजेरी ॥ दिने एक० ॥ ३३ ॥ चलता निरखे
 निजे पिंड छाया ॥ भजे वार भागे मजे मनभाया
 ॥ छटावेत अक्रंत केफे छेकरी ॥ दिने एक० ॥ ३४ ॥
 पिता मात प्यारे मवे वंस पोषे ॥ मृधं वाण
 भांसे मवे हि संतोषे ॥ महा रूपवंति ग्रहे जाय मे-
 री ॥ दिने एक० ॥ ३५ ॥ कहां हुनर आप जाणे ह-
 जार ॥ प्रथि देख रीझि मुवामं अपार ॥ घणा चा-
 तुरि वंत शोभा घनेरी ॥ दिने एक० ॥ ३६ ॥ प्रथी
 नारहे नारहे आप पौनां ॥ हुतांस आकासं मवे
 नाम होनां ॥ स्थिति नां रहे पींड ब्रह्मांड टेरी ॥ दि-
 ने एक० ॥ ३७ ॥ १दुनी नां रहे २इंद्र ३चंद्र ४दुडंदा ॥
 मवे उपरं काल व्यालं अजदा ॥ बडा जोय वंका
 निजेका अंसेरी ॥ दिने एक० ॥ ३८ ॥ दिने चारका
 जीवना आ दुनीमें ॥ अम मोहवंता बुधी आपनीमें
 ॥ तुछे मुखमें लब्ध होइ व्रती तेरी ॥ दिने एक०
 ॥ ३९ ॥ ब्रह्मानंदके वसु वंश मोह प्राणी ॥ बिना
 मुझ तेरी बुधि क्यां बेकाणी ॥ लक्ष्मी तणा
 नाथकी ओट लेरी ॥ दिने एक होमि मवे
 खाख देरी ॥ ४० ॥ छपय ॥ खलक मलक होइ

१दुनियां रेहेवानी नथी. २इंद्र ३चंद्र ४मुख्य रेहेवाना नथी.

खाख ॥ एक दिन अंबर अवनकी ॥ ब्रह्मा कीट
पर्यंत ॥ रहे नहीं देह कवनकी ॥ कहा राव
कहा रंक कहा मुर असुर कहावे ॥ वितथ पींड
ब्रह्मांड का जग रहन न पावे ॥ कहा इंद्र चंद्र दुंद-
डहु ॥ उंच नीच अंतगलका ॥ कहे ब्रह्मानंद गु-
रु चरण बीन ॥ सब चर्वीना कालका ॥ १ ॥

उपदेश चितांमणी ॥ ॥ छंद चंद्रायणा

॥ सुंदर पाइ देह नेह कर गममें ॥ क्या लब्धावे
काम धराधन धाममें ॥ आतन रंग पतंग मंग नहीं
आवसि ॥ हरहां श्रीरंग जमहुके दरबार मार वह
खावसि ॥ १ ॥ गाफल मूढ गभार अचेतन चेतन
॥ समजु संत मुजान भिखामन देतरे ॥ विषया मांदि
बेहाल लगादिन रेतरे ॥ ह० भिरवेरि जभरांन नमुजे
नेनरे ॥ २ ॥ दिलहि युंकर देखके तेरा कोन है ॥ चलै न भेला
साथ अकेला गांनहे ॥ देहगेह धनदार इनमें चित दिये ॥
ह० रछ्या न नीस दिन गम काम ते क्या किया
॥ ३ ॥ देह गेहमें नेह निवारि दिजिये ॥ राजीजिमे
राम काम मोई कीजीये ॥ रया न रेश कोय रंक
अरु रावरे ॥ ह० करले अपना काज बन्या हद दा-
वरे ॥ ४ ॥ मेरि मेरि करत फरत मगरुमें ॥ काया
माया काज कमाया कुरमें ॥ पलकमांदि गृह आद्य

होय सब पागका ॥ ६० ॥ तें होयगा ते श्हेकिक सारि-
 कत मागका ॥ ६१ ॥ वंछत इश सुरेश एहि नरदेह-
 कों ॥ श्रीपति चरणसरोज बढावन नेहकों ॥ सो
 नरदेही पाय अकाज न खोईये ॥ ६२ ॥ सायबके दर-
 वार गुनाई होईये ॥ ६३ ॥ केति तेरि जान केता ते-
 रा जीवनां ॥ जेमा स्वप्न विलास मृषाजल पीवनां ॥
 एस मुखकें काज अकाज कमावनां ॥ ६४ ॥ वाग्वार
 जम दार मार बहु खावनां ॥ ६५ ॥ नहि हे तेरा को-
 य नहि तें कोयका ॥ स्वारथका संसार बन्या दिन
 दोयका ॥ मेरि मेरि मान फिरत अभिमानमें ॥ ६६ ॥
 अवगने नर मुढ एहि अज्ञानमें ॥ ६७ ॥ मात तात
 सुत भ्रात किया हित नारथि ॥ नहि तेरा नेदान
 सब निज स्वारथि ॥ याके संग अबुज खोई सब
 *आवर ॥ ६८ ॥ अजहु चेत अजान हरि गुन गावरे
 ॥ ६९ ॥ कुडा नेह कुटंब धनहित धायता ॥ जब
 धेंगे जमगन करेको सायता ॥ अंतर फुटी आंख्य
 न मुजे आंधरे ॥ ७० ॥ अजहु चेत अजाण हरिमें
 मांधरे ॥ ७१ ॥ बारवार नरदेह कहो कित पाइये
 ॥ गोविंदके गुनगान कहो कब गाइये ॥ मत चुके
 अवमान अबे तनमां धरे ॥ ७२ ॥ पाणि पेली
 पाल अज्ञानि बांधरे ॥ ७३ ॥ जुठा जग जंजाल

पर्या तोहिफंदमें ॥ छुटनीक नहि करत फिरत आनं-
 दमें ॥ वामे तेरा कौनसमा जब अंतका ॥
 ह० उगगणका उपाय शरण एक मंतका ॥ १२ ॥
 कुंडे धनके काज सब दिन धायया ॥ मन्त्रा मरजण
 हार मोड़ विसरायया ॥ थिंक एसे नर मुह जनुके
 जिवकुं ॥ ह० पाइ एमि देह न पाये पिवकुं ॥ १३ ॥
 भवतारण भगवंत जनुने नां भज्या ॥ अनर्थ किया
 अपार अर्थ कौउनां मन्त्रा ॥ सो नर धमण
 समान जनुका स्वाम हे ॥ ह० अंत समें भवस
 गले जम फांसहे ॥ १४ ॥ जो पाई नर देह नेह कर
 नाथमें ॥ बाजी जीति वेश महार हाथमें ॥ मृग
 वण्णा संसार कबु नहि आपणा ॥ ह० ममता सबकि
 मेल मई कर आपणा ॥ १५ ॥ मुख उभे उभे
 पाउं ग्वा दश मांसरे ॥ जठर अझीकी झाल महातन
 त्रामरे ॥ किना कोलकर गटण नित रामका ह० भुल
 गया प्रभवाम दास वीच दायका ॥ १६ ॥ मेगल
 माल विलात अनोपम मंदिरा ॥ मजति नित मणगार
 नार अति सुंदरां ॥ हुकल कलल हमेश हदर हलमलां
 ह० ग्वा धम्या सब राज गया नर एकला ॥ १७ ॥
 छके गहंते छेल मलंत मोबतां ॥ तान झडंते ताम
 मलुनी मोबतां ॥ सुभट बजारा साज हजागं हदलां
 ॥ ह० सो नर हाथ घमंत वसंता जंगलां ॥ १८ ॥

अनर तेल फूलेल मदातन आडते ॥ निरक त्रियका
 नेह निमिष नहि छांडते ॥ चलते चाल मरोड बनाते
 १ बांनेके ॥ ६० झपट गये जम दुत उंच शिर तानेके
 ॥ ११ ॥ धर करतां एक पाव छवता अंगरां ॥ शिर
 हथा ममस्थ धरता गीखरां ॥ बाकी खबर नखाज
 एसा कैवितीया ॥ ६० जिन ममस्था जगदिश सांड
 नर जितीया ॥ २० ॥ मंदिर माल विलात खजाने
 भंडियां ॥ राज अरु मुख माजके चंचल चेडियां ॥
 रहता पास खवास हमेश हजुरमें ॥ ६० एसे लाख
 असंख्य गये मिल धुरमें ॥ २१ ॥ मल्लगले मगरुके
 मुल्ल मरोडते ॥ नवल त्रीयाका नेह पलक नहि छांडते
 ॥ निखे करते तरक गरक मदपानमें ॥ ६० मरगये संपत
 भल वसे मेदानमें ॥ २२ ॥ मुखमें करते मोख के गोखें झां-
 खता ॥ देख पगड़ नाख नजारां नाखता ॥ लोचन रहते
 लाल अमलमें आकरे ॥ ६० मोवि गये विलाय गइ
 उड खाखरे ॥ २३ ॥ पुर्वे मेज विलायके तापर पोहते
 ॥ आछे दुपट माल दुमाले ओहते ॥ लेके दरपण हाथ
 निके मुख जेवते ॥ ६० ले गये जम उपाड रये सब
 रावते ॥ २४ ॥ बंकि पाग बनायके छांगां मेलते ॥
 लके रहते छल खुमि दिल खेलते ॥ झुलते
 त्रिय संगके आठु जामरे ॥ ६० केते मर गये

कोय न जाने नामरे ॥ २५ ॥ जाके मुछां शिक्षके लिख
 ठेरते ॥ विकट थटांके बीच के भाला फेरते ॥ जुधवल
 झुझार नमाते जग्दमें ॥ २६ ॥ एसे जोध असंख्य गये
 मिल गग्दमें ॥ २७ ॥ अस्तर तेल फुलल लगावे अंगमें
 ॥ अंध अंध दिनसेन त्रियाके संगमें ॥ मेहल अत्रामा
 वेड करंता मोजर ॥ २८ ॥ एसे गये अपार जडे नहि
 खोजे ॥ २९ ॥ जाके आगे राग गुणिजन गावत ॥
 मेवा अरु मिष्टानक भोजन भावत ॥ खांसि मेहरि साथ
 करंता सुविद्या ॥ ३० ॥ मिले मरिद्यां मांयके एहि सु-
 विद्या ॥ ३१ ॥ खान अरु सुलतान बडे जग कहावत
 ॥ देश विदेशां मायके हुकम चलावत ॥ खाग तणे बल
 भोस + बर्याकि लिखटीयां ॥ ३२ ॥ जीव गये जम झाल
 मिले तन मरीयां ॥ ३३ ॥ जमत गेज जग्दके
 चिजां ताजीयां ॥ चोमर चोपड हाल गमेता बारीयां
 ॥ छलबल चतुरा छेल अविचल नांख्या ॥ ३४ ॥ मेमे
 आतम खेल फटाका होगया ॥ ३५ ॥ रहते भिने छेल
 मदा रंगरागमें ॥ गजरा फुलां गुंथ धरंता पागमें ॥
 दरपणमें मुख देखके मुछां तांगता ॥ ३६ ॥ जगमें बाका
 कोय नाम नहि जानता ॥ ३७ ॥ मेल फुवारा होज
 के मांजु मानता ॥ समर्थ आप समान ओर नहि

जानता ॥ पोरम तेज प्रताप चलता पुरमें ॥ ६० ॥
 भालाला भुपाल गया जम उरमें ॥ ६१ ॥ सुंदर
 नारि संग दिंडोले झुलते ॥ पर पाशंवर अंग फरते
 फूलन ॥ जायत खुबि जायके बैठ बजारकि ॥ ६२ ॥
 मोधि हां गये छल्लके हरि छारकि ॥ ६३ ॥ करते
 रंग बिलामके बैठ कचेरियां ॥ मरुठ ठरुठ मनुआर
 कभुंवा केरियां ॥ भोजन नबलि भातके स्वादु शा-
 कके ॥ ६४ ॥ उडगये तुर समुरके जमे आकके ॥ ६५ ॥
 अणकलमाया भेल भंडारि उंडियां ॥ देश विदेशां
 मांड चलंती हुंडियां ॥ जाके आंग देश कमाना
 बाँडिया ॥ ६६ ॥ होगय फनां भकाभके पसे भठिया
 ॥ ६७ ॥ गादि तकिया नाख रहते *गमरमें ॥ रेशम
 धोनीपेर कंदोरा कभरमें ॥ जाका चलना हुकम मंचहि
 मलकमें ॥ ६८ ॥ कोटि धज साहुकार बिलाने पलकमें
 ॥ ६९ ॥ सब दिन चाकर पाम रहते शास्ते
 ॥ कामकाज करनारके बोन गुमाने ॥ लेखां करते
 राजके लाख हजारके ॥ ७० ॥ हां गये छिन एकमांयके
 दशले राखके ॥ ७१ ॥ राज कंचरिमांयके आदर
 पायते ॥ करते हुकम कर पटाल कामते ॥ पाग
 धनीकि बांधके रते अकडके ॥ ७२ ॥ गये धरे धनमाल
 गये जम पकडके ॥ ७३ ॥ इंदुपुरि समान बसति

नगरियां ॥ भरती जल पनीहार कनक शिर गगरियां ॥
 ॥ हिरालाल झवेर बेकाता तां माहि ॥ ८० ॥ एमि
 पुरि उजाड भयंकर हो गइ ॥ ८१ ॥ होति
 जाके शिशके छत्रे छांडियां ॥ अदल फिरंतीआण
 दिशो दिश मांडियां ॥ उदेअस्तलुं राज जनुका कावता
 ॥ ८० ॥ होगये ढेरी धुर नजर नहि आवता ॥ ४० ॥
 नित जाके दरवार झडंती नोवतां ॥ मंत्री पाम प्रवीन
 करंता मोवतां ॥ चतुरा झीना चोज तरक अति
 मुजता ॥ ८० ॥ तिनहुंका जगमांहि नाम नहि बुजता
 ॥ ४१ ॥ ज्याके आगे मल्ल रोज अखाडा मंडते
 ॥ खगवल खाते खंड *उडंडा डंडते ॥ थटा कचेरि
 थट छटा रंग छायेके ॥ ८० ॥ मुता तांणी शोड
 मसाणु जायेके ॥ ४२ ॥ रहते घेरे रोज अवंके रावते
 ॥ मछराले मेवासके कांथ नमावते ॥ कनक छडि
 ले हाथ नकि पोकारते ॥ ८० ॥ रये धरे मव राज गये
 जख मारते ॥ ४३ ॥ बंके किला बनायके तोपा मा-
 जियां ॥ मत्ते भेगल द्वारके तते नाजियां ॥ नित
 प्रति आगे आय नचंति नायका ॥ ८० ॥ याकुं गये
 उपाड दुत जमरायका ॥ ४४ ॥ माणक हिरालाल
 खजाना मोतियां ॥ सजेराणि मणगारके सनमुख
 जोतियां ॥ दिन दिन अधिक सुगंध लगाते देहमे ॥

६० ऐसे भोगि भूप मिले सब खेहमें ॥ ४६ ॥ जो-
 गि करते जोगके आसन सांधते ॥ अखंड भभूत
 लगाय जटा शिर बांधते ॥ साथे कल्प केदारके
 तनपर होयरे ॥ ६० काल व्यालकि झपटवच्या नाहिं
 कोयरे ॥ ४६ ॥ आतनरंग पतंगकल उडजायगा ॥
 जपके द्वार जरूर खता बहु खायगा ॥ मनकि तजदे घात
 बात मत मान ले ॥ ६० मनुषाकाग मोगर ताहिं कु जा-
 नंदे ॥ ४७ ॥ अथ माग असारको अंग ॥ ॥ श्रीरंगक-
 हे श्रीरंग कोहे वे अदलवात कहू एक विवेक विचार-
 कि ॥ जब निल भग नाहि जुठ हान भव पारकी ॥
 सखकुं निद्या समझ कांध मत किजियो ॥ हरहां श्री
 रंग ताल अदल तेहे किक धार उर लिजीयो ॥ १ ॥
 दधि मथ घनकुं लेड छाम तजि दिजीये ॥ छलका
 दुर निहागके चावल लिजिये ॥ ऐसे सार असार ज-
 गतमें जानिये ॥ ६० अमत मो चीत विसराय सखकुं
 मानिये ॥ २ ॥ समझावत हुं रीत मो सार असारकि
 ॥ याकुं निदा समझत मो नर नारकि ॥ साच्चि मोहर
 मरफ परखके लहन्हे ॥ ६० ऐसे समझु संत बात सख
 कहतहे ॥ ३ ॥ सखकुं कहिये अमत मो निद्या जानि-
 ये ॥ असख मत एक ताल नकहिये बांनिये ॥ जाकुं
 जेसा कहत जथाग्र्य बात हे ॥ ६० सारासार विवेक
 ग्रंथ सब गातहे ॥ ४ ॥ चोर चोरकि बात कहे कुन

बाहेरि ॥ जब देखे साहुकार करे तब जहिरी ॥ षट
दर्शन भए एक सो विषे विचारके ॥ ६० ॥ जाकुं सत-
गुरु बाल कहत पोकारके ॥ ६१ ॥ ॥ सवे त्रीया नहि
सती सवे नहि मुरहे ॥ पारम सब पापानं कहे सो
कुरहे ॥ टके सेर सब एक वस्तु नव तोलिये ॥ ६२ ॥
सवे भेष नहि संत सत्य मुख बोलिये ॥ ६३ ॥ साईया
प्यारा सत्य असत्य न भाखहु ॥ वरण आश्रम बेवार
कामनहि राखहु ॥ सुख मानो वा दुख फरक नहि
दोयसे ॥ ६४ ॥ राजी चाहिये राम काम क्या कोयसे ॥ ६५ ॥
जान लेहु संत रीत एकादश कंदसे ॥ गीता निस दिन
गात रहिता फंदसे ॥ साखि पदके मांथी लखे गुन
संतके ॥ ६६ ॥ अत्र कहूं मुनाय प्रकार असंतके ॥ ६७ ॥
विघन दीपकुं प्रगट देखिये पवनका ॥ नवा अंकुरकुं
विघन अजाके गवनका ॥ ज्युंहि अजाकुं विघन व्याघ्र
नरवेशका ॥ ६८ ॥ ल्युहि जगतकुं विघन भक्त अरु भेष-
का ॥ ६९ ॥

॥ अथ असंतको अंग ॥

॥ झिणि माला कंठके अजब उतारके ॥ दरपणमें मुख
देखके तिलक समारके ॥ काजु कोर कपालके खुटत
चिपिये ॥ हरहां श्रीरंग बेइया ज्युं मन विकल हरण
पर धन त्रिये ॥ १ ॥ बाहर माला तिलक कतरणि
अंतरे ॥ परधन पर त्रिय काज जगतमें विचरे ॥

मनमां चहिये मान खान पुरि खांडका ॥ १ ॥
 गावे सुंदर गान ध्यान उर रांडका ॥ २ ॥
 भक्तमाल भन लेन रु आवे गावना ॥ शिष्या गुरुके
 पास के लोक गिझावना ॥ जग चेतावन काजके
 पुस्तक ले फेर ॥ ३ ॥ रांडि छांडि देख ताहां जाय
 उतर ॥ ४ ॥ नवरि रूप नविन हाथ पैसा माहि ॥
 जाके घरके विच चलण नरका नहि ॥ एभि एभि देख
 नजरमें राखियां ॥ ५ ॥ ताके आगे कहत शब्द अरु
 भाखियां ॥ ६ ॥ मुन्या तुमारा भाव आएह दग्गकुं ॥
 हमहारि ज्युंकी कथा कहत नहि पुरुषकुं ॥ नरका
 दिया कटोराह चलण कुहंगमें ॥ ७ ॥ प्रेम भक्ति
 अति होत माइके संगमें ॥ ८ ॥ आओ माई तो
 य बात कहूं एक ग्यानकी ॥ आसन पर एकांत
 आवनां दानकी ॥ दिलके भितर घात बात मुख
 रामकी ॥ ९ ॥ माइ माइ कहि बोलात रु नजर दगा-
 भकी ॥ १० ॥ भरतखंड के माई भये धन मानवि
 ॥ नामे त्रियाकि देह अधिक करि जानवि ॥ संतनकों
 अंग संग कर मोई स्नेह हे ॥ ११ ॥ एमा दे उपदेश
 सां पांज अष्ट हे ॥ १२ ॥ उपनि भक्ति भाव म-
 हेर करतारकी ॥ अब नहि रखिये लेश लाज
 संसारकी ॥ अरधरात एकांत संतकुं सेवना ॥ १३ ॥
 एभि कहवे बात सो गंडक टेवना ॥ १४ ॥ धन हे

विधवा नार जनुके मनकुं ॥ जिन हरिजनके अरथ
 लगाया तनकुं ॥ रसबस साधु साथ के लेवे रामडा
 ॥ ६० ॥ ऐसा माहात्म गात सो खावत खामडा ॥ ९ ॥
 कबहु मनके मांड अभाव न लिजीए ॥ मन बच क्रम
 करि टेल संतकि किजिये ॥ अपना तन दे मुखि सतव
 रखवना ॥ ६० ॥ एहि विगडि बात करे सो कुल
 रखवना ॥ १० ॥ कामि होवे संत कृष्ण उयो जानिये
 ॥ लोभि क्रोधि वामन नृमिह प्रमर्मानये ॥ ऐसा
 दे उपदेश त्रिया धन ईछहे ॥ ६० ॥ कामि क्रोधी
 लोभि होवे सो निच हे ॥ ११ ॥ साधु परम दयाल
 दया दिल धरतहे ॥ तेरि भक्ति जानके सपरम करतहे ॥
 सब दांनमें उत्तम तनका दांनहे ॥ ६० ॥ एहि कहे
 बात संत नहि स्वान हे ॥ १२ ॥ पुरख पुन्य से शीत
 हे सपरम संतका ॥ एहि अमर्लक रित रहस्य
 एकांतका ॥ बटलावे धन लेत शिखावे कामहे ॥
 ६० ॥ निश्चे नाहि संत सो निच गुलाम हे ॥ १३ ॥
 धन हे एहि नाख्य जनुके जिवकुं ॥ संतन
 सेवा काज तज्या निज पिवकुं ॥ मज्या खुब बिछाव
 संतसंग सूरतियां ॥ ६० ॥ ऐसा देवे ज्ञान सो मारे जूतियां
 ॥ १४ ॥ संत संगथे काम सो काम न जानना ॥ सीत
 प्रसादि अब सो अब नमानना ॥ संत प्रसादि देह सो
 देह न देखना ॥ ६० ॥ ऐसा देवे ज्ञान सो पाजि लेखना

॥ १५ ॥ लुखि भक्ति करत सबे व्रत नेमकी ॥ कोउ
 न जानत रित प्रगट यह प्रेमकी ॥ खाना पिना खुब
 सिखावे खेलना ॥ ह० उस पाजीके शिषके जुति मेलना
 ॥ १६ ॥ क्या नारिमें पाप काहेकुं त्यागिये ॥ हमतो
 संतन काज द्रव्य बि मागिये ॥ चाहिये मन साबुत देहकुं
 क्या लगे ॥ ह० एसि कहिकहि बात रु लोकनकुं ठगे
 ॥ १७ ॥ कलिमें होगये पंथ लोक भरमायगे ॥ हरि हथो
 हथ प्रगट प्रमाण मिलायगे ॥ कनक कामनि मान
 स्वाद तजि फिरतहे ॥ ह० हम जैसेकुं देखके हांसि
 करतहे ॥ १८ ॥ भक्त मालमें बात भुप हरिदासकि ॥
 वाकी कुवरि किन संतसे आसकि ॥ दोनु सुते मेज
 दिलभर देखके ॥ ह० दिनि शाल ओढाय भाग बड
 लेखके ॥ १९ ॥ एक साधु रहे द्वार कोउ साहुकारके
 ॥ लेगयो भूषण चोरि पुत्रकुं मारके ॥ सो वेश्याकुं
 दिन संत क्रत जानियो ॥ ह० तब लागो पिलतान सो
 मनमे बानियो ॥ २० ॥ अपनि त्रियकुं कहत अपन भुले
 सहि ॥ विषे भोगकि खबर संतीक नांलहि ॥ शेवामे
 भई चुक अबे कहा किजिये ॥ ह० पुत्रि एहि परणाय
 संतकुं दिजिये ॥ २१ ॥ पुत्रीकुं परणाय रख्यो घर
 साधकुं ॥ मान्यो नहि मनमांहि संत अपराधकुं ॥ एसी
 भक्ति होत सुनो सब बाइयां ॥ ह० भक्त मालकि
 रहस्य सो बांच सुणाइयां ॥ २२ ॥ ऐसा खोटा ग्रंथ

सुनावे बांचके ॥ लोकनकुं भरमाय लेत द्रव्य जाचके
 ॥ चाहत अंतर मांय सो विष विकारकु ॥ २० ॥ राम
 राम मुख बके तके परनारकुं ॥ २१ ॥ तब कोउ बेली
 एक चेलि मोय किजीये ॥ तम हो परम दयाल हाथ
 शिर दिजिये ॥ जाते होय कल्याण सो मेरे जीवका
 ॥ २२ ॥ सबमे टले मनेह पुत्र धन पिवका ॥ २३ ॥ धनमाईकुं
 चोट लगी वैरागकि ॥ तेरि मुरत खुब संतके लागकि ॥ ते-
 रे मपरम संत बोत सुख पायगा ॥ २४ ॥ असा दे
 उपदेश सो जमपुर जायगा ॥ २५ ॥ हम हजार
 किन हे चेला चेलियां ॥ जग्या मे पुहुचात हे पै-
 सा थेलियां ॥ करत हे संत कलोल खुसि तहां
 खात हे ॥ २६ ॥ अपने स्वारथ काज लोक भरमातहे
 ॥ २७ ॥ गुरु धनिमें भेद कबु नहि रखवनां ॥
 साधु जनके संग प्रेम रस चखवनां ॥ जुक्तिमे
 जिमाय प्रमादि लिजिये ॥ २८ ॥ अरधरात एकांत मेव
 नित्य किजिये ॥ २९ ॥ चाहिये एक नालियेर खपैया
 रोकडां ॥ पुजा पात्रि काज पांच दश दोकडा ॥
 दश हाथनके दोय पनाले पोतिये ॥ ३० ॥ एक पिछोरि
 अवल अवल दोउ धोतिये ॥ ३१ ॥ एतना चाहिये
 अवस ल्याए बिन नांचले ॥ पिछे तेरि पहुच अधिक
 होयतो भले ॥ राम तारक महा मंत्र कह्यो कानमें
 ॥ ३२ ॥ एर रहस्यकि बात समझनां सानमें ॥ ३३ ॥

ऐसे दे उपदेश करे धन एकठा ॥ पिछे जग्या बांध
 करे नांणांवटा ॥ चेला कर दोउ चारके गौवां
 घोड़ियां ॥ ३० ॥ पोहोर रातले नावत सेवा करनकुं
 ॥ बुनि रखे धखाय के होका भरनकुं ॥ जगा रा-
 खत शाफ भरे जल माटला ॥ ३१ ॥ पटलाणि के काज
 प्रसादि मेलवे ॥ बाके नांने बाल गोदमें खेलवे ॥
 हेत करे घर बेशके छोरां हिंचके ॥ ३२ ॥ मिठा चरणामृत जाय
 ले दांनकि ॥ पाडाकुं जल पात बात करे ज्ञानकि
 ॥ बाके बच्चेबाल सो जाने आपने ॥ ३३ ॥ पटेल आवता देख
 विछानां पाथरे ॥ मान भोग प्रसादि हाथमें ले धरे
 ॥ झट होका भरदेत बात करे हेतकी ॥ ३४ ॥ अछे अछे
 लोक गाम के जब मले ॥ करत आपकि बात ताहि
 के आगले ॥ महातम जानत नाहि हमारा गाममें ॥
 ३५ ॥ ठा-
 कुरके लिये लोट दलतहे रातमें ॥ करी रसोई भो-
 ग धरे परभातमें ॥ दिन मांय दोय बार जग्या यह
 झडतहे ॥ ३६ ॥ धूनि पांनि करताहि संज्या पडत हे

॥ ३८ ॥ पुजा उपर प्रित नहि या देशमें ॥ देख्या
 था एक ठोर फलाने देशमें ॥ कलमें भक्ति भाव
 नारिकि जातमें ॥ ३९ ॥ माइयां समझत बात ज्ञानकी
 बातमें ॥ ३७ ॥ आये गयेकि डेल मांडकर करतहे ॥
 ठाकुर आगे भोगवि लुखा धरतहे ॥ छाम विन्या
 मव संत दुखि अति होत हे ॥ ४० ॥ माकवाकिक को-
 गवि शांकड बातहे ॥ ३८ ॥ तब बोलेवे लोग बाबा
 मव आयगा ॥ हरि मंदिरका काम सो हरि चलायगा
 ॥ तुम ऐसे परबिन रहे कुन मलकमें ॥ ४० ॥ संझ्या
 राणे गात हो अछि हलकमें ॥ ३९ ॥ हम तिगथ
 बहु किये फिरे बहु धाममें ॥ महातम जानत कोन
 हमारा गाममें ॥ हमकुं तोया मलक कछु न सोहातहे ॥
 ४० ॥ तुम जेमेकी मोबत तजी न जातहे ॥ ४० ॥ हम
 डोले बहु ठारदेश बहु देख्या ॥ जगन्नाथकें मांय
 बात दिनमें रया ॥ मुक्ता महा प्रसाद मिले नित्य
 खानकुं ॥ ४० ॥ बाहरबात खुलास सो झाडे जानकुं
 ॥ ४१ ॥ जगन्नाथकि रिय नहि कहु जगतमें ॥ वरण
 अहारहि जिमत एकहि पंगतमें ॥ खाना पिना खुब
 हबेलि खासियां ॥ ४० ॥ दोहजार दरबार महि देव दा-
 मियां ॥ ४२ ॥ माइयां बात स्वरूप बंगाले देशमें ॥
 कर्मजन नित तेल लगावे केशमें ॥ बाके पुरुष
 दयाल सो इरखा नांकर ॥ ४० ॥ माधु घरमें हाय

जोय पिछा फिरे ॥ ४३ ॥ गौवा भेंसो बोत देशमें
 अति भोल बड पिपलके ब्रक्ष रु आवा आबलि ॥
 मछि सबहि खात मलककि रितहे ॥ ह० परदेसिकुं
 देख करत अति प्रीत हे ॥ ४४ ॥ बंगाला सम
 मुलक न देख्या दुसरा ॥ पानि उपस्थ तरत सुबोत
 निकिधरा ॥ चावल बारहि माम तहां निपजंत हे ॥
 ह० वाके वासी लोक बोत धनवंत हे ॥ ४५ ॥ दुध
 दहिका बोत देशमें खावना ॥ ठाकुर ठाकुर कहि
 संत बोलावना ॥ संत जात मिजमान पलंग घर
 पाथरे ॥ ह० करत प्रान कुरवान संतके उपरे ॥ ४६ ॥
 गाम गाम प्रति खेतठाकुरके बाडियां ॥ हथ निभि
 दस विसके भेंसां ठाडियां ॥ घोडि गौवां बेल
 संतके गाडियां ॥ ह० दुध लकी दोडंत मंदिरमें पा-
 डियां ॥ ४७ ॥ एमि करकर बात मुनावे लोककुं ॥
 संतन सेवा काज जनावे शोककुं ॥ परमारथके नाम
 बोवावत खेत हे ॥ ह० जो कोउ मागन जात तोल-
 कडि लेतहे ॥ ४८ ॥ तिरथवामि काज रावबि अथ-
 चडि ॥ खावे भरभर पेट आप धि खिचडि ॥ जो
 कोइ मागे अधिक तो देवे गालियां ॥ ह० रखे टेल-
 वि काज के शेष मुवालियां ॥ ४९ ॥ तिरथवामि माइ
 होवे जो रामकी ॥ अंतर साधु अवल हमारे कामकी
 ॥ चूचवता करि ताहि खवावे चूरमा ह० आसन कर

एकांत बोलात हजूरमां ॥ ५० ॥ जग्या धारि माहंत
 मवे एक जातके ॥ खुवार हराभि खरे भरे सब घा-
 तके ॥ लुब्धि होय घरमांय रह्या लोभायके ॥ ५०
 अब रमताकि बात कहूं समझायके ॥ ॥ ५१ ॥ दुंगे
 मिल दस विसके बांधि मंडलि ॥ अज्ञानि अडबंगके
 भाखा अटकलि ॥ साखि लिनि भिख उदरके भर-
 नकुं ॥ ५० चाले तिलक बनाय मुलकमें फिरनकुं
 ॥ ५२ ॥ एक बने मांहि महंत रुमेवक दुसरा ॥
 जगकुं धुतत खात महा खल ममकरा ॥ लटपट टिकि
 लगाय माइमें जइ मिले ॥ ५० कहेलालकुं बाल भोग
 बिन नांचले ॥ ५३ ॥ विरक्त वाके नाम आसक्ति
 अंतरे ॥ पेट भरनके काज कपट अतिशे करे ॥ कहवेकि
 कलु ओर करनकी ओर हे ॥ ५० मेहरि धनकुं देख
 रहे नहितो रहे ॥ ॥ ५४ ॥ एक एक दरपण अवल
 थेलियां तलककि ॥ जाने जुक्ति रित मवेही मलककि
 ॥ बाहर भेष गरिब मांहि ठग क्रोधके ॥ ५० शद्ध
 कंठ करलेत लोककुं बोधके ॥ ५५ ॥ माइयां वेसे
 पास गात तब तांनमें ॥ बाबु आवत देखके वेसे
 ध्यानमें ॥ पुरि भीरा खाय बने रहे पण्डिये ॥ ५६ ॥
 लोक होय नहि कोय तो आवे लीछिये ॥ ५६ ॥
 अंतर कपट अतंत भरोसि बातके ॥ विध विध करत

बखान माइकी जातके ॥ चौका *बरतन मांजके रंग
 चटापाटि ॥ ६० ॥ खाय पीये बन जायके करत खटा
 पाटि ॥ ६१ ॥ लिये समरणि हाथ धरे पग जायके
 ॥ भंगपर गखे वस्त्रके उज्ज्वल धोयके ॥ आओ
 रामजी बैठो आसन उपरे ॥ ६० ॥ ऐसे हेत देखाय
 जगतकु वश करे ॥ ६८ ॥ सबे गांमके लोक बैठे
 घेरके ॥ ओर ग्रामकि बात सुनावे टेरके ॥ एक
 फलाना भक्त बड़ा उदार हे ॥ ६० ॥ जसा आप उदार
 तैमि घर नाग्य हे ॥ ६९ ॥ माई बड़ि भावीक फ
 लाने गाममे ॥ आठ पोर लेलिन रहतहे नाममें ॥
 चतुर भलि नहि जान देत गुणवंतकुं ॥ ६० ॥ एक
 एक चदर ओढाय जिमावत संतकुं ॥ ६० ॥ मत-
 वादि माहुकार फलाने सहरमें ॥ खांड भात घृत देत
 आत जब लहरमें ॥ ठाकुरजिकुं भेट बि आछि धर-
 तहे ॥ ६० ॥ उसके घरमें माईसो पाउमें परतहे ॥ ६१ ॥
 एक एक कंठि लेहु माई तुम अछियां ॥ गवो गलेमें
 राज मुशोभित स्वछियां ॥ बडे पुरुषका हाथ न
 पिछा ठेलिये ॥ ६० ॥ जो पोहोचे सो भेट ले आगे
 मेलिये ॥ ६२ ॥ विरक्तडांकि रित कहि विस्तारके ॥
 बगला ज्युं रहे बेस ध्यान दृढ धारके ॥ वाका भुलई
 संग कबु नहि किजिये ॥ ६० ॥ अब ग्वांमिकि रित

कहं मुणि लिजिये ॥६३॥ रुंड मुंड अति रिमके शिश
 नट्रिया ॥ नित प्रते खाख लगायके किनि भूरियां
 ॥ अवे तवेकि बात कछुक मुख आवडी ॥ ह० चल्या
 चतावन लोक हाथले पावडी ॥६४॥ एक बने महि सिध
 मो अन्न न खावहि ॥ दुजे माधक होयके महिमा गावहि
 ॥ भेले होय दशविशके चाले गमणकुं ॥ ह० जुक्ति करके मा-
 ल पियारे जमणकुं ॥६५॥ एक कठारि अवल लोहका
 चिपटा ॥ बांध खुब बणायके माथेपर जटा ॥ बाला बाला
 कहत रु चाला चित्तमें ॥ ह० जाने नहि अडबंग मोक्ष
 कि रितमें ॥ ६६ ॥ मुंजडूका आडबंध जबर एक कमरमें
 ॥ काण्ड सो पारा कंठके बोले गमरमें ॥ भांग थतुरा
 खायके गालां भंगियां ॥ ह० चाले छाति काढके
 राति अंगियां ॥ ६७ ॥ अवे कहां ग्या छोरा इधर आउवे
 ॥ गांजेकि एक चलम सो तुरत बनाउवे ॥ जलदि कर
 क्या इधर उधर जोतेह ॥ ह० तलब लगीहे बात भजन
 नहि होतह ॥ ६८ ॥ बालाजिकुं आज भयोह आफरा ॥
 खुब मरि माहि नाखके किजे फाफरा ॥ भाजि तलियां
 अवल मशाला डारके ॥ ह० गरम लगायो भोग तुरत
 उतारके ॥ ६९ ॥ चलो बडे उम महेर नदिये जायके
 ॥ रहना अवलहिरितके खाख लगायके ॥ खाना रोदि
 खुब कथा पि सकरमे ॥ ह० दुनियांनकुं धुति खाई जे

*मकरमें ॥ ७० ॥ पनिहारिनके घाटवाटमें आइ पड़े ॥
 धुनि देत धखाय नओढ़े लुगड़े ॥ आसन राखे बास्य व्रतितो
 गाममें ॥ ७० ॥ भजन अन्नका होत आठुहि जाम-
 में ॥ ७१ ॥ बाबु पुछे आयतबे पलखोल हे ॥ धिरा
 रहिके एक माहिमे बोलहे ॥ हम आकासि वरत
 धारके रहतहे ॥ ७० ॥ अनासुरत कोहु देत तो भोजन
 लहतहे ॥ ७२ ॥ ए बाबाजी मिद्ध अन्न नहि खातहे
 साकर पेंडा दुध मिले तो पातहे ॥ कहते नहि हम
 जाय कोहुकुं गांममें ॥ ७० ॥ आठ पोहोर लेलिन रह-
 तहे नाममें ॥ ७३ ॥ आबुके रहनार बडे ए मिद्ध
 हे ॥ भयेहे वरष हजार वचनमें रिधहे ॥ एक
 फलाने महर ग्रहस्थ था वांझिया ॥ ७० ॥ उसके घरमें
 जाय तुरत बेठा दिया ॥ ७४ ॥ धरतहे दृढ़ कर ध्यान
 उठतहे फजरमें ॥ जडि बुटिकि बात सबहे नजरमें
 ॥ मंत्र जंत्रिकि कोर कुशल सब काममें ॥ ७० ॥ सब
 मानतहे लोक बडे बडे धाममें ॥ ७५ ॥ दोय संत-
 नके पाव नहि पेंजारियां ॥ चंदरस थोरा चाहिये
 रंगण कठारियां ॥ गांजा भांगरु बजर कोहुमे नहि मग्या
 ॥ ७० ॥ दोदिन हो गये भोग ठाकुरकुं नहि लग्या
 ॥ ७६ ॥ कहा चाहिये कोउ कहे तो इतना चाहिये ॥
 अधमण गांजा भांग बजर मण लाइये ॥ शेर शेर

वी सकर पंक्तिमें फिरतहे ॥ ह० दुध पाकका भोग
 बालेकुं धरतहे ॥ ७७ ॥ कहत औरकुं संत महातम
 वतियां ॥ आवत *आप समाहि सो लत्ता लत्तियां
 ॥ ऐमे ऐमे धुत जगतकु खातहे ॥ ह० बुढापणमे
 मेरि राखि चातहे ७८ ॥ ज्ञान विना तन मस्त
 बढया बल कामका ॥ घाट रात दिन घडत दाम
 अरु वामका ॥ बेशे आश्रम बांधके निंदे फरणकुं
 ॥ ह० ततपर भयो तयार लुगाई करणकुं ॥ ७९ ॥
 नारि तारण तरण याहिमे तन धरे ॥ नारिके प्रताप
 संतके उधरे ॥ माधु सेवा होत बडा उपकार हे ॥
 ह० जाके एकहि नार सो तो ब्रह्म चारहे ॥ ८० ॥
 बाबु एक उमगांम रहतहे रामकी ॥ अंतर माधु
 अवल हमारे कामकी ॥ हम तुमरे आधिन तुमहिकुं
 सरमहे ॥ ह० होय आवे उपकार तो मोटा धर्म
 हे ॥ ८१ ॥ रुपियां चाहिये पंच घघरियां माडली
 ॥ पर देवेगि दुवा संतकी लाडली ॥ दोनु मिलके
 भजन करेगे रातमां ॥ ह० सुखि होयगी बात सं-
 तकि आतमा ॥ ८२ ॥ आये गये कि टेल करेगी
 प्रितमें ॥ धुनि पांनि अवल रखेगी रितमें ॥ झाड
 झुडके जग्या खुब बनायगी ॥ ह० गोविंदके गुन संग
 हमारे गायजी ॥ ८३ ॥ बनि आवे तो अच्छा संतकि

*माहो मांही लाते लाते मारामारी आवे.

देखे ॥ काज हमारा होय तुमारे मलेहे ॥ लडका
 लडकि भजन करेगे रामका ॥ ८० ॥ यामे मेरे कहा
 पुन्य सब गामका ॥ ८४ ॥ मांग भिख दश पांच
 रूपया करालिया ॥ बावे बावि पाम उताग जा
 किया पांचवार पणेलि कहे मेनानियां ॥ ८० ॥ चोखट
 ताके संग लगाइ छानियां ॥ ८५ ॥ अन्न वन्न दिन
 दुखि कायकुं होतहे ॥ चलो हमारे संग अब कहा
 जातहे ॥ छाणा देउगो थाप रु जल लाउगो भरि ॥
 ८० ॥ शालिग्रामके भाव करुंगो चाकरि ॥ ८६ ॥ दांगों-
 वां एक भेंस रु बाहोल अनाजकि ॥ सब विधि लाज
 मृजाद मेहर माहाराजकि ॥ धरके आगे पिपर अछि
 झुकराहे ॥ ८० ॥ मेरे सेवक होय रहुं कमि कछुवे नहि ॥
 ८७ ॥ मेरे दे उपदेश उडाइ लेगयो ॥ लोकनकुं कहे
 जनम सफल मेरा भयो ॥ मेरे तनाकि पिर संबहि
 हरतहे ॥ ८० ॥ आठो पोर उपदेश गुरु ज्युं करतहे ॥
 ८८ ॥ बावे भावे भावके मांडि पुजवा ॥ आठो पो-
 दोर एकांत होत नहि जुजवा ॥ मुखपर मांगे लात रहे
 निस श्रापति ॥ ८० ॥ बावो जाने भइ परमपद प्रापति
 ॥ ८९ ॥ उपजाये दो चार के छोरा छोरियां ॥ ही-
 चकावे ले हाथ झुलेकि दोरियां ॥ त्रियकुं देवे निस
 प्रति खाट विछायके ॥ ८० ॥ मगन रहे मनमायके दर-
 शन पायके ॥ ९० ॥ बाबा उपस्थ हुकम सलावे बा-

वली ॥ पिछ्या पाटण जाय लाव एक डावली ॥ एक
 घाघरा अबल कापडा हिरका ॥ ८० ॥ मेरे उटण लाव
 पटोला चीरका ॥ ८१ ॥ बावि घरमें माहंत रु बावा
 चेलका ॥ बावाके शिर हुकम भरण जल हेलका ॥
 मुवे चंपावे पाय मंजावे थालियां ॥ ८२ ॥ युं करतांहि
 बावि बोले गालियां ॥ ८३ ॥ क्युंवे भदुवे काम न
 घरका करतेह ॥ छाण पडा घरमांहि रु खलत फिरत
 हे ॥ मेरि आग्या लोपके इत उत जातेह ॥ ८४ ॥ धिरा
 रहे अब तेरि रात्रीमें बात हे ॥ ८५ ॥ उठ छोरिकुं धोय
 जगाकुं साफ कर ॥ छोरि छानि राख हुकेमे
 वजर भर ॥ कहत हुं चौखि बात समज ले
 मरममें ॥ ८६ ॥ फेल किया तो डांस देउंगि
 *करममें ॥ ८७ ॥ आयाता बेवकुव लुचा क्या
 जानके ॥ मेरे रोये खवारकरि मोय आनके ॥ अब
 तो तेरा काटकलेजा खाउंगी ॥ ८८ ॥ घर तेरा जल
 जाय भेतो उठ जाउंगि ॥ ८९ ॥ नहि माईकि जात
 तुमारा दामहुं ॥ हाजर खडा हजुर तुमारे पासहुं ॥
 तेरे पग पेजार करु मोय चामकि ॥ ९० ॥ मो पापिकी
 देह कहो कुण कामकि ॥ ९१ ॥ तुम बैठो में कपडा
 लाउ धोयके ॥ सबें तुमारि टेल करु खुसि होयके ॥
 ऐसे त्रीय आर्धीन जनम सबहारिया ॥ हरहां श्रीरंग

देख भेखकि रितके संत पोकारिया ॥ १.७ ॥

॥ अथ फकिरको अंग ॥

शिरपें जटा बणायके तापर सेलियां ॥ होका
 लिनां हाथ बजरकी थेलियां ॥ ॥ जोरु साथ जरूर
 मचावे गंदगि ॥ हरहां श्रीरंग कहे हम फकिर करत
 हे वंदगि ॥ १ ॥ काला कपडा अंगके माला संखि-
 यां ॥ तमवि हाथ तैयारके सुरमा अंखीयां ॥ देत
 बांग ततवीर फकीर कलातहे ॥ ह० मरघि अंड पचाय
 हमेसां खातहे ॥ २ ॥ होका थोका हाथ सींग एक
 काखमें ॥ दिशंता विकराल भरकुंडे राखमें ॥ बोले
 कंठ बगाड गले बिच घरकता ॥ ह० डोलि पैसाकाज
 बजारें बरकता ॥ ३ ॥ मुखमें कहे फकीर फकिरी
 करतहे ॥ दमडि चमडिकाज वे हालां फरतहे ॥ भुंडा
 लागत भेष लेश नैमेरका ॥ ह० पढिया मुरसद पा-
 सके कलमा केरका ॥ ४ ॥ मेहरि धन घरमांयकें
 बेटा बेटियां ॥ घोडि भेंसां गाय के बकरि घेटियां ॥
 चहेबेल दोय चार कहे सब पीरका ॥ ह० करे हरामि
 कामके नाम फकीरका ॥ ५ ॥ पढे जुं पंचनवाज
 मभीतिं जायके ॥ ततपर रोजा त्रीश रहे चित ला-
 येके ॥ मुरघी बकरि मारकरे दिन ऐदका ॥ ह०
 कहेवे हमे मुरिद हकीम फलाने सैदका ॥ ६ ॥ नाम
 धरावे साह कर्म सब चौरके ॥ काटत गला करूर

मृगि अरु मोरके ॥ भुंडेंकत भरपूर लजावन भेषके ॥
 ह० हम फरजंन तेहेकीक फलाने शेखके ॥ ७ ॥
 कहो कब कबो खोदायके रखियो रंडियां ॥ खाइयो
 खूब पचाय मृगिके यंडियां ॥ करतें जिव हलाल
 न दिल महीं डरतहो ॥ ह० धर मोहेवका भेष
 गुना क्युं करतहो ॥ ८ ॥ नेकीमें सहजद बंदिसं
 दूरहे ॥ मुरसद मुकन मकानके हुकम हजरहे
 ॥ चउद तबकके मोखहुमें दिलगीरहे ॥ ह० फक-
 रका फाका करत मो फूल फकीरहे ॥ ९ ॥ पैसा थूक
 समानके मेहरि मातेहे ॥ मेहर सदा दिलमूम खादा
 रिझातेहे ॥ फना समज बे फकरके जकर हमेशहे ॥
 ह०दल चाहे दिदार सोइ दरवेशहे ॥ १० ॥

॥ अथ गुरुदेवको अंग ॥

॥ गुरु देवनके देव अभेव अखंडहे ॥ ईनाहिके
 आधार पींड ब्रह्मांडहे ॥ तारण जंत अनेक जनुंकी
 टेकहे ॥ हरहां श्रीरंग ऐसे परम दयाल जक्तमें एक हे ॥
 १ ॥ श्रीरंग कहे ॥ श्रीरंग कहेवे गुरु पूरण
 अद्वित द्वित नहि दोषियें ॥ विश्वाधार अपार उदार
 विशेषियें ॥ अनभे वचन सुनाय बतावत आपकुं ॥
 ह०अविचल सो गुरु करत हरत त्रय तापकुं ॥ २ ॥
 सहस्र शब्दातित परम परकासहे ॥ जाके शरणे जाय
 अविद्या नासहे ॥ देह गेह मन दाम अभिकुं दीजियें

॥ ह० सब मत सब जग जोय सोय गुरु कीजिये ॥ ३ ॥
 गुरु गोविंद दो नाम वस्तुतो एकेहे ॥ जाने संत महंत
 विशाल विवेकहे ॥ भयदालत मन मोक मीठावत कर्म
 कुं ॥ ह० मो गुरु सत्य स्वरूप मिलावत १ परमकुं ॥ ४ ॥
 अनहद अकल अपार गुरु गुन ग्राथहे ॥ घम थापन
 जग ध्येय सदा मुख धामहे ॥ आपत ज्ञान अखंडमु-
 कापत आपदा ॥ ह० मो गुरुदेव अभेव अविचलहे सदा
 ॥ ५ ॥ करुणा मिधु कृपाळ सोइ गुरु देवहे ॥ सुरनर
 मुनिवर शरण चर्ण नित सेवहे ॥ नर तनु धर नित
 नेम जगतमें विचरें ॥ ह० अपना तन कुरवान एमें
 गुरु उपरें ॥ ६ ॥ गुरु गुन अनंत अपार पार न-
 हि पावहिं ॥ मारद नारद शेष सबे जस गावहिं ॥ काम
 क्रोध मद मोह महा दुख द्वंदमें ॥ ह० समर्थ सो
 गुरु देव लुटावे फंदमें ॥ ७ ॥ सहस्रके परताप परम
 पद पाइये ॥ जन्म मरण जंजाल सबे विमराइये ॥
 अविगत अचल अरूप अनंत अकामहे ॥ ह० संतनका
 गुरु शीव भकल जग सामहे ॥ ८ ॥ सहस्र शब्द सुनाय
 बतावे रामकुं ॥ मोहमद लोभ मिटाय हठावत कामकुं ॥
 जड दुख मिथ्या जान अमार अनात्मा ॥ ह० दिलमें
 सो गुरु दरश परस परमात्मा ॥ ९ ॥ सहस्र शब्दा-
 तित अद्वित अभेद हे ॥ त्रिभुवन तारन तरन हरन

उर खेद हे ॥ अनभे ग्यान अखंड विग्यान विशे-
 कता ॥ ह० वा गुरु कि बलहार करे ब्रह्म एकता
 ॥ १० ॥ सहुरु मिले सुजान तो साधन सब भया
 ॥ ज्युं पारममणि पाय कनकका श्रम गया ॥ अन
 *तृप्ती ज्युं एक विवेक विचारियें ॥ ह० सहुरु
 चरण सरोज सदा उर धारियें ॥ ११ ॥ जगत
 गुरु जगदिश मिले जव जंतकुं ॥ तन सब ताप
 नशाय आय भव अंतकुं ॥ जाके वचन प्रताप तिभिर
 अघ त्राम हिं ॥ ह० अंतर आत्म अकल अखंड प्र-
 कामहिं ॥ १२ ॥ गुरु सम दाता नाहि जगतमें
 ओर जुं ॥ दिया परम पद दांन अखंडित टोर जुं ॥
 जन्म मरण जंजाल मिटे सब जीविका ॥ ह० सहुरु
 सरजण हार सो कारण शीविका ॥ १३ ॥ जाहि
 मिले गुरु देव किए जगदीशमें ॥ ओर सबे मत पंथ
 अलुझे रीशमें ॥ रयान घरमें बेस गया नहि धामकुं
 ॥ ह० सहुरु बिन जगमांहि न पावे रामकुं ॥ १४ ॥
 भई गुरुसें भेट सो पूरण पुन्यसें ॥ अंतर भया उजास

*एकज प्रकारनी अणतृप्ति एटले असंतोष अथवा क्षुधा
 विवेकथी विचारीने राखीये ते एवी रीते के सदगुरुना चरण-
 कमल सदा मनमां धारिए मनलबके भगवाननुं ध्यान करवानी
 हमेशां आतुरता राखीए एकामर्था धराइ जइए नहीं.

तिमिर गये तनसैं ॥ ओर सब उपाद्ध मीटाई अंगसैं
 ॥ ह० पाये पद निरवाण सो सद्गुरु संगमें ॥ १५ ॥
 बावन बाहर बूझ गूझकुं गहि सके ॥ अनहद अकल
 अभेद वेदवि तहां थके ॥ मनवाणिके पार धार
 तनु फिरतहे ॥ ह० हरि गुरु रूपें होय कर्मकुं हरत
 हे ॥ १६ ॥ धन्य धन्य जाके भाग जुनुवे गुरु मिले
 ॥ अनंत जन्म अघ ओघ तरत छिनमें टले ॥ भरम
 करम जंजाल सबे दिल भागीया ॥ ह० सद्गुरु शब्दे
 चीतलक्षमें लागिया ॥ १७ ॥ सद्गुरु जगमें एक ताहि
 पेहचानासि ॥ महा मुक्त पद मोज सोई जन मा-
 नसि ॥ ओर वातन के पकवान किये कहा होतहे
 ॥ ह० डांभ फूंक देनार गुरु जगमें बोत हे ॥ १८ ॥
 सारद नारद सेष महेश्वर देवता ॥ सद्गुरु चरण सरोज
 रहे सब सेवता ॥ महिमा अनंत अपार पार नहिं पावहीं
 ॥ ह० सद्गुरु मिले सुगमते अगम घर जावहीं ॥ १९ ॥
 सर सर हंस न होय न तरु तरु चंदना ॥ पारस सब
 पाषाण होत नहिं कुंदना ॥ घरघर गुरु न होय
 समझकें लीजीयें ॥ हरहां श्रीरंग सहजानंद सुजान
 चरणरस पीजीयें ॥ २० ॥

॥ अथ सूरमाको अंग ॥

॥ मन घोडा मस्तान किया जिन कबजमें ॥
 निमष काज नितनेमष डारहे अबजमें ॥ हिंमत किंमत

हाथ भाराथ हजूरमा ॥ हरहां श्रीरंग समर्थ सो
 जगमांहि के साचा मूरमा ॥ १ ॥ बगतर अंग बनाये
 शिल् संतोषका ॥ बेहद टोप विवेक भिलावन मोक्ष-
 का ॥ धिरज हंदिहाल खडग गुरु ग्यान हे ॥ ह०
 समर्थ एसे मूर सो शाम बखानहे ॥ २ ॥ पेट कटारि
 पेर गया रनखेतहे ॥ निरभे होय निसंक लडाई लेत
 हे ॥ मरण चल्या मेदान सो पिछा नावले ॥ ह०
 टुकटुक हो जाय धणिके आगले ॥ ३ ॥ शुर अकेला
 होय रिपुदल काटेहे ॥ पिछा धरे न पाव सनमुख
 चोट हे ॥ लिया रहे उछाह अहोनिश लरनका ॥ ह०
 मनमें एहि भिद्धांत सो मारन मरनका ॥ ४ ॥ शुरा
 रण तरवार रखे नहिं म्यानमें ॥ ममता तनकि मेल
 खडा चोगानमें ॥ लिया अपना शिर हाथ ओरनका
 क्युं रखे ॥ ह० एसा शुर अडोल कोइक पृथ्वी विपे
 ॥ ५ ॥ अंतर बाहेर अडग डगमगे नहिं कदा ॥
 मरण ते तरणा मात्र जनुके हे सदा ॥ हीमत हुकम
 हजूर धनिके लूंनमे ॥ ह० शिर बिन सो नर धीर
 डरे मन कौनसे ॥ ६ ॥ घन थट मिल घमसान
 जुडे जुध जाहरां ॥ शुरा मन आनंद कंपे मन का-

યરાં ॥ *૧ જિવત આસા છોડ સંસાર સમેતકું ॥
 હ૦ તનપર જાહોય જાય ન છાડે સ્વેતકું ॥ ૭ ॥
 સમતા શીલ સંતોષ સસ્ર સવ અંગ ધરે ॥ તન મન ધન
 કુરવાન ક્રિયા ગુરુ વાક્ય પરે ॥ કામ ક્રોધ મદ મોહ
 ઈનુંમેં મામલા ॥ હ૦ શુરલેત તન ઘેર અવિદ્યાકા
 કીલ્લા ॥ ૮ ॥ કયા દુનિયાકા ભાર વિચારિ કયા
 કરે ॥ લે અપના શિર હાથ જગતમેં જો ફરે ॥
 *૨ જગત મત્તમેં જુક્ત નિવામિ ધામકા ॥ હ૦ ન્યારા
 જગમેં શુરસો પ્યારા રામકા ॥ ૯ ॥ શીશ વડે
 જગદિશ લિયે સો શુરહે ॥ ઓર શુર જગમાંહિ સો
 લાજ મજૂર હે ॥ સ્વાવન દિલ સુમિયાલ કરન
 મન સ્વંત હે ॥ હ૦ અનમે એસે શુર જગતમેં સંતહે ॥ ૧૦ ॥
 ॥ અથ સાધુકો અંગ ॥

॥ તન વિષયા સુપ તજન ભજન ભરપૂર હે ॥ સુવંધા
 સાંઘ્યાં સાથ કે દુવંધા દુરહે ॥ કનંક કામ નિસાગ
 લાગ મનવસ્તહે ॥ હરહાં શ્રીરંગ સચા સો અવધૂત
 સદા અલમસ્તહે ॥ ૧ ॥ દાંમવાંમ દિલનાંહિ જનુંકા

*૧ સંસાર સહીતની તથા જીવવાની આશા છોડીને શરીર
 ચુરેચુરા થઈ જાય તોપણ રણક્ષેત્રને છોડે નહીં *૨ દુનીયા
 દારીના મનમાં ઇટલે રીતમાનમાં જોડાણો હોય તોપણ તે
 શૂરવીર સૌથી જુદો છે. અને પરમેશ્વરને વાલો છે.

पारखा ॥ कुनराजा कुन रंक सबे एकसारखा ॥
 अनभे ज्ञान अखंड सुमता अकामका ॥ १ ॥ अंतर
 एहि रित मनेहि रामका ॥ २ ॥ नहि काहें प्रीत
 बेरने काहें ॥ हरष सोक नव होत सो सहज स्व-
 भावसे ॥ अविचल दांत एकांत इंद्रिके साथसे ॥
 ३ ॥ सोजन कहियें मग्न लग्न निज नाथसे
 ॥ ३ ॥ संपत विपत समान जनुंकेहे सदा ॥
 मंगलरूप अनूप अणंकल हे मुदा ॥ ग्यानदता
 गंभीर विरक्ता वांमसे ॥ ४ ॥ सोड नमंता संत रता
 एक रामसे ॥ ४ ॥ समता शिल संतोष जनुं
 घटहे सहि ॥ काम क्रोध मदलोभ कपट व्रणा
 नहि ॥ धन तन सब मूख आद्य जनुंके धूरहे ॥
 ५ ॥ ऐसे संत मुजान सो साम हजुरहे ॥ ५ ॥ नि-
 स्पृहि निस्कांम निस्वादि लोभनां ॥ सो निर्मानि
 संत जगतमें मोभनां ॥ विषे त्याग निरविघन म-
 ग्न परवीनहे ॥ ६ ॥ धनहे ऐसे तज लग्न लयलीनहे
 ॥ ६ ॥ विरक्त बुधि विशाल जगतमें बीचरे ॥
 बेर सब विषे विकार कबुनां चित धरे ॥ ज्युं कमल
 जलमद्ध अपरासि नीरको ॥ ७ ॥ अहोनिश सो-
 मत जान सु फूल फकीरको ॥ ७ ॥ इंड्रिजित
 अतित जनुंका एमता ॥ मेहेरिं सबहिंमात धात्रु
 सब धूरता ॥ अहो निस गुरु आधिन प्रविन

अकामहे ॥ ह० भोईजन मुजान मदा सुधाम हे
 ॥ ८ ॥ मगन गगन मस्तांन लगन एक लालसें ॥
 वीर धीर मुख मीर फकिरी हालमें ॥ तन मन धन
 एहि आव्य सकलका त्याग हे ॥ ह० सो मांहें
 त मुजान बडेवड भाग हे ॥ ९ ॥ एक हरिमें आ-
 मक्त विरक्त विकारथी ॥ दिल मुध रुदे दयाल
 परम परमारथी ॥ देह इंद्रि मन प्रांन मिथ्या न
 उपाधेहे ॥ ह० समजु सो जगमांहि सयांने भाधेहे ॥
 ॥ १० ॥ अंतर हरि आधिन वचनहि वांण जूं ॥
 देह इंद्रि मन प्राण किये कुरवाण जूं ॥ एक
 आस विश्वास भरोमा एकहे ॥ हरहां श्रीरंग प्रगट
 प्रभुमें प्रीति जनुंकि टेकेहे ॥ ११ ॥ ॥ इतिश्री ब्रह्मा-
 नंद स्वामि कृत छंद चंद्रायणा संपूर्ण ॥ २०४ ॥

॥ अथ उपदेश अंग ॥ झूलणा छंद ॥

॥ पायि जिंदगि वंदगि नांहि करी नितखयाल किया
 ठगवाजियांका ॥ मद मोहमें तें मगरूर फिर्या तनताकता
 नारियां ताजियांका ॥ मदगुरु साहेबका रंग चढया
 नहि संग किया नर पाजियांका ॥ ब्रह्मानंद कहे केसें
 बात माने तें तो ग्रागहे जूतियां झाझियांका ॥ १ ॥
 तोकुं देख कंपे परिवार सारा ॥ डारा देत ले हाथमें
 थोकलिकुं ॥ कबु शीखकी बात न कान धरे ॥ डाह्या
 होय हलावत डोकलिकुं ॥ खरे मोक्षके पंथमें खूटवेठा

॥ हिया फूट छोडे नहि होकलिकुं ॥ ब्रह्मानंद कहे
 चलचल *गिदि, भरबुड देखात क्या मोकलिकुं ॥२॥
 रामनामकि कोर तो सोइ रखा कोमक्रोध रु लोभमें
 जागताहे ॥ भरपूर रहे बात भुंडियांमें लुचा लुंडियांमें
 मन लागताहे ॥ रहे दास भया भगतानियांका ॥ हरि-
 जनके संगसे भागताहे ॥ ब्रह्मानंद कहे नख शखि सुधां तेरा
 मूख तो जुतियां भागताहे ॥ ३ ॥ तेरा घाइयांमें सब
 घट भर्या नटखट बोले ठग *हुंसडिकुं ॥ खेतवाडि-
 यांमें निस खवार मिले ॥ हिये धार बडीबडी हुंस-
 डिकुं ॥ खुसि होय जेसे मन खेलताहे नहि मेलताहे
 लाज पुंछडिकुं ॥ ब्रह्मानंद कहे दास रांडहुका ॥
 भरबुड क्या तानत मूछडिकुं ॥ ४ ॥ जगमांहि फजेत
 बेहाल फिरे कामकिंकर छटल काछडेका ॥ खोइ उ-
 मर सोगटे जूगेटमें मन लक्ष रखा रांड रासडेका ॥
 लिये होकलि हाथमें डोलताहे खोटा बोलत यार
 खवासडेका ॥ ब्रह्मानंद कहे भजे राम केमें अधिकार
 तोकुं नर खासडेका ॥ ५ ॥ केइ घात महा उतपात
 करे तामें जोग्य अजोग्य न जोवताहे ॥ निस केड
 दोडे उठ दासियांके खरि वापकि लाजकुं खोवताहे ॥
 मांडमांडहि रांड रिझावनेकुं गांड छोकरेकि निस धोवताहे
 ॥ ब्रह्मानंद कहे नहि लाज तेरे हसे कोन सुखेंक्युं न रोवें

ताहे ॥६॥ पनघट बैठे पन खोवताहे मुख जोवताहे पनिया
रियांका ॥ दिनरेन माया बिच भूलगया खुशि ख्याल
किया निस खवारियांका ॥ चित फाट गया बदफेल
चले वार ठेलता हे घरवारियांका ॥ ब्रह्मानंद कहे
तोकुं दुःख लगे पण मूख तो ग्राग पेजारियांका
॥ ७ ॥ किरतार विसार भस्यो कुमती रहे यार भया
निस ठानियांकां ॥ हिया फूट हेरे फाटि अंखियांसें
॥ जाय घाट घेरे बैठ पानियांका ॥ देख पारकि
नारिके केड दोडे अरु माल चोरे जाय बानियाका
ब्रह्मानंद कहे तोकु ग्यान केसो तेरा ध्यान लग्या
भगतानियांका ॥ नर देह अमुलक पाय के जी खोइ
उमर लुंड लबाडियांमें ॥ हरिजनके संगमें रंग चढया
नहि बैठता हे चोर चाडियांमें ॥ धन मेलकें धूलके
विच धस्या तेरा घट भस्या सब *घाडियांमें ॥ ब्रह्मा-
नंद कहे तें फजेत भया तेरा चीत फरे खेतवाडि-
यांमें ॥ ९ ॥ बारवार देवे फिटकार होको तापें
रीसुका लेश न लावता हे ॥ कोउ संत कहे बात
शीखहुकी तासैं उलटा बाद अडावताहे ॥ रामनाम
हुसैं होका बोत प्यारा सारा दिन चुसे गुन गावता
हे ॥ ब्रह्मानंद कहे नहि लाज तेरे कहा लोकमें
मूख देखावता हे ॥ १० ॥ धिकताहि सतीनके साज

हुमें वन्हि देखि डोलि पडे जायकें जी ॥ थिक शूर
हठया संगरामहुमें कहा जीवता हे घर आयकें जी ॥
मंत भेख धस्या चहे लोक हु के सुख देहमें चित्त
लगायकें जी ॥ ब्रह्मानंद कहे तिनुं ख्वार भये जग
मांहि बडो जस पायकें जी ॥ ११ ॥ कुन गाम गइ
नर बुद्धि तेरी विख पीत अमीरस ढोलता हे ॥ केइ
पेटके काज अकाज करे दिल होय डाह्या अरु डोल
ता हे ॥ कहो कोन सगा कहां जाउगिमें ॥ एसी
वात रुदे नहि तोलता हे ॥ ब्रह्मानंद कहे थिक जी-
वनेमें बकबक क्या मूख ले बोलता हे ॥ १२ ॥
बहु होय प्रविन ज्युं बोलता हे चित्त लोलताहे दाम
चामकि वे ॥ अति बाहिर भेख बनावत सुंदर भीतर
चाल हरामकि वे ॥ मदमोह टस्या नहि मनहुमें कहो
चातुरता कोन कामकि वे ॥ ब्रह्मानंद कहे सब वात जु-
ठी जोलु सुद्ध नहीं सियारामकि वे ॥ १३ ॥ दिनके गये
खेलने दोडनेमें बहु बाल लिला अरु बीवनेमें ॥ जु-
वा होय रच्यो रंग जुवतिसें दिन के गये खावने
पीवनेमें ॥ वृद्ध होय बधी अंग ओर व्याथी दिनके
गये सांधने सीवनमें ॥ ब्रह्मानंद कहे किरतार भज्या
विन धूर तेरे नर जीवनेमें ॥ १४ ॥ राज बाजहुके
काम काजमें तें नवरा न रह्या दिन रातमेंजी ॥
जगमांहि बडो जश होय मेरो जाने होउं बडो नात

जातमें जी ॥ राग रंग बिलाम अवामहुंमें अरु लो-
भमें उरकि घातमें जी ॥ ब्रह्मानंद कहे जम आय
लग्या खोड उमर बातकि बातमें जी ॥ १५ ॥ नख
शीख बन्या पिड पापहुका फिर पापके १पेड पभार-
ताहे ॥ निस केर करे कलु म्हेर नहि मगर हो
जिवकुं मारताहे ॥ बिनशंक भया बढ फेल चले
मनशंक न कोउकि धारताहे ॥ ब्रह्मानंद कहे नरदे-
हकुं पायकें कर्मका व्याज वधारताहे ॥ १६ ॥ धन
भाल रहे घरमांहि धन्या परिवार मेडी गज पायगावे
॥ केइजोथ खडा खग ढाललिये रन जीतकिये
रहेवाय गावे ॥ सब भाहेवि रंग पतंग जेमी थिर
कोउमेंना ठहराय गावे ॥ ब्रह्मानंद कहे चडी चोट
चपेट झपेटकें काल ले जायगावे ॥ १७ ॥ कडा वेढ
बिंटी मोति पेर काने महा जोरमें मुंछ मरोडताहे ॥
चले देखता आपनि छांयडिकुं टेडि पाग बांधी तान
तोडताहे ॥ तन अंतर तेल फुलेल लगावत नेह त्रिया
संग जोडताहे ॥ ब्रह्मानंद कहे खवदार बंदे दख
काल किमें नहि छोडताहे ॥ १८ ॥ तेरा कोन गजा
के ते जीवनेपें एते जोर जुलूम जनावताहे ॥ कबु
धर्मकि बातमें पाव धरे नहि पाप सदा मन भावता
हे ॥ पिंड पालनेकुं रांक पीडताहे ॥ ताकि

त्रास नहीं उर लावताहे ॥ ब्रह्मानंद कहे दिन
 दोइ पिछे देख काल अचानक आवताहे ॥ १९ ॥
 अंध धंध रहे मद आपनेमें मन बात न कोइकि
 मानताहे ॥ धन धाम धरा सुत दार मिले एहि जी-
 वनेका फल जानताहे ॥ मद्य मांस भखे नहि शंक
 रखे किये पापकुं आप बखानताहे ॥ ब्रह्मानंद कहे
 कछु वार नहि जमकाल उंध शिर तानताहे ॥ २० ॥
 चहुं देशमें आण चलावता हे घरुं दाण आवे
 वाट घाटका हे ॥ अरु वाग किला महलात बना-
 वत खेल त्रिया संग खाटका हे ॥ भात भातके
 भोजन थालहुमें तामें वीश पचीशक वाटकाहे ॥ ब्र-
 ह्मानंदके देख विचार प्यारे सबे कालाके एक थपा-
 टकाहे ॥ २१ ॥ नहि धाम धरा तहां कोइकिला रंग
 मोल कचेरी न रावनाहे ॥ सुख सेज नहीं तहां
 सोवनेकी रंग राग न गायक गावनाहे ॥ सब आपके
 कर्मके पापहुसं तहां मार बहु विधि खावनाहे ॥ ब्रह्मा-
 नंदके देख विचार प्यारे जमद्वारतो तो एकिले जाव-
 नाहे ॥ २२ ॥ पितु मात ठग्यो प्रतिपालनासं हेत खान
 पान लियो हाथमेंजी ॥ सगे आय ठग्यो कहे बात
 सारी अरु नारी ठग्यो लियो बाथमेंजी ॥ सुत भ्रात
 कुटुंबि मिले सबही कहे होयगे १भीर २भाराथमेंजी

॥ ब्रह्मानंद कहे चेत चेत प्यारे तें तो आइ पस्यो ठग
 साथमेंजी ॥२३॥ कबु धर्मकि बात नकान धरे सदा
 पापकि बात मोहावतिहे ॥ तेरे उरमें प्रौढ बधी तृषना
 धनकाज दिशोदिश धावतिहे ॥ जम शीश खडे दिन
 निश अरी तोय नीद केमे मुख आवतिहे ॥ ब्रह्मानंद
 खटापट खेलहुमें तेरी आयु झटापट जावतिहे ॥ २४ ॥
 दुरलभ्य एहि देह देवताकुं तेहि पाइ विचार न जो-
 वताहे ॥ अमरीतके पेड उखेरत ताहिमें विखका बीज
 ले बोवताहे ॥ सब दीनमें रांडकि बैठ करी भरी पेट
 समी सांज सोवताहे ॥ ब्रह्मानंदके लाभकी बात गड
 खरी गांठ मुडी सोविखोवताहे ॥२५॥ हरिनामकि कोर
 तो द्वार थैठा कुडकर्मिक कोर न थाकताहे ॥ धनमाल
 हुकि मन धांखनाहे निस पारकि नारकुं ताकताहे ॥
 निज पापकि गांठाडिकंध धरे अंध धंधमें रातदि हांक-
 ताहे ॥ ब्रह्मानंदके सांज सवाराहिमें आय काल अचा-
 नक फाकताहे ॥२६॥ परनारिकुं देखकें पाप धरे पाजि
 आंखियांमें नहि पालताहे ॥ ठग बाजियांमें सब आयु
 गड चित चाल हरामकि चालताहे मद्य मांस चोरी
 अरु जूगटमें मनरीझ पडे त्युंहि मालताहे ॥ ब्रह्मानंद
 कहे आज कालहुमें झट काल अचानक झालताहे ॥२७॥
 सत्य बातमें तो बडा शपोसतिहे अरु जूठमें शूर हो झूझ-

ताहे काम क्रोध रु लोभकि सांग लगी तातें अंतर घाव
 न रुझताहे ॥ पेट काज अकाज हमेश करे कलियावकि
 बात न वृझताहे ॥ ब्रह्मानंद विवेककि आंख बिना तोकुं
 संत अमंत न सृजताहे ॥ २८ ॥ महानिधि तोकुं नरदेह
 मिलि एहि मोज नहि बारवार किजि ॥ तेरे हाथ कछ
 नहि आवताहे परधन अरु त्रिय पारकिजी ॥ जगमांहि
 विहाल फजेत फिरे ज्युं निदान याहिमेंसें नारकिजी ॥
 तातें आपका आप तपास किजो ब्रह्मानंद के बात
 बिचारकि जी ॥ २९ ॥ हुशियार रहो दिल हाथ करो
 एमि देह अमूलक पायकें जी ॥ शुद्ध भावमें संत महंत
 हुकी उठ कीजिये चाकरि धायकें जी ॥ सोइ संत कहे
 सख बारताकुं निस धारिये चित लगायकें जी ॥ ब्रह्मा-
 नंद कहे बुरा मत किजो सख केतहुं हाथ वजायकें जी
 ॥ ३० ॥

॥ अथ अमाधुको अंग ॥

॥ कंठि धार टिका किया भेख निका बने ठीकठिका
 चले रावनेमें ॥ सवे पाय लागे धरे भेट आगे बहु चा-
 तुरि लोक बोलावनेमें ॥ साखि बोत शिखी करे बात
 तिखी घनी रीत ठाने गुन गावनेमें ॥ ब्रह्मानंद कहे
 बोत ग्यान जाने तेरा तान तो रांड रिझावनेमें ॥ ३१ ॥
 करे रोज सेवा ठगि द्रव्य लेवा हिये नीच हेवा छले
 टोकरिमें ॥ कहो कोन काजे धरया भेख भुंइ रखा

दाबडुब्या लजा लोकरिमैं ॥ कबु संतकी टेल तो नांहि
 करे रहे हाजर रांडकि नोकरिमैं ॥ ब्रह्मानंद कहे रिझे राम
 केमैं तेरा चित्त तो छोकरा छोकरिमैं ॥ ३२ ॥ पेढि मांड
 वेठा काज पेढहुके मांहिमाल भरया ठग फांशियांका
 ॥ विपे आप सेवे ठगि द्रव्य लेवे एसा बोध देवे रोटि
 खाभियांका ॥ हरिजनकुं देखकें द्रेप धरे भरे दोड
 होका गाम ग्रामियांका ॥ ब्रह्मानंद के रामका दाम
 नही तंतो दामहे दानियां दामियांका ॥ ३३ ॥ गले धार
 माला विपेमें बिहाला करे चित्त चाला पटु पामाडिमैं ॥
 घमें भांग घोटा खरा भाव खोटा दिये रोज आंटा
 मवे गामाडिमैं ॥ चहे बोल चेला मंडे द्वार मेला करे धन
 भेला धरे तामाडिमैं ॥ ब्रह्मानंद के राममें प्रीत नही तेरा
 चित्त तो दामाडि चामाडिमैं ॥ ३४ ॥ संत भेख धर्या
 अरु द्रेप धरे लवलेश विचार न जोवताहे ॥ घट भितर
 तो अति मेल भरया अरु बाहेर तनकुं धोवताहे ॥ तेरे अंतर
 झाल झपी नहि कामकि रामकिके लिये रोवताहे ॥
 ब्रह्मानंदके मांहिमैं मन मुंडे बिन मुंड मुंडे कहा होवताहे
 ॥ ३५ ॥ ठगिं माल खाया करि पुष्ट काया माया-
 मांहि माथा लगि खूतताहे ॥ चहे बोल पेसा फिरे
 बेल जेसा सदा लोभकि गाडिमैं जूतताहे ॥ तेरे बा-
 हिर भेख गरिबका दीसतं दीलके भीतर दूतताहे ॥
 ब्रह्मानंदके शीखिया घाइयांकु धरि भेखकें माइयां

धूतताहे ॥ ३६ ॥ लडू खांडहुका चैये लालजीकुं गुड
 बोत गरम जनावताहे ॥ धोइ मीसरिका बाल भोग
 चहे दुध भेंसहुका घना भावताहे ॥ चैये भांग गांजा मेरे
 लालजिकुं भाजि ताजियां भोग लगावताहे ॥ ब्रह्मानंद
 कहे ठगि लेत पेसा एसा लोककुं ज्ञान बतावताहे
 ॥ ३७ ॥ कहे बाइयांकुं धन तनहुसैं सदा चाकरि
 संतकि कीजियोजी ॥ कोइ आइ कहे राम आज
 मिले एसि बातकुं नांहि पतीजियोजी ॥ अछे भोग
 धरो मेरे लालजिकुं धोइ सालिगरामकुं पीजियोजी ॥
 ॥ ब्रह्मानंद कहे खबर्दार रेनांदेना होय सोहमकुं दीजियो
 जी ॥ ३८ ॥ चल्या मुंड मुंडायकें होइ साधू जगे बांधकें
 मांत किलावताहे ॥ रांक मुंडिया द्वारसैं मार काढे
 खूब रंडियां देख खिलावताहे ॥ नख शीख भस्या
 तन घाइयांमैं तान माइयां साथ मिलावताहे ॥ ब्रह्मा-
 नंदके मानमें टंट रखा ठाला कायकुं घंट हिलावताहे
 ॥ ३९ ॥ करे एक चेली रखे आप भेली ताकी बंदगि
 बोत बखानताहे ॥ सदग्रंथकि रीत न कान धरे करे
 बाद खोटा मत तानताहे ॥ करे कूड कपट रु ओर-
 हुका धन आपने मंदिर आनताहे ॥ ब्रह्मानंदके रामकि
 बात नहि मन माइकि जातमें मानताहे ॥ ४० ॥ माइ
 देख तेरा यह देह खोटा तातैं संतके काम लगावनां
 जी ॥ साधू द्वार खडे गउ रामजिकि खूब माल

ताजा खवरावनांजी ॥ भिनभाव न राखिये भेखहुसैं ताकि
 सीत प्रसादि वि पावनांजी ॥ ब्रह्मानंद कहे कलु
 मंत्र कहेंगे एकांत आसनपें आवनांजी ॥ ४१ ॥ सबे
 दोर हांठे मेरे रामजिके भेंन रामजिकी दुय पावनेकुं
 ॥ सबे खेतवाडी मेरे रामजिके भाजि शाक वि भोग
 धरावनेकुं ॥ दोय छोकरा छोकरि रामजिके एक
 टेलवि छान उठावनेकुं ॥ ब्रह्मानंदके रामका
 नाम लेवे भवे आपने काम लगावनेकुं ॥ ४२ ॥

अथ संतको अंग

॥ ॥ ऐसे संत खेर जगमांहे फिरे नहि चाहत
 लोभ हरामकुंजी ॥ सदा शील संतोष रहे घट
 भीतर केद किये क्रोध कामकुंजी ॥ अरु जीभहुसैं
 कबु जठन भाखत गांठ नराखत दामकुंजी ॥
 ब्रह्मानंद कहे सस बारताकुं ऐसे संत भिलावत
 रामकुंजी ॥ ४३ ॥ निपकाम सदा मन राम रि-
 झावन दाम रु वामपें दरेहे जी ॥ लवलेश नही जा-
 के लोभहुका नहि काम न क्रोध नक्रूहे जी ॥ मन
 प्रान इंद्रिनके सामलेमें हटे नाहि पिछा एना शूरहे
 जी ॥ ब्रह्मानंद कहे सत बारताकुं ऐसे संतमें शाय
 दजुहेजी ॥ ४४ ॥ तिन तापकि झालें नहि
 तपे आंठि छोडता जीव अनंतकिजी ॥ सदा
 शील संतोषहि अंगशोभे अछि जानता बात ए-

कांतकिजी ॥ रसवस रहे निस रामहुमें भवे जा-
 नता *रहस्य भिद्धांतकिजी ॥ ब्रह्मानंद के वार हजार
 में तो बलहारि जाउं ऐसे संतकिजी ॥ ४७ ॥ धन्य
 भाग्य बडे जगभांहि जाके ऐसे संतहुमें ओलखान
 हेजी ॥ इंद्रियाकुं लगाय स्वरूपहुमें किये केदहुमें
 मन प्रानेहेजी ॥ हरि साथ रहे लयलीन सदा
 करि प्रीत प्रगट प्रमानेहेजी ॥ ब्रह्मानंद कहे दास
 रामहुके ऐसे जगमें संत मुजानेहेजी ॥ ४८ ॥
 अवधूत सदा अलमस्त रहे कहे बात सदा कि-
 रतारकिजी ॥ काल व्यालके दावमें नांहि डरे लु-
 वे नाहिन झाल संमारकिजी ॥ लयलीन स्वरूपमें
 लक्ष रहे ताकुं पक्ष नहीं निज पारकिजी ॥
 ब्रह्मानंद कहे जीव आय मिले खेले चोट सदा
 निरधारकिजी ॥ ४९ ॥ ऐसे संत मिले कबिकाहु
 रही साधि शीखवे रामकि रीतकुंजी ॥ परापार
 सोइ परिव्रज्य जाभे ठहरातहे जीवके चित्तकुंजी
 ॥ दृढ आमन साधकें ध्यान धरे करे ग्यान हरिजी
 के गीतकुंजी ॥ ब्रह्मानंद कहे ऐसे संत मिले प्रभु
 साथ ब्रह्मवत प्रीतकुंजी ॥ ५० ॥ ज्ञाति चारण
 ओडक आसियुंकी आबु छांय भयो खाण गाममें
 जी ॥ ताके नाम शंभूदान तातहुको मात लाल

बाइ धर्या ठाममेंजी ॥ लाडु मेटकें श्रीरंग नाम
 धरयो दोउ लिन ब्रह्मानंद नाममेजी ॥ चित्त
 धार सहजानंद शाम छवी जग जीत गयो निज
 धाममेंजी ॥ ४९ ॥ आदि त्रीशमें मायिक जीव
 हुकी लखी रीत देखावन त्रासहेजी ॥ पिछे भेख
 लजावन भडुवांके लख्ये द्वादश वाक्य विलास हे
 जी ॥ पिछे आठमें संतकि रीत लखी सोइ सत्य
 प्रभूजिके दासहेजी ॥ ब्रह्मानंद बिचारकें तोलनां
 जी यह झुलना नंग पचासहे जी ॥ ५० ॥

॥ अथ बंदेको उपदेशी अंग ॥ ॥ कुंडलिया ॥

॥ बंदे कीजे बंदगी तजिदे चिज हराम ॥ फना
 समझ बेफकर ॥ जकर रखहु सब जाम ॥ जकर
 रखहु सब जाम ॥ नाम नामी जुत लेना ॥ साहेबकु कर
 मगा ॥ दगा कोइकु नहि देना ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥
 छोड दुनियांके फंदे ॥ तजिदे चिज हराम ॥ बंदगी
 कीजे बंदे ॥ १ ॥ बंदे बेहक छोडकें ॥ हकपें रहो हजुर ॥
 *जुसा फनां समजानके ॥ तजो मान मगरूर ॥ तजो
 मान मगरूर ॥ शूर होय सांज सबेरा ॥ रखा नूर भरपूर ॥
 ॥ दूर नहि साहेब नेरा ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥ महेर
 दिल रखो उमंदे ॥ हकपें रहो हजुर ॥ छोडदे बेहक
 बंदे ॥ २ ॥ बंदेया जग बागके ॥ बनमालि किरतार

॥ चतुरासी लखजाती तरु ॥ ताके भेद अपार ॥ ताके
 भेद अपार ॥ रूप रंग न्यारे न्यारे ॥ नेन झरुखे
 बेठ ॥ सबनकुं आप निहारे ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥
 हरे कौजात सुकंदे ॥ बनमाली किरतार ॥ बाग जग
 हुके बंदे ॥ ॥ ३ ॥ बंदे भवजल बूडतें ॥ नरतन
 मिल्या जहाज ॥ नातम अजब नवीन आति ॥ सुंदर
 सबहिं साज ॥ सुंदर सबहीं साज ॥ माहिं मुरमद हे
 मालम ॥ मारुत मेहेर मोरार ॥ कोहेकुं न तरत
 जालम ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥ समझवे गाफल गंदे ॥
 नर तन मिल्या जहाज ॥ बूडतें भवजल बंदे
 ॥ ४ ॥ बंदे वाजि जगतकी ॥ ज्युं सुपनेको ख्याल ॥
 नृपाति होयो निंदमें ॥ जागें फेर बेहाल ॥ जागें फेर बेहाल ॥
 फिरत घर घर अनकाजा ॥ छिनमें गये विलाय ॥ मेज
 त्रिये संपाति साजा ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥ रह्या नहि नहिं
 रहंदे ॥ ज्युं सुपनेको खेल ॥ जगतकी बाजी बंदे
 ॥ ५ ॥ बंदे बालापन गया ॥ गया जुवापन हार ॥
 ब्रथापन ब्रथा गयो ॥ तौ न भज्या किरतार ॥ तौ
 न भज्या कीरतार ॥ जन्म धरि झुठ कमाया ॥
 साहेब समख्या नाहिं ॥ मिलि नहिं पूरन माया ॥
 दाखत ब्रह्मानंद ॥ जमनकी मार सहंदे ॥ गया जुवा-
 पनहार ॥ अरु बालापन बंदे ॥ ६ ॥ बंदे जगमें बेलज्युं
 ॥ निश दिन खेंच्या भार ॥ कुड कपटका करम करि

॥ पोख्या निज परिवार ॥ पोख्या निज परिवार ॥ सार कलु
 हाथ न आया ॥ साचा साहेब छोड ॥ जूठ सुखमें भर-
 माया ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥ फिरत भवमें भटकंदे ॥ नि-
 शिदिन खेच्या भार ॥ बेलज्युं जगमें बंदे ॥ ७ ॥ बंदे बहुत
 न कीजीयें ॥ अंतरमें अभिमान ॥ अपना किया नहोतहे
 ॥ करता हक सुलतान ॥ करता हक सुलतान ॥
 हुकम बिन पांन न डोले ॥ मगरूरीमें मूढ ॥ कोहेकुं
 बकबक बोले ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥ पलकमें हिं काल
 ग्रसंदे ॥ अंतरमेंहि अभिमान ॥ बहुत कीजे नहि बंदे
 ॥ ८ ॥ बंदे आय बनजकुं ॥ ले मूडी संसार ॥ एकुं
 लाभ कमाइआ ॥ एकुं गये सब हार ॥ एकुं गये
 सबहार ॥ अकल बिन मूढ अग्यानी ॥ सुखमें र-
 ख्या शरीर ॥ जीवकी पीर न जांनी ॥ दाखत ब्र-
 ह्मानंद ॥ फेरे चहुखाण फिरंदे ॥ ले मूडी संसार
 बनजकुं आए बंदे ॥ ९ ॥ बंदे ऐसा बोलियें ॥ सबकुंइ
 लागत स्वाद ॥ श्रवन सुनत सुख उपजे ॥ होत धनीकी
 याद ॥ होत धनीकी याद ॥ व्रथा बकबाद न कीजे ॥ तजि
 दुनियांकी बात ॥ जकर साहेबकी लीजे ॥ दाखत ब्रह्मा-
 नंद ॥ रहो हरिनाम जपंदे ॥ सबकुंइ लागत स्वाद ॥
 बोलीयें ऐसा बंदे ॥ १० ॥ बंदे तहां न बेसीयें ॥ अहोनिश
 जहां अनित ॥ पापी जीव प्रसंग तें ॥ होत पाप मेंहि
 प्रीत ॥ होत पापमेंहि प्रीत ॥ नीत मरजाद नबूजे ॥

नीच संगके रंग ॥ धर्मका राह न मूझे ॥ दाखत
ब्रह्मानंद ॥ एहि विधि संत कहंदे ॥ अहोनिश ज-
हां अनित ॥ बेभिये तहां न बंदे ॥ ११ ॥ बंदे बातुं
समझले ॥ जाहर जग व्यवहार ॥ होतन तन मनगा-
रतें ॥ फरजन विन भरतार ॥ फरजन विन भरतार
॥ होत नहि निश्चे जानो ॥ दिल अंतर दिदार ॥
सत्य करि ताहि प्रमानो ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥ रहम
एहि संत रखंदे ॥ जाहर जग व्यवहार ॥ समझले
बातुं बंदे ॥ १२ ॥ बंदे रीती बाहरकी ॥ समझ रखत
हे संत ॥ अंतरकी गति ओरहे ॥ ज्युं हस्तिके दंत ॥
ज्युं हस्तिके दंत ॥ दीर्घ जगमें दरशावे ॥ मुखमेंहि
राखत गुप्त ॥ जेहि करीकें निज खावे ॥ दाखत
ब्रह्मानंद ॥ देह धरि जग वरतंदे ॥ समझ रखत हे संत
॥ बाहारकी रीती बंदे ॥ १३ ॥ बंदे १ द्विफल ब्रक्षहे ॥ २ ती
न मूल १ रस चार ॥ २ पंच भेद ॥ ३ षट आतभा ॥
४ सप्त त्वचा ५ अठडार ॥ सप्त त्वचा अठडार ॥
६ छिद्र नव ७ दश हे पाने ॥ ताकुं जानत कौक ॥
ओलिये संत सयांने ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥ ८ पंख

१ सुखदुख. २ त्रणगुण.

१ धर्म अर्थ काम मोक्ष. २ पांच ज्ञानेंद्रिय. ३ छ ऊर्मी.

४ सात धातु. ५ पंच महा भूत मन बुद्धि अहंकार. ६
इंद्रियीना द्वार. ७ दश प्राण. ८ जीव अने ईश्वर.

दोय मित्र रहंदे ॥ तीन मूल रस चार ॥ ब्रह्म द्विफल
 हे बंदे ॥ १४ ॥ बंदेतन होका बन्या ॥ नहचा निश्चे
 लाग ॥ चित चलम मन चिपीया ॥ आग त्याग
 वैराग ॥ आग त्याग वैराग ॥ बजर ममताकुं बारी ॥
 पंच नसंग प्रवीन ॥ खेंचीयें समझ बीचारी ॥ दाखत
 ब्रह्मानंद ॥ ध्यानका भेर सोहंदे ॥ नीर ग्यान हक
 नाद ॥ बन्या तन होका बंदे ॥ १५ ॥ बंदे केफी
 बन रहो ॥ सो फीरहना नांय ॥ एसा अमल न
 कीजियें ॥ जो चडि उतर जाय ॥ जो चाडि उतर
 जाय ॥ कहा सो अमल बजारी ॥ आठ पहोर हरि
 याद ॥ टलत नहि प्रेम खुमारी ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥
 सदा चकचूर छकंदे ॥ ग्यान ध्यान द्रगलाल ॥ बने
 रहो केफी बंदे ॥ १६ ॥ बंदे तन कुंडी बनी ॥
 घोंटा ध्यान सुधीर ॥ बजीया ब्रह्म वैरागकी ॥ रग-
 डत फूल फकीर ॥ रगडत फूल फकीर ॥ नीर निरमल हरि-
 जाना ॥ मन ममाला डार ॥ मख अंचले करि छाना ॥ दाखत
 ब्रह्मानंद ॥ रहे नित केफ चडंदे ॥ पीवत प्याला
 प्रेम ॥ बनी तन कुंडी बंदे ॥ १७ ॥ बंदे बहुत
 न बोलियें ॥ अंतर धरी अहंकार ॥ तेरा कीया न
 होतहे ॥ करता सरजनहार ॥ करता सरजनहार ॥
 करत पेदा सोई मारे ॥ करत रावकुं रंक ॥ रंक
 शिर छत्राहि धारे ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥ सोई स्वावंद

सबहंदे ॥ सोइ सहेगा नाई ॥ बहुत बोल मतबंदे ॥१८॥

॥ अथ मनको उपदेशि अंग ॥

॥ मनवा मरना साचेहे ॥ जीवन झुठाजान ॥ कौका
बुरा न कीजीये ॥ दोदिनके मजमान ॥ दोदिनके
मजमान ॥ पिंड करि पाप न कीजे ॥ अंतर तजी
अहंकार ॥ शरण साहेबका लीजे ॥ दाखत ब्रह्मानंद
॥ घटत आयुष प्राति दनवा ॥ जीवन जूठा जान ॥
साचेहे मरना मनवा ॥ १९ ॥ मनवा बाजत मोतके
॥ रात दिवस रणतूर ॥ देह गेह सब दोलतां ॥
आखर होवत धूर ॥ आखर होवत धूर ॥ कुर नहि
सख करि जानो ॥ पाव पलकके मांहि ॥ रहे नहि ठोर
ठकानो ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥ राख कलु जीव जतनवा ॥
रातदिवस रणतूर ॥ मोतकि बाजत मनवा ॥२०॥ मनवा
मोज मोरारकी ॥ या सुंदर नरदेह ॥ कृष्ण चरनमें प्री-
तकरी ॥ लाभ अलोकीक लेह ॥ लाभ अलोकिक
लेह ॥ एह अवसर नहि आवे ॥ मायाके हित मूढ ॥
काहेकुं ईत उत धावे ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥ काल खाव-
त छीन छीनवा ॥ या सुंदर नर देह ॥ मोजहे हरिकी
मनवा ॥ २१ ॥ मनवा माया नैमिले ॥ विन साहेबके
लेख ॥ निशदिन ततपर होयके ॥ लख प्राक्रम क-
रिदेख ॥ लख प्राक्रम करि देख ॥ एक कौडी नहि
पावे ॥ हकमत करें हजार ॥ पार उददिके जावे ॥

दाखत ब्रह्मानंद ॥ भाग विन लहे न धनवा ॥ करतुं
 अनंत उपाय ॥ मिले नहिं माया मनवा ॥ २२ ॥
 मनवा मूरखतुं सही ॥ वरतत बारहिं वाट ॥ कृष्ण
 चरनकुं साग कें ॥ घरत विषेके घाट ॥ घरत विषेके
 घाट ॥ हाथ कलुवे नहि आवे ॥ मायाके हित मूढ ॥
 ब्रथा युंहि जन्म गमावे ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥ होत न-
 हि फूल गगनवा ॥ वरतत बारहि वाट ॥ मूढ तुं नि-
 श्चे मनवा ॥ २३ ॥ मनवा मान न कीजीयें ॥ सहे न
 सरजनहार ॥ जो जो मानी जगतमें ॥ सो नर हो-
 वत ख्वार ॥ सोनर होवत ख्वार ॥ आप सब करता
 जाने ॥ गाडी तानत बेल ॥ श्वान निज सम्रथ माने
 ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥ सदा त्रय ताप जरनवा ॥ सहे न
 सरजनहार ॥ मान नहि किजे मनवा ॥ २४ ॥ मनवा
 तेरे मोतको ॥ निश्चे एहि निरधार ॥ ज्युं पानीके बु-
 दबुदे ॥ मिटत लगत नहिवार ॥ मिटत लगत न-
 हिवार ॥ जीवना जगत जराभा ॥ तापें वाग लगाय
 ॥ रखत फल खावन आसा ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥
 समर श्रीकृष्ण चरनवा ॥ निश्चे एहि निरधार ॥
 मोत तेरेको मनवा ॥ २५ ॥ मनवा टेक न मेलियें ॥
 जो साची शुभ होय ॥ श्रीसदगुरुके सुकन पर ॥
 तन धन दीजे खोय ॥ तन धन दीजे खोय ॥ तौ
 मनमें नहि डरना ॥ अंतर धरि उछाव ॥ पाव पीछा

नहि भरना ॥ दाखत ब्रह्मानंद सोइ साचा हरि
 जनवा ॥ जो साची शुभ होय ॥ मेलियें टेक न
 मनवा ॥ २६ ॥ मनवा मंदिर मालियां ॥ दोलत दे-
 श विलात ज्युं वादरकी छाईडी ॥ छिनमें आव
 त जात ॥ छिनमें आवत जात ॥ बार कछुवे नहि
 लागे ॥ उठगये भूप अनेक ॥ देख तेरे दग आगे
 ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥ नहि थिर रहनवा ॥ दोलत देश
 विलात ॥ मालियां मंदिर मनवा ॥ २७ ॥ मनवा ममता मेलदे
 ॥ अंतर देख विचार ॥ कौंके भेला नाचला ॥ देह
 गेह परिवार ॥ देह गेह परिवार ॥ कबहु भेला नहि
 आवे ॥ इनके काज अबूज ॥ कोहेकुं पाप कमावे ॥
 दाखत ब्रह्मानंद ॥ अजहु पुनि चेत अज्ञवा ॥ अंतर
 देख विचारि ॥ मेलदे ममता मनवा ॥ २८ ॥ मनवा
 चीठी मोतकी ॥ आवत लगे नहि बेर ॥ सिध साधक
 अरु ओलिये ॥ कौमें परे न फेर ॥ कौमें परे न फेर आय
 कागद उठ जावे ॥ हुकम बिना दम एक ॥ कौ पुनि लेन न
 पावे ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥ गने नहि वाल तरुनवा ॥ आ-
 वत लगे न बेर ॥ मोतकि चीठि मनवा ॥ २९ ॥ मनवा
 मलकत मेलकें ॥ चलना सांज सवेर ॥ मात पिता सुत
 जूवती ॥ सबहिं रहवे हेर ॥ सबहिं रहवे हेर ॥ केश
 गहिंके लेजावे ॥ धन रहे घरनी मांय ॥ पछें कर घसी
 पीछतावे ॥ दाखत ब्रह्मानंद उतारा ॥ होत अरनवा

॥ चलना सांज सवेर ॥ मेलकें मलकत मनवा ॥ ३० ॥
 मनवा या संसारमें ॥ क्या लेजाना साथ ॥ जो घरमें
 होय संपति ॥ तो दीजे निज हाथ ॥ तो दिजे निज
 हाथ ॥ सोइ नर अरथ कमानो ॥ संसारी हित कीयो
 ॥ प्रगट जगमें लूटानो ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥ पाय धन
 कीजे पुनवा क्या लेजाना साथ ॥ एहि जगमेंसें मनवा
 ॥ ३१ ॥ मनवा मूरख तुं सही ॥ निज सुखकुं नहि
 चात ॥ अम्रत ओषद परहरि ॥ झहर हलाहल खात
 झहर हलाहल खात ॥ ताहितें तुं अति बौरा ॥ आत
 न हरीकी ओट ॥ जात विषयनके ओरा ॥ दाखत ब्र-
 ह्मानंद ॥ फेर चहु खान फरनवा ॥ निज सुखकुं नहि
 चात ॥ सहि तुं मूरख मनवा ॥ ३२ ॥ मनवा फिर फिर
 नै मिले ॥ सुंदर नर तन साज ॥ संत सीखामन श्रवन
 धरि ॥ करले अपना काज ॥ करले अपना काज ॥
 आज चेतनकी बेरी ॥ पीछें घसही हाथ ॥ होत तन
 धुरकि ठेरी ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥ जनमकि मार सहनवा
 ॥ सुंदर नर तन साज ॥ मिले नै फिर फिर मनवा ॥ ३३ ॥
 मनवा माया जोरतें ॥ सब उंमर गै बीत ॥ माया हरि दौ नां
 मिले ॥ निरफल भया फजीत ॥ निरफल भया फजीत ॥
 गै हथ दोनुं बाजी ॥ सु धरयो नै संसार ॥ किया
 न साहेब राजी ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥ भमे भांडन
 के दुनवा ॥ सब उंमर गै बीत ॥ जोरतें माया

मनवा ॥ ३४ ॥ मनवाया संसारमें ॥ सुर सिपाई
 संत ॥ लडते ओटन लेवहीं ॥ चोट नहीं चूकंत ॥
 चोट नहीं चूकंत ॥ रहत खावनके आगे ॥ पीछा
 धरे न पाव ॥ तन ममताकुं खागे ॥ दाखत
 ब्रह्मानंद ॥ मार अरि रहत मगनवा ॥ सुर सिपाई
 संत ॥ एहि जगके महि मनवा ॥ ३५ ॥ मनवा
 पेटी प्रेमकी ॥ हक बरछी ले हाथ ॥ ग्रहि ख-
 डग गुर ग्यानका ॥ चल्या रीझावन नाथ ॥ च-
 ल्या रीझावन नाथ ॥ ढाल धीरज ले आगे ॥
 त्रीगुन रहित शिर टोप ॥ लडत शिर अंवर लागे
 ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥ देत नहिं पीठ डगनवा ॥
 ॥ हक बरछी ले हाथ ॥ प्रेमकी पेटी मनवा ॥
 ॥ ३६ ॥ मनवा साचे सुरके ॥ अरि बखानत
 घाव ॥ हिंमत चलन हरोलकी ॥ पीछा धरे न
 पाव ॥ पीछा धरे न पाव ॥ आप मरि साम रिझावे ॥
 लाखुं दलके बीच ॥ अकेला घंथ मचावे ॥ दाखत
 ब्रह्मानंद ॥ वीर आति धीर धरनवा ॥ अरि बखानत
 घाव ॥ सुर साचे के मनवा ॥ ३७ ॥ मनवा या संसार-
 में ॥ रहना हे दिन चार ॥ तन धिर भल पन
 लीजीयें ॥ बुरा न कीजे यार ॥ बुरा न कीजे यार ॥
 सब तजके मरिजाना ॥ साहेबका होय चोर
 ॥ गारि लोकनकी खाना ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥

रहे नहि धरकें तनवा ॥ रहना हे दिन चार ॥ ए-
 हि जगभाई मनवा ॥ ३८ ॥ मनवा या समारमें
 ॥ सब स्वारथियां लेख ॥ यामें तेरा को नहि
 ॥ दिल दीदुं करि देख ॥ दिल दीदुं करि देख ॥
 कहत भवकुंड तुमरे ॥ जब घेरे जमराण ॥ तेव को
 नावत नेरे ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥ अकेला होत ग-
 मनवा ॥ सब स्वारथिया लेख ॥ मिले नहि तेरा
 मनवा ॥ ३९ ॥ जगमें केता जीवना ॥ क्या लेजा
 ना साथ ॥ पाप पुन्य दो संग चले ॥ जो कीने
 निज हाथ ॥ जो कीने निज हाथ ॥ एहि भातो न
 र तेरो ॥ ओर सगे मिल छोर ॥ लेत कटिको
 कंदोरो ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥ लीया तोकुं लग व-
 गमें ॥ क्या लेजाना साथ ॥ जीवना केता जगमें
 ॥ ४० ॥ जगमें अपने जीवका ॥ चले भला ततखेव
 तो कर हरिकी बंदगी ॥ अरु साधुकी सेव ॥
 अरु साधुकी सेव ॥ कपट तजकें नित कीजे ॥ साचा
 जुठा संत परखकें अंतर लीजे ॥ दाखत ब्रह्मानंद
 ॥ टाल बैठक खल ठगमें ॥ चेहे भला ततखेव ॥ जीव
 अपनेका जगमें ॥ ४१ ॥ इति कुंडलिया संपूर्ण ॥
 ॥ ॥ अथ *मुकुंद बावनी ॥ ॥ ॥ छपय ॥
 एहि मंगला चरन हरन मद मोह अपारा ॥ श्रीगो-
 विंदको ध्यान धरत उर करत उजारा ॥ तेहि
 प्रकाश महि दास भक्ति महिमा दरसायो ॥ धर्म

भक्ति भगवंत सबे मम उर महि आयो ॥ अब
 ऐसे अद्भुत रूपकुं बारवार वंदन करुं ॥ कहे मुकुंद
 मन वच कर्म करि यह नित मंगल आचरुं ॥ १ ॥
 २ उँलमो उँकार आदि सचराचर स्वामि ॥ अधम
 जनन उधार काज प्रगटे बहु नामि ॥ भर बरीयां गुन
 श्रेष्ठ विप्रज्ञाति वपु धास्यो ॥ अति अद्भुत किए चरित
 जगत जनको अघ टास्यो ॥ जेहि पाद शाच शिव शिर
 धरे तेहि पद रज वंदन करुं ॥ जन मुकुंद सो
 प्रभु प्रगट पुनि नित चरननयें चित धरुं ॥ २ ॥
 *नरनारायण नाई प्रगट जग महाव्रत किनो ॥
 कलिके मध्य कृपाल अभेपद अधमनि दिनो ॥
 चरित किए सम सुधा गहत जन गुन पर जावे
 ॥ जेहि परमे पद धुरि बहुरि भवमें नहि आवे
 ॥ श्रीधर्म पुत्र पूणंदु जिभि करि करुणा चरचा श्रवे
 ॥ को मुकुंद हे अस जीव जड जेहि सुणते नहि
 चित द्रवे ॥ ३ ॥ ४ मन भतंग वभिकरन हरन मद
 मोह उजागर ॥ शरणागत सुख खानि विद सद्गुन
 के सागर त्याग तेज बल प्रबल कहां लागि कहूं
 बखानि ॥ तुमहो तुमसे नाथ ओर उपमा जड जानि ॥
 प्रभु महंत भान माया दमन समन मुकुंद सब तापकुं
 ॥ श्रीसहजानंद वंदु सदा अनभे अखंड अमापकुं ॥ ४ ॥
 ५ सिश सबनके सोई इस उर अंतरजामि ॥ एहि मम

२ उँ ३ न ४ मः ५ सि

*नरनारायणनी पेठे जगतमां प्रगट रीते महाव्रत करयुं.

ઉર કારિ અયન વયન બોલત બહુનાંમિ ॥ કરતા શોકવિ
 નામ શામ ઇચ્છા અસ આઈ ॥ જ્ઞાન ભક્તિ વૈરાગ
 કહું સતસંગ સહાઈ ॥ શુક નારદાદિ પ્રહલાદ પુનિ
 સતસંગતી હરિજન ભયે ॥ જન મુકુંદ મન વચ કર્મ
 કારિ જો સતસંગતિમેં રયે ॥ ૫ ॥ ધન્ય ધન્ય સો જન
 સોધિ સતસંગતિ આયો ॥ તિરથ વ્રત જપ જોગ
 સવનકો ફલ સો પાયો ॥ *કિયો વચનમેં વાસ ભયો
 તેહિ વેહદવાસા ॥ હરિ હરિજન રસ રૂપ રહત તહાં
 પ્રગટ પ્રકાસા ॥ જોહિ મન વચન પર વેદ કહે તેહિ
 મુખમેં સંતત રહે ॥ જન મુકુંદસો સતસંગકો મહિ-
 માકો મુખમેં કહે ॥ ૬ ॥ ૭ અનાયાસ ભવતરે શરણ
 સદ્ગુરુકે આવે ॥ સદ્ગુરુ વિન મુખ નહિ અવિદ્યા અતિ
 ભરમાવે ॥ આવ્રણ અરુ વિક્ષેપ સાક્તિહે સો માયકિ ॥
 તાકે પંચ પ્રવાહ પ્રવલ ધારા પુનિ વાકિ ॥ તહાંવહે
 નિરંતર મોહ વશ દેવ દનુજ નર સવ ગણ ॥ જનમુકુંદ
 સો નહિ વહત જીન ગુરુ ગોવિંદ મહાતમ લણ ॥ ૭ ॥

૬૬.

* જેણે ભગવાનના વચનમાં વાસ કર્યો તેનો હૃદ વગરનું
 જે ભગવાનનું ધામ છે તેમાં નિવાસ થયો અને ત્યાં ભગવાન
 તથા ભગવાનના જનો આનંદના રસ રૂપ થઈને મતલબકે
 આનંદમય થઈને ત્યાં પ્રગટ પ્રકાશમાન થઈને રહેછે.

८ आग्य लागि चहु ओर अविद्याकि आति भारि ॥
 अधोउर्द्ध अरु मध्य दशोदिश भुजा पसारि ॥ विषई
 भोग विलास कर्मिको कर्म द्वायो ॥ कवि गुनि पं-
 डित जाणता हिले तहां डुवायो ॥ तेहि वाक जाल
 डारि विकट नरनारि आव्रत किए ॥ जन मुकुंदमद
 मछर लाग्यो युं माया बस कर लिये ॥ ८ ॥ ९इन
 मायाकुं तरन करत नरकोटि उपाई ॥ सित घाम
 सहि करे तपस्या बन फल खाई ॥ कोइक
 साधे योग अष्ट अंगनि करि जोगि ॥ कोइक फिरे
 उदास विषे परपंच वियोगि ॥ सहुरुहि विना साधन
 सकल किए न पावे पारकुं ॥ जन मुकुंद सुख पावे
 सहि सो पुनि पुनि संसारकुं ॥ ९ ॥ १०ईश इंद्र अज
 धाम गए नर अति सुख पावे ॥ काल पाय पुनि
 पडे अचल नहि उहां रहावे ॥ जनम मरण जन धरे
 प्रभुपद ज्ञान न जहांलुं ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल लोक
 त्रय भ्रमे तहांलुं ॥ प्रभु सेवा विन सोई अजा तरन
 महा दुस्तर भइ ॥ जन मुकुंद प्रभुपद सेवसो उलटी
 दासि होरई ॥ ॥ १० ॥ ११उरमे बेठि अजा करत उद्वेग
 अनेका ॥ काम क्रोध मद लोभ आदि अतिसे अविवेका
 ॥ नाम रूप नहि प्राय ताय ले सख विचारे ॥ अह
 निस वसि उरमांहि देह तुं शब्द उचारे ॥ साधक

मिथ मुनिजन मिलि रिधि पुनि मिधिकुं साधत
 रहे ॥ जनमुकुंद हरिरत संत विन को माया
 भिथ्या केहे ॥ ११ ॥ १२ ऊन मायाकुं तरन प्रगट
 यह पोत उदारा ॥ श्री हीर अरु मतमंग मिलन भये
 भवजल पारा ॥ ज्ञान भक्ति वैराग्य संतमंगतिमें
 पावे ॥ बडभाणि सो जन सोधि मतमंगति आवे ॥
 नित प्रगट रहे परिव्रज्य जहां दरस परस पातक
 हरे ॥ जन मुकुंद सो मतमंगीक साधनको भयना
 करे ॥ १२ ॥ १३ कहु जजुर अरु शास अथर वण
 वात प्रधानि ॥ नरतन कारण वेद पात्र यह सुरा
 जनि ॥ कर्म उपासन ज्ञान कांड त्रय वेद बखाने ॥
 सो सब नरतन साध्य ओर कोहु नहि जाने ॥ श्रु-
 ति सकल शास्त्र इतिहासको तान लगत नर तन
 विषे ॥ जन मुकुंद मोहवश्य अंध सब गुरु दृष्टि
 विन नांदिखे ॥ १३ ॥ १४ कहुन स्वप्न संसार ताहिकारि
 मय विचारि ॥ भर्म कर्म बीस भुर वृथा नरदेह
 धिगारे ॥ या तन करि हरि लहे ताम करि कर्म
 उपावे ॥ ऐसे मृतिके मंद मुख मुपने नहि पावे
 ॥ अति मोह जाल आवृति मति नहि पावत
 हरिज्ञानकुं ॥ जन मुकुंद तब हरि भर्म लहे ग्रह
 वचन तीज मानकुं ॥ १४ ॥ १५ एहि तनकरि
 अज लोक लहे मुख बहु विधि पावे ॥ एहि तन

इंद्र मुनिंद्र एहि तन अमर कहावे ॥ एहि तन माधे
जोग सिधि अणिमादिक पावे ॥ एहि तन
होइ हरिदाम बहुरि भवमें नहि आवे ॥ यह अमो
अद्भुत मनुष्य तन अति दुर्लभ पायो अवे ॥
जन मुकुंद मन वच कर्म करि हरि भजतज व्याधि
सवे ॥ १५ ॥ १६ * ऐ पति अज सारदा करत न-
रतन गुनगाना ॥ करण धार करुणा निधान सहुरु
सुखदाता ॥ करुणा निधी कपाल वीथल यह
जानहुवाता ॥ अब नहि जो भवसागर तेरे सो आ-
तमघाति सहि ॥ जन मुकुंद महिमा मनुष्य तन
करवजायके केदहि ॥ १६ ॥ १७ कर विचार नर कोन
कहे तुं कहांसि आयो ॥ अब जानो कहे काहां ईहा
कोय थिर नरहायो ॥ जो तोकुं गम नाहि खोज
सहुरु सतसंगा ॥ बारवार नहि मिले अनोपम अमो
अंगा ॥ सब विन विचार विन दिना चेत चेत
नर सांनमें ॥ जन मुकुंद मोहवश अकड हो
क्युं सुतो अग्यानमें ॥ १७ ॥ १८ खलता बढि अपा-
र भेस धरि जग भरमावे ॥ काम क्रोध रत लोभ
भक्ति उरमें नहि भावे ॥ आपे भर्म्या भूर ओरकुं
अति भर्मावे ॥ द्रव्य हरनके हेत गुरु होय ज्ञान
बतावे ॥ यह नरक पंथ तिनु विकट गितामें गोविंद

कहे ॥ जन मुकुंद सो मग गुरु चले शिष्य कहां
 शांति लेहे ॥ १८ ॥ १९ गंगा गुरु सो जान सानमें
 ध्याम बतावे ॥ कर्म हरे दे ज्ञान अविद्या उरसे जावे
 ॥ देह इंद्रि मन प्राण सख सुपने नहि भासे ॥
 किये वचनमें वास एक उर हरि प्रकासे ॥ मन
 सकल शोक संसे समें रमे निरंतर राममें ॥ जन
 मुकुंद भो सद्गुरु बिना को पहोचावे धाममें ॥ १९ ॥
 २० घर घर सो गुरु नांहि एक हे गुरु अविनासि ॥
 निगमागम प्रतिपाद्य ज्ञान घन महा सुख रासि ॥
 स्वार्थ नहि लवलेख परम परमार्थ रूपा ॥ करत
 मृगवद उपदेश श्रुति कहे अगम अनुपा ॥ नर
 एमे गुरु विज्ञानकुं कोहु न पावे मनमुखि ॥ ज-
 न मुकुंद सद्गुरु सेव सो सद्य होत सो जन सुखि
 ॥ २० ॥ २१ डम नाहीं नर नाख्य भर्म वश सकल भु-
 लाने ॥ मिले जो ठगमग मांहि मित्र करि ताकुं माने
 ॥ कहे हम तुमरे शरन वेहि धन हरन विचारे ॥
 दगा वाज बेदर्द गरे शमत फासि डारे ॥ सब अंध
 अंध पिछे चले कुप परे के पचि मरे ॥ जन मुकुंद
 मोह निशिमे सकल सद्गुरु बिन भटकत फिरे ॥ २१ ॥
 २२ चलन शके डग एक कहे में फिर ब्रह्मांडा ॥ अ-
 पनि उडेन माख कहत तोरुं नवखंडा ॥ ल्युं गु-

रुकुं नहि ठोर फिरे मायाका पेरा ॥ सरवस हम-
 कुं देह मिटाउं भवजल फेरा ॥ बिन रहस मुख
 कथनि कथे जरत रहे त्रय तापमें ॥ जन मुकुंद
 सहुरु बिन हरि कोन जपावे जाबमे ॥ २२ ॥ २३ छल
 बल हृदे अपार बाह्य बग ध्यान लगावे ॥ द्रव्य
 हरनके हेत साह सो ठग बनि आवे ॥ मणिधर
 ज्युंले धरे शब्द मणि करे उजारा ॥ तेहि प्रकाम
 के जोग मिले अह निम आहारा ॥ तब तिन लगे
 द्रष्टांत तेहि ज्ञान विना जो गुरु भये जन ॥ मुकुंद
 सहुरु संत बिन जन्म विगोवत ते गए ॥ २३ ॥ २४ ज-
 रोजो जिवन तास राम रत नहि धरि भेसा ॥ दा-
 म चाम पर हेत हृदे हरिजन सुंदेपा ॥ उरमें त्रश्ना
 अधिक सदा धन धाम सवारे ॥ यह कलियुगको रूप
 प्रगट कहि वेद पुकारे ॥ जो ज्ञान ध्यान रत चहत
 सो काम क्रोध आश्रित भए ॥ जन मुकुंद कलि
 कौतुक निरापि सहुरुके सरने गए ॥ २४ ॥ २५ झरत
 रहे दिन रेन असंभव शब्द अखंडा ॥ तेहि नाद
 झणकार पुरि रह्यो पिंड ब्रह्मंडा ॥ षट् चक्रनके
 मध्य छमे अरु सहस्र एकीसा ॥ शब्द ब्रह्म सो सुने
 मिले जेहि गुरु जगदिसा ॥ हे जिवरूप गुरु जग
 घने बेहद गति वाकि नहि ॥ जन मुकुंद मनवस
 जीव सब यह सुख बिन मायामहि ॥ २५ ॥ २६ जिन

सुखको अधिकार कहूं अब लक्षण ताके ॥ इक दश
 साधन सहित अचल इंद्रिय मन जाके ॥ साचे सद्गुरु
 मोधि मिले तब तन मन देवे ॥ करे वचनमें वास
 आस तजिं सब विधि मेवे ॥ करि श्रवन मनन
 अध्यास दृढ़ हरि भेवा हारद लहे ॥ जन मुकुंद
 हरि साक्षातहे सबहि व्याधि उरमें दहे ॥ २६ ॥
 २७ ठरत नहि यह लक्ष दक्ष दिल भयो अभंगा ॥
 करे कोन अब आड जिहां नहि कुमाति प्रसंगा ॥
 दिव्य रु मानुष एक रूप करिके दृढ़ चिना ॥
 अलख लख्या साक्षात भई यह बात नबिना ॥
 आति ध्येय सु ध्याता लागि रह्यो सहज अंग आयो
 जवे ॥ जन मुकुंद गुरुकि मोजसैं सुख अखंड पायो
 अवे ॥ २७ ॥ २८ ठर न सके यह लक्ष भक्ति बिन
 ब्रह्मा आदि ॥ भक्ति वश्य भगवान अचलय हरित
 अनादि ॥ करे ज्युं साधन कोटि तास करि राम न
 पावे ॥ भक्ति करत भव सिंधु वल्लपद बत हो जावे ॥
 अब ऐसि अविरल भक्तिसो संत समागम पाइये ॥
 जन मुकुंद सो माहंतके गुन लक्षण अब गाइये ॥
 ॥ २८ ॥ २९ डर सब दिनो डारि सार ग्राहि सुख
 रूपा ॥ वरतन पंच निवास दास गति अगम अनुपा
 ॥ सुख दुख सम भाव मित्र शत्रु नाहि माने ॥ निंद्या
 स्तवन समान लाभ हानि सम जाने ॥ अष्टहु सिधि

नवनिधिकी आस नहि उर जाहिके ॥ जन मुकुंद
 सो महंत जन वचन ग्रहिजे ताहिके ॥ २९ ॥ ३० ढरिये
 ताकेद्वार नारि धन निपट उदासि ॥ तन सुख व्रश्ना
 साग मिटाइ ममता फांसि ॥ अनिकेत आनंद ग्यान-
 मय अनुभव अंगा ॥ सब तिरथको सदन चरन जेहि
 चाहत गंगा ॥ जो ब्रह्मवेता सो ब्रह्महे वेद वचन
 गिता कहे ॥ जन मुकुंद इन माहंतके संग सद्य भक्ति
 लहे ॥ ३० ॥ ३१ ण नारायण वचन ग्रहे सो ब्रह्म
 स्वरूपा ॥ वचन विना अति तुछ भए त्रीभुवनको
 भुषा ॥ अल्प अकिंचन जंत वचनमें बडगति पावे ॥
 श्रीहरिवचन प्रताप सेष सारद गुन गावे ॥ शुक ना-
 रदादि सुत आदि जो वाल्मिक बडतालाहि ॥ जन
 मुकुंद महिमा वचनके सतकोटि किरत कहि ॥ ३१ ॥
 ३२ तपतिर्थ व्रत वचन वचन वर्णाश्रम धर्म ॥ वचन
 जोग जप साग वचन बिन सकल अधर्म ॥ वचन
 भक्ति वैराग्य ज्ञान गुन वचननि पावे ॥ ज्युं कुंजरके
 खोज ओर सब खोज समावे ॥ जन अकथ इश म-
 हिमा लखे वचन निवासि होयके ॥ जन मुकुंद मोह
 वश वचन तजी जावे जन्म विगोयके ॥ ३२ ॥ ३३ थर
 थर ध्रुजत रहे वचनमें इंद्र मुनिद्रा ॥ थरथर ध्रुजत
 रहे वचनमें अविनि अहिद्रा ॥ थरथर ध्रुजत रहे वच-
 नमें सशियर सुरा ॥ थरथर ध्रुजत रहे रेन दिन

काल हजुरा ॥ हरि हरहि अज आदि सबे रहत
 भक्ति रत जाहिकी जनमुकुंद मोहवश मुढ नर करे
 न अग्या ताहिकि ॥ ३३ ॥ ३४ दरद दाह भय शोक
 रेन दिन रहे अपारा ॥ जरत रहे त्रय ताप कोहु
 नहि दारनहारा ॥ काल कर्मकि फासि गहन गति
 गलविच डारि ॥ मर्कट जु मतिमंद फेंद आए नर
 नारिं उर इश वचन नहि अनुमरे ऐसे दुख सहेव
 सहि ॥ जन मुकुंद लायकलात सो बात नहि माने
 कहि ॥ ३४ ॥ ३५ धरमें करे विचार बात युं मनमें
 धारे ॥ हरि भक्ति हे कठिन कर्म कहां सुलभ हमारे
 ॥ भक्तिवश भगवान कर्मसे अधगति जावे ॥ एसो
 करे विचार भक्ति उरमें तव भावे ॥ उर उभे भांतिसें
 इशको न्याय विचारे नर जवे ॥ जन मुकुंद समता
 सागिके हरिदास होवे तवे ॥ ३५ ॥ ३६ नर जो छुटन
 चहे आस विषय नकि सागे ॥ निस्प्रेहि निष्काम
 लोभकी लहर न लागे ॥ निःस्वादि निर्मानि पंच वरतन
 दृढ पाले ॥ विषवेलि अहि वधु काल सम नारि निहाले ॥
 अब असिरेणि जो रहे साधु जन भाचे तवे ॥
 जन मुकुंद पाचों वर्त्तकुं विगती सां वरनुं
 अवे ॥ ३६ ॥ ३७ परम धर्म यह प्रथम प्रीति सबसं परि-
 सागे ॥ मधमाखी ज्युं होय जीहां कछु लालच लागे
 ॥ ऋषभ देवके पुत्र भरत जे प्रगट पुराना ॥ तिन

जन्म तेही धरे मृगिमें मन लोभाना ॥ तेहि दया करत
 दुबध्या भइ काम स्नेहि क्युं तरे ॥ जन मुकुंद गुरु
 यह मर्म लाखि नर निखेहि दृढ करे ॥ ३७ ॥ ३८ फरत
 रहे भव फेर जास उर काम कुबुधि ॥ करे ज्यों सा-
 धन कोटि व्यर्थ सब लहेन सुधि ॥ रवि मंडल नहि
 रेन रेन तिहां रवि न प्रकासे ॥ राम तहां नहि काम
 काम तहां राम न भामे ॥ हे नरक पंथ पर्थान यह
 ताते नारि ना भजो ॥ जन मुकुंद मन वच कर्म करि
 अष्ट अंग मैथुन तजो ॥ ३८ ॥ ३९ बन बन दुंदुत फिरे
 जोग धरि रिद्ध रभायन ॥ घर घरमें यह बात नारि
 नर लोभ परायन ॥ जोवन गत गत काम लोभ जब
 हु नहिजावे ॥ मुए सो मागे श्राद्ध सजिवन क्युं मुख
 पावे ॥ तेहि ब्रह्मरूप गुरु जब मिले तनधन त्रण सम
 परहेरे ॥ जन मुकुंद यह मग नरकको लोभ लागी जनमे
 मरे ॥ ३९ ॥ ४० भयर कुरंग मतंग मिन ज्युं मेरे पतंगा
 ॥ एक एकेक स्वाद तज्यो तिन प्रानसंगा ॥ नरतन
 पांचु प्रबल सकलको रसना कारन ॥ वृक्ष मुलहे डार
 पात फुलनि विस्तारन ॥ यह अन्य इंद्रि त्युं बस किए
 नाहि जितेंद्रिय जानिये ॥ जन मुकुंद जब रसना जिते
 सकल व्यस्य परमानिये ॥ ४० ॥ ४१ ममत अहं के
 लार अहं तहां काम उपावे ॥ अहं क्रोधको रूप व्याधि
 सब याते आवे ॥ सब साधन फल व्यर्थ अहंता जब

उर आइ ॥ अहंकारके ओट रहतहे शाम छिपाई ॥
 सहस्र शिष्यको याहिते मान रिपु मारे सहि ॥ जन
 मुकुंद भक्ति मर्म सुभ संक्षेप सबहि कहि ॥ ४१ ॥
 ४२ यह सतसंगति सार एहि हरि भक्ति कहावे ॥ पाले
 वरतन पंच नाम नारायण गावे ॥ गुरु वचन विश्वास
 आस मिथ्या सब लागे ॥ भजे ब्रह्म निष्काम मोक्ष
 आदि नहि मागे ॥ अथ लव निमेष हरि भजन तजि
 तनके गुन नहि उर धरे ॥ जन मुकुंद जिवन मु-
 क्त सो नाव रूप तारे तरे ॥ ४२ ॥ ४३ रहे रेन
 दिन रटन हृदयें हर्ष अपारा ॥ श्रीहरि चरणे चित
 नित प्रति अधिक उजारा ॥ कच्छप सेवे दृष्टि कुंक्ष
 सुरता सु सेवे ॥ गुरु शिष्य संजोग याहि विधि
 दैवत देव ॥ रहे हित चकोरको चंदसु आग्य असन
 मुखनां जरे ॥ जन मुकुंद पोषक पियुषको चित व्रत्ति
 तामे धरे ॥ ४३ ॥ ४४ लगन राह हे कठिन चले सो
 सूर कहावे ॥ तनके सुख को चहे शिश विन रुंद
 रहावे ॥ चौद लोकके भोग काक विष्टा समजाने ॥
 लोकलाज मर्याद चरनदासि सम माने ॥ जब तन
 मन धन अरपन कियो ॥ कहो कहापि छे रह्यो ॥
 जन मुकुंद जग मिथ्या गिने सख समरपन तिन लख्यो
 ॥ ४४ ॥ ४५ विग्र चित नहि होय भजन सुनु संत
 सुजाना ॥ दुबधा खोबे दोय जगत ज्युं समझो सांना

॥ मगन भये मस्तान सिंह ज्युं संत मुधिरा ॥ सुणे
 शब्दको नाद चले तहां सनमुख विरा ॥ अति प्रेम
 मगन परिव्रज्यमे अवल व्रत्ति होवे सहि ॥ जन मुकुंद
 आतम जानिकें हरि भक्ति दृढ कर लहि ॥ ४५ ॥
 ४६ शम दृष्टि सुख दुख ग्यान जब गुरुमें पायो ॥
 मोह नीद सो मिटि जगत भय भर्म नसायो ॥ सुपने
 भुप भिखारि जगे जब मिथ्या जाने ॥ ज्ञान नेन
 जब खुले आप आतम पहिचाने ॥ सो देह इंद्रि मन
 प्रानकुं आप न माने अब कबे ॥ जन मुकुंद मगन
 स्वरूपमे जगत नहि भाषे तबे ॥ ४६ ॥ ४७ षट्
 विषयन सुख त्याग राग हरि चरन निरंतर ॥ काम
 क्रोध मद लोभ कबहु नहि व्यापत अंतर ॥ रमे सदा
 राममें धाम अरु वाम विसारे ॥ श्रीनारायण नाम सदा
 मुखमें उच्चारि ॥ अरु धर्म ज्ञान वैराग जुत श्रीहरि
 कि भक्ति लहि ॥ जन मुकुंद गुरुकि मोजसे अकथ
 कथा समझे सहि ॥ ४७ ॥ ४८ सप्त लोक सुख सत्य
 कबु सुपने नहि भासे ॥ श्रीहरि भजन प्रताप
 हृदय अग्यान विनासे ॥ *सद सद द्विक्रि विवेक
 अति दृढ उरमें आवे ॥ सतसंगति सदग्रंथ सदा तेही
 अतिशय भावे ॥ सद संप्रदाय सदग्रंथ जब सुने सुनावे
 गावाहि जन मुकुंद मुक्त होवे तबे फिर भवमें न

हि आवाहि ॥ ४८ ॥ ४९ हरिहर अज शारदा अजा अहि-
 राज प्रजंता ॥ सब सेवत जेहि चरन प्रकृतिपर सो
 भगवंता ॥ एहि अनुभव एहि ज्ञान एहि सतसंग स्वरूपं
 ॥ एहि सहुरु साक्षात प्रगट परब्रह्म अनुपं ॥ जेहि वेद
 वचन मनपर कहे नरनाटक धरि सो रम ॥ जन मुकुंद
 यह गुरु मर्म हे समझे तब व्याधि भमे ॥ ४९ ॥ ५० क्षेम
 जोगकुं करन हरन अज्ञान पतंगा ॥ जुग जुगमें जगदिस
 अजोनि जन्म प्रसंगा ॥ धरे रूप नित निमत चित भांति
 उपजावन ॥ चरित सकल सुख करन पापके पुंज न
 सावन ॥ करुणारम सो करिके प्रगट समता तजि
 ममता करे ॥ जन मुकुंद सो संवाद सुनु शरनागत सोइ
 उद्धरे ॥ ५० ॥ ५१ त्रिपित हरे जलत्रिपा गिरे तेहि
 प्रान गमावे ॥ मित त्राम तमहरे परे तेहि ज्यारि
 समावे ॥ शत्रु मित्र सम भाव करे सो निज फल पावे ॥
 जल पावक ज्युं ब्रह्म निति नहि दुषण आवे ॥ हे यदपि
 स्वतंत्र तदपि हरि भक्त वश्य भारत कहि ॥ जन मुकुंद
 निजपण भेटिकें भिषम पण राख्यो सहि ॥ ५१ ॥
 ५२ ज्ञप्ति मात्र गुन पारसारमो श्रीहरिरूपा ॥ अगम अथाह
 अपार सुगम सो प्रगट स्वरूपा ॥ जेस अग्नि स्वरुण
 मरूपी अरूपी कहावे ॥ रूपी अरूपी एक मर्म कोइ
 विरला पावे ॥ मरूपी अरूपी दो नाम सो एकरूप
 करिके कह्यो ॥ जन मुकुंद अनुभव एकता भर्म भुत

उरसें गयो ॥ ५२ ॥ रचि बावनि रसिक जनन चित
 चाह बढावन ॥ विषयकिं विषरूप मोह संताप कढावन
 ॥ यह जिज्ञासु सुने ताहि हरी हरदे आवे ॥ साधारण
 जन सुने विषे वैराग उपावे ॥ धर्म ज्ञान भक्ति वैराग
 जुत नर तन धरि सुमरे हरि ॥ जन मुकुंद महा आनंद
 निधि तिन हित यह भाषा करि ॥ ५३ ॥ संवत अठार
 सुद्ध त्रैलोक्य श्रावण मासे ॥ शुक्लपक्ष शुभ द्वितिय ग्रंथ
 गुरु कियो प्रकासे ॥ सुने सुनावे ग्रहे अर्थ उर सो सुख
 पावे ॥ भव सागर नहि भमे कर्मवस सो न बंधावे ॥
 अति अकथ कथा हे याहिमें सद्गुरु बिन समझे नहि ॥
 जन मुकुंद सद्गुरु संत जिहां आदर करि राखे तहि ॥ ५४ ॥

॥ इति मुकुंद बावनी संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री कृष्ण महिमाष्टक ॥ ॥ इदं छंद ॥

॥ कर्णसे दानि धनाढ्य कुबेरसे ॥ मृगत चोज
 विधि समझिना ॥ वेद पुरान रू निति नरेशकि ॥
 ताहिमें देव गुरुसे प्रविना ॥ तेज प्रताप दिवाकरसे
 ॥ जगमे दृढ दिगविजे कर लिना ॥ ऐसे भये तो
 कहा मुक्तानंद ॥ श्रीव्रजचंदसों नेह नकीना ॥ १ ॥
 चंदसें शितल रूप अनंगसे ॥ देव गजाननसे जगमाने
 ॥ सिद्ध सिरोमनि गोरखसे ॥ कविराजहु काव्यमें
 खुब सयाने ॥ मूर जरासंध रावनसें ॥ रिपु जि-
 तिके देश सबे घर आने ॥ ऐसे भये तो कहा मु-

क्तानंद ॥ कारनरूप श्री कृष्ण नजाने ॥ २ ॥ अमृ-
 तमे सबकुं सुखदायक ॥ शांत धरामें सदा उपकारि
 ॥ ताल नदि तरुमें परमारथि ॥ कर्त्त रहे निज
 काज विभारि ॥ पंडित भोगि पुरंदरमें ॥ भृगुमें
 महासिद्धनमें नरनारि ॥ ऐसे भये तो कहा
 मुक्तानंद जो न भजे हरिकुंजविहारि ॥ ३ ॥ धिर-
 जवान धराधरमें ॥ सब कारजमें अतिशे सुवि-
 चारि ॥ टेक भवे नृप भिषमके सम ॥ काहुतें
 लेश टरे नहि दारि ॥ कश्यपमें कीरति अरु वंस
 बढावनहारहे संमृथ भारि ॥ ऐसे भये तो कहा
 मुक्तानंद ॥ जोन भजे नंद लाल विहारि ॥ ४ ॥
 कंचन भोल शचिशम कामनि ॥ वांछित भोग सदा
 रहे खाने ॥ ताने तुरंग बडे गिरिमें ॥ गज द्वारमें
 छाय रहे मदमति ॥ प्राढ़ प्रतापी प्रजापतिमे ॥ रहे
 गंधर्व द्वार भदा गुन गाने ॥ ऐसे भये तो कहा
 मुक्तानंद ॥ श्री ब्रजचंद के रंगन राते ॥ ५ ॥ शां-
 त रहे मुनि जाजलिमे ॥ उरमें अवलोकि तजि
 सब खोरि ॥ कामरु क्रोध लोभादिकेक ॥ महा
 त्यागके जोर दिये मुख मोरि ॥ आतम निष्ठ हु
 शंकरमें ॥ तनकि अहंता ममता सब तोरि ॥ ऐसे
 भये तो कहा मुक्तानंद श्री ब्रजचंदसो प्रितन
 जोरि ॥ ६ ॥ ज्ञानि बडे मुनि गौतमसे पद बंदत

आयकें देव धराके ॥ जाहिको तेज प्रताप बि-
लोकत ॥ वादि विवादि सबे अति थाके ॥ जा-
ह बडे जगदिम नमे ॥ जग भुषतिहु सब मेव-
क ताके ॥ ऐसे भये तो कहा मुक्तानंद ॥ श्रीनंद-
लालसो नेह न जाके ॥ ७ ॥ भिवि दधिवि हरि-
चंदमे ॥ सतवादि बडे सबहि जगजाने ॥ भानि
बडे दुर्योधनमे ॥ तिमि दानि बलिनृप तुल्य प्रमाने
॥ शास्त्र विषेक विभार दसे ॥ मनहु किलखे इमि
बोत सयाने ॥ ऐसे भये तो कहा भुक्तानंद ॥ श्रीव्रज-
चंद पिया न पिछाने ॥ ८ ॥ ॥ छपय ॥ यह अ-
ष्टक जो पढत ॥ त्रास भ्रमना सब भागे ॥ रसिक
छेल घनशाम संग ॥ अतिसे अनुरागे ॥ दूरत विकट
भव हेतु शत्रु कामादिक भारि ॥ अनायास उर वसत
रसिक व्रज चंद विहारि ॥ निज धर्म जुक्त श्री-
कृष्णकि ॥ प्रेम भक्ति दृढ पावहि ॥ मुनि मुक्त कहे
सो भक्त जन ॥ बहोरि न भवमें आवहि ॥ ९ ॥

कपटी भेष विषे ॥ ॥ कुंडलिया ॥ ॥

भेष बनावे संतका अंतर कपट अपार बगज्युं
ध्यान लगायके धुते सब संसार धुते सब संसार ॥
संत अरु महंत कहावे ॥ करकर कपट अपार पराया
धन घर ल्यावे ॥ दाखत मुक्तानंद रेन दिन
धनकुं धावे ॥ अंतर कपट अपार संतका भेष बनावे

॥ १ ॥ भेष बनाया संतका फुंकि धरतहे पाव ॥
 वानर उपर सिंहने किया कपटका दाव ॥ किया
 कपटका दाव देखि वानर मन भाया ॥ यह कोउ
 साचा संत तिव्रतन भक्ति छाया ॥ दाखत मुक्ता-
 नंद चहत वानरकुं खाया ॥ फुंकि धरतहे पाव सं-
 तका भेष बनाया ॥ २ ॥ सरने आया सिंहके
 साचा साधु जान ॥ लपट झपट मुखमें लिया नि-
 पट कपटकि खान ॥ निपट कपटकि खान जान
 वानर हाशि दिना ॥ सिंध पस्थो मन सोच भई यह
 बात नविना ॥ पुल्लत विकस्या बदन वानरा वन पर
 धाया ॥ साचा साधु जान सिंहके सरने आया
 ॥ ३ ॥ वनपर रोवे वानरा बुरि करि तें विर ॥
 यावन विस्त्रासि घने ताकि मोकुं पिर ॥ ताकि मोकुं
 पिर संतका भेष बिगोया ॥ पेट काज करि कपट भ-
 क्तिका मातम खोया ॥ दाखत मुक्तानंद दुष्ट सबकि
 पक्ष खोवे ॥ बुरि करि तें विर वानरा वनपर रोवे ॥ ४ ॥

॥ अथ हनुमानको स्तोत्र ॥ ॥ इदं छंद ॥

॥ निति प्रविन सबें निगमागम ॥ शास्त्रमें बुद्धि रु-
 बंके अपारा ॥ श्रीरघुनाथके मंत्रि अनुपहो ॥ ताहिते
 रामकुं प्रानमें प्यारा ॥ प्रौढ शरिर सिंदुरमें सोहत
 ॥ नैष्ठिकके मध्य इंद्र उदारा ॥ श्रीरघुविरके दूत
 महाबल ॥ कष्ट हरो हनुमान हमारा ॥ १ ॥ जानकि

कारन श्रीरघुनाथके ॥ अंतरमें भयो कष्ट अनंता ॥
 दारन ताहि सहायक एक ॥ हने मनुजाद महा बल-
 वंता ॥ जारि निशाचर नाथकि लंक ॥ महा मुनि
 सिद्ध प्रसंसत संता ॥ श्रीरघुविरके दूत महाबल ॥
 संकट मोर हरो हनुमंता ॥ २ ॥ रावनके सुत शक्ति
 चलाई सो ॥ आय लगि अतिशे दुखकारि ॥ कंठमें
 प्रान रामानुजके हित ॥ ल्याये सजिवनि ओषधि
 भारि ॥ ल्याये उठाय द्रोणाचल वेगमें ॥ रामके
 पक्षकि पिरसो दारि ॥ श्रीरघुविरके दूत महाबल ॥
 पिरहरो हनुमान हमारि ॥ ३ ॥ श्रीरघुनाथके आगम
 किसो ॥ बधाइ ले भर्तकुं वेग सुनाई ॥ राम वियोग
 महा दुख सागर ॥ डूबत भर्तसे मोजहु पाइ ॥ जानकि
 नाथके अंग्रि सरोजमें ॥ भ्रंग ज्युं जासमति लपटाइ
 ॥ श्री रघुनाथके दूत महाबल ॥ संकटमें रहो मोर
 सहाइ ॥ ४ ॥ वायु स्वरूप जो केसरी वानर माननि
 ताससो अंजनि नामा ॥ तास महा तप रूप भयो
 सुत ॥ वायुकुमार अति अभिरामा ॥ वेग स्वगेश
 समान वपु दृढ ॥ वज्रको अंग अति बल धामा ॥
 श्रीरघुविरके दूत हरो सब ॥ संकट मोय करो
 निषकामा ॥ ५ ॥ बात प्रकारकि डाकनि साकनि ॥
 भैरव भूत अति विकराला ॥ कृसा रु बिर पिशाच नि-
 शाचर ॥ जाहिकुं देखि डरे ततकाला ॥ जाहिको

मंत्र जपे सुत वित्तद ॥ दारत ताप रु रोग विशाला ॥
 श्री रघुविरके दूत सदा भम ॥ कष्ट हरो हनुमंत कपा-
 ला ॥ ६ ॥ जाहिको नाम सुनेसे ततक्षण ॥ भागतहे
 ब्रह्म राक्षस घोरा ॥ जाके प्रतापमें प्रेत पिशाच रु
 ॥ भागत भूत कबंध कठोरा ॥ जाके प्रताप डरे
 सब डाकिनि ॥ जोगिनि जादु भगे चहु ओरा ॥
 श्री रघुविरके दूत महाबल ॥ हे हनुमंत हरो दुख
 मोरा ॥ ७ ॥ आपके भक्त अनन्यहे ताहिके ॥ वांछित
 कामके पुरजहारा ॥ दुर्बल दिन रिपु भय व्याकुल ॥
 ताहिके हो तुम इष्ट उदारा ॥ वांछित मोर सो देहु दया
 निधि ॥ ॥ वंदत हूं तोय वारहिबारा ॥ श्रीरघुविरके
 दूत महाबल ॥ कष्ट हरो हनुमंत हमारा ॥ ८ ॥ हाक तु-
 मारि सुने जवहि तब ॥ राक्षसकि त्रिय गर्भकुं त्यागे ॥
 जंत्र रु मंत्रके जान जादुगर ॥ नाम तुम्हार सुने डरी
 भागे ॥ ताहिते संकट नाश करो ॥ कहे मुक्त सदा प्र-
 भुसों अनुरागे ॥ श्रीरघुविरके दूत महाबल ॥ हे हनुमंत
 एहि वर मागे ॥ ९ ॥ ॥ छपय ॥ यह अष्टक जो
 पढ़े ॥ ताम सब संकट नासे ॥ रामदूत हनुमान ॥ सदा
 द्रग आगे भासे ॥ विघन होत सब नास ॥ मगन हो
 हरि गुन गावे ॥ पाप पुंज सब टरत ॥ बहोरि भवमें
 नहि आवे ॥ धन धान्य पुत्र संपत्ति बढे ॥ कृश चरन
 रति पावहि ॥ मुनि मुक्त कहेसो भक्तके ॥ संकट

निकट न आवहि ॥ १ ॥ इति श्री हनुमंतस्तोत्र संपूर्णम्

॥ अथ नारायण कवच ॥

विश्व रूप इंद्र प्रत्ये कहेछे हे इंद्र जेवारें भय आव
ते वारे नारायण रूप बगतर पेहेरवो ॥ ते पगथ-
कि ते मस्तक पर्यंत नारायणनि मूर्ति अवतारा-
दिक समेतना नाम ते सर्वांगिने विषे धारण करवां ते
कहेछे जे हरिछे ते मारि सर्व स्थानक थकि रक्षाने करो
॥ ते हरि केवाछे तो गरुडना वांसा उपर पग
राख्याछे आठ हाथमां आठ आयुध धर्यां छे तेमां
एकतो संख १ विजो अरी ते चक्र २ त्रिजि ढाल ३
चोथी तरवार ४ पांचमी गदा ५ छठो तीर ६ सातमुं
ते धनुष ७ आठमो पास ८ ए आयुधने अष्ट सिधि
ए सहित छे ॥ पछे एम केवुं जे जलने विषे मत्स्य
मूर्ति एवा जे भगवान ते जलजंतुना भयथकि ने
वरुणना पास थकि मारि रक्षा करो ॥ अने पृथ्वीने
विषे बटुक वामनजी ते रक्षा करो ॥ आकाशने विषे
विश्वरूप एवा त्रण्य पगलांवाला एवा भगवान ते रक्षा
करो ॥ बलि विषम स्थानकने विषे बलि वनमां ने रण
संग्रामना मुखने विषे असुर जुथना बेरि एवा नृसिंह
प्रभु जेते रक्षा करो ने नृसिंह मोटा अतिशे हासने
करता छे तेणे दिशुमांथि शङ्ख उठे छे ॥ बलि स्त्रीयुना
गर्भ पण पीडि जाय छे ॥ बलि मार्गने विषे यज्ञ

મૂર્તિ એવા પોતાનિ ડાઢે કરિને ઉપાડિ છે પ્રથ્વી
 જેને એવા વારાહજી જેતે રક્ષા કરો ॥ વલિ લક્ષમણે
 સહિત એવા ભરતના મોટેરા ભાઈ તે જેતે રામજિરૂપ
 એવા ભગવાન જેતે પર્વતના શિખરને વિષે અથવા
 પરદેશને વિષે મારિ રક્ષા કરો તે પરસુરામ રક્ષા
 કરો ॥ વલિનારાયણ એવા ભગવાન તે મારિ અતિ
 મુંડા ધર્મ થકી વિમુક્ત થકિ પણ નારાયણ રક્ષા
 કરો ॥ નર એવા ભગવાન જે તે મારિ હાસ જે કોયનિ
 ઠેકાડિ કરવિ તેજ મોટિ સ્વોડ તે થકિ રક્ષા કરો
 વલિ યોગના સ્વામિ એવા દત્તાત્રે નામે ભગવાન જે તે
 અયોગ થકિ કેતાં યોગના ભ્રષ્ટપણા થકિ મારિ
 રક્ષા કરો ॥ વલિ સર્વ ગુણના સ્વામિ એવા કપીલ
 નામે ભગવાન જે તે મારિ સર્વ ગુણ થકિ રક્ષા કરો ॥
 શનકાદિક નામે ભગવાન મારિ કામદેવ થકી રક્ષા
 કરો ॥ હયગ્રીવ નામે ભગવાન જે તે મારગને વિષે
 કોઈક દેવતાનિ ઠેકાડિ થકિ મારિ રક્ષા કરો ॥ દેવ
 ઋષીમાં મોટા એવા નારદજી જે તે મારિ ભગવાનની
 પુજામાં કાઈ મુલ્ય પડે તે થકિ રક્ષા કરો ॥ વલી
 કાચવા રૂપ ભગવાન જે તે હરિ તે હરિ મારિ સ્વર્ગ
 નર્ક થકિ રક્ષા કરો ॥ વલિ ધનવંતરિ એવા ભગવાન
 જે તે મુને અપથ્ય જેકાંઈ નસાવાનિ વસ્તુ સ્વવાય
 તે થકિ રક્ષા કરો ॥ વલિ શ્રીત્યો છે મન જેણે એવા

ऋषभ नामे भगवान जे ते द्वंद्वरूप जे भय राग द्रुपा-
 दिक ते थकि मारि रक्षा करो ॥ वलि यज्ञरूप एवा
 भगवान जे ते मारि लोकना अपवाद अपजस थकि
 मारि रक्षा करो ॥ वलि बलभद्र रूप एवा भगवान
 जे ते काल थकि मारि रक्षा करो ॥ वलि ऋषभरूप
 एवा भगवान जे ते क्रोध रूप एवो जे सर्पनो समूह
 ते थकि मारि रक्षा करो ॥ वलि व्यासरूप एवा भग-
 वान जे ते मारि अज्ञान थकि रक्षा करो ॥ वलि बुद्ध
 नामे भगवान जे ते पाखंडना समूह थकि वलि प्रमाद
 थकि मदोन्तत्तपणा थकि मारि रक्षा करो ॥ वलि
 कलकि रूप एवा भगवान जे ते कलि ते कलिनो मल ते-
 थकि मारि रक्षा करो ते भगवान केवा छे धर्म
 नि रक्षा करवा माटे घणा किधा छे अवतार जेणे
 वलि केशव एवा भगवान जे ते गदाये करिने प्रा-
 तःकाले मारि रक्षा करो ॥ वलि ग्रहण किधि छे
 वेणु वांसलि जेणे एवा गोविंद नामे भगवान जे
 ते गायुं आव्या टांणे मारि रक्षा करो ॥ नारा-
 यण नामे भगवान जे ते प्रातःकाल ते काचा
 बपोर ते टांणे मारि रक्षा करो ॥ ते भगवान के-
 वा छे ग्रहण किधि छे पोतानि शक्ति जेणे वलि
 चक्र छे हाथमां जेने एवा भगवान विष्णु नामे जे
 ते मारि मध्यानने विषे रक्षा करो ॥ वलि अति

મોટું છે ધનુષ જેને એવા મધુદાનવના મારતલ એવા
 ભગવાન જે તે દેવ પ્રભુ મારિ પાછલ્યા પોરને
 વિષે રક્ષા કરો વલિ ત્રણ્ય બ્રહ્માદિકાનિ મૂર્તિ એવા
 લક્ષ્મીના સ્વામિ જે તે મારિ સાયંકાલે રક્ષા કરો
 વલિ ઋષિ કેશ એવા તમે ભગવાન જે તે મારિ રા-
 ત્રિના મુખને વિષે રક્ષા કરો ॥ વલિ અર્ધ રાત્રિના
 મુખને વિષે પળ ઋષિકેશ નામે ભગવાન મારિ
 રક્ષા કરો ॥ વલિ પદ્મનાભ નામે ભગવાન જે તે
 એકજ મારિ મહામધ્યરાત્રિને વિષે રક્ષા કરો ॥
 વલિ શ્રી વત્સ ધામા એવે નામે ભગવાન જે તે સ-
 મર્થ મારિ પાછાલિ રાતને વિષે રક્ષા કરો ॥ તર-
 વાસ્થના ધરતલ એવા દુષ્ટ જનના પિડતલ એવા સ-
 મર્થ ભગવાન જે તે પ્રાતઃકાલને વિષે મોટા પ્ર-
 ભાતને વિષે રક્ષા કરો ॥ દામોદર નામે ભગવાન
 જેતે સંધ્યા ટાળે મારિ રક્ષા કરો ॥ વલિ વિશ્વના
 સ્વામિ ભગવાન એવા કાલ મૂર્તિ જે તે પ્રભાતને
 વિષે રક્ષા કરો ॥ વલિ પ્રલયકાલના અગ્ની જેવિ
 તિગ્વી છે ધારા જેનિ એવું ને ભગવાને મુક્યું
 એવું ને ચારે કોરે ભમતું એવું ચક્ર જે તે તતકાલ
 મારા વોરના સૈન્યને બાલો બાલો જેમ વાયુ
 છે મિત્ર જેનો એવો અગ્નિ જે તે જ્વળે બાલે છે
 ॥ વલિ ભગવાનનિ ગદાને કેવું હે ગદા હું

वज्रना परस जेवा छे अग्निना कण जेमां एवि
छउं ने भगवानने वालि छुं माटे कुष्मांड नामे
जे असुर ते वैनायक नामे राक्षस यक्ष ने भूतने
पिशाचने अतिशे पीडय पीडय ॥ वलि मारा वेरि-
ने चुर्ण करय ॥ भुको करी नाख एम भगवाननी
गदाने केहेवुं वलि भगवानना शंखने केहेवुं मोटा शंख
श्रीकृष्ण तेणे वजाडयो ने भयंकर छे शब्द जेनो
एवो तुं ते मारा वेरिना हृदयने कंपावतो थको तुं जे
ते यातु धान नामे जे असुर योनि प्रथम नामे भुत
जोनि प्रेत जोनि मातृयोनि पिशाचयोनि वलि
दुखाने देवा वाली कांडक भयंकर छे दृष्टि जेनि एवा
जे जीव तेने भगवो भगावो एम शंखने केवुं वलि
भगवाननि तरवारने केहेवुं हे तीखीछे धारा जेने ने
तरवाख्यमां मोटि तरवारय तुंने भगवांने मुकि थकि
मारा वेरिनुं जे सैन्य तेने छेद छेद हे सो चंद्रवालि ढाल
पाप रूप छे नेत्र जेनां एवा पापि जे मारा वैरि तेना नेत्र
ने तुं ढांक ढांक ॥ वलि तेना नेत्रने फोड फोड ॥ वलि
जे अमने विग्रहथकि भय होय ने वलि जे भय केतुने राहु
थकि होय वलि जे हिणा मांणस थकि होय अथवा जे
भय कोए समर्थ थकि होय वलि जे भय कोय डाढना
जीव जे सिंघादिक थकि होय ते थकि मारि रक्षा
करो बिजो नारायण कवच तेनो विवेक जे पंचवर्त्त-

માનમાં ફેર પાડે એવો જે મન તથા ઇંદ્રિ દેવતા તેને
 જિત્યા સારુ નારાયણના નામ રૂપ બગતર પહેરવો
 ને એમ ન સમજાય તો મોહ વિવેકમાં પ્રગટ છે તે
 વિચારજો એ સ્વરડાનો નીયમ રાખજો વાંચિને પછે
 અન્ન લેવો એમ દેહ પર્યંત રાખજો કર્મ યોગિ તથા
 સાંખ્ય જોગિ સર્વને એ વાત છે જેટલો જેથી થાય
 તેટલો વિચારજો મળ્યા નહોય તો સાંભલવો સાંભલિ
 ને તે વાત વિચારિને જે આ કાગલમાં સ્વામિયે લ-
 લ્યોછે તે વાત ઘીજા આગલ કરવિ વિજો કોય ન
 હોય તો મનમાં જાણવો સ્વામિનારાયણ સ્વામિનારાયણ
 કામકાજ કરતાં કરવું જે પાપ સર્વે ભસ્મ હોઈ જાવે
 તે સારુ સ્વામિનારાયણ સ્વામિનારાયણ કરવો ॥ ઇતિ
 શ્રી નારાયણ કવચ સંપૂર્ણ ॥

॥ અથ શતમૂર્તિ લખ્યાછે ॥

॥ સમર્થ થકો જે ઉચ્ચમ નકરે તે મુરખ ॥ ૧ ॥ ડાહ્યો
 થઈને પંડિતમાં પોતાના વચ્ચાણ કરે તે મુરખ ॥ ૨ ॥
 વેડ્યાના વચનમાં વિશ્વાસનો કરનારો તે મુરખ ॥ ૩ ॥
 દંભે કરિને આડંબર વાલાનો વિશ્વાસ કરે તે મુરખ ॥ ૪ ॥
 જુગટે કરિ દ્રવ્યને ઈછતો તે મુરખ ॥ ૫ ॥ સ્વેડય
 આદિક જે આવ્યક તેને વિપે મંશેનો કરનારો તે મુરખ
 ॥ ૬ ॥ બુદ્ધિ રહિત થકો મોટા કાર્યને કરવા ઇછનારો તે
 મુરખ ॥ ૭ ॥ વાણિયો થૈને એકાંતમાં વેસનારો

ते मुख ॥ ८ ॥ जे कारजने करवे करिने जमीन
 वेचवी पडे ते कारजनो करनारो ते मुख ॥ ९ ॥
 वृद्ध थको परणे ते मुख ॥ १० ॥ जे ग्रंथ न सां-
 भल्यो होय तेनो केनारो ते मुख ॥ ११ ॥ प्रत्यक्ष
 अर्थने ढांकनारो ते मुख ॥ १२ ॥ पोखे दोषे जुक्त
 होय ने बिजानि ईर्ष्या करे ते मुख ॥ १३ ॥
 पोताने माथे शत्रु समर्थ होयने तेनी संका न राखे
 ते मुख ॥ १४ ॥ जाय एवाने धन आपीने पछे
 तेनो पश्चाताप करे ते मुख ॥ १५ ॥ काव्य क-
 रवाने अर्थे हठे करिने विद्यानो भणनारो ते मुख
 ॥ १६ ॥ बोल्यानो प्रसंग न होय ने डाहो थेंने बोल-
 नारो ते मुख ॥ १७ ॥ अवसरने विषे न बोल-
 नारो ते मुख ॥ १८ ॥ लाभ पाम्याना समय
 मां कलेशनो करनारो ते मुख ॥ १९ ॥ जमवाना
 समयमां क्रोधनो करनारो ते मुख ॥ २० ॥ थोडाक
 लाभमां बहु खरचनो करनारो ते मुख ॥ २१ ॥
 लोकमां वखणावा सारु कठण काव्यनो करनारो ते
 मुख ॥ २२ ॥ पुत्रने धन आपीने पछे दिन थेंने ते
 पुत्रनी पासे मागनारो ते मुख ॥ २३ ॥ सासराना
 पक्षमां जेने धननो मागनारो ते मुख ॥ २४ ॥ स्त्री
 संघाथे विवाद करिने बीजी स्त्रीने परणनारो ते
 मुख ॥ २५ ॥ पुत्र उपस्थ रिस करिने तेने मारी

नाखनारो ते मुख ॥ २६ ॥ कोइनि अदेखाइये
 करीने जाचकने दाननो करनारो ते मुख ॥ २७ ॥
 कोइकने कठण वचन कहीने पछे गर्वनो करनारो
 ते मुख ॥ २८ ॥ बुद्धिना गर्वे करीने हितकारि
 वचन न सांभळे ते मुख ॥ २९ ॥ कुलने गर्वे करीने
 कोइनी सेवा न करे ते मुख ॥ ३० ॥ वाली वस्तु
 कोइने आपी दर्इने पाछुं इछनारो ते मुख ॥
 ॥ ३१ ॥ मुल न उपजे तेवा पदार्थना मुलनो आ-
 पनारो ते मुख ॥ ३२ ॥ लोभी राजा थकी लाभ-
 नो ईछनारो ते मुख ॥ ३३ ॥ दुष्ट राजा पांसे न्या-
 यनो करावनारो ते मुख ॥ ३४ ॥ स्वार्थी पुरुषने
 विषे स्नेह करीने आसानो बांधनारो ते मुख ॥
 ॥ ३५ ॥ दुष्ट कामदारने विषे नीरभेपणे वरतनारो
 ते मुख ॥ ३६ ॥ क्रतुघ्नी पुरुषना उपकारनो कर-
 नारो ते मुख ॥ ३७ ॥ गुणना महात्मने न जाणे
 तेने गुणनो शिखवनारो ते मुख ॥ ३८ ॥ देह नि-
 रोगी होयने औषध खानारो ते मुख ॥ ३९ ॥ रोगी
 थईने पोताने न सदे तेवा रसने वस थैने खानारो
 ते मुख ॥ ४० ॥ लोभे करीने स्वजननो साग करी-
 ने एकलो रेनारो ते मुख ॥ ४१ ॥ अवलि वाणीये
 करीने पोताना मीत्रने उदासि करनारो ते मुख
 ॥ ४२ ॥ लाभने समे आलसनो करनारो ते मुख

॥ ४३ ॥ मोटी समृद्धिवालो थेने कलह करनारो ते
 मुख ॥ ४४ ॥ जोतशिने कहेथी राजनो ईछनारो
 ते मुख ॥ ४५ ॥ मुखे मनमुबो कस्यो होय तेने
 ठीक माननारो ते मुख ॥ ४६ ॥ दुर्वलने पीड-
 वाने विषे सुरवीर थानारो ते मुख ॥ ४७ ॥ पो-
 तानि स्त्रीने विषे दोस होय तोषण तेमां प्रिति कर-
 नारो ते मुख ॥ ४८ ॥ वीद्यादीक कल्याणकारि
 गुण सीखवा होय ने तेमां अभ्यास न करे ते मुख
 ॥ ४९ ॥ पोताने वापे भेलुं करेलुं जे धन तेने फुले
 करिने कुमारगमां खरचनारो ते मुख ॥ ५० ॥
 कोईने आपे नहि ने उपस्थथी दयानो जणावनारो
 ते मुख ॥ ५१ ॥ मनुष्यनि आगल्य राजादीकनी
 निदानो करनारो ते मुख ॥ ५२ ॥ देहादीकना
 दुखने विषे दीनपणे करिने पीडानो जणावनारो ते
 मुख ॥ ५३ ॥ सुखने विषे दुखनो वीसारनारो ते
 मुख ॥ ५४ ॥ अल्प पदार्थनी रक्षाने अर्थे घणुं
 खर्च करनारो ते मुख ॥ ५५ ॥ झेरने खाईने तेनी
 परीक्षानो करनारो ते मुख ॥ ५६ ॥ रोग टालवाने
 अर्थे रसायणनो खानारो ते मुख ॥ ५७ ॥ पोतानि
 मोट्यप जणाववा सारु कोईनी आगल नमे नहि
 ते मुख ॥ ५८ ॥ क्रोधे करीने आत्मघातनो कर-
 नारो ते मुख ॥ ५९ ॥ प्रयोजन विनानो कोईने

घेर आदिक ज्यां त्यां नीरंतर जानारो ते मुख
 ॥ ६० ॥ कोईनि वढवाडमां जोवा जेने वच्यमां
 पोते मार खानारो ते मुख ॥ ६१ ॥ दुर्बल
 थको सुई रहे ने कांई उद्यम न करे ते मुख
 ॥ ६२ ॥ धन थोडुं होय ने आडंबर बहु जणावनारो
 ते मुख ॥ ६३ ॥ मुख होय ने पंडित थावाने अर्थ
 बहु बोलनारो ते मुख ॥ ६४ ॥ सुरवीरपणाने गर्व
 करीने कोइनो भय न राखे ते मुख ॥ ६५ ॥ अति
 स्तुतीय करीने लोभि जनने उद्वेगनो करनारो ते
 मुख ॥ ६६ ॥ कठण वचन बोलिने कोइकना मर्मनो
 भेदनारो ते मुख ॥ ६७ ॥ दरिद्रीनो विश्वास करिने
 तेने द्रव्यनो सांपनारो ते मुख ॥ ६८ ॥ किमीयागरने
 धननो आपनारो ते मुख ॥ ६९ ॥ संशेवाला कार्यमां
 खरचनो करनारो जे थामे के नहि थाय ते मुख ॥ ७० ॥
 पोतानि वाणिये करिने खत आदिक लखनाराने उद्वे-
 गनो करनारो ते मुख ॥ ७१ ॥ प्रारब्धने माथे नाखिने
 उद्यम न करे ते मुख ॥ ७२ ॥ पोते दरिद्रि थेने व्यर्थ
 वातुनो करनारो ते मुख ॥ ७३ ॥ रमसे करिने भोज-
 ननो विसारनारो ते मुख ॥ ७४ ॥ गुणे करिने हिन
 एवो जे कुलवान तेनो वखाणनारो ते मुख ॥ ७५ ॥
 सभाना मध्यमाथि प्रयोजन विनानो उठनारो ते मुख
 ॥ ७६ ॥ दुत थको संदेशानो विसारनारो एवो गाफल

ते मुख ॥ ७७ ॥ पोताने उधरस थई होय ने चोरि
करवा जाय ते मुख ॥ ७८ ॥ पोतानि किर्तिने अर्थ
भोजनमां बहु खरच करनारो ते मुख ॥ ७९ ॥ पोताना
वखाणने अर्थ थोडुं जमनारो ते मुख ॥ ८० ॥ स्त्रिना
भयथकि शास्त्र विरुध क्रियानो करनारो ते मुख ॥
८१ ॥ लोभे करिने पोतानि अपकीर्तिनो करावनारो ते
मुख ॥ ८२ ॥ उघाडा दोषे जुक्त होय ने तेना वखा-
णनो करनारो ते मुख ॥ ८३ ॥ घोघरो साद होय
ने गानकला सिखीने विजाने रिझववा ईछनारो ते
मुख ॥ ८४ ॥ अल्प पदार्थमां पण भोगववाने अति
रसीयो थाय ते मुख ॥ ८५ ॥ कपटे करिने कोइ व-
खाणे तेमां राजी थानारो ते मुख ॥ ८६ ॥ वेशा सं-
घाथे कलहनो करनारो ते मुख ॥ ८७ ॥ बेजण मलिने
मनसुबो करता होय ने त्यां बोलाव्या विना जानारो ते
मुख ॥ ८८ ॥ राजा प्रसन्न थाय तेमां स्थिर बुद्धिवालो ते
मुख ॥ ८९ ॥ अन्याये करिने पोतानि व्रद्धिने ईछनारो ते
मुख ॥ ९० ॥ घरमां द्रव्य न होय ने द्रव्ये करीने काम
थाय तेवा कामनो करनारो ते मुख ॥ ९१ ॥ कोइ
नी छानी बात होय तेने मनुष्यमां छतराई करनारो
ते मुख ॥ ९२ ॥ किर्तिने अर्थ अजाण्या मनुष्यनो
जमान थनारो ते मुख ॥ ९३ ॥ हित वचननो केना-
रो होय तेनी उपस्थ रीस करीने अदेखाई करनारो ते

મુરખ ॥ ૯૪ ॥ સર્વ જનેને વિષે વિશ્વાસનો કરનારો તે
 મુરખ ॥ ૯૫ ॥ લોકના વ્યવહારનો ન જાણનારો તે
 મુરખ ॥ ૯૬ ॥ ભિક્ષુક થકો ડાકો ભોજનનો જમનારો
 તે મુરખ ॥ ૯૭ ॥ પોતે ગુરુ થેને ધર્મ નીયમમાં શિથલ
 વરતનારો તે મુરખ ॥ ૯૮ ॥ ઉત્તરતિ ક્રિયાને વિષે
 લાજ નરાખનારો તે મુરખ ॥ ૯૯ ॥ હસતાં હસતાં વાત
 નો કરનારો તે મુરખ ॥ * ૧૦૦ ॥

॥ અથ ચાલિસ પ્રકારના ડાહ્યા ॥

॥ પેદેલો ડાયો જે શત્રુના સપાટામાં ન આયો તેપણ
 ડાયો ॥ ૧ ॥ વીજો ડાયો જે કલ્યાણના કામથી નકા-
 યો તે પણ ડાયો ॥ ૨ ॥ ત્રિજો ડાયો જેણે એકલા સ્વાદુ
 ન ખાયો તે પણ ડાયો ॥ ૩ ॥ ચોથો ડાયો જેણે જિવંત
 પર્યંત હરિજન ગાયો તે પણ ડાયો ॥ ૪ ॥ પાંચમો ડાયો
 જેતે આગલ્ય આપનો દુઃખ ન ગાયો તેપણ ડાયો ॥ ૫ ॥
 છઠો ડાયો જે ઠગ થકિ ન જાય ઠગાયો તે પણ ડાયો
 ॥ ૬ ॥ સાતમો ડાયો રાખે * મેળિ ને નાખે પાયો તે
 પણ ડાયો ॥ ૭ ॥ આઠમો ડાયો જેણે હરિ ગીત વનાયો
 તે પણ ડાયો ॥ ૮ ॥ નવમો ડાયો જે પરનારિ સંગ ન
 ચાયો તે પણ ડાયો ॥ ૯ ॥ દશમો ડાયો જેણે વધું જવા
 દડને જીવ બચાયો તે પણ ડાયો ॥ ૧૦ ॥ અગ્યારમો ડાયો

* એ સો પ્રકારના મુરખ જાણવા.

* રસ્તાની જમીન રાખીને

जेणे समर्थ सोथे कर्जियो न भचायो ते पण डायो
 ॥११॥ बारमो डायो जेणे हरि संग हेत रचायो ते पण
 डायो ॥१२॥ तेरमो डायो जे रस्ते उतरे जोडने छांयो
 ते पण डायो ॥१३॥ चौदमो डायो जे एकलो अरण्य
 मां नजायो ते पण डायो ॥१४॥ पनरमो डायो जेणे
 धणिको काम बरावरय भजायो ते पण डायो ॥१५॥
 सोलमो डायो जेणे बीजानो दुःख बुझायो ते पण
 डायो ॥१६॥ सतरमो डायो जे इंद्रियो वश करतां
 न मुंझायो ते पण डायो ॥१७॥ अठारमो डायो जे धु-
 ताथि न जाय पडायो ते पण डायो ॥१८॥ ओगणि-
 शमो डायो जे न्यायनि वातमां कोइथि न जाय
 हठायो ते पण डायो ॥ १९ ॥ विशमो डायो जे
 संसारिक सुखमां न जडायो ते पण डायो ॥ २० ॥
 एकवीशमो डायो जे तृष्णाने पुरे न तणायो ते ॥
 ॥ २१ ॥ बाविशमो डायो जेणे विजाने मोक्षनो
 मार्ग वतायो ते पण डायो ॥ २२ ॥ त्रैविशमो
 डायो जे थाय वढवेळ्य ने न जाय! धायो ते पण
 डायो ॥ २३ ॥ चोविशमो डायो जे स्त्री धनमां न
 बंधायो ते पण डायो ॥ २४ ॥ पचिशमो डायो
 जे धर्म पालतां न छपायो ते पण डायो ॥ २५ ॥
 छविशमो डायो जे सभामां वात केतां न दवायो ते
 पण डायो ॥ २६ ॥ सताविशमो डायो जेणे हरि

भक्ति विना वखत न गमायो ते पण डायो ॥ २७ ॥
 अठ्याविशमो डायो जे मान लोभना तापथि न ग-
 लायो ते पण डायो ॥ २८ ॥ ओगणत्रिशमो डा-
 यो जेणे बोधथि विजाने सुधर्ममां चलायो ते पण
 डायो ॥ २९ ॥ त्रिशमो डायो जे जमना हाथथि न
 जलायो ते पण डायो ॥ ३० ॥ एकत्रिशमो डायो जेणे
 अजाण्यो फल न खायो ते पण डायो ॥ ३१ ॥
 वत्रिशमो डायो जे स्त्रीना मोहवाणथि न वेंधायो ते
 पण डायो ॥ ३२ ॥ तेत्रिशमो डायो जेणे अभक्ष्य
 वस्तु न खायो ते पण डायो ॥ ३३ ॥ चोत्रिशमो
 डायो जेणे पोताना घरमांथि अधर्म न सायो ते पण
 डायो ॥ ३४ ॥ पात्रिशमो डायो जेणे देह आत्मा जुदो
 जणायो ते पण डायो ॥ ३५ ॥ छत्रिशमो डायो
 जे क्षत्रि थडने रणमां पाछो पग न हठायो ते पण
 डायो ॥ ३६ ॥ साडत्रिशमो डायो शिखकि वातमें
 दुःख न लगायो ते पण डायो ॥ ३७ ॥ आडत्रि-
 शमो डायो जेणे कुपात्रने दान न दिलायो ते पण
 डायो ॥ ३८ ॥ ओगणचालिशमो डायो जुठा पक्षमां
 न लेवायो ते पण डायो ॥ ३९ ॥ चालीशमो डायो जेणे
 हरी ध्यान लगायो ते पण डायो ॥ ४० ॥ दोहा ॥ चालिश
 प्रकारना डायो कया ॥ सुंदरजिये धरि आनंद ॥
 ए सुणि प्रश्न रहो ॥ स्वामि सहजानंद ॥ १ ॥

समुद्र लक्ष्मी कृष्ण

पद राग कनडो ॥ ॥ सिंधु सुता पति क्युं न

कपास हिम पाखनि शिव काम

संभारे ॥ जग ढंकन रिपु तनया पति रिपु ॥ ता-

मे तुं निशदिन चित धारे ॥ सिंधु ॥ १ ॥ जगको

मेव मोर कार्तिकस्वामि शिव काम मन

भिन्न भिन्न पति पितु अरि ॥ ताको पिता तेरो

पृथ्वि मंगल रुडुं

खेल बिगारे ॥ अवनि सुत तेरे जियेको चहे तो

इंद्र अर्जुन कृष्ण

॥ सुरपति सुत भिन्न काहे बिसारे ॥ सिंधु ॥ २ ॥

बडो अगस्त समुद्र लक्ष्मी तुलसी

मृतका सुत सुत पानकि तनया ॥ ताहि सपत्नि

चर्ण जल कमल ब्रह्मा मरिची कश्यप

सदन विचारे ॥ बारि सुत सुत सुत ताको सुत

सूर्य धर्म जम

॥ तेहि सुत सुत कींकर जख मारे ॥ सिंधु ॥ ३ ॥

कमल ब्रह्मा अधर्म पाप

जलको सुत सुत ताहि प्रष्ट सुत तेहि ॥ फल हरि

अर्जुन सुभद्रा कृष्ण

बिन कोन निवारे ॥ निद्रा जित त्रियाको बंधव ॥

ब्रह्मानंद सुखकंद हमारे ॥ भिंधु सुता पति क्युं

आकाश पंखी गरुड

न संभारे ॥ ४ ॥ पद ॥ १ ॥ ॥ नभ गति पाति

कृष्ण आसरो आकाश वायु तेज जल

पति सरनो लेरि ॥ नभ सुत सुत तेहि सुतके

अन्न भगवान

सुतकुं धर्म मूल अंतर धरिदेरि ॥ नभ०

समुद्र लक्ष्मी नारायण कमल ब्रह्मा शिव

॥ १ ॥ भिंधु सुता पति सुत सुत सुत तेहि

काम प्रीति लक्ष्मी पदार्थ राजि

सत्रुमें हे रति तेरि ॥ हरि प्रिया कारज मद मातो

सूर्य धर्म जम

॥ तम रिपु सुत चाकर सिर बैरि ॥ नभ०

अर्जुन श्रीकृष्ण *प्रद्युम्न दैत्य

॥ २ ॥ निद्रा इश सखा सुत मोयो दिति सुत

संत पोकारो स्वामिकार्तिक मोर सर्प

द्वेषि कहत तोय डेरि ॥ पटमुख वाहन भ्रख

गरुड श्रीकृष्ण चंद्रमा स्त्रि

रिपु पति तजि मन पति मुखि रखत नित नेरि

* कामदेवनो अवतार. १ कागडों बोलैछे 'का'. २ घेयोबोलैछे 'म'

१ कागडो २ घेतो

काम

॥ नभ० ॥ ३ ॥ वायस मेष सद्धकी घटना ॥
तागि

तामे लब्धव्रीत चीत केरी ॥ गिता शद्ध उलटा
करि वरतन तव ॥ ब्रह्मानंद साम रिशेरि ॥
नभ गति पति पति भरनो लेरि ॥ ४ ॥ पद ॥

पर्वत नदि समुद्र श्रीकृष्ण

॥ २ ॥ ॥ शैल सुता पति तातकुं गाये ॥ शंकर
संकर्षण श्रीकृष्ण प्रद्युमन काम

इष्ट अनुजके सुतकुं सब विधि करि ताकुं
जमुना सूर्य धर्म

विसराये ॥ शैल० ॥ १ ॥ हरिकि त्रिया तात सुत
जम गाय

अनुचर ताके हाथ कबु नही जाये ॥ सुरभि
नंदिश्वरशिव स्वामीकार्तिक मोर सर्प गरुड श्रीकृष्ण
सुत पति सुत वाहन भ्रख अरि पतिमें नित
समुद्र लक्ष्मी

लगनि लगाये ॥ शैल० ॥ २ ॥ नदि पति सुता
कमल ब्रह्मा अधर्म पाप

ताहिको आसन ॥ तेहि सुत सुत कृत चित नहि
काम मन प्रद्युमन

चाये ॥ रति पति तातहुको कृत तज्यके ॥ रति पति

कृष्ण

व्रषभानु

तात फल पाये ॥ शैल० ॥ ३ ॥ बेल रवि दौ शङ्ख

राधा कृष्ण

एक करिके तेहि ॥ तनया पति छवि उर लाये ॥
ब्रह्मानंद सोइ एक सख हे ॥ ओर सब जंजाल ब-

सूर्य

हाये ॥ शैल० ॥ ४ ॥ पद ॥ ३ ॥ ॥ तम रिपु

यमुना कृष्ण

तनया पति क्युं न गावे ॥ क्युं तेरो उलटो भयो

कमल

मन

काम

हे रमासन ॥ इंद्रि पति सुतमें लपटावे ॥ तम० ॥

काम

मन

चंद्र

शिव

नाग

॥ १ ॥ रति पति पिता पति पति भूषण ॥ ताके

गरुड कृष्ण

इंद्र अर्जुन कृष्ण

यमुना

अरि पति तुं विभरावे ॥ ओतु सुत सखा त्रिया

सूर्य

जनक मो ॥ मुख तेरि आयुष हरावे ॥ तम० ॥ २ ॥

समुद्र मोति

हंस

ब्रह्मा

अधर्म

लोभ

सिंधु सुत भक्षक पति तेहि सुत ताको मुरसो तोय

वायु

अग्नि

सोनुं

पर्वत

ब्रह्मा

भ्रमावे ॥ मारुत सखा मल मेरु मीलैतौ ॥ विधि

धर्म सेनोप

कमल

मुत मुत तेरे मन नहि आवे ॥ तम० ॥ ३ ॥ जलज

लक्ष्मी श्रीकृष्ण गरुड सर्प शिव झेर

मुता पति वाहन भ्रख पति ताको पान जगत अति

सूर्य यमुना श्रीकृष्ण सुभद्रा अर्जुन इंद्र

भावे ॥ रवी नंदनी पति भगनि पति पितु ब्रह्मानंद

अमृत

तेहि पान बहावे ॥ तम० ॥ ४ ॥ पद ॥ ४ ॥ पंच

भापानुं पद ॥ राग ललित ताल आदि ॥ मोहन

बेन बजाइ ग्रह तजी वन आई वन आई ॥ गीरधर

बंसी मुनि कानि तनकी सुधबुध भव विसरानी ॥

वरजत मात पिता नहि मानि उठचलि बेगानि बे-

गानि ॥ मोहन० ॥ १ ॥ बांन मारे मावापे मुने वारि के

छे तुं क्यां जायछे कुंवारि ॥ वन तेडि बछोडयां मो-

रारी शिवले अमारि अमारि ॥ मोहन० ॥ २ ॥ तव्य बोली

एक मरमाली माराज बात सांभलोने माली ॥ आज

हुं तो आदिसां वनमालि हट्टु लिलि करतालि करतालि

॥ मोहन० ॥ ३ ॥ भैरव काय सांगुं मी आतां कुठे नेडा

पाहतां पाहतां ॥ न जाणे कोणी जातां भाझे संगे

गातां संगे गातां ॥ मोहन० ॥ ४ ॥ प्रभुजी में तो थाकि

दासी ठाकोर हांसीमां जीवजासि ॥ प्रेम सखि कंठ

लगासि आय भिलो वनवासि वनवासि ॥ मोहन बेन

बजाइ ग्रह तजी वन आई वन आई ॥२॥

॥ अथ श्लोको ॥

॥ श्री सहजानंद महाराज हरि ॥ जाशोभां पल एक
विमरि ॥ व्रणवुं चरित्र चरणे नमि ॥ आपजो बुद्धि
ते अनुपमि ॥ १ ॥ गाप गढडुं सो भानु धाम ॥ राजा
उत्तम तेहना शाम ॥ सर्व प्रकारे भगत जाणि ॥ ते
सुं हरिने प्रित वंधाणि ॥ २ ॥ रियां तियां नित तेने
वश थई ॥ संत मंडल साथेज लई ॥ करे नित लिला
रंगे सुरमे ॥ जेमते ते हरिजनने गमे ॥ ३ ॥ ओरडा
रुडा ओसरियुं सारि ॥ तेनि छे सोभा अनंत प्रकारि
॥ तेपर सुंदर ढोलियो ढालि ॥ तलाई तकिया सहित
रुपालि ॥ ४ ॥ तेपर आविने बेमे महाराज ॥ माणिगर
महाराजाधिराज ॥ आवे दर्शने संत हरिजन ॥ जो-
ईने थाय बहु प्रसन्न ॥ ५ ॥ मूर्त्ति मनोहर नटवर वेश
॥ बांधि शिर पाग बणावि पेच ॥ छोगा कलंगि तोरा
लटकावे ॥ तेनी सोभा ते कयामां नावे ॥ ६ ॥ ओपे
उपरणि सोनेरी छेडे ॥ बाजु जडेल मुंवे मोतिडे ॥
गुळ गजरा फुलुना हार ॥ काने कुंडल तेज अंवार
॥ ७ ॥ फुल सुगंधि फोरयूं निसरे ॥ आवि भमरा
गुंजार करे ॥ कोटे उतरी मोतिनी माला ॥ हेमनां
कडां हाथे रुपालां ॥ ८ ॥ जरकासि जामो साव सोनेरी
॥ सोभा वड सारी सुरवाल केरि ॥ नाडि जरिनि

लटके बेवाडि ॥ मोति गुंथेल हाथमां छडि ॥ ९ ॥ ओढे
 दुसालो रुपालो रेठो ॥ केडये सोनेरि कमुंवि फेटो
 ॥ पगमां झांझर हेमना चोडा ॥ मोति जडेल तेना मकोडा
 ॥ १० ॥ तरत फुल्यां कमल तेवां ॥ पद पंकज बेउते
 एवां ॥ उर्दरेखामां चिन सोभित ॥ नखमणि लाल
 मोहे मन चित ॥ ११ ॥ जमणे अंगुठे नखमां चिन
 ॥ सर्व सुख कारण एन ॥ घुंटी गोलने पिंडि पातलि-
 युं ॥ भालि तेहनं भव दुख टलियुं ॥ १२ ॥ जानु
 साथल कोमलता अति ॥ कटि मनोहर सारी शोभति
 ॥ जमणि डावी साथलुं वारय ॥ चिन एककुं शोभे
 छे सार ॥ १३ ॥ पेटे त्रिवलि स्वाल्प्य घणि ॥ केतां
 ते थाके सहस्र फणि ॥ उंडि नाभिछे गोल रुपालि
 ॥ नजर नथाके तेहने भालि ॥ १४ ॥ उर विशाछ
 उपडती छाति ॥ लक्ष्मी रहे छे सदा रंगराति ॥ बे
 छाप विच्ये चिन्हमां तिल एक ॥ तेने ओले छे सुख
 अनेक ॥ १५ ॥ स्तन बेउ सुंदरता अति विचे ते
 क्षिणि केश पंगति ॥ हाथ हरिना रुपाला लागे ॥
 जाणे जोइ रइये उभलां आगे ॥ १६ ॥ रुडा रसिक
 नखमणि लाल ॥ हथेलियुं राति रेखुं रसाल ॥ कलाई
 बाजु स्वाल्प्य सारी ॥ छापना चिन्ह दिसे सुखकारी
 ॥ १७ ॥ रोम सहित एक तिल छे वांसे ॥ सुंदर
 डावा खभानि पासे ॥ कंठ रुपालो मरमालुं मुख ॥

॥ जोतां ते थाय अलौकीक सुख ॥ १८ ॥ होठ रुपा-
 ला राता रंग भिज ॥ दांत सुंदर दाडमनां बीज ॥
 गोर कपोल सारा सुंवाला ॥ वाणि मधुरि वेण रूपा-
 ला ॥ १९ ॥ नाक नमणुं अणियालि आंख्युं ॥ जायुं
 तेणे जग सुख न राख्युं ॥ श्रवण सुंदर भाल विशा-
 ल ॥ भ्रकुटि नलवट रेखामु ताल ॥ २० ॥ जमणे क-
 पोले चिन्ह छे साम ॥ डावे श्रवणे बिंदु सुखधाम ॥
 चिन्ह जमणीकोरे केश संधीपे ॥ सारी सुंदर चोटलि दीपे
 ॥ २१ ॥ भामुद्रिकयां कयां छे जेवां ॥ सर्व हरिने चिन्ह छे
 एवां ॥ कौटिक कामनी सोभा केवाये ॥ एक एक अंगने तुल्य
 न थाये ॥ २२ ॥ एवा अलवेलो महा सुखकारी ॥ जुवे जन
 साभुं स्नेह वधारी ॥ वातु करतां अमृत झरे ॥ हाथ-
 नां लटकां बहुज करे ॥ २३ ॥ छिके हसे कांई रमुज
 थिये ॥ तारे सुख आडो रुमाळ दिये ॥ हाथे रभाडे
 माला फुल फल ॥ न तो धे छेडे रुमाळने वल ॥ २४ ॥
 डाढिये हाथ दे डोक धरोडे ॥ आंगलियुं मोडि टचाका
 फोडे ॥ आंगलि हलावि जनने बोलावे ॥ बलि दांते
 सु जिम दवावे ॥ २५ ॥ हरेहरे करे धगामु खाता ॥
 चपाटि वजाडे संतसंगे गाता ॥ कथा किर्तन वात
 शुभ करी ॥ सुख आपे छे वां रित्ये हरि ॥ २६ ॥
 बलि खेस एक सुंदर पेरि ॥ वेसे उघाडा लटकाळो
 लेरि ॥ छुटां छोगलियां पेचालि पागे ॥ पुष्ट सु-

र्ति रुडि बौ लागे ॥ २७ ॥ मर्म करिने मंदमंद हसे
 ॥ अधुरभिजे अमृत वरसे ॥ हसता हसता जाये
 उतारे ॥ जन मन मोतां नेणन जरे ॥ २८ ॥ जईने
 नाय निरमल निरे ॥ अतर चोलि सुभ शरिरे ॥
 नाईने पेरे छे खेस बैताले ॥ चाखडिये चडि
 चटकंता चाले ॥ २९ ॥ ओढे पछेडि सुंदरमारि
 ॥ कान उघाडा राखे विहारि ॥ आविने जीवन ज-
 मवा बेसे ॥ पलाठि डावा पगनी करे छे ॥ ३० ॥ ते
 पर राखि डावो हाथ ॥ जभणी कुणी दई हीचणे
 नाथ ॥ जमे अलोकीक जुगीत आणि ॥ जमतां
 जमतां पिये छे पाणी ॥ ३१ ॥ चलुं करिने खाये
 ओडकार ॥ पेटे लैहाथ फेरे तेवार ॥ एलचिदा-
 णानो करे मुखवास ॥ पछे ते पुजा करे छे दास ॥
 ३२ ॥ चरचे अतर चंदन सार ॥ गजरा वाजुबंध पेरावे
 हार ॥ खोसे गुळतोरा पेचालि पागे ॥ चरण छाती-
 मां लैने पाय लागे ॥ ३३ ॥ संत जमाडवा आदरे
 आवे ॥ एक हाथ केडये एक लाडये ॥ तेई हाथमां
 लई रुमाल ॥ चाले छोगालो गजगीत चाल ॥ ३४ ॥
 खेस आड सोडे कसर कसता ॥ आवे संतोभां मंदमंद
 हसता ॥ पिरसवा संत पंगतिमां फरे ॥ ल्यो माहाराज
 लाडु गेरस्वरे करे ॥ ३५ ॥ फरता उभा खां कीर्तन
 गावे ॥ साथ ले हाथ मुठि लगावे ॥ आखो लाडु

कोये न लिये जारे ॥ अरधो लाडुल्यो एम कहे तारे ॥
 ॥ ३६ ॥ मुटिमां दावि कहे रसियो ॥ महाराजो महा
 प्रसाद लीयो ॥ बहु धरविनें बोले ते नाथ ॥ लाडु एक
 ल्यो तो मुकुं शिर हाथ ॥ ३७ ॥ दुध दर्शने हाथ्ये सुं
 घोले ॥ देतां देतां लै कोयने शरि ढोले ॥ संत जमाडि
 राजि बां थाय ॥ मंदमंद हसता पोढवा जाय ॥ ३८ ॥
 पोढिने जारे जीवन आवे ॥ सर्वे संतजनने बोलावे
 ॥ थैला नदिमां नावाने जाय ॥ जईने बेसे खल ख-
 लियाभांय ॥ ३९ ॥ शोभे खंभा मुख पाणिनि छेले
 ॥ छाति झलके हाथ हिलोले ॥ करे जलकिडा
 किर्तन संत गाय ॥ हसावे कैक आगल्य तणाय
 ॥ ४० ॥ बलि लक्ष्मी वाडिये छेलो ॥ घोडां खेलवता
 जाय अलेबलो ॥ ओटा उपस्थ जै बेसे महाराज ॥
 आवे सर्वे जन दर्शनकाज ॥ ४१ ॥ रस रित्ये सुं
 रमुज करि ॥ आपे जनने सुख बां हरि ॥ नदि वाडिये
 आवतां जातां ॥ जोवा मार्गे लोक नथि मातां ॥ ४२ ॥
 माझे नारायण नाम धुन्य करे ॥ वासे संत जन
 वचन ओचरे ॥ बहु उतावला पाडेछे तालि ॥ मुर्ति
 माणिगर लागे रूपालि ॥ ४३ ॥ ओछव आवे तारे
 सुखकारि ॥ झुले हिंडोले मुगट शिर धारि ॥ गुलाल
 गरकाव रंगनो भरियो ॥ सोभे माणिगर छेल डोल-
 रियो ॥ ४४ ॥ गुलाल गोटा हाथमां लई ॥ मारे

संतने प्रसन्न थई ॥ केशर केसु रंग बौंकरि ॥ नाखे
मनोहर पिचकारि भरि ॥ ४२ ॥ संतुने मुखे
भुंसे गुलाल ॥ नाके अतर मुंघाडे लाल ॥ भारि
वस्त्र घरेणां जन लावे ॥ पेरि मनोहर मन ललचावे
॥ ४३ ॥ एवि लिलाते अनंत अपार ॥ मारद शेष
कोये पासे नहि पार ॥ कयुं कांईकमें बुद्धि अनुसारी
॥ भाल्युं जे नजरे ते मन धारि ॥ ४७ ॥ गाय
सिखे जे कानमां धरे ॥ थाय सुखिया ते भवजल
तरे ॥ चरित्र हरिना महा सुखकारि ॥ राघवदासे
गायां उर धारि ॥ ४८ ॥ इतिश्री श्लोको संपूर्ण ॥

॥ अथ कलिजुगनो धर्म ॥ पद राग गर्वि ॥

॥ भायो सांभलो स्याणां जेन कलिजुग आव्यो जीरे
॥ जेह पांडवने श्रीकृष्णे कहि संभलाव्यो जीरे ॥
टेक ॥ ब्राह्मण क्षत्री वैश्यने शुद्र चारे वर्ण कहावे
जीरे ॥ ते सर्वे निज निज धर्म लोपि आडे मारग
जोवर ॥ कलिजुग आव्यो जीरे ॥ १ ॥ प्रथम
कलिजुगना ब्राह्मणनां लक्षण कहि संभलावुं जीरे ॥
ते केडे बिजा सर्वेना लक्षण गाई बतावुंरे ॥ कलि०
॥ २ ॥ उत्तम जाति माणस थडने करसे मदिरा
पान जीरे ॥ भैरव आदि देवने भजसे नहि भजे
भगवानरे ॥ कलि० ॥ ३ ॥ वेद विद्या अभ्यास
तजिने करसे निचनि सेवा जीरे ॥ नव्य कस्यानां

कामज करमे लाज तजी धन लेवारे ॥ कलि० ॥ ४ ॥
 गायत्री संध्या परहरमे ॥ कराषि कर्म ते करमे जीरे ॥
 ब्राह्मणी खेतर भात लेई जासे ते खाइने पेट भरसेरे ॥
 कलि० ॥ ५ ॥ माजम मफर लसण पलांडु खामे
 खांते खांतेजीरे ॥ भांग्य अफिण घुंठिने पिसे करमे
 फेल बहु भांतेरे ॥ कलि० ॥ ६ ॥ कन्याउना पैसा
 लेशे देश प्रदेश देशेजीरे ॥ शास्त्र पुराणने भणवां
 भेलि वेदां करि धन लेसेरे ॥ कलि० ॥ ७ ॥ सुरा
 आभिप मद्य भेलावि ओसड सउने देसेजीरे ॥ जि-
 भ्याना रमभां लोभाड अंयजना अन्न लेसेरे ॥ कलि०
 ॥ ८ ॥ ब्राह्मण जाति पोते थइने निच गुरु अनुसर-
 मेजीरे ॥ असत्तगुरुनो उपदेश लेइने नियम धर्म पर-
 हरमेरे ॥ कलि० ॥ ९ ॥ ब्रह्मज्ञान कथि तप तिरथ
 व्रत ध्यान भजन तजि देशेजीरे ॥ वेद पुराण हरि
 अवतार हरिनि मुर्त्ति मीथ्या केमेरे ॥ कलि० ॥ १० ॥
 चोरे चकले बेभि द्विजवर नारि कथाओ गासेजीरे
 ॥ कोमबोखनां पाणि पिसे विजाने पण पासेरे ॥
 कलि० ॥ ११ ॥ वटल्यानि आशंका भेलि चलसो पिसे
 तांणिजीरे ॥ परमेश्वरनो डर नहि राखे बोलसे मि-
 थ्या वाणिरे ॥ कलि० ॥ १२ ॥ शम दम तप शांति
 शौचादिक ए ब्राह्मणना धर्मजीरे ॥ तेनो त्याग करिने
 द्विजवर करमे कुडां कर्मरे ॥ कलि० ॥ १३ ॥ एवां

अनंत अजोग्य कर्म छे केटलांक कहि संभलावुंजीरे
 ॥ कलिना द्विजनां लक्षण केतां अंतरमांड लजावुंरे
 ॥ कलि० ॥ १४ ॥ मुरातण धिरज्य डापणने जुध-
 थकि नव्य भागेजीरे ॥ गौब्राह्मण साधु भेवामा क्षत्रि
 नित्य अनुरागेरे ॥ कलि० ॥ १५ ॥ ते सर्वे त्यागिने
 क्षत्रि करमे पाप अनेकजीरे ॥ तेमज दान पुन्य हरि
 भक्ति त्यागि देशे छेकरे ॥ कलि० ॥ १६ ॥ जीव दया
 करवी क्षत्रिने ते करमे जीव हिंसाजीरे ॥ चोरि चाडि
 खातर पाडि भेला करमे पैमारे ॥ कलि० ॥ १७ ॥
 जोडा उपर छांटो पडतां दोर नर्कमां जासेजीरे ॥
 ते दारुने क्षत्री पीसे विजाने पण पासेरे ॥ कलि०
 ॥ १८ ॥ राजा ने राजाना चाकर लांच लोकनि
 खासेजीरे ॥ जुठि जुठि साख्यो पुरि अवला न्याय
 तोलासेरे ॥ कलि० ॥ १९ ॥ चाडिया ते तो चतुर
 केवासे रुडाजन दंडासेजीरे ॥ हरामिथि भउ हारसे
 साधुजन पिडासेरे ॥ कलि० ॥ २० ॥ पाप कर्ममां
 बुड्या रेसे धर्म लेश नहि पालेजीरे ॥ सत पुरुष
 नि बात नहि माने चडसे अवले चालेरे ॥ कलि० ॥
 ॥ २१ ॥ वाणिजा आदिक वैश्य कहावे ॥ ते पण
 निज धर्म लोपि जीरे ॥ परनारि रत पापि गुरुने
 रेसे तन मन सोंपिर ॥ कलि० ॥ २२ ॥ साचा
 धर्मने खोटा केसे खोटाने सत्य गासे जीरे ॥ उत्तम

जाति नातरुं करसे नहि खपे तेनुं खासेरे ॥ कलि०
 ॥ २३ ॥ केटलांक माणस दिकरीयुंने बालपणामां हण-
 से जीरे ॥ परणाव्यानुं दाम खरच्यानि दाइये पाप
 नहि गणसेरे ॥ कलि० ॥ २४ ॥ वाणिया तेतो चो-
 रि करावसे नहि पाले धर्म लेश जीरे ॥ उपरथी तो
 रुडा राखमे वैष्णव केरा वेशेरे ॥ कलि० ॥ २५ ॥
 कुडां सांखसे काटलां घरमां लोकने ठगवा सारु
 जीरे ॥ ओळुं देशे अदकुं लेशे कोरे कर्म नठांसेरे ॥
 ॥ कलि० ॥ २६ ॥ कन्या केरुं दाम न लेवुं तेनुं
 फलछे मोटुं जीरे ॥ ते कन्याना पैसा लेसे करशे
 कर्म बहु खोटरे ॥ कलि० ॥ २७ ॥ कृष्ण नामनुं
 माहात्म गाइने छेनालां बहु करसे जीरे ॥ प्रगट
 प्रभुनि निंदा करसे असतगुरु अनुसरसेरे ॥ कलि०
 ॥ २८ ॥ केटलाक वाणिक कर्मने सत्य कहि नास्तिक
 मत अनुसरसे जीरे ॥ भवतारण भगवान तजिने
 पाप कर्म बहु करसेरे ॥ कलि० ॥ २९ ॥ तेमज
 सुद्र पण कलिजुगमां करसे निंदित कर्मजिरे ॥ दगा
 घात छलबल बहु करसे नहि पाले शुभ धर्मरे ॥
 कलि० ॥ ३० ॥ चोरिने हिंसा बहु करसे करसे
 मदिरा पान जीरे ॥ भूत भरवाडा भुवा धुणावसे
 नहि भजे भगवानरे ॥ कलि० ॥ ३१ ॥ शौंदर
 जाति माणस कावे ते गुरु थड जग फरसे जीरे ॥

एक ब्रह्मनि वातुं करमे परनारि संग करमेरे ॥
 कलि० ॥ ३२ ॥ असत पुरुष गुरु थइ जग फरसे
 कान फुंकी धन लेसे जीर ॥ वेद पुराण शास्त्र हरि
 मूर्ति सौने खोटा केसेरे ॥ कलि० ॥ ३३ ॥ अस-
 दुरुने तेना चेला सर्वे असत मारग अनुसरसे जीर
 ॥ भगनि सुता पुत्रनि नारि तेनो संग निस करसे
 रे ॥ कलि० ॥ ३४ ॥ एवा अनंत पापे जुक्त प्रा-
 णि कलिजुगमां बहु थासे जीर ॥ नारायणनुं भजन
 तजीने अन्य देवना गुण गासेरे ॥ क० ॥ ३५ ॥ सामुनि
 सिखामण बहुओ अंतरमां नहि धारे जीरे ॥ मा
 ताने बहु निस दवावसे तोये पुत्र नहि वारेरे ॥ क-
 लि० ॥ ३६ ॥ दिकरा पण बहुनि पक्ष लइने मात
 पिताने लइसे जीरे ॥ मात पिता ओसियालां थइने
 खुणे बेठां रइसेरे ॥ कलि० ॥ ३७ ॥ बांकां बांकां वेणां
 केसे सासुने बहु आविजीरे ॥ दिकरा तो जोइ राजि
 थासे मा उपर रिस लाविर ॥ कलि० ॥ ३८ ॥ साताने
 उदर दुख देतो उंवे शिर रयो झुलीजीरे ॥ पालि पो-
 षि मोटो करसे ते गुण जासे झुलीरे ॥ कलि० ॥ ३९ ॥
 सासु केरां वेणां उपर बहु वेणां बहु लावे जीरे ॥
 दिकरा सांभलि राजि थासे सासु नणादि रिसावेरे ॥ क-
 लि० ॥ ४० ॥ मर्म वचन सासु ते बहुने केसे तुं सुं लावि
 जीरे ॥ तारा बापनि छत हुं जाणुं सर्वे देउं बताविरे

॥ कलि ० ॥ ४१ ॥ लोकोनुं लुंडापणुं करतो पेट
 पराणे भरतो जीरे ॥ अन्न वस्त्रने अर्थे तारो बापतो
 बलखां करतोरे ॥ कलि ० ॥ ४२ ॥ एवां वांकां वेणां
 बहुने सामु केसे बलतां जीरे ॥ तारे बहु सामुने
 सुणाववा पतिने केसे बलतारे ॥ कलि ० ॥ ४३ ॥
 तारे पाले हुं क्यां आवि निस निस मेणां खावा-
 जीरे ॥ तारो बाप नडारो तुंने भिद आव्थो परणा
 वारे ॥ कलि ० ॥ ४४ ॥ धणिने बहु ओधोके मारसे
 परनर देखि राजिजीरे ॥ पति नारिने मिश्रामण
 देसे तेने केसे पाजिरे ॥ कलि ० ॥ ४५ ॥ परण्या
 धणिनो त्याग करिने परनर संग लपटामेजीरे ॥
 पतिव्रतानो धर्म नहि पाले एव नारियो थामेरे ॥
 कलि ० ॥ ४६ ॥ बहुने मारुं लगाडवाकाजे जेम केसे तेम
 करसे जीरे ॥ नारि वस थड काम सड करसे नफट
 थडने फरसेरे ॥ कलि ० ॥ ४७ ॥ धणियांणिनां धोसे
 वस्त्र हाथे रांधसे हालिजीरे ॥ वोन वनेवि वारणुं
 न देखे पसलि लेसे सालिरे ॥ कलि ० ॥ ४८ ॥ समरा
 सालाने त्रेवडसे भाड्युं साथे वेरजीरे ॥ वोन भां-
 णेजां धेर आवसे तो लागसे कडवां झेररे ॥ कलि ० ॥
 ४९ ॥ बालकनुं उपरालुं लेइने माइभाइ संग लडसे
 जीरे ॥ तुळपदारथ मारुं बंधव एक विजाने नडसेरे
 ॥ कलि ० ॥ ५० ॥ जति जोगी ब्रह्मचर्य सांगि पंच

विषे विख पिसे जीरे ॥ धन नारिनो संग्रह करसे हरि
 संग हेत न दिसेरे ॥ कलि० ॥ ५१ ॥ जंत्र मंत्रने दोरा
 धागा घेर घेर करता फरसेजीरे ॥ त्याग वैराग्यने
 ध्यान भजन सो त्याग करि धन हरसेरे ॥ कलि०
 ॥ ५२ ॥ सत पुरुषनो द्रोहज करसे असत संघाथे
 हेतजीरे ॥ गांजो भांग्य अफिण ने होका पिता थासे
 फजेतरे ॥ कलि० ॥ ५३ ॥ अंध गुरु तेना चेलाने
 पण धर्ममां हेत न दीमजीरे ॥ नीच गुरुनुं एढुं खासे
 चरण धोइने तेनां पिसरे ॥ कलि० ॥ ५४ ॥ एवा
 अनंत दोषे जुत कलिमां गुरुने शिष्यवहु थास्येजीरे
 ॥ विधि निषेधनो त्याग करिने एक ब्रह्ममुख गासेरे
 ॥ कलि० ॥ ५५ ॥ गितामां अर्जुनने किधुरे कृश्न
 प्रभु श्रीमुखजीरे ॥ अधर्म कलिना विंद्या मांणस
 मुजथि थासे विमुखरे ॥ कलि० ॥ ५६ ॥ तारेहुं
 प्रथविमां प्रगटिस धर्मना स्थापन सारु जीरे ॥ अधर्म
 कलीनो नाश करिने तारिश जीव हजारुरे ॥ कलि०
 ॥ ५७ ॥ करुणा करिते कृश्न कलिमां प्रगट थासे
 सुखदान जीरे ॥ हरि हरि कृश्न नाम केवासे पुरु-
 पोत्तम भगवानरे ॥ कलि० ॥ ५८ ॥ काम क्रोध
 मद लोभना त्यागि साधु करसे अपार जीरे ॥ धर्म
 ज्ञान वैराग्ये सोती भक्ति करसे विस्ताररे ॥ कलि०
 ॥ ५९ ॥ पांडवने कृश्ने काहि दाख्या ए रित्ये कलि

धर्म जीरे ॥ पांडव सुंणि हेमाले गलिया जांणि
 सगलो मर्मरे ॥ कलि० ॥ ६० ॥ संवत अठार साड-
 त्रिसे गायो कलिजुगनो महिमायजीर ॥ तेन गाय
 शिखेने सांभले तेनां अघ बलि जायरे ॥ कलि० ॥
 ॥ ६१ ॥ पांडवने कृश्वे किधुं ते सर्वे थयुं तेमजीरे
 ॥ करजोडि गोविंदराम केछे पालजो रुडां नेमरे ॥
 कलिजुग आव्योजीरे ॥ ६२ ॥ इति कलियुगना
 धर्म संपूर्ण ॥

॥ उपदेश विषे ॥ चंद्रावला ॥

॥ परनारि सुं प्रित करिछे ॥ तेने रुआ राम ॥
 माताने तो भारे मारी सुज्युं भुंइं काम ॥ सुज्युं
 भुंइं काम ते केवुं ॥ एना पित्रि स्वर्ग कंपे एवुं ॥
 कह गोविंदराम एनि मत फरिछे ॥ परनारि सुं प्रित
 करिछे ॥ तेने रुआ राम ॥ १ ॥ परनारि तो वेदमां
 वारी ॥ तजवो तेनो संग ॥ सर्प थकी बिख एमां
 अदकुं ॥ अंधो थाय भोयंग ॥ अंधो थाय भोयंग
 ते नारि ॥ ज्ञानिये तजि ते जोइ विचारि ॥ कह
 गोविंदराम न रिझे गिरधारि ॥ परनारि तो वेदमां
 वारि ॥ तजवो तेनो संग ॥ २ ॥ सर्प खायतो सु-
 खेथि खाजो ॥ तेथि रुडि लाय ॥ परनारिपर पैसा
 सन्मुख चाले महा दुख थाय ॥ चाले महा दु-
 ख थाय ते केवुं ॥ भव भटकणमां नाखे एवुं ॥

कहे गोविंदराम एथि अलगा थाजो ॥ सर्प खायतो
 सुखेथी खाजो ॥ तेथी रुडीलाय ॥ ३ ॥ पुरुष
 चाली जाय पारके घेर ॥ ते न होय साडा सोल ॥
 ॥ उधली कन्या घर न पुछे ॥ माथे न घाले
 मोड ॥ माथे न घाले मोड ते कन्या ॥ ने एक वे
 वातमां थाये अन्या ॥ कहे गोविंदराम एनुं जीवत
 थैगयुं झेर ॥ जे पुरुष चाली जाय पारकं घेर ते
 न होय साडा सोल ॥ ४ ॥ सीलवीना सोभे नै
 केदी आभुक्षण कउ एक ॥ सोले तणीतो सीलज
 सोभा जे टाणे राखे टेक ॥ टाणे राखे टेक ते केवी
 ॥ तो परत्रीयाते माता जेवी ॥ कहे गोविंदराम
 आ जीवततो वेदि ॥ सीलविना सोभे नहि केदी
 आभुक्षण कउ एक ॥ ५ ॥ पांच पाप सर्व पापथी
 भारी ते महा पाप कहेवाय ॥ ब्रह्महत्या ने चोर सोना
 नो त्रीजो जारी केवाय ॥ त्रीजो जारी ने अन्याये
 जे चाले मद्य केफी ने सोवत झाले ॥ गोविंदराम
 कहे सांभलो नरनारी ॥ पांच पाप सर्व पापथी भारी
 ॥ ते महा पाप कहेवाय ॥ ६ ॥ गाफलबंदा गर्व
 न करिये गयुं रावणनुं राज ॥ सिता हरिने सर्व
 खोयुं ॥ एवुं नै केने आज ॥ एवुं नै केने आज
 ते भाई ॥ लंकाना पतिने समुद्रनि खाई ॥ कहे
 गोविंदराम पगलुं जोइने भरिये ॥ गाफल बंदा गर्व

न करिये ॥ गयुं रावणनुं राज ॥ ७ ॥ जीव जग-
 तनो एवो डायो कथा सांभलवा जाय ॥ भांड
 भवाइ ने भुंगलां वागे ॥ सां पण तैयार थाय
 ॥ त्यां पण तैयार थाय ते जोवा ॥ बुढापणनी
 लाज खोवा ॥ कहे गोविंदराम गधेडो गंगामां
 नायो ॥ जीव जगतनो एवो डायो कथा सांभलवा
 जाय ॥ ८ ॥ गाडा उपर वोरो वेठो वाट्ये चाल्युं
 जाय ॥ मारगमां रोदा आव्या उंचा नीचुं थाय ॥
 उंचा नीचुं थाय ते गाडूं ॥ वोरानी तमे झालजो
 नाडूं ॥ कहे गोविंदराम जइ पड्यो हेठो ॥ गाडा उपर
 वोरो वेठो वाट्ये चाल्युं जाय ॥ ९ ॥ सवलुं केतां
 समझ्यो आडुं ॥ तेनी समझणमां वौ फेर ॥ गाडा उ-
 परथी पडतुं मेल्युं ॥ माथु थइ गयुं झेर ॥ माथुं
 थइ गयुं झेर ते फुटी ॥ तोय मुख मेले नई मुंठी
 ॥ कहे गोविंदराम ए वोरानुं नाडुं ॥ सवलुं केतां
 समझ्यो आडुं ॥ तेनी समझणमां वौ फेर ॥ १० ॥
 प्रथम कयुं करे नहि मननुं तेज हरिना दास ॥
 मन घडीमां मेडे चडे ने घडीमां वाढे घास ॥ घ-
 घडीमां वाढे घास ते मन ॥ तेने जाणे विवेकी
 जन ॥ कहे गोविंदराम ए लक्षण हरिजननुं ॥ प्रथम
 कयुं करे नहीं मननुं तेज हरिना दास ॥ ११ ॥
 जेदी तेदी सतसंग करसो तैयें पामसो पार ॥ सर्व

तीर्थनुं फल एछे वेदवचन निरधार ॥ वेद वचन
 नीरधार ते मानो ॥ महा प्रताप नथी कांइ छांनो ॥
 कहे गोविंदराम भवसागर तरसो ॥ जेदी तेदि स-
 तसंग करसो ॥ तैयें पामसो पार ॥ १२ ॥ काम
 क्रोध मोह मदना छक्या ॥ जीव तणाणा जाय ॥
 अनितिमां जइ आसन वाले नितिमां न दीये पाय
 ॥ नितिमां न दीये पाय ते लाजे ॥ माथे नगरां
 मोतना गाजे ॥ कहे गोविंदराम जीव बोलेछे वक्या
 ॥ काम क्रोध मद मोहना छक्या ॥ जीव तणाणा
 जाय ॥ १३ ॥ साकर मुकी राखज खाय ॥ जेम
 नानुं बाल ॥ मावतर जाणे मांदुं पडसे मुकावे
 ततकाल ॥ मुकावे ततकाल ते मावाप ॥ तेम तेम
 बालक करे संताप ॥ कहे गोविंदराम रोतुं जाय
 ॥ साकर मुकी राखज खाय जेम नानुं बाल ॥
 ॥ १४ ॥ जीव जतिमां बालक जेवा विख खावाने
 जाय ॥ हरिजन मात तात सम हेतु अहोनीश अ-
 मृत पाय ॥ अहोनिश अमृत पाय ते केवुं ॥ भव
 भटकणने टाले एवुं ॥ कहे गोविंदराम एने भुंडा
 हेवा ॥ जीव जगतना बालक जेवा ॥ १५ ॥
 त्राय त्राय करि तोभां भरसे तेनो हारे झालसे हा-
 थ ॥ करी ते करी पण फरि न करवी ॥ जीया-
 थी सुणी संतनी बात ॥ सुणि संतनी बात जे जी-

यांथी ॥ करो फेलनो सागज सांथी ॥ कहे गोविं-
 दराम त्रास सहिबनो धरसे ॥ त्राहि त्राहि करी
 तोभां भरसे तेनो हरि झालसे हाथ ॥ १६ ॥ गुना
 सामुं गोविंद न जुवे जोजन दीनज थाय ॥ अजा-
 मेल गज गुणका जेवा ते पारांगत जाय ॥ ते पारां-
 गत जाय ते जाय ॥ चार वेद गिता एम गाय ॥
 कहे गोविंदराम सांभलजो सौवे ॥ गुना सामु गो-
 विंद न जुवे ॥ जो जन दीनज थाय ॥ १७ ॥
 तमे हो डाय़ा तो डापण मुको ॥ इयां नथी
 डापणनुं काम ॥ काला घेलाना छे प्रभु ॥ समृथ सि-
 ताराम ॥ समृथ सिताराम ते केवा ॥ अधम ओधारण
 नामज एवा ॥ कहे गोविंदराम समरण कां चुको ॥
 तमे हो डाय़ा तो डापण मुको ॥ इहां नथी डापणनुं
 काम ॥ १८ ॥ प्रथम भक्ति प्रल्हादनि कैये जेणे रटवा
 मांडया राम ॥ हिरणकंश कहेदे परचो कां मुकीदे नाम ॥
 कां मुकीदे नाम ते टांणे ॥ आव्युं मोत निश्चे तुं जांणे ॥ कहे
 गोविंदराम नाम समझीने लैये ॥ प्रथम भक्ति प्रल्हा-
 दनि कैये ॥ जेणे रटवा मांडया राम ॥ १९ ॥ त्रांबि-
 यानि एक तोलडी लैये ते वगाडी वारमवार ॥ गुरु
 करिये तो केशे काला घेला एमवयो जाये संसार ॥
 एम वयो जाये संसार ते जासे ॥ पात्र एवुं कारज
 थासे ॥ कहे गोविंदराम समझु तेने कैये ॥ त्रांबियानी

एक तोलडी लइए ते वगाडी वारमवार ॥ २० ॥
 कामि क्रोधि लोभि लंपट पापि जीव पिलाय ॥ जम-
 ना किंकर जोडा मारी जमपुरिमां लइजाय ॥ जमपु-
 रिमां लइ जाय ते ज्यारे ॥ खरी खबर तो पडसे सा-
 रे ॥ कहे गोविंदराम चिचोडा संपट ॥ कामि क्रोधि
 लोभि लंपट पापि जीव पीलाय ॥ २१ ॥ साकर कैये
 मोटुं मीटुं कहुं के दिये न थाय ॥ नाम तणुं नाडु
 झालीने कैक तणाणा जाय ॥ कैक तणाणा जाय ते
 जासे ॥ पण खाधे मोटुं मीटुं थासे ॥ कहे गोविंदराम नामि
 विनानुं नाम ते डीटुं ॥ साकर कैये मोटुं मीटुं कहुं के दिये न
 थाय ॥ २२ ॥ चेतवुं होयतो चेतज्यो टांणे माथे गाजे छे
 मोत ॥ आज कालमां उठी जावुं कुटुंब कबिला सोत ॥ कु-
 टुंब कबिला सोत ते जावुं ॥ हरि भज्या विना हाड हाडय
 थावुं ॥ कहे गोविंदराम नइ उगरो नाणे ॥ चेतवुं होयतो
 चेतज्यो टांणे माथे गाजे छे मोत ॥ २३ ॥ सुली कीधीछे चोर
 ने काजे तेनो महाजनने डर नोये ॥ जो महाजन करे
 चोरनी सोबत चडे सुलीय सोये ॥ चडे सुलीय सोये
 ते चडशे ॥ खोटे संगे पेजारु पडशे ॥ कहे गोविंदराम
 न्याय बांध्यो छे महाराजे ॥ सुली कीधीछे चोरने काजे
 ॥ तेनो महाजनने डर नोये ॥ २४ ॥ गुरु करिय तो
 ज्ञानी करिये सत असतने जोई ॥ बलध लैये तो खेडी
 लैये डोबुं लैये दोई ॥ डोबुं लैये दोइ ते लइये ॥ स-

मझु नाम तेनुं कैये ॥ कहे गोविंदराम भवसागर तो
 तरिये ॥ गुरु करिय तो ज्ञानी करिय सख असखने
 जोइ ॥ २५ ॥ हरिजननि नव्य करिये *बाजी ॥
 बाजीमां बगडी जाय ॥ जुवो विचारी जादवनी जेने
 कृष्ण थया नही साय ॥ जेने कृष्ण थया नहि साय
 सर्वे कुलमां ॥ सर्वे नाम थया घडी पलमां ॥ कहे गो-
 विंदराम एमां राम नथी राजी ॥ हरिजननी नव्य
 करिय बाजी ॥ बाजीमां बगडी जाय ॥ २६ ॥ एमां
 न राखीने आकडो वावे प्रवल पाणि पाय ॥ बार
 महिना सिंच्या करे सारे फल फूल तो थाय ॥ फल
 फूल तो थाय ते केवां ॥ दीठामां तो केरी जेवां ॥
 कहे गोविंदराम स्वाद कांड केरिनो ना आवे ॥ एमान रा-
 खीन आकडो वावे ॥ २७ ॥ ज्ञान कथे जेम बलेला
 चुला चुलेयी उताख्यो पाक ॥ पाक परोणा खाई
 गया ॥ ने वांसे रईछे राख ॥ वांसें रइछे राख ते केवी
 ॥ उलटी आंख्युं फोडे एवी ॥ कहे गोविंदराम जीव
 भक्ति तो भुल्या ॥ ज्ञान कथे जेम बलेला चुला ॥ २८ ॥
 एक नाम अनेकनुं कारण जो ओलखिने लेवाय ॥
 वो नाम लइ बकता हाले मरगला स्वादे गाय ॥ म-
 रगला स्वादे गाय गुण कथि ॥ एक नामनि खबर
 नथी ॥ कहे गोविंदराम हरि नरक नीवारण ॥ एक

नाम अनेकनुं कारण ॥ २९ ॥ बकबक बोले तेने बो-
लवा दइए रति न करिये रिस ॥ ज्ञानमांय तो खोट
न आवे वधे वशा कहुं वीश ॥ वधे वशा कहुं वीश
ते न बोले ॥ अने जे बोले ते एकज तोले ॥ कहे गो-
विंदराम तेने बालक कहिये ॥ बकबक बोले तेने बो-
लवा दीये रति न करिये रिस ॥ ३० ॥ कुबुद्धिनुं नव्य
करिये कयुं ॥ कुबुद्धि करे कुसंग ते जेने ॥ एने संग
न चालीये वडेने ॥ कहे गोविंदराम हाथ राखीये हैयुं
॥ कुबुद्धिनुं नव करिये कैयुं ॥ ३१ ॥ भीखें भोयंग का-
ढीने तल झारे ॥ तेने पुजी लागे पाय ॥ ते भोयंगने
प्रगट देखे मूरख मारवा जाय ॥ मूरख मारवा जाय
ते पापी ॥ भीखे तो पुजेछे थापी ॥ कहे गोविंदराम
प्रगटने मारे ॥ भीखें भोयंग काढीने तलझारे
॥ तेने पूजी लागे पाय ॥ ३२ ॥ छाण तणो लई
सेखो करे तेने पुजी लागे पाय ॥ सेखा भाभा
रक्षा करज्यो कुलेर वेंची खाये ॥ कुलेर वेंची खाये
ते खाये ॥ प्रगटने चर्ण न जाये ॥ कहे गोविंदराम
कलीना कौतुक देखो ॥ छाण तणो लई करे सेखो
॥ तेने पुजी लागे पाये ॥ ३३ ॥ हकेथी लइये ने
हकेथी दइये ॥ हकनुं हजम थाय ॥ अण हकनो
आंनो आवेतो ॥ उलटि बरकत जाय ॥ उलटी
बरकत जाय ते कमांणि ॥ दुधनुं दुधने पाणीनुं

षाणी ॥ कहे गोविंदराम बीता हरीथी रइये ॥ हके-
 थि लइये नेहकेथी दइये ॥ हकनुं हजम थाय ॥ ३४ ॥
 मतवी नाखती दुधमां पाणी तेनि घडावी नथ ॥
 पाणी भरतां पडी गइ ॥ ते गइ खबड खत ॥ गइ
 खबड खत ते गइ पछेतो विचारी रइ ॥ कहे गोविंदराम
 पाछलथी पसताणी ॥ मतवी नाखती दुधमां पाणी
 तेनि घडावी नथ ॥ ॥ ३५ ॥ वार वरतोलुं रया करे
 एकादशी करे अभंग ॥ जु माकड ने चांचड मारे
 नही बोलीनो ढंग ॥ नही बोलीनो ढंग ते वाणी ॥
 गले नही दुध ने पाणी ॥ कहे गोविंदराम एतो
 पोलापोलुं ॥ रया करे वार वरतोलुं ॥ ३६ ॥ गाजरे
 सुं गुनो कस्यो बावले सुं मास्यो बाप ॥ दोष छे ते
 देखता नथी जेनुं लागे पाप ॥ जेनुं लागे पाप ते
 अती ॥ तेमां तो द्रढ बांधी माति ॥ कहे गोविंदराम
 ए बालकनो सनो ॥ गाजरे सुं कस्यो गुनो ॥ बा-
 वले सुं मास्यो बाप ॥ ३७ ॥ दातणमां तो दोषज
 भाले परडा उपर प्रेम ॥ एक झाडमांथी बेय थयां
 छे तेनुं करवुं केम ॥ तेनुं करवुं केम ते विचार ॥
 ए वाते नइ उतरे पार ॥ कहे गोविंदराम एनुं मन
 चडयुं छे चाले ॥ दांतणमां तो दोषज भाल ॥ परडा
 उपर प्रेम ॥ ३८ ॥ विपर करता विशेषें वरकत
 ते पाले आचार ॥ रसोइ करतां डाबो कर ते राखे

चोकानी बारय ॥ राखे चोकाथी बार ते सीद्ध
 ॥ गुदा तो रइ चोकाने मध्य ॥ कहे गोविंदराम
 जुओ एनि हरकत ॥ वीपर करतां विशेषे वरकत
 ते पाले आचार ॥ ३९ ॥ वाडामांथी वाछडुं
 छुटुं ते धोडीने धाववा जाये ॥ माता जाणिने
 मोडुं घाले पाटु पुरण खाय ॥ पाटु पूरण खाय
 ते खाय ॥ पछे बछपाल एने बतावे माय ॥
 कहे गोविंदराम ए फरे वखुटुं ॥ वाडामांथी
 वाछडुं छुटुं ॥ ते धोडीने धाववा जाय ॥ ४० ॥ के-
 नोक बाप हतो एक काणो तेनी फुटल आंख्य ॥
 तेनो पुत्र थयो देखतो तेने कहे फोडी नाख्य ॥ तेने
 कहे फोडी नाख्य ते आंख्य ॥ ने तारा बापनो ची-
 लो राख्य ॥ कहे गोविंदराम हरीनुं नाम वखाणो ॥
 केनोक बाप हतो एक काणो ॥ तेनी फुटल आंख्य
 ॥ ४१ ॥ मात पिता मोसालनुं बोलुं नर होय अथवा
 नार ॥ कृष्ण पतिनी क्रीपा न राखी ॥ चार वर्णने बार ॥
 चार वर्णने बार ते रहे छे ॥ ने वननो पथु एने वेदज कहे छे ॥
 ॥ कहे गोविंदराम क्रिपानुं मुल न खोल्युं ॥ तेने
 मात पीता मोसालनुं बोल्युं ॥ नर होय अथवा नार
 ॥ ४२ ॥ कबुद्धी सबुद्धी रयां छे आंही ॥ कबुद्धी
 करे कुसंग ॥ सबुद्धीने सतसंग ते सुझे बेयना नोखा
 रंग ॥ बेयना नोखा रंग ते ताणे ॥ ज्ञानी होय ते

બેયને જાણે ॥ કહે ગોવિંદરામ જોવા જાઓ છો
 ક્યાંહી ॥ કબુદ્ધિ સબુદ્ધિ રિયાં છે આંહી ॥ કબુદ્ધિ
 કરે કુસંગ ॥ ૪૩ ॥ પશુ ટલીને પાત્રજ થાયે નીગમ
 ચારનો સાર ॥ માહા વાયકનો મર્મજ મોટો તે પંડિતે
 નવ્ય પ્રીછાય ॥ પંડિતે નવ્ય પ્રીછાય વેદ વાળી ॥ એ
 સીક્ષા એવી કહિ વચાળી ॥ કહે ગોવિંદરામ જે સતસંગે
 જાય ॥ તે પશુ ટલીને પાત્રજ થાય ॥ એનીગમ ચારનો
 સાર ॥ ૪૪ ॥ આજ કાલમાં ઉઠી જાવું રેવું નથી રડ
 ॥ રાજા પ્રજા કેડા મોર ચાલ્યું જામે સૌ ॥ ચાલ્યું
 જામે સૌ તે જામે ॥ ને તે સ્વામ્યા જે હરિગુણ ગામે ॥
 કહે ગોવિંદરામ રચના રચી છે જુઠી ॥ આજ કાલ્યમાં
 જાઝું ઉઠી રેવું નથી રડ ॥ ૪૫ ॥ આ તન તો પાણીનો
 પરપોટો તે ક્ષણમાં થાશે સ્વેહ ॥ અંચે નામ નારાયણનું
 રહેશે ॥ નીચે ટલમે દેહ ॥ નીચે ટલમે દેહ તે ટલમે ॥
 જેમ ઢેફું ધરતીમાં ગલમે ॥ કહે ગોવિંદરામ એનો પા-
 યો છે સ્વોટો ॥ આ તન પાણીનો પરપોટો તે ક્ષણમાં
 થાશે સ્વેહ ॥ ૪૬ ॥ જેમ પારેશ્વરી પેઢીએ જાય દેશ્વા-
 ડવાને દામ ॥ સ્વરા સ્વોટાના કરે ભાગલા તે પારેશ્વરનું
 નામ ॥ તે પારેશ્વરનું નામ તે કહ્યે ॥ સાં દેશ્વાડી પૈસા
 લઈયે ॥ કહે ગોવિંદરામ તો સ્વોટ ન સ્વાઈએ ॥ જેમ પારેશ્વરી
 પેઢીએ જાઈએ ॥ દેશ્વાડવાને દામ ॥ ૪૭ ॥ ॥ અસંતનું અંગ ॥
 ॥ સંત તણે વેશે વૌ ધૃતા જગમાં ફરે અનંત ॥

तीलक माला टोपी घाली नाम धरावे संत ॥ नाम
 धरावे संतज थया ॥ काम क्रोध ने फेली ज-
 रिया ॥ कहे गोविंदराम देखता दुता ॥ संततणे
 वेशे बौ धुता ॥ जगमां फरे अनंत ॥ १ ॥ काल
 निमि रावणने राहु ए ऋण्ये लीधो भेख ॥
 कमलावरसुं कपटे रमीया तेमां नरियो एक ॥
 ॥ तेमां नरियो एक ते पापी ॥ हरिये मस्तक
 नारव्या कापी ॥ कहे गोविंदराम दिसता
 हाऊ ॥ कालनिमि रावणने राहु ॥ ए ऋण्ये
 लीधो भेख ॥ २ ॥ असंतने आदर नव करिये पु-
 रण लागे पाप ॥ तुलशीदासे राम कथामां कयुं
 छे आपोआप ॥ कयुं छे आपोआप ते कथी ॥
 एना दर्शने फलज नथी ॥ कहे गोविंदराम विख
 खाइने मरिये ॥ असंतने आदर नव करिये
 ॥ पूर्ण लागे पाप ॥ ३ ॥ कुवाडो चंदनने कापे ए
 दुष्टनि रित्य ॥ हरिहरिजननि निंदा मांडे अबुज
 आंधला भित्य ॥ अबुज आंधला भित्य ते आमें
 ॥ कस्या करमनां फल ते पामे ॥ कहे गोविंदराम
 सुगंधी उलट्री आपे ॥ कुवाडो चंदनने कापे ए
 दुष्टनि रित्य ॥ ४ ॥ भगवुं करिने स्वान भसावे ॥
 काढे संतनो वेश ॥ दमडा कारण घेरघेर डोले
 रेणि नमले लेश ॥ रेणि नमले लेश ते कैये ॥ एवा

સંતથી અલગા રૈયે ॥ કહે ગોવિંદરામ હરિ તેના
 મુપનામાં ન આવે ॥ ભગવંતુ કરિન સ્વાન ભસાવે ॥
 કાઢે સંતનો વેષ ॥ ૫ ॥ ભેશમાંડતો ભેલ
 પડી છે તે કાલિંગાનું કામ ॥ બાજિમાં રાજી થઇ
 બેઠા સાંથી ઉઠયા રામ ॥ સાંથી ઉઠયા રામ તે
 કોપી ॥ વાંસે લાજ ધર્મનિ લોપિ ॥ કહે ગોવિંદરામ
 સંત થઇને મતિ વગડી છે ॥ ભેશમાંડતો ભે-
 લ્ય પડી છે ॥ તે કાલિંગાનું કામ ॥ ૬ ॥ દ્વાપર
 સતયુગ ઠામે ત્રેતા એ ત્રણ જુગનાં દૈત્ય ॥ તે કલિ-
 યુગમાં સંત થયા છે કુટંબ કબિલા સહીત ॥ કુટંબ
 કબિલા સહીત થયા છે ॥ ધર્મ સ્વંડન કરી ડંભમાં
 રિયા છે ॥ કહે ગોવિંદરામ મોટા ગયા છે
 કેતા ॥ દ્વાપર સતયુગ ઠામે ત્રેતા એ ત્રણ જુગના
 દૈત્ય ॥ ૭ ॥ જ્યાં કામ ક્રોધને લોભ રહે છે
 એ પ્રગટ નર્કનો પંથ ॥ એ માર્ગે તો અંધા ચાલે
 પણ કેદિ ન ચાલે સંત ॥ કેદિ ન ચાલે સંત તે
 કેવા ધ્રુ પ્રલ્હાદ સનકાદિક જેવા ॥ કહે ગોવિં-
 દરામ એમ ગીતા કહે છે ॥ જ્યાં કામ ક્રોધને
 લોભજ રહેછે એ પ્રગટ નર્કનો પંથ ॥ ૮ ॥ હંસ
 વગ દીઠામાં સરસ્વા તે આર કરતાં ઓલસાવે
 ॥ હંસ કરે મોતિનો ચારો ને વગ મછને સ્વાયે
 ॥ વગ મછને સ્વાયે તે સ્વાયે ॥ સંત અસંતનો એવો

न्याये ॥ कहे गोविंदराम एनि करीये परिखा ॥
 हंसवग दीठामां सरिखा ते आर करतां ओरखाये
 ॥ ९ ॥ हंस पण श्वेतने श्वेतछे वग ए बेमां न-
 थी कोइ शाम ॥ दुध पाणिनो बेरो करी आपे
 हंस ते तेनुंज नाम ॥ हंस ते तेनुंज नाम ते कैये
 ॥ वाकी तो वगलां ओलखी लइये ॥ कहे गोविं-
 दराम जुगमां ज्ञानी छे दग हंस पण श्वेतने श्वेतछे
 वग ॥ ए बेमां नथी कोइ श्याम ॥ १० ॥ खोटि
 वातमां खासडां खाये ने गलिनी बेमे गाल्य ॥ बे
 वातनुं बानु आव्युं तेनुं जीवतव्य बाल्य ॥ तेनुं
 जीवतव्य बाल्य ते केवुं ॥ जे खरे चढीने चाले
 एवुं ॥ कहे गोविंदराम सरपाव न थाये ॥ खोटी
 वातमां खासडा खाये ने गलीनी बेमे गाल्य ॥ ११ ॥
 १ वायलने वधुथी वेगला रैये एनि लेश अडे जो
 लाल ॥ छ मैने जातां हडकवा हाले ने निश्चे आवे काल
 ॥ निश्चे आवे काल ते मरे ॥ डायो होय ते दुरथी तरे
 ॥ कहे गोविंदराम तेने नजीक न जैये ॥ वायलने वधु
 थी वेगला रैये ॥ १२ तिलक माला टिलुं ता-
 णी भगवदि धरियुं नाम ॥ एवा भगवदितो एक
 दिवसमां थाये वधुं गाम ॥ थाये वधुं गाम ते

१ जेने हडकवा हाल्यो होय तेथी अने स्त्रीथो ए बेथी वेगला
 रहीए.

सुलभ ॥ नव वश्य करवी ते दुर्लभ ॥ कहे गोविं-
 दराम वेशनि देशितो आणी ॥ तिलक माला टि-
 लुं ताणी भगवदि धरियुं नाम ॥ १३ ॥ काम क्रो-
 धने लोभनि लेरि ॥ ए त्रण्यथी तोबां त्राय ॥
 काम थकी तो कलंक लागे लोभे लक्षण जाये
 ॥ लोभे लक्षण जाये ते जासे ॥ क्रोध थकी तो
 केरज थासे ॥ कहे गोविंदराम ए त्रण्य जीवना
 बेरी ॥ काम क्रोधने लोभनि लेरी ॥ ए त्रण्यथी
 तोबां त्राय ॥ १४ ॥ वगड्यां बे बावो ने बावी
 नवरां लेछे नाम ॥ कलंक भस्यां कानज फुंकी
 कडक वगाड्यां गाम ॥ कडक वगाड्यां गाम ते
 केवां ॥ अंध गुरु तेनां चेला पण एवा ॥ कहे
 गोविंदराम गुरुनि गमतो नावी ॥ वगडां बे बावोने
 बावी नवरां ले छे नाम ॥ १५ ॥ भेखमांड भडवा
 पणुं पेठुं खोइ धरमनी लाज ॥ आगल तो कांड एवुं
 नोतुं पण एवुं मंडाणुं आज ॥ एवुं मंडाणुं आज
 से माटे ॥ काम क्रोध ने लोभ ते माटे ॥ कहे गोविं-
 दराम बदलामुं बेठुं ॥ भेखमांड भडवापणुं पेठुं ॥
 खोइ धरमनी लाज ॥ १६ ॥ भेखे अमारो मारग
 भांगी वाली लीधुं गाम ॥ जोर न चाले ने जीवाई
 भांगी को केम करिये राम ॥ को केम करीये राम
 ते अमे ॥ एने शीखामण आपो तमे ॥ कहे गोविंदराम

वेस्या रोवा लागी ॥ भेखे अमारो मारग भांगी
 वाली लीधुं गाम ॥ १७ ॥ कथे ज्ञान पण कागडा
 जेवा ए आचारे ओलखाय ॥ खीर चाखीने खुवार
 थावा करका उपर्य जाय ॥ करका उपर्य जाय
 चाली ठीक नही एनी भगती ठाली ॥ गोविंदराम
 कहे एने ओलखी लेवा ॥ कथे ज्ञान पण कागडा
 जेवा ए आचारे ओलखाय ॥ १८ ॥ एवा संतथी
 अलगा रेंये जे सतसंगे जाय ॥ एनुं नाम ते ज्ञानी
 कैये तेथी कारज थाय ॥ तेथो कारज थाय ते थामे
 नीगम तेणे कहुं वरते न्याये ॥ कहे गोविंदराम
 माहा वायक लईने ॥ असत पंथथी अलगा रेंये जे
 सतसंगे जाये ॥ १९ ॥ बग आहार ते बगडी जामे
 ते बगला मलीने खाये ॥ मोती तणो जो आहार
 हाथज आवे तो हंसनीं भुखज जाये ॥ हंसनीं भुखज
 जाय ते भागी ॥ हरिजने डेल हंसनी मागी ॥ कहे
 गोविंदराम एनी शी गति थाशे ॥ ने बग आहार
 ते बगडी जामे ते बगला मलीने खाय ॥ २० ॥
 ज्ञान विना नर पशुवत जेवा तेमां नथी कांई फेर ॥
 साखे कयुं जे सतसंग करवो ते लागे कडवुं झेर ॥
 लागे कडवुं झेर ते लागे अने मुख पंडितथी
 भागे ॥ कहे गोविंदराम गीता के एवा ॥ ज्ञान
 विना नर पशुवत जेवा तेमां नथी कांई फेर ॥ २१ ॥

परथम कैसे पैसा मेलो पछे बतावे ज्ञान ॥ एवा
 गुरुना शीश्यज थाये तेने मोटुं ज्यान ॥ तेने मोटुं
 ज्यानज थाये ॥ पामर तेने सरणे जाये ॥ कहे
 गोविंदराम पछे करे चेला ॥ प्रथम कैसे पैसा मेलो
 पछे बतावे ज्ञान ॥ २२ ॥ मोरयगुरुने वांसे चे-
 ला ते नवरा नरके जाये ॥ गुरु मरीने स्वानज सरजे
 सीम गीगोडा थाय ॥ तेना शीश गीगोडा थाय ते
 मा माटे ॥ ठगी द्रव्य लीधु ते माटे ॥ कहे गोविंदराम
 जमपुरीमां पहेला ॥ मोरयगुरुने वांसे चेला ते नवरा
 नरके जाय ॥ २३ ॥ द्रव्य हग जे गुरु होय धुता ते
 नव पामे पार ॥ अंध गुरु ने बधीर चेला बलगा एक
 बीजानी लार ॥ एक बीजानी लारे बलगा ॥ ते वेद
 वचन सुणी नव थाये अलगा ॥ कहे गोविंदराम ए
 सरजे कुत्ता ॥ धन हग जे गुरु होय धुता ते नव पामे
 पार ॥ २४ ॥ वृज भाषां ॥ बिना ज्ञान नर स्वान जात
 जंबुककी कावे ॥ वसे गीगोडा कान सुख सुपने नही
 पावे ॥ दयावंत कोइ संत नाहीकुं तोरन जावे तो सब
 स्वानकी जात उलटो काटन धावे ॥ बिना ज्ञान नर
 स्वानहे तामे फेर न जानीये ॥ कहे गोविंदराम गीता
 कहे तो सत्य वचन करी मानीये ॥ बीना ज्ञान नर स्वा-
 न जात जंबुकनी कावे ॥ २५ ॥ बीना ज्ञान नर घूर
 दीनकुं कबु न देखे ॥ कोय कहंगो सुर ताही भिथ्या

करी लेखे ॥ कुसंग कोतर मध्य जाइ परयो चारो करे
 नमूरको ॥ कहे गोविंदराम आ जगतमें बीना ज्ञान नर
 बुरको ॥ बीना ज्ञान नर घूर दीनकुं कबु न देखे ॥
 ॥ २६ ॥ घरघर घुघु बोतहे ॥ नीमप न उघडत नूर
 ॥ एक अंचभा एसा भया ॥ सनमुख देख्या मूर ॥
 सनमुख देख्या मूर कुटुंबकुं केवे कथी ॥ मूरख मनमें
 चेत ॥ मुंदलमे सुरज नथी ॥ तब घरडा घुघु बोलीया ॥
 में फीरीहुं देस अपार ॥ आज कालकी बात नही ॥
 मोय बेगे बरप हजार ॥ बेगे बरप हजार ॥ तनपर पडते
 तडका ॥ तारे चंदकी रात लगत मोटाही भडका ॥
 कहे विप्र गोविंद ॥ युं बोले मनीहीन ॥ ओही नर
 घुघु घरडा ॥ २७ ॥ इति वृज भाषा ॥ ॥ तुंवहुं पा-
 णीभां बोलिए ऊंडुं ते बारे नीसरे वाप ॥ खुणे काम
 करे जे खोटां ते प्रगट थाये पाप ॥ प्रगट थाये
 पाप ते केवुं ॥ खरे चडीने चाल्या जेवुं ॥
 कहे गोविंदराम एवुं कामले भुंडुं ॥ जेम तुंवहुं पाणीभां
 बोलीए ऊंडुं ते बारे नीसरे वाप ॥ २८ ॥
 खोटी बातने खासडा दिये तेनो राम
 न आणे रोष ॥ जो होय साची ने जुठी कहीये तेनो
 लागे दोष ॥ तेनो लागे दोष ते लागे ॥ ने जभीन
 असमानथी जायगा भागे ॥ कहे गोविंदराम साची
 एटली सांभली लैय ॥ खोटी बातने खासडां दैये

॥ तेनो राम न आणे रोष ॥ २९ ॥ संतोक दा-
मने वृष्णा झाझी टाढुं नही एनुं तन ॥ दुवारा
वारणे डोकां काढे मेलुं एनुं मंन ॥ मेलुं एनुं मंन
मा माटे ॥ तो दुवारा बार जुवे ते माटे ॥ कहे
गोविंदराम एमां राम नथी राजी ॥ जे संतोक दा-
मने वृष्णा झाझी ॥ मेलुं एनुं मंन ॥ ३० ॥ सी-
तलदास पण बलती सगडी वडवड काढे बोल ॥
॥ ज्ञानगुष्टी ते जाणे नही जाणीये भुंकयो खोल ॥
जाणीये भुंकयो खोलते खोलो ॥ ने रेणी करणीनी
कोरनो पोलो ॥ कहे गोविंदराम बाहुं पेटुं तेनुं घर
गयुं वगडी ॥ सीतलदास पण बलती सगडी वड
वड काढे बोल ॥ ३१ ॥

॥ प्रगट प्रभुना महिमा विपे ॥
प्रगट दीपनुं कारण मोटुं ते टाले अंधकार ॥ वी-
जा मंदिरमां दश दिवानी प्रगट्या वोंणी हार ॥
प्रगट्या वोंणी हार ते मेली ॥ ते अंधारुं न काढे
टेलो ॥ कहे गोविंदराम दीवो नाम कांई खोटुं
॥ प्रगट दीपनुं कारण मोटुं ते टाले अंधकार ॥ १ ॥
प्रगट होय तेदि कोय न जाणे रमापतिनी रीत
॥ हरि कृपार्थी हरिजन जाणे जगत आंधलुं भित
॥ जगत आंधलुं भित ते केवुं ॥ निंदा करवा
मांडे एवुं ॥ कहे गोविंदराम पछे तो सौ वखाणे

॥ प्रगट होय तेदी कोय न जाणे ॥ रमापतिनी
 रीत ॥ २ ॥ विधि हरनां तमे वचन विचारो म-
 हामात्म सतसंग ॥ शुक्र नारद सनकादिक मागे हर्ष
 दियो श्रीरंग ॥ हर्ष दियो श्रीरंग एम मागे ॥
 लव सतसंगथी भव दुख भागे ॥ कहे गोविंदराम
 अवसरछे सारो ॥ विधि हरनां तमे वचन विचारो
 महामात्म सतसंग ॥ ३ ॥ लवसत संगनी समता नावे
 तप तीर्थ व्रत जोग ॥ सतसंग विना साधन कर-
 वां ते सुप्रांतरना भोग ॥ सुप्रांतरना भोग ते आंमं
 ॥ सर्व साधन करि सतसंग पावे ॥ कहे गोविंदरा
 म गमे त्यां जड आवे ॥ लव सतसंगनी समता नावे ॥ ४ ॥
 समझ्या त्यांथी सतसंग करीये धरिये विमल विचार ॥ वा
 रवार उमापति मागे वेदचारनो सार ॥ वेद चारनो सारज
 कावे ॥ अन्य संगे भवपार न आवे ॥ कहे गोविंद-
 राम भुल्या नव फरिये ॥ समझ्या त्यांहांथी सतसंग
 करिये ॥ धरिये विमल विचार ॥ ५ ॥ सतसंग
 सर्वनुं आभुषण आद्य अंत ने मध्य ॥ कुसंगे करिकै
 गया बगडी ॥ जोगी जतिने सीद्ध ॥ जोगी जतिने
 सीद्ध ते केवा ॥ रावण राहुने नीधी जेवा ॥ कहे
 गोविंदराम कुसंगमां दुषण ॥ सतसंग सर्वनुं आभुषण
 ॥ आद्य अंत ने मध्य ॥ ६ ॥ नारायणनुं नामज
 मोटुं कठण कलीमां आज ॥ मान मुकी सतसंग करमे

तेनी रेसे लाज ॥ तेनी रेस लाज ते पलमां ॥ रखे
 रहेता कोइ बलमां ॥ कहे गोविंदराम अणुं तेमां नहीं
 खोटुं ॥ नारायणनुं नामज मोटुं ॥ कठण कलिमां
 आज ॥ ७ ॥ लव सतसंगनो महिमा मोटो ते जीवें
 कल्यो न जाय ॥ मनकादिक शिव सरखा मागे ते
 जस गीता गाय ॥ ते जस गीता गाय ते गाय ॥
 ने माचा संत मले ओलखाय ॥ कहे गोविंदराम
 मननो मत छे खोटो ॥ लव सतसंगनो महिमा मोटो
 ॥ ते जीवे कल्यो न जाय ॥ ८ ॥ कमलावर कृपाना
 मिथु ईस धरे अवतार ॥ अधम ओधारण मनोहर मूर्ति
 प्रगट रहे नीरधार ॥ प्रगट रहे निरधार तेहरी ॥ जुग चरिमां
 कृपा करी ॥ कहे गोविंदराम हरि दीनना बंधु ॥ कमला-
 वर कृपाना मिथु ॥ ईस धरे अतवार ॥ ९ ॥ जेदि
 वांसली वाताने गीतज गाता ॥ हरि गौधन चारवा
 जाय ॥ तेदि गांडो गोवालीयो केता ॥ हवे
 कथा करिने गाय ॥ कथा करिने गाये ते लोक ॥
 कृश कृपा थकी ओलखे कोक ॥ कहे गोविंदराम
 सर्व सुखना दाता ॥ जेदी वांसली वाता ने गीतज
 गाता ॥ १० ॥ ब्रह्मा सरखे बछने हरियां इंद्र कीधो
 कोष ॥ कहे गोकुलमां गोवालीए कयो धर्मनो
 लोप ॥ करयो धर्मनो लोप ते कैये ॥ गोप गोवालने
 बोली दैय ॥ कहे गोविंदराम कड़कनां कारज करीयां

॥ ब्रह्मा सरखे वल्लने हरीयां ॥ ११ ॥ अनंत रूपे
थया अविनाशी गौब्राह्मण प्रतिपाल ॥ ब्रह्मावल्ल हरि
गिया ज्यारे खारे प्रगट कर्यां ततकाल ॥ प्रगट
कर्यां ततकाल ते केवां ॥ जे जेवां हतां तेवां ने
तेवां ॥ कहे गोविंदराम वातुं वेदमां खाभि ॥ अनंत
रूपे थया अविनाशी ॥ १२ ॥ घरझालीने बेसी रि-
या ब्रह्माने आव्यो भार ॥ गोवाल नही आतो गो-
कुलनो पति वेदवचन निरधार ॥ वेद वचन निर-
धार ते वदे ॥ ब्रह्माये एम जाण्युं रुदे ॥ कहे गो-
विंदराम प्रभुनी पृरण दया ॥ घर झालीने बेसी
रिया ॥ ब्रह्माने आव्यो भार ॥ १३ ॥ इंद्रकहे एने
लासुं लिधुं मारो ओछव टाल्यो आज ॥ सुरपति हुं
लुं साचो ते लीधी मारी लाज ॥ लीधी मारी लाज
ते केवी ॥ जे ओछव टाली नाख्यो एवी ॥ कहे गोविं-
दराम मइ माखण खाधुं ॥ इंद्र कहे एने लासुं लीधुं
मारो ओछव टाल्यो आज ॥ १४ ॥ इंद्रे अति अभि-
मानज आणी लिधुं मेघनुं शेन ॥ गोकुलने गोवरधन
ठामे करी नाखुं लइ वेन ॥ करि नाखुं लइ वेन एक
पलमां ॥ इंद्रज बोल्यो एमज बलमां ॥ कहे गोविंदराम
मानुष मनमां जाणी ॥ इंद्रे अति अभिमानज
आणि ॥ १५ ॥ इंद्र तणो खां आंवलो भांग्यो
थाक्या वारे मेह ॥ गोप गोवाल आनंद करेछे मोदुं

आचर्ज एह ॥ मोटुं आचर्ज एह जाणी ॥ इंद्रे अंतरमां दीनता
 आणी ॥ कहे गोविंदराम पगे जइ लाग्यो ॥ इंद्रतणो आंवलो
 भांग्यो ॥ थाक्या बारे मेह ॥ १६ ॥ हरणाकंशे हाथे
 करिने मागी लीधुं मोत ॥ पामरे आवी परचो माग्यो
 ने मुवो परचा सोत ॥ मुवो परचा सोत ते पापी ॥
 ताय हरिये वैकुंड पदावि आपी ॥ कहे गोविंदराम एम
 घटे हरिने ॥ हरणाकंशे हाथे करिने मागी लीधुं मोत
 ॥ १७ ॥ कुबुद्धिनुं हुंतो करतो कयुं तियांथी हरिये झाल्यो
 हाथ ॥ तैये मत संगे हुं तो चालीने गयो ॥ तीयांथी सुणी
 संतनी वात ॥ सुणि संतनी वात ते जये ॥ मतसंगी थै
 वेढो तैये ॥ कहे गोविंदराम जेदि फुटयुं तुं हैयुं ॥ कुबुद्धि
 नुं हुं तो करतो कयुं तियांथी हरिये झाल्यो हाथ
 ॥ १८ ॥ स्वामिनारायण सुखना मिधु गोब्राह्मण प्र-
 तिपाल ॥ हरिजनना सदा हितकारी ॥ कुबुद्धी कंशना
 काल ॥ कुबुद्धी कंशना काल ते हरि ॥ जेणे श्रीना-
 रायणनी मूर्ति धरि ॥ कहे गोविंदराम हरि दीनना
 बंधु ॥ स्वामि नारायण सुखना मिधु ॥ १९ ॥ धन्य
 धन्य स्वामी मतसंग तमारो कठण कलिमां आज ॥ प-
 रिब्रह्म तमे प्रगट थइने लिधि कामनि लाज ॥ लिधि
 कामनि लाज ते केवी ॥ एनि कोय न माने रावज
 एवी ॥ कहे गोविंदराम कामे कुसंगमां कयो उतारो ॥
 धन्य धन्य स्वामी मतसंग तमारो कठण कलिमां आज

॥ २० ॥ कृष्ण कथाना जे जन रसिया ते जोगी हरि-
जन ॥ खोटामां तेनुं मन नव खुचे तेनि मात पिताने
धन्य ॥ मात पिताने धन्य से माटे ॥ हरिना गुण गाय
ते माटे ॥ कहे गोविंदराम तेना रुदियामां हरि वसिया
॥ कृष्ण कथाना जे जन रसिया ॥ २१ ॥ साचा संत-
न ओलखी लेवा जेम पारखनी पेख ॥ संत जुगल
जोयामां सरखा फरे छे घरोघर ॥ फरे छे घरोघर
ते फरे ॥ पण दाम वामथी दुरज तरे ॥ कहे गोविं-
दराम तेनी करवी मेवा ॥ संत असंतने ओलखी
लेवा जेम पारखनी पेर ॥ २२ ॥ संत सरोवर चाली
जासे ते जन सुखीया थाय ॥ अलगो रेसे तेने वांसे
अहोनीश लागी लाय ॥ अहोनीश लागी लाय ते
लागी ॥ मरे चउदलोकमाये भागी ॥ गोविंदराम
हरीना गुण गासे ॥ संत सरोवर चाली जासे ॥ ते
जन सुखीया थाय ॥ २३ ॥ जेने संत मल्या ते सर्व
सुखीया ॥ अने दुखीयो सब संसार ॥ भव भटकण-
नो रोगज लाग्यो तेनो न आवे पार ॥
॥ तेनो न आवे पार ते केदी ॥ आ जीवित ते
जाणो बेदि ॥ कहे गोविंदराम दुखी मन सुखीया ॥
जेने संत मल्या ते सर्व सुखीया अने दुखीयो सब
संसार ॥ २४ ॥ संत रीया होय खां साचुं रीयुं छे
बिजे रियुं छे जुठ ॥ संत असंतने जे न ओलखे ते

नर हैया फूट ॥ ते नर हैया फूट से माटे ॥ जे विवे-
कनी आंख्यज नइ ते माटे ॥ कहे गोविंदराम वेद
पुराण बे मलीने कयुं छे ॥ संत होय सां साच रीयुं
छे ॥ बीजे रयुं छे जुठ ॥ २५ ॥ मान सरोवर हंसज
रहे छे ने ज्यां खाडो सां बग ॥ हंस करे छे
मोतीनो चारो सां बग न मुके पग ॥ बग न मुके
पग बीचारी ॥ एछे मछतणा कहुं आहारी ॥ कहे
गोविंदराम एम गीता कहे छे ॥ मान सरोवर हंसज
रेछे ॥ न ज्यांहां खाडो सांहां बग ॥ २६ ॥ हरिजन
ने हरि होय अती वाला ॥ लीये रामनुं नाम ॥
गुण गाये गोपीनी पेर्ये तो रीझे सुंदर श्याम ॥
रीझे सुंदर साम मोरारी ॥ एवा दास तणी बलहारी
॥ गोविंदराम आठो पोर मतवाला ॥ हरिजनने तो
हरी होय वाला ॥ लीये रामनुं नाम ॥ २७ ॥

॥ ऋषि पत्नीओना विवेक विषे ॥

॥ ऋषि ब्राह्मण करताता सेवा मुखथी थईने मुन्य ॥
जज्ञशालामां वेदज केरी थाति हति धुन्य ॥ थाति
हती धुन्य ते जीयां ॥ गोवालिया जइ उभा तीयां ॥
कहे गोविंदराम गीयाता अन्न लेवा ॥ ऋषि ब्राह्मण
करताता सेवा मुखथी थईने मुन्य ॥ १ ॥ हरीए
पुछयुं अन्न कांइ लाव्या कर ठाला छे केम ॥ पाछा
आव्या ते पाडज मानो ॥ हरि अमे कुशल क्षेम ॥

आव्या कुशल क्षेम ते हरी ॥ अन्न लेवा नइ जाइये
 फरि ॥ कहे गोविंदराम उभा रइने आव्या ॥ हरिये
 पुछ्युं अन्न कांइ लाव्या कर ठाला छे केम ॥ २ ॥
 ऋषिपत्नीने हरी छे वाला इयां जइ जाचो अन्न ॥
 विलंब करोमां वेला जाओ एम बोल्या जगजीवन ॥
 एम बोल्या जगजीवन ते हरी ॥ आज क्षुधा व्यापी
 छे खरी ॥ कहे गोविंदराम नही आवो ठाला ॥ ऋषि
 पत्नीने हरी छे वाला ॥ ३ ॥ वृज भाषा ॥ कृष्ण-
 देवके काज गोवाल अन्न जाचन आये ॥ लेन चली
 रुषीनार रुषी तब मारन धाये ॥ कियो न विश्वदेव
 हजु नही भोग लगायो ॥ सब देवनको देव नंद
 जसोदाको जायो धन्य धन्य ब्रजनारकुं ले भोजन
 चली रानमें ॥ कहे गोविंदराम गोवालकी ॥ भनक
 पडी जब कानमें ॥ ४ ॥ सबदेवनको देव नंद जसो-
 दाको जायो ॥ सब देवनको देव वेद चारे भिलि
 गायो ॥ सब देवनको देव सीद्धने सुपने नावे ॥ सब
 देवनको देव बनमें धेन चरावे ॥ सो जदुपति लगमें
 जावुंगी युं कही चली रानमें ॥ कहे गोविंदराम गोवा-
 लकी भनक पडी जब कानमें ॥ ५ ॥ पतितमे परविन
 भामनी हुंछुं भोली ॥ कृश्र देवके काज सरवस
 नाखुं घोली ॥ तो क्या भोजनको भार ॥ गोवालपें
 अन्न मंगायो ॥ सब देवनको देव नंद जसोदाको

जायो ॥ सो जदुपति लगमें जाउंगी ॥ युं कही
 चली रानमें ॥ कहे गोविंदराम गोवालकी भनक
 पडी जब कानमें ॥ ६ ॥ पति तमे परबिन
 वेद बांची करी जानो ॥ नीत गीताकुं गाओ
 प्रगटकी बात न मानो ॥ प्रगट रहे परिव्रह्म मनो
 हर मुरती धारी ॥ क्रीपा विना जन कोय न जाणे
 नर ओर नारी ॥ सो क्रीपा मतसंग कीजीये ॥
 कहे गोविंदराम चतुराईकुं दुर फेंक कर दीजीये
 ॥ ७ ॥ सब देवनको देव पति कहा कहूं पोकारी
 ॥ तब रुपि मारन धाये मुखमे बोलि नारी ॥ तन
 के पति जो तमे तन तमारी पास रखो ॥ पण
 जीवके पति जदुनाथ मुख बुरी मत भांखो ॥ बात
 सही घरमें गही तजो तन एक तानमें ॥ कहे गो-
 विंदराम गोवालकी भनक पडी जब कानमें ॥ ८ ॥

इति वृज भाषाकी समाप्ति ॥

॥ शङ्ख मुणीने धोडी बायो भरी भोजनना थाल
 ॥ हैडाभां हरख घणो जे जममे नंदकुमार ॥ जम-
 मे नंदकुमार ते हरि ॥ चाली सर्व थालज भरी ॥
 कहे गोविंदराम दशो दिशथी ॥ शङ्ख मुणीने धो-
 डी बायो ॥ ९ ॥ घरमांथी नीमच्यां गोपी भरी
 भोजनना थाल ॥ गोप गोवाल मंडली वाली जे
 जममे दीन दयाल ॥ जममे दीनदयाल ते हरि ॥

॥ रुपी पतिन उपर क्रीपा करि ॥ कहे गोविंदराम पति-
नी आज्ञा लोपी ॥ घरमांथी नीमस्यां गोपी ॥ १० ॥
अमने अन्न आपीने जाओ घेर हमे कइक काम ॥
खोभरासो तो रुपी कचवामे एम बोलया सुंदरश्या
म ॥ बोलया सुंदर श्याम ते मोरारी ॥ तमे घेर
जाओ रुपियुनि नारि ॥ कहे गोविंदराम एम बो-
ल्या मुखे मावो ॥ अमने अन्न आपीने जाओ घेर
हमे कइक काम ॥ ११ ॥ कोटी काम तमपर वा-
रि नाखु सुंदर श्याम ॥ पाछां पगलां अमे नही
भरीये घेर नथि काइ काम घेर नथी काइ काम ते
हरी ॥ तमथी नथी अजाण्युं जरी ॥ कहे गोविंद-
राम बोलया रुपीनी नारि ॥ कोटि काम तम पर
वारी ॥ १२ ॥ धन्य धन्य ब्रजनी विनता एम कहे
सुंदर श्याम ॥ अम सारु अन्न लइने आव्यां तजी
ने घरनां काम तजनि घरनां कामज आव्यां ॥ भु-
धरने मन अतिसें भाव्यां ॥ कहे गोविंदराम हरिने
वाली दिनता ॥ धन्यधन्य ब्रजनी विनता ॥ एम कहे
सुंदर श्याम ॥ १३ ॥ धन्य धन्य ब्रजनी नारी जे-
णे जाण्या जगदीश ॥ पंडितना प्रिछामें नाव्या
तैयें चडावि रिश ॥ तैयें चडावि रिश ते खरी ॥ पा-
छलथी पष्टांणा फरी ॥ कहे गोविंदराम रिश्या गिरि-
धारि ॥ धन्य धन्य ब्रजनी नारी जेणे जाण्या जगदीश

॥ १४ ॥ रुषि पत्निना पगनि रजने लै चडावी शीश
 ॥ ब्रह्मा इंद्र कहे धन्य धन्य एने जे जाण्या जगदीश
 ॥ जे जाण्या जगदीश ते केवा ॥ सर्व देवता देव
 हरी एवा ॥ कहे गोविंदराम एम उपनुं अजने ॥ रुषि
 पत्निना पगनी रजने लै चडावी शीश ॥ १५ ॥ तैयें आंख
 उघडी द्विजनी घेर पवारो नारय ॥ आटली घडी अपराध
 अमारो तमे रियां छो वास्या ॥ तमे रियां छो वारय ते नारी
 ॥ तव आगल्य अमे मुख भारी ॥ कहे गोविंदराम महिमा
 सांभली चरण रजनी ॥ तैयें आंख उघडी द्विजनी
 घेर पवारो नारय ॥ १६ ॥ हजि करेछे नारिनी भेवा
 तमे जुवो विचारि आज ॥ रुषि कहेछे धन्य धन्य
 नारी तमे ओलखाव्या महाराज ॥ तमे ओलखाव्या
 महाराज ते अमने ॥ ब्रह्मरूप अमे जाण्यां तमने ॥ कहे
 गोविंदराम गंगामुत जेवा ॥ हजि करेछे नारीनी भेवा
 ॥ तमे जुवो विचारी आज ॥ १७ ॥

॥ उमा शिव संवाद ॥

॥ शिवा प्रत्ये एम शंकरे भाख्युं उमा वर मागो
 आज ॥ राम लक्ष्मण वे सितवा मारु वन आव्या महा-
 राज ॥ वन आव्या महाराज ते चाली ॥ तमे ग्रहो
 चरण रुदामां झालि ॥ कहे गोविंदराम एनी शास्त्रमां
 भाख्युं ॥ शिवा प्रत्ये एम शंकरे भाख्युं उमा वर मा-
 गो आज ॥ १ ॥ संमेवत थइ गयां मति जेवां शिवजी

बोलया ते मख ॥ पण क्रिपा विना कल्यामां नावे
 एवी हरिनी अकलगत ॥ हरिनि अकलगत ते खरि
 ॥ क्यां सिता एम बोलया वृक्षेने हरि ॥ कहे गोविंद-
 राम वचन मांभल्यां एवां ॥ तैयें संसेवन थइ गयां
 मति जेवां ॥ शिवजी बोलया ते मख ॥ २ ॥ मति के
 बोलयासु भस्मना भोगी ॥ एतो केफ तणुं सर्व काम
 ॥ दसरथ तणा ए दिकरा वेळे एक लक्ष्मण एक राम
 ॥ एक लक्ष्मण एक राम राम ते जाये ॥ तेने अमे सची-
 दानंद केम केवराये ॥ कहे गोविंदराम शिवतो सप्रथ
 जागी ॥ तेने मति कहे बोलया सुं भस्मना भो-
 गी ॥ ए केफतणुं सर्व काम ॥ ३ ॥ सतिये वेप
 सितानो लीधो ने वन गीयां तेजी वात ॥ राम कहे
 दक्षप्रजापतिनी पुत्रिं क्यां छे शिवजी तात ॥ क्यां
 छे शिवजी तात हे माता ॥ कहो अमने थाये सुखज
 माता ॥ कहे गोविंदराम देहनो पाटलो कीधो ॥ ने
 सतिये वेप सितानो लिधो ॥ ४ ॥ उमावनगां जइ
 आश्रमे आव्यां हर नम्या जोडीने हाथ ॥ आसन
 अलगुं काढीने आप्युं ॥ कहे इयां बेसो तमे मात ॥
 इयां कहे बेसो तमे मात ॥ एम कथुं सारे सतिने
 अतिसे विस्मे थयुं ॥ कहे गोविंदराम दोष उलटो
 लाव्यां ॥ उमा वनमां जइ आव्यां ॥ सारे हर नम्या
 जोडी हाथ ॥ ५ ॥ सतिये विमान सुरना देखी रुदामा

वाध्यो रोष ॥ पिताये अमपर पत्री न लेखी एवडो अमारो
 सो दोष ॥ एवडो अमारो सो दोष अति ॥ कहे गोविंदराम
 पिताने पुज्या जोग अमारो पति ॥ लाखुं खरचाय ने मुने
 न लेखी सति विमान सुरनां देखी ॥ रुदामां वाध्यो
 रोष ॥ ६ ॥ दक्ष प्रजापती तणी ए पुत्रिने माहा
 माया केवाय ॥ पिताए जज्ञनो प्रारंभ मांड्यो ने
 वण तेडयां सां जाय ॥ वण तेडयां जाय ते गियां
 ॥ आदर न आप्यो बलि भस्मथियां ॥ गोविंदराम
 कहे मुंकी नोति कंकुतरी ॥ दक्ष प्रजापति तणि
 पुत्रि माहामाया केवराये ॥ ७ ॥ भृगु नंदीने श्रापे करी
 मतवे बगडया बाप ॥ दक्षजज्ञनो भंगज किथो तेनुं
 लाग्युं पाप ॥ तेनुं लाग्युं पाप ते अति ॥ हरि प्रगटे
 मतवेयनी गति ॥ गोविंदराम कहे ए वात ते खरी ॥
 भृगु नंदीने श्रापे करी मतवे बगडया बाप ॥ ८ ॥
 साति कहे वरुं तो शंभुने वरुं ॥ ए अखील ब्रह्मांडनो
 ईश ॥ शिवजीये गिरो सत्य उच्चारी ॥ तेणे मुजने
 चडी रीस ॥ मुजने चडी रीस ते खोटी ॥ शिवतणी
 तो समझण मोटी ॥ गोविंदराम कहे बाला बीजी देह
 धरुं ॥ वरुं तो शंभुने वरुं ॥ ए अखिल ब्रह्मांडना ईश ॥ ९ ॥

॥ अलीखां पठाणना हेत विषे ॥

नंदगाम पासे ब्रसाणुं ते लक्ष्मीजीनुं गाम ॥ तेमां
 रहेता पठाण अलिखां ॥ ते भजता सुंदर श्याम ॥

भजता सुंदर श्याम ते मोरारी ॥ प्रगट मूर्ति उरमां धारी
 ॥ कहे गोविंदराम हरिना गुण वखाणुं ॥ नंदगाम
 पासै व्रपाणुं ॥ ते लक्ष्मीजीनुं गाम ॥ १ ॥ अलि-
 खां पठाण राखता सुरति ॥ श्रीविठल करता वात
 ॥ चोरामी वैश्रव ते पासै ॥ आवी वेसता साक्षात
 ॥ आवी वेसता साक्षत ते ज्यारे ॥ पोथि छुटे
 पठाण आवे त्यारे ॥ कहे गोविंदराम वचन न भुले
 उरथी ॥ अलिखां पठाण राखता सुरती ॥ श्रीविठल
 करता वात ॥ २ ॥ अलिखां पठाण एवा हुता जेने
 वाला बलभवाल ॥ श्रीविठलनी पधरामणी हुतिने
 विचमां आवी खाल ॥ विचमां आवी खाल ॥ आडी
 ॥ ने गलीमां न चाले गाडी ॥ कहे गोविंदराम सां
 लांबा थडने सुता ॥ अलिखां पठाण एवा हुता जेने
 वाला बलभवाल ॥ ३ ॥

॥ नरसी महेतानी दृढता विषे ॥

नागरी नातमां नरसीमेतो भजता सुंदर श्याम
 ॥ नागर तेनी निंदा करता मेलो मेता नाम ॥ मेलो
 मेता नाम ने माला ॥ सुं लइ वेठा खोटा चाला ॥
 कहे गोविंदराम जुनागढमां रेतो ॥ नागरी नातमां
 नरसी मेतो ॥ भजता सुंदर श्याम ॥ १ ॥ तिलक
 माला मेलो मेता ए नहि आपणुं काम ॥ शंकर शंकर

रदो मुखेथी ए नागरनुं १ नाम ॥ ए नागरनुं नाम
 केवाये ॥ २ छवीलाना गुण केष गवाये ॥ कहे
 गोविंदराम सीखामण नित्य देता ॥ तिलक माला
 भेलो भेता ए नहि आपणुं काम ॥ २ ॥ करजोडी
 भेतो नित्य केता सुणो नागरी नात्य ॥ रवि पूर्वथी
 पश्चिम उगे ॥ समुद्र मुके सात ॥ समुद्र मुके सात
 ते मुके ॥ पण भेतो तो माला न मुके ॥ कहे गो-
 विंदराम जुनागढभां रेता ॥ करजोडी भेतो नित्य केता
 सुणो नागरी नात्य ॥ ३ ॥ भेताने मामेसं दीधुं
 हरिये आप्यो हार ॥ हेत करीने हुंडी सीकारी जाणे
 सौ संभार ॥ जाणे सौ संभार ते हवे ॥ भेतो हता
 तेदी जेम तेम लवे ॥ कहे गोविंदराम भिरांनुं विख
 पीधुं ॥ भेताने मामेसं दिधुं हरिये आप्यो हार ॥ ४ ॥
 जेदि भेतो हरिगुण गाता ॥ करमां लइने ताल ॥ हरिना
 जतने संगे लइने मुखे भजता गोपाल ॥ मुखे भजता
 गोपाल ते जेदी ॥ नागर निंदा करता तेदी ॥ कहे
 गोविंदराम कोइ नजीक न जता ॥ जेदि भेतो हरिगुण
 गाता ॥ करमां लइने ताल ॥ ५ ॥ नागरतणी तो
 नात्य ठगारी ॥ नावा भेल्युं नीर ॥ करबोले तो
 श्रीफल फाटे ॥ ते केम खमे शरीर ॥ केम खमे श-

१ नागरने भजवा योग्य शिवनुं नामछे. २ श्रीकृष्ण भगवानना
 गुण गाववा नहीं.

रीर ते बाई ॥ समोवड होय तो आवुं नाई ॥ कहे
 गोविंदराम उनुं नाखुं वारी ॥ नागर तणी तो
 नात ठगारी ॥ नावा मेल्युं नीर ॥ ६ ॥ समोव-
 ण देशे सारंगपाणी मेता करो मळार ॥ मेताये तो
 राग चक्राव्यो वरस्यो अमोघ धार ॥ वरस्यो अमोघ
 धार ते टांणे ॥ ए महात्म तो हरिजन जाणे ॥ कहे
 गोविंदराम वेवाण बोल्यां एम वाणी ॥ समोवण
 देशे सारंगपाणी ॥ मेता करो मळार ॥ ७ ॥ वेवांण
 कहे में वछोह किधो ॥ मेतो तो मोटी वात ॥ मंदि-
 रमारु पावन कीधुं जोडी उभी हाथ ॥ जोडी उभी
 हाथज ज्यारे ॥ पाडोसण बोली उठी ते खारे ॥
 कहे गोविंदराम छवीले परचो दीधो ॥ वेवांण कहे
 में वछोह कीधो ॥ मेतो तो मोटी वात ॥ ८ ॥
 पाडोसणने पतित न आवी एवी नाख नागरी डांड
 ॥ तारे मेते मेह वरसाव्यो तेनी लइखा खांड ॥ ते
 नी लइखा खांड ते चली ॥ एतो माहा महिनानी
 बुठी वादली ॥ कहे गोविंदराम उलटी वढवा आ-
 वी ॥ पाडोसणने पतित न आवी एवी नाख ना-
 गरी डांड ॥ ९ ॥ नागरमेतानी किधीती निंदा ॥
 मिरांने आप्युं झेर ॥ प्रल्हादने जुवो पिताये दुब्या
 एम जक्त भक्तने वेर ॥ जक्त भक्तने वेर ते केवुं
 ॥ जुवो आद्य अंख मध्यछे एवुं ॥ कहे गोविंदराम

एक हरिने बंधा ॥ नागरे भेतानी किधिती निंधा
 ॥ १० ॥ माहा महिनानी वादली बुठी सुं भेतो
 करसे मेह ॥ सामलीये तो समोवण दीधुं पण जग
 ते न जाण्युं तेह ॥ जगते न जाण्युं तेह ते केवां ॥ ए
 पांची पडोसण कहुं जेवां ॥ कहे गोविंदराम एहैया फुटी
 ॥ जे कहे माहा महिनानी वादली बुठी सुं भेतो करसे
 मेह ॥ ११ ॥

रावणना कपट विषे ॥

सतीतो सीताजी जेवां भुल्यां देखी भेख ॥ राम गिया ज्यारे
 मृग मारवा ॥ तारे वांसे एकाएक ॥ वांसे एकाएक ते सति
 ॥ राम वांसे गिया लक्ष्मण जती ॥ कहे गोविंदरा-
 म आगलेदी भुली गयां एवां ॥ सती तो सीताजी
 जेवां ॥ भुल्यां देखी भेख ॥ १ ॥ आश्रम पुछी भले अतिथी
 आव्या धन्य धन्य भाग्य कहुं आज ॥ धन्य भाग्य कहुं आज
 के सती आण आपी गयाले लक्ष्मण जती ॥ गोविंदरा-
 म कहे सतीने विचार थयो ॥ ते भोला जोगी छुटी
 भीक्षा ज लीयो ॥ रहे अमारी लाज ॥ २ ॥ छुटी भीक्षा
 मारे अरथ न आवे सतिने थयो संताप ॥ उंवर ओलां-
 डी पग जो भीक्षा आपुं तो पुरण बेसे पाप ॥ पुरण
 बेसे पाप के सती ॥ आण आपी गयाले लक्ष्मण जती
 ॥ गोविंदराम कहे सीता वनफल लावे ॥ तो ते छुटी
 भिक्षा मारे अरथ न आवे ॥ सतीने थियो संताप ॥

३ ॥ रावण गियो ज्यारे सीतवा हरी सारे पड्युं
 रामने काम ॥ रुडी पेरथे जेने राजाने पुछ्युं खरचा-
 से अमारा दाम ॥ खरचासे अमारा दाम ने चालो
 ॥ तैये सर्व मली आप्यो उतर ठालो ॥ कहे गोविंद-
 राम पछे मेन्याज करी ॥ रावण गियो ज्यारे सीतवा
 हरि ॥ पड्युं रामने काम ॥ ४ ॥ रावणने कहे राम
 दुवाई ॥ तमे सांभलो मारी बात ॥ राम आपणा पिता
 थाये ॥ सीता आपणी मात ॥ सीता आपणी मात ते
 पापी ॥ टांगे आवो पाछा आपी ॥ कहे गोविंदराम
 बोलया विभिषण भाई ॥ रावणने कहे राम दुवाई ॥
 तमे सांभलो मारी बात ॥ ५ ॥ सीखामण नव लागी
 सारा रावणे चडावी रीस ॥ विभिषण कहे विस भुजा
 कपासे दश कपासे शीस ॥ दश कपासे शीस ते भाई
 ॥ खोटुं नहीं कहूं राम दुवाई ॥ कहे गोविंदराम पाटुं
 लेइ मारी ॥ सीखामण नव लागी मारी ॥ ६ ॥

॥ होका विपे कुंडलीया ॥

कलिजुगमां होका वाणीये धास्या ॥ भरी वजारे
 जाय ॥ १ जगतां दुभारणां मोढामां घाले तोय जराय
 न लजाय ॥ तोय जराय न लजाय ते ज्यारे ॥ धर्म
 भेली अधर्ममां धाल्या तारे ॥ कहे गोविंदराम २ क-
 लपतरुना नरिया वारया ॥ कलिजुगमां होका वाणीये

धारया ॥ १ ॥ होके राख्या हजुरी चाकर ॥ मोटा
माणसने भूप सवारमां उठतां सांभरे नीरखे एनुं रूप ॥
नीरखे एनुं रूप ते दाडी ॥ जेम पखाले छोकरीनी माडी
॥ कहे गोविंदराम होको सौनो ठाकर ॥ होके राख्या
हजुरी चाकर मोटा माणसने भूप ॥ २ ॥ देहमां पाप
तो दुंगले घाल्युं ॥ कइक बगाडया भेख ॥ बजर बावीने
करम करे जीव मरे अनेक ॥ जीव मरे अनेक ते
जाणी ॥ धुवाडा सारु करवी उंथी कमाणी ॥
कहे गोविंदराम आंधलुं थाणुं एमने एम चा-
ल्युं ॥ देहमां पापतो दुंगले घाल्युं ॥ कइक बगाडया
भेख ॥ ३ ॥ नरक तो करयुं छे व्यसनीने काजे ॥ तेनो
डायाने डर नोय ॥ डायो करे जो व्यसनीनी सोबत
॥ तो पडे नरकमां सोय ॥ पडे नरकमां सोय ते
पडे ॥ डायो देखी दूरथी डरे ॥ कहे गोविंदराम
व्यसन डायाने न छाजे ॥ नरक तो करयुं छे व्यसनी
ने काजे ॥ ४ ॥

॥ इति १. गोविंदरामकृत कविता संपूर्ण ॥

॥ अथ २. अमरचंदकृत कुंडलिया ॥

॥ होके हरि भूलावीया वटलाव्या वरण चार ॥

१ मय राम भटना नाना भाई गोविंदराम. २ अमरचंद झाला-
वाडमां गाम वहनडीना रेहेवाशी ज्ञाने दशा श्रीमाली वाणीया.

ब्राह्मण क्षत्रि वांणीया मुकायो आचार ॥ मुकाव्यो
 आचार पापमां पूरा पेठा ॥ चुहे लाल लबाड ॥ एक
 बीजानी एठा ॥ कहे कवी अमरचंद विचार करयोनहि
 लोके ॥ बटलाव्या वरण चार ॥ भुलाव्या हरी पण
 होक ॥ १ ॥ घणा भेखने भुलाव्या होक कीधी हाण
 ॥ आचार तो उठी गयो तनमां पेठी ताण ॥ तनमां पेठी
 ताण जीवने जोखम झाझुं ॥ प्रभुसुं चुटी प्रीत ॥ मु-
 रखनुं मन सां जइ वाज्युं ॥ अमरचंदके धन्य तजे
 तेना मनुषपणाने ॥ होके कीधी हाण भुलव्या भेष
 घणाने ॥ २ ॥ होको भांगने छीकणी कलिजुग केरु रूप
 ॥ मुख तेमां मोहीया मेरी मरदने भूप ॥ मेरी मरदने भूप
 अकलतो जै छे उठी ॥ भेषमां पडी बहु भूल आंख्य अंतर-
 नी फूटी ॥ कहे कवी अमरचंद धणीने थयो छे धोखो
 ॥ कलिजुग केरु रूप छीकणी भांग ने होको ॥ ३ ॥
 कलिजुग आव्यो कोपतो ॥ मास्या माझन लोक ॥
 होको आप्यो हाथमां व्यसन वीनानो कोक ॥ व्य-
 सनवीनानो कोक तेपण सुंघे चावे ॥ करो धरमनी
 वात उलटा वाद अडावे ॥ कहे कवि अमरचंद फेल
 करे मन फाव्यो ॥ मारया माझन लोक कोपतो कली-
 जुग आव्यो ॥ ४ ॥ कुडो कलिजुग आवतां भुल्या छे बहु
 भेष ॥ भांग तमाकु छीकणी अमल खाय अनेक ॥ अमल
 खाय अनेक धर्मनो ढंग न राख्यो ॥ लाज मले नइ लेश ॥

छेडो माथे नाख्यो ॥ कहे कवि अमरचंद ॥ धरमतो चूक्या
रुडो ॥ भुल्याछे बहु भेष आवतां कलीजुग कुडो ॥ ५ ॥ भेष
सरव भूला पड्या ॥ वांसे भुला लोक ॥ विषे व्यसन व-
लग्यां घणां ॥ फांफां मारे फोक ॥ फांफां मारे फो-
क ज्ञान लइ उंधुं आप्युं ॥ पांढे पाणी पाय मुल
लइ मैथी काप्युं ॥ कहे अमरचंद नइ कांइ मीन के
मेख ॥ वांसे भूल्या लोक पड्या सौ भुला भेष ॥ ६ ॥
प्रभु वशे आ देहमां उत्तम जोइ त्रण ठाम ॥ हृदय
कपाल ने मुख छे ते धणी रेवानां धाम ॥ धणी रेवानां
धाम तमाकु तां लइ घाली ॥ हरी खेखेरी हाथ सांथी
निकल्या चाली ॥ कहे कवि अमरचंद काम ने क्रोध
ठस्या छे ॥ उत्तम जोइ त्रण ठाम प्रभु आ देहमां
वस्या छे ॥ ७ ॥ व्यसन बलुंधो जीवडो प्रभुमु त्रुटी
प्रीत ॥ पड्यो जीव जम जालमां रै नै रुडी रीत ॥
रहि नहि रुडी रीत पापमां पूरो बलग्यो ॥ करमे म-
ल्यो कुमंग हरीथी राख्यो अलगो ॥ कहे कवि अम-
रचंद विचारी जुवो विबुधो ॥ प्रभुमु त्रुटी प्रीत ॥
जीवडो व्यसन बलुंधो ॥ ८ ॥ छटके ताणे छीकणी
मुख भुल्यो मरम ॥ अकुटीमां भगवान छे सां
सौ केछे करम ॥ सां सौ केछे करम ॥ तमाकु
सां लइ घाली ॥ भाग्या छे भगवान करम पण
नीकलां चाली ॥ कहे कवि अमरचंद जीवडो भांमे

भटके ॥ मूरख भूल्यो मरम ॥ छीकणीं ताणे छटके
 ॥ ९ ॥ खाय वजर बीडी पीये ॥ होको लीथो हाथ ॥
 छटके ताणे छीकणी चाल्यो नरकनो साथ ॥ चाल्यो
 नरकनो साथ आदरी करीया उंधी ॥ कयुं न माने
 केण वली हवे एनी बुधी ॥ कहे कवि अमरचंद नवरां
 ए नरके जाये ॥ होको लीथो हाथ ॥ बीडीने वजर
 जे खाये ॥ १० ॥ हरिजन थइ होको पीये ॥ धीक
 पड्यो अवतार ॥ खाय तमाकु छीकणी मरी जनेता
 भार ॥ ॥ मरी जनेता भार विचारी कांड न
 जोव ॥ गुण न लवलेश काचभां कंचन खोवे ॥
 कहे कवि अमरचंद दे छे भेणां दुरीजन ॥ धीक पड्यो
 अवतार पीये होको थइ हरीजन ॥ ११ ॥ कोय मुंघे छे
 छीकणी कोय तमाकु खाय ॥ कोय बेठो बीडी पीये
 कोय होको मुखभांय ॥ कोय होको मुखभांय कोय
 अमलने लेवे ॥ कोय लीलागर भांग व्यसन मरवेने
 सेव ॥ कहे कवि अमरचंद एनी ते शी गत होये ॥ कोय
 तमाकु खाय छीकणी मुंघे कोये ॥ १२ ॥ खावा मांडी खु-
 टले भुंडा बोली भांग ॥ वटल्या ब्राह्मण वाणीया अंतर
 लागी आग ॥ अंतर लागी आग विचारी जो कोई
 जोवे मुंघो मनुषा देह खबर विनानो खोवे ॥ कहे
 कवि अमरचंद नरकमां बेठा ए जावा ॥ भुंडा बो-
 ली भांग खुटले मांडी खावा ॥ १३ ॥ मोटुं भुंडुं

महरके खुब लघुनी खाल ॥ मुख नर माने नही
 ॥ कहीये तो चडावे काल ॥ कहिये तो चडावे काल आद-
 री करीया उंथी ॥ कयुं न माने केण बलीरे हवे एनी बुधी
 ॥ कहे कवि अमरचंद मीद दुख ल्योछो डोदुं ॥ खुब ल-
 घुनी खाल महरके भुंडुं मोदुं ॥ १४ ॥ एवो अध-
 रम जोइने करी महाराजे मेर ॥ अक्की उपर आ-
 वीआ भक्ति धर्मने घेर ॥ भक्ति धर्मने घेर ॥ अक्षर-
 थी आव्या स्वामी ॥ थाप्यो धरम करी ठीक ॥
 कांइ नव राखी खामी ॥ कहे कवि अमरचंद अ-
 लोकीक लावो लेवो ॥ करी महाराजे मेर जोइने
 अधरम एवो ॥ १५ ॥ पेलुं पाप मुकावीयुं वरता-
 व्यां वरतमान ॥ दीनबंधु दया करी दीधुं दरशन
 दान ॥ दीधुं दरशन दान मुखने मन नहीं भा-
 व्युं ॥ हता हरिना जन फावतुं तेने फाव्युं ॥ कहे
 कवि अमरचंद मोक्ष तो देवा वेलुं ॥ वरताव्यां वर-
 तमान पाप मुकाव्युं पेलुं ॥ १६ ॥ जेणे हरिने
 जाणीया तेणे तजीयुं पाप ॥ होको भांगने छीकणी
 अमल न लेवे आप ॥ अमल न लेवे आप व्यस-
 नथी वेगला रेवे ॥ लसण डुंगली सोत ॥ तरत ते
 पण तजी देवे ॥ कहे कवि अमरचंद चडे नही
 बीजे वेने ॥ तेणे तजीयुं पाप जाणीया हरीन जे-
 ने ॥ १७ ॥ साचो सतमंग जो मले थाय प्रभुनी

मेर ॥ अजाण नरने आवडे प्रभु भजवानी पेर ॥ प्र-
भु भजवानी पेर जीवमां जाणे सारी ॥ करे नहीं कुसंग
धर्मव्रत राखे धारी ॥ कहे कवि अमरचंद पले नहीं कबुये
काचे ॥ थाय प्रभुनी मेर मलेजो-सतसंग साचो ॥१८॥

१. नानजीकृत कुंडलियां

होकेतो हिणुं कर्तुं ॥ वटलाव्यो संसार ॥ फीट फी-
ट कहे मुख उपरे ॥ एठी चुमे लाल ॥ एठी चुमे लाल
धरमतो चाल्यो कोपी ॥ कुण उंच कुण नीच वेद मरजा-
दा लोपी ॥ द्रग देखी नानो कहे ए कलिजुग विस्तार
॥ होकेतो हिणुं कर्तुं वटलाव्यो संसार ॥ १ ॥ बीडीथी
वगड्या घणा ॥ केतां नावे पार ॥ ब्राह्मण वाणीआ
सौपीये ॥ पीये यवन चंडाल ॥ पीये यवन चंडाल ॥ म
न माने तेम चाले ॥ ॥ बीडी बनावे नीच ॥ बगर
धोइ मुखमां घाले ॥ द्रग देखी नानो कहे ॥ ए
कलिजुगनो वेवार ॥ बीडीथी वगड्या घणा ॥ केतां
नावे पार ॥ २ ॥ तमाकु मुखमां गरी तियांथी उठ्या
राम ॥ मुख दीसे लजामणुं ने थुकी बगाडे ठाम ॥ थुकी
बगाडे ठाम एज अवलुं केवाय ॥ बगर धोयेली भांग ॥
मोटा पंडित लेइ खाया ॥ द्रग देखी नानो कहे ए कलिजुग
नुं कामा ॥ तमाकु मुखमां गरी ॥ तियांथी उठ्या राम ॥ ३ ॥
अफीणथी उठी गया ॥ कइक सेठ सौकार ॥ राजा ते

१ कच्छमां गाम तेराना रहेवाशी ज्ञाने सुतार.

डुली गया विकट थयो वहेवार ॥ विकट थयो वहेवार
 अमल बीना घडी न चले ॥ तारे सांती थाय ॥
 ज्यारे लइ मुखमां घाले ॥ द्रग देखी नानो कहे ए
 कलिजुगनो परिवार ॥ अफीणथी उठी गया कइक
 सेठ सहकार ॥ ४ ॥ लइ नकारी छीकणी ते मुंघे छे
 नरवाम ॥ मुखनी सोभा नाकछे तेज बगाडे ठाम ॥
 तेज बगाडे ठाम १ गटरथी भुंडुं लागे ॥ धरम रह्यो
 नहि लेश ॥ नीच पासथी मागे ॥ द्रग देखी नानो
 कहे ॥ ए नहि हरिजननुं काम ॥ लइ नकारी छीकणी
 ॥ मुंघेछे नरवाम ॥ ५ ॥ रह्या व्यसनथी बेगला ते
 जाणो हरिदास ॥ भंपत तेना सदनमां रहे करी
 नित वाम ॥ रहे करी नित वाम विपत पास नहि
 आवे ॥ दया रहे मनमांय धरम अंतरमां भावे ॥ द्रग
 देखी नानो कहे कलिजुग नावे पास ॥ रह्या व्यस-
 नथी बेगला ते जाणो हरिदास ॥ ६ ॥ ॥ साखी ॥
 ॥ विमुखेकरे वदनमें ॥ कृष्ण कथा श्रुतिमार ॥ हरि
 जन कबहुना सुनो ॥ एहि अनन्य निरधार ॥ १ ॥
 विमुखेकरे वदनमें नीकसे बेन बटलाय ॥ ज्युं दारुके
 पात्रमें ॥ सु गंगाजल अमडाय ॥ २ ॥ विमुख सो
 सद्ग्रंथके ॥ उलटा बतावत ग्यान ॥ करत पाप सो
 नां डरे ॥ आप होत भगवान ॥ ३ ॥ विमुख मुंघत

१ सहरमां गंदकी नाखवानी जगा तेने गटर कहे छे.

छीकणी ॥ ओर तमाकु खात ॥ बदन लघुकी खाल
 सम ॥ वोत तेहि गंधात ॥ ४ ॥ विमुख सो जाने
 नही ॥ हरि गीताकी रीत ॥ बुद्धिहीन सो बावरे ॥
 थुकी बिगाडत भीत ॥ ५ ॥ विमुख जब मांदा पडे
 ॥ तब नित वैद्य घर जात ॥ नीच उंचकुं ना गिने ॥
 सो सबकुं दारु पात ॥ ६ ॥ विमुख खात *वघायणी
 ॥ करत शाकमें स्वाद ॥ धरम मरम समझे नही
 विरुध शास्त्रमें वाद ॥ ७ ॥ विमुख विधवाकुं अडे ॥
 रखत नही उर त्राम ॥ के नानो एह अधर्मकुं ॥ जा-
 नत सो हरिदास ॥ ८ ॥ हरिजन बिन विमुख सबे ॥
 भरे व्यसन भरपूर ॥ धर्महीनके संगमें ॥ रहिये नि-
 रंतर दूर ॥ ९ ॥ *होकामें हस्या घणी ॥ मांही वशि-
 यो विटाल ॥ चोखे मुंढे चाखवी ॥ लाखुं माणसनी
 लाल ॥ १० ॥

॥ *रूपसी भाई कृत विचार विलास ॥ साखी ॥

॥ श्री स्वामि सहजानंदजी सर्वे अवतारनुं कारण
 ॥ अवनी उपर ओधारवा ॥ प्रगट्या तारण तरण ॥
 ॥ १ ॥ संभारे मुख उपजे ॥ दुखतो नाख्यां वामी ॥ कली
 मध्य कृपानाथ ॥ धरम थाप्यो स्वामी ॥ २ ॥ स्वाभी-
 नारायणना चमतकारनी बात करेछे वाणीयो ॥ मुख
 ने तो मनाय नही ॥ भइ सतसंगी मुख माणीयो ॥

* हांग. * क्षेपक. * सोरठमां गाम देरडीना वाणीया.

॥ ३ ॥ श्री पुरुषोत्तमनी पूरण कृपा ॥ सौने माथे
 सरखी तेमां सतसंगीने समु पड्युं ॥ ते जेणे जोया
 निरखी ॥ ४ ॥ बीजा लाख खरचे मर रूपीया ॥ शास्त्र भणे
 मरसो ॥ प्रगट प्रभुनी ओलखाण विना ॥ टले नही
 जमनो भो ॥ ५ ॥ माटे सरवे तीरथना तीरथ स्वामी
 ॥ सर्व देवना देव ॥ मोटा भाग्य ए मनुपना ॥ जेणे
 ओलख्या ततखेव ॥ ६ ॥ ईश्वर इच्छायें वात उपनीछे
 ॥ सुख बीचार थयो छतो ॥ जोग साधनमां जाणतो
 नोतो ॥ हुं तो घेर बेठो हतो ॥ ७ ॥ कृपानाथे कृपा
 कीथी ॥ ने पूरवनी प्रीती फली ॥ नीगमने अगम
 वस्तु ॥ मुने घेर बेठा मली ॥ ८ ॥ माटे *मयल चारे
 वेदनूं मारे हारद आव्युं हाथ ॥ महाराज करे ज्यारे
 भेरवानी तारे जोता नथी जात ॥ ९ ॥ जात भात ए
 जोता नथी ॥ एतो भेर करे छे मतमां ॥ जोगी जती
 ने जडे नहीं ॥ मरने तप करे जड वनमां ॥ १० ॥ ने
 वनमां जडने वनफल खाय ॥ ने जोग लडमर जाणे
 ॥ वाणीओ के वात अलोकीकछे ॥ ते अमने प्रगट
 मली छे वाणे ॥ ११ ॥ कालनी बीके कृपानाथ हुं ॥
 आसरे तमारे आव्यो छुं ॥ भवसागरमां भटकी भटकी
 ॥ हवेतो हुं कायोछुं ॥ १२ ॥ काल मायानुं कारण

* हे सज्जन, चार वेदनूं हारद जे भगवान ते मने प्रगट
 मल्या.

मोटुं ॥ तेनी बीक बहु लागेछे ॥ पण स्वामीनारायणने
 चरणे जाय ॥ तेनेथी छेटे भागेछे ॥ १३ ॥ ने अमारा
 जे अवगुण छे ॥ ते तो तमे जाणेछो ॥ आगे तमे अ-
 धम ओधारया ते क्यां हिये आणेछो ॥ १४ ॥
 संवत अठारने सत्तोत्तराने ॥ जठ महीनामां मल्या
 ॥ पण संतना समागमथी ॥ में तो मांडकल्या ॥ १५ ॥
 आटला दिन तो ओलखाण नै ॥ पण हवे थयुं छे
 जाण ॥ तारे परमेश्वरनां प्रतापनां ॥ वांणीओ करे
 छे वखाण ॥ १६ ॥ के जमपुरीमां जातो हतो ॥ ते
 लेने चरणे राख्यो ॥ चोरामनीनो लुटको कस्यो ॥ ते
 न्याल करी नाख्यो ॥ १७ ॥ अने भूत पत्नीतनो भे
 लागतो ॥ हतो देवदेवीनो डारो ॥ सुं वालीडानां व-
 खाण करुं ॥ जे ओलखाव्यो पांचमां आरो ॥ १८ ॥
 बां परकारनी बीक हती ॥ तेनां अमारी टाली ॥ मन
 भमतुंतुं भोकलुं ते वाले लीधुं वाली ॥ १९ ॥ पां-
 च इंद्रीने छहुं मन ॥ ज्यां गम त्यां जातुं ॥ पण स्वा-
 मीनारायणना साधु मल्या ॥ ते करी वीगत सोती
 वातुं ॥ २० ॥ एवी वातुं सांभलीन ॥ वालाजी भ्रम
 ना भागी छे ॥ अविनाशी ओलखावी दीधा ॥ ते-
 मारे नीरमे नोबत वागी छे ॥ २१ ॥ आ कलिजुगमा
 आवा प्रभु ॥ भाग्यवालाने भेट ॥ त्रण जुगमां तप
 करता ॥ तोय रेता छेटे ॥ २२ ॥ गमा अवतारमां रघु-

नाथजीने ॥ केणे परभु जाण्या ॥ पण जातनां हतां
 जनावर ॥ ते भेलां सुख माण्यां ॥ २३ ॥ कृष्णा
 अवतारमां कृष्णजी ते ॥ गोप गोवाळने गम्या अ-
 गियार वर्षने ॥ बावन दीन ॥ गोकुल मध्ये रम्या ॥
 ॥ २४ ॥ तेमां केवां केवां कारज कस्यां ॥ पण जरा
 संधे नथी जाण्युं ॥ कुमत आवी कंसने ते मुआ
 लगी ताण्युं ॥ २५ ॥ शिशुपालने सुं मुड्युं ॥ ते
 सो दीधी गाल्युं ॥ चक्र मुकी मीस काण्युं ॥ ते भ-
 री सभाये भाल्युं ॥ २६ ॥ एवी रीतनुं अज्ञानछे
 ॥ ते पोतानुं काढ्युं जाय नही ॥ साचा संतने से-
 व्या वीना ॥ अंतर चोरुं थाय नही ॥ २७ ॥ प्रगट
 स्वामी सहजानंदजी ॥ छे तो चौद लोकना पती
 ॥ वांणीया तो घणी वातुं सांभले ॥ पण मानवा
 दे नही जती ॥ २८ ॥ अने वाणीयानेतो वांक
 नथी ॥ ए तो घणाय भजन करे ॥ पण आंढो जाय
 ज्यारे अपासरे ॥ तारे जती मने करे ॥ २९ ॥
 वांणीयाने वात मनइ गइ ने वात उतरी गेले
 ॥ चालें हवे सतवंग करिये ॥ आभां दीनै बले
 ॥ ३० ॥ तोय वांणीयो विचारो विचार करीने
 ॥ पूजन जडने पृछे ॥ आ कलिजुगमां आम कहे
 छे ॥ आ स्वामीनारायण ते सुं छे ॥ ३१ ॥ एनी वात
 काइ कल्यामां ना आवी ॥ परबोध आपे छे बौ ॥

बांणीया ब्राह्मण वश करया ॥ ने काठीमां ने सौ
 ॥ ३२ ॥ अने वली पापी हता एनां पाप मुकाव्यां
 ॥ मुखने आपी छे मती ॥ तेनो अमने तपास करीने
 ॥ उतर आपोने हे जती ॥ ३३ ॥ सांभलो भइ सावको
 ॥ एम जती बोलया जाणी ॥ तमे बात जाणो नही ॥
 सांभलो मारी बांणी ॥ ३४ ॥ धरम तो एनों धज
 राज छे ॥ रीत भात पण साची ॥ पण एने परभु
 करीने पुजे छे ॥ ए बात काची ॥ ३५ ॥ अने आ
 कलजुगमां ॥ कल्याण थाय नही ॥ तमने केम
 भ्रमना लागी भइ ॥ सावक थइने सुं पुछोछो ॥
 आवता जवने आंहीने आंइ ॥ ३६ ॥ वली एनी
 पासे उपासना एवी मोटी छे ॥ मले तेने मुके नही
 ने जीव खां बलगी रहे ॥ ३७ ॥ हवे बाणीयानो
 उत्तर ॥ एवो पुजे पाछो कस्यो ॥ बाणीए बात
 सांभलीने ॥ पाछो विचार करयो ॥ ३८ ॥ हवे
 बाणीयानी विनति ॥ सांभलो तमे जति ॥ बात तो
 मुने बेली मली छे ॥ पण हवे करुंछुं छती ॥ ३९ ॥
 आटला दिवस अमे जाणता ॥ जे पुज हसे कांइ
 डायो ॥ करम आडे कांइ मुझे नही ॥ अमे तो हवे
 काया ॥ ४० ॥ शास्त्रमां तमे समझो नही ॥ ने
 वेदनुं करोछो वारुं ॥ नाया धोयानी ना पाडो तारे
 ॥ सी रीते थाय सारुं ॥ ४१ ॥ अने रुडी थयानी

रीत हती ॥ तेतो अमारी टाली ॥ सावकने समकीत
 आप्युं ॥ तेतो सपटीयाली वाली ॥ ४२ ॥ बधाए
 मारण बंध करया ॥ हवे वात क्यांथी जडसे ॥ वां-
 णीयाने तो विश्वास छे ॥ पण गोरजीने नडसे ॥ ४३ ॥
 वाणीयो पुजने पगे लाग्यो ॥ अमे तमने रीतनो
 रोडलो देसुं ॥ पण हवे अमे हाथ जोडीने ॥ स्वामी-
 नारायण केसुं ॥ ४४ ॥ ने तमारे जो त्रेवड होयतो
 ल्यो अमारां पाप ॥ एवुं बलतो एने छे ॥ जेने
 प्रगटनो प्रताप ॥ ४५ ॥ माटे राजी थडने रजा आपो
 ॥ अमे सतसंग करीये टांणे ॥ आ रस अलपांणा
 पछी ॥ नही मले केदी नांणे ॥ ४६ ॥ तमे अमने
 मभाग पडकमणुं सीखव्युं ॥ अमे नोकार गणता
 बली ॥ गया स्वामीनारायणने चरणे ॥ तारे
 पाप गयां बली ॥ ४७ ॥ वाणीयोके माल वाणे
 पडयो छे ॥ अमे लेखुं गण्युं आज राखे ॥ माल सवारे
 मीढव्यो ॥ तारे अमारे आव्युं छे धातें ॥ ४८ ॥
 अने भाल्या वीनानी भगती करीने ॥ कै जगाए
 जावुं ॥ अटकलना फातीआमां ते सुं चोलीने खावुं
 ॥ ४९ ॥ तमारा जैन धरममां ॥ झीणा जीवनी
 ओलखाण छे बहु झाझी ॥ देव तीरथ मानो नही ॥
 तारे प्रभु केम थासे राजी ॥ ५० ॥ तमे पोताना
 मतनी बात करो ॥ ने बीजानो नही भार ॥ करीया

तो कै पालोछो ॥ पण कल्याण थयानी वार ॥ ५१ ॥
 जतीतो एम जाणेछे आ कळिजुगमां ॥ प्रभु कयांथी ॥
 प्रीतमजीतो प्रगट रहे छे ॥ कयां जाओ तरस्या
 गंगामांथी ॥ ५२ ॥ स्वामीनारायणनी सामरथी ते
 तमे नथी भाळी ॥ लाखों माणसनी एक रीतने ॥
 सौने लीधां वाली ॥ ५३ ॥ स्वामीनारायणने चरणे
 जइने ॥ मुख डाय थायछे ॥ आ कळिजुगमां
 काठी कोळी ॥ तेपण गीता गायछे ॥ ५४ ॥ स्वामी
 नारायणने चरणे जेने ॥ नीम धरम नकी पाळेछे
 ॥ आ जगतमां जम फरेछे ॥ तेने नजरे भाळे छे
 ॥ ५५ ॥ अमदावादमां जगा आपी ॥ तेमां भूतरेतां
 बहु भारे ॥ स्वामीनारायण जइने वस्या ॥ तारे भूत
 वस्यां जइ वारे ॥ ५६ ॥ चरोतरमां छतरायो ॥
 जोवन पगीछे ॥ धोले दाडे धाडां चाले ॥ ने छोकरुं
 छानुं रहे ॥ ५७ ॥ एवाने वाले वस करया ॥ ते
 आवीने चरणे रयो ॥ मोटे परचो महाराजने ते ॥
 गुजरात मध्ये थयो ॥ ५८ ॥ एम स्वामीनारायणनी
 वात तो ॥ थइछे चौदलोकमां छनी ॥ पछे तो घणा
 पस्तासे ॥ पण हमणे नै माने जती ॥ ५९ ॥

॥ तुलसीदास कृत सवैया ॥

॥ पढिवेद पुरान कुराननकुं ॥ अपने अपन
 मत तानतहे ॥ बुद्धिके बलसें छलछिद्र करे ॥ बहु

अर्थ विचारी सु आनतहे ॥ चितकि व्रति डोलत
 घातनमे ॥ यह बातनमें मनमानतहे ॥ तुलसी मुखकि
 कोउ लाख कहे ॥ हियकि रघुनंदन जानतहे ॥ १ ॥
 नाम बडे धन धाम बडे ॥ जगमांहि बडि किरती
 प्रगटी हे ॥ बुद्धि बडि चतुराई बडि अरु लावनता
 तनमें लपटी हे ॥ द्वार हजारन लोक खडे ॥ राधि
 इंद्रहुतें नही एक घटी हे ॥ तुलसी रघुवीरकि
 भक्ति विना ॥ ज्युंहि सुंदर नारि नाककटीहे ॥ २ ॥
 साखी ॥ ॥ पारस पोली हाटक भुवन कल्पवृक्षकी
 वाड ॥ तुलसी हरिकी भक्ति विना तासैं भली उजाड
 ॥ १ ॥ उत्तम वर्ण कुन कामकी जिने रोम रोम
 विकार ॥ तुलसी हरिकी भक्ति विना ॥ चारे वर्ण च-
 मार ॥ २ ॥ हरि भजतो कोटीयो भलो ॥ जाकी
 चूबे चाम ॥ तुलसी हरिकी भक्ति विना ॥ कंचन
 देह अकाम ॥ ३ ॥ अंग आभूषण अति सज्यां ॥
 बाध्यां बोल बनाई ॥ तुलसी हरिकी भक्ति विना ॥
 मडां सणगारां जाई ॥ ४ ॥ तुलसी नीचा कुल
 मयो ॥ जपे रेन दीन राम ॥ उंचा कुल कहा
 कामको ॥ जियां नहि हरिको नाम ॥ ५ ॥ अरव
 खर वलुं धनहे ॥ उदे अस्तमें राज ॥ तुलसी
 हरिकी भक्ति विना सबे नरकको साज ॥ ६ ॥ अ-
 सन वसन सुत नारि धन ॥ सब पापीकुं होय ॥

॥ संत समागम राम धन ॥ तुलसी दुर्लभ दोय ॥
 ॥ ७ ॥ सुत वित दारा धाम सब ॥ एस जुठा रंग
 ॥ तुलसी आ संसारमें ॥ दुर्लभ साधु संग ॥ ८ ॥
 आधी घडी आधकी ॥ ताकी आधी आध ॥ तुलसी
 सोवत संतकी ॥ काटे कोट अपराध ॥ ९ ॥ तुल-
 सी संगत संतकी ॥ जिनके संगे पैकुलजाय ॥ नन
 संगाये कांकरो ॥ हाटो हाट बेचाय ॥ १० ॥ भो-
 जन साजन जुक्तहे ॥ लालच लोभ हराम ॥ सा-
 धु सोये जाणीये ॥ गांठे न बांधे दाम ॥ ११ ॥
 दाम गांठे बांधे नहीं ॥ नहीं नारिसुं नेह ॥ तुल-
 सी ऐसे संतकी ॥ कहां चरणकी खेह ॥ १२ ॥ सं-
 तजन चंदन बावना ॥ सब तरु चंदन होई ॥ तुल-
 सी सदगुरु सेवतो ॥ कल्पवृक्ष सम होई ॥ १३ ॥
 संत मावापहे ॥ संत भाईबंद ॥ संत मिलावे राम-
 कुं ॥ तुलसी काटे भवफंद ॥ १४ ॥ कनक का-
 चही सम गणे ॥ नारि काष्ट पापाण ॥ तुलसी
 ऐसे संतजन ॥ पृथ्वि ब्रह्म समान ॥ १५ ॥ तुलसी
 आ संसारमें ॥ संत मिलनकुं जाय ॥ आगे आगे
 पग धरे ॥ कोटी जगन फल थाय ॥ १६ ॥ तुलसी
 आ संसारमें ॥ संत मिलनकुं धाय ॥ कहा जानु
 कोई भेखभे ॥ नारायण मिलि जाय ॥ १७ ॥ रीझे
 खीजे ओरसें ॥ सरे न बिगरे काम ॥ तुलसी मेरे

चाहिये ॥ राजी सीताराम ॥ १८ ॥ तुलसी तबमें
 जाणियो ॥ हरिहे गरिबनवाज ॥ मोती कण मोघा
 किया ॥ सोघां किया अनाज ॥ १९ ॥ तुलसी पु-
 र्वके पापसे ॥ हरिकथा न सोहाय ॥ जैसें ज्वरके जो-
 रसें ॥ भोजनकी रुचि जाय ॥ २० ॥ पारसके परतापसें
 ॥ कंचन भइ तरवार ॥ तुलसी तीनु ना मिटे ॥ मार
 धार आकार ॥ २१ ॥ ज्ञान थोड़ी करग्रहे ॥ सदगुरु भ-
 ये सोनार ॥ तुलसी तीनुं मिट जावे ॥ मार धार आ-
 कार ॥ २२ ॥ उगे सो तहां बोवे नहि ॥ बोवे सो जल
 जाय ॥ तुलसि ऐसे पतीतका माल मसकरा खाय
 ॥ २३ ॥ तुलसि रेखा करमकी ॥ मेट न सके राम ॥
 मेटे तो क्या बेरहे ॥ पण समज कियाहे काम ॥ २४ ॥
 कामी तरे क्रोधी तरे ॥ लोभिकी गत होय ॥ तुलसी
 सब तरे देखे ॥ सलील तरे नही कोय ॥ २५ ॥ मीणा
 पर पंखी मरे ॥ जेमे वरसे केर ॥ तुलसिके बाना लिया ॥
 पण बाने बाने फेर ॥ २६ ॥ बाना हे बहु भातका ॥
 वामें हे इक मरम ॥ सबही छाये बेसीये ॥ न बेसीये
 मीणा हराम ॥ २७ ॥ सेरका चाकर सेरका ठाकर
 ॥ सेर खाइ समसेर बजावे ॥ सेर खरा दास तुलसी
 ॥ सेर खाइ हरिगुण गावे ॥ २८ ॥ पेहेले नीकसे त्याग
 कर ॥ फेर पडया फंदमाई ॥ तुलसी ऐसे पतीतका ॥
 दरशनका फल नाई ॥ २९ ॥ त्याग करके संग्रह

कियो ॥ जाण्यो नहि कछु सार ॥ तुलसी ऐसे पतितकुं ॥
 वारवार धीकार ॥ ३० ॥ संत माया छांड चले ॥ पीछे
 रहे लपटाइ ॥ तुलसी उलटा अन्नकु ॥ स्वान स्वाद
 करी खाई ॥ ३१ ॥ आये ते हरि भजनकुं ॥ कीना
 ओर उपाय ॥ तुलसी सीतारामकुं ॥ कहा कहेंगे जाय
 ॥ ३२ ॥ राम तहां काम नही ॥ काम तहां नहि राम
 ॥ तुलसी दोनुं न रहे ॥ रवि रजनी एक ठाम ॥ ३३ ॥
 परधन पथर करी जान ॥ परस्त्री मात समान ॥ एता
 करतां हरि नमीले तो तुलसीदास जमान ॥ ३४ ॥
 कृष्ण कृष्ण सब कहतहे ॥ आक ढाक अरु केर ॥
 ॥ तुलसी आ व्रज भोममें कहा रामसे वेर ॥ ३५ ॥
 कोटी कलप कासी वसे ॥ मथुरां कलप हजार ॥ एक
 निमिष सरजुवसे ॥ तुले न तुलसी भार ॥ ३६ ॥ कहा
 कहूं छवी आजकी ॥ भले बिराजो नाथ ॥ तुलसी
 मस्तक तब नमे ॥ धनुस बाण लीयो हाथ ॥ ३७ ॥
 कित मोरलीका कित चंदरिका ॥ कित सखियनको
 साथ ॥ अपने जनके कारणे ॥ कृष्ण भये रघुनाथ
 ॥ ३८ ॥ मुरली लकुट दुरायकै ॥ नाथ भये रघुनाथ ॥
 तुलसी रुची लखी दासकी ॥ धनुषबान लीयो हाथ
 ॥ ३९ ॥ कलपे संपत न उपजे ॥ कलपे वीपत न जा-
 य ॥ तुलसी स्वभाव पडयो जीवकुं ॥ कलप्या बिना
 न रेवाय ॥ ४० ॥ कनक तज्यो कामनी तज्यो ॥ त-

ज्यो धातुको संग ॥ तुलसी लघु भोजन करी ॥ जी-
 वे मानके रंग ॥ ४१ ॥ कंचन तजवो सेल हे ॥ नारी-
 कंरो नेह ॥ मान बडाई ईरषा ॥ तुलसी दुर्लभ तजवो
 तेह ॥ ४२ ॥ दया धरमको मूलहे ॥ पाप मूल अभी-
 मान ॥ तुलसी दया न छांडीये ॥ जबलग घटमें प्रान
 ॥ ४३ ॥ अंतर उंडी जरतेहे ॥ ईरषा द्वेषकी आग ॥
 तुलसी तिनसे जातेहे ॥ ज्ञान भाक्ति वैराग ॥ ४४ ॥
 तुलसी ताकी कुण गति ॥ बोलत बिना विचार ॥
 हनत पियारो आतमा ॥ जीभ करी तरवार ॥ ४५ ॥
 हरि भजवुं हक बोलवुं ॥ दोनु बात अवल ॥ तुलसी
 ताकुं न उतरे ॥ आठो पोर अमल ॥ ४६ ॥ तुलसी
 रसना सो भली ॥ जबही सुमरे राम ॥ नीतर काढी
 निकामिये ॥ भलो न मुखमें चाप ॥ ४७ ॥ तुलसी
 जाके मुखनसे ॥ भुलेइ निकसे राम ॥ ताके पगकी
 पेधिया ॥ मेरे तनकी चाप ॥ ४८ ॥ तुलसी मीठे वच-
 नमें ॥ सुख उपजत सो ओर ॥ वशीकरण ए संत्रहे ॥
 तज वचन कठोर ॥ ४९ ॥ तुलसी बांह कपूतकी ॥
 जो ग्रहीये सो बार ॥ भेड पुछ भादौ नदी ॥ दोउ न
 उतरे पार ॥ ५० ॥ तुलसी बांह सपूतकी ॥ जो ग्रहीये
 एक बार ॥ हलकी कडवी तुंबडी ॥ सो उतारे पार ॥ ५१ ॥
 तुलसी राम प्रतापमें ॥ नीबिल होत बलवंत ॥ वाली
 सुग्रीवके बैरमां ॥ तब नोते हनमंत ॥ ५२ ॥ बडे ग्रहे

बड होतहे ॥ ज्युं वामन भुजडंड ॥ तुलसीराम प्रतापसें
 ॥ डंड गये ब्रह्मंड ॥ ५३ ॥ तुलसी तलब न छोडीये
 ॥ नीश्वे लीजे नाम ॥ मनुस मजुरी देतहे ॥ क्युं रखे-
 गो राम ॥ ५४ ॥ तुलसी सोवत नीचकी ॥ दोदो बाते
 दुःख ॥ रीझे तो पाडे धर्मथी ॥ खीजे तो दीये दुख
 ॥ ५५ ॥ सजीवन विद्या पढे ॥ मतीके बडे हीन ॥
 तुलसी एक विवेक विना ॥ वनमां मारे तीन ॥ ५६ ॥
 सजीवन विद्या पढे ॥ आपका उपजाव्या काल ॥ तु-
 लसी सो नर उगरा ॥ जेणे पकडी तरुवर डाल ॥
 ५७ ॥ दुबधामां दोनु गये ॥ माया मिली न राम ॥
 तुलसी आ संसारमें ॥ सख्यो न एके काम ॥ ५८ ॥
 मायाकुं माया मिले ॥ करकर लंबा हाथ ॥ तुलसी
 आ गरीबकी ॥ कोइ न पूछत बात ॥ ५९ ॥ तुलसी
 तीन लोकमें ॥ कौन जाने पर पीर ॥ कां जाने दिल
 आपना ॥ कां जाने रघुवीर ॥ ६० ॥ तुलसी रघुवीर
 छांडके ॥ धरत भरोसा ओर ॥ सुख संपतमें क्या भये
 ॥ नही नर्कमें ठोर ॥ ६१ ॥ तुलसी रघुवीर ना भजे ॥ गयो
 भूतनके भाग्य ॥ शीर धुने रसना काटे ॥ मुखमें डारे आग्य
 ॥ ६२ ॥ हे मन सबसें नरस हे ॥ सरस हरि भजिहो-
 हि ॥ तुलसी निसदिन देतहुं ॥ एहि सिखामण तोहि
 ॥ ६३ ॥ बात सब जग करतहे ॥ बातशातमें फेर ॥
 तुलसीदास अंतर घणो ॥ क्यां मेरु क्यां सेर ॥ ६४ ॥

तुलसी आ संसारमें ॥ जाण्यो नही जगदीस ॥ काट-
 नहारी नालकथ्यो ॥ क्युं न काथ्यो सीस ॥ ६५ ॥
 तुलसी सो नर चतुर हे ॥ रामचरन लेलीन ॥ परधन
 परमन हरनकुं ॥ बेइया बोट प्रवीन ॥ ६६ ॥ संत
 संतापे जातहे ॥ राज धर्म अरु वंश ॥ तुलसी तिन
 देखे नही ॥ रावन कौरवके कंस ॥ ६७ ॥ तुलसी
 गरीब न छेडिये ॥ बडी गरीबकी धाय ॥ मुआ ढोरके
 चामसें ॥ लोहा भसम हो जाय ॥ ६८ ॥ तुलसी
 *खबेडा खेतका ॥ बायें टकोरा लेत ॥ आप तो
 चाखे नही ॥ दुख ओरनकुं देत ॥ ६९ ॥ तुलसी आ
 संसारमें ॥ करी लेजो दो काम ॥ देवकों टुकडा भला
 ॥ लेवेकों हरिनाम ॥ ७० ॥ ॥ चोपाइ ॥ ॥ सेवक
 सुख चहे मान भिखारी ॥ व्यसनी धन शुभ गति
 व्यभिचारी ॥ लोभी यस चह गुण अभिमानी ॥ नभ
 दुहि दूध चहत ए प्रानी ॥ १ ॥ धीरज धर्म मित्र
 अरु नारी ॥ आपदकाल परिखि एह चारी ॥ नमनी
 नीचकी अति दुखदाइ ॥ जिमि अंकुश धनु उरग
 बिलाइ ॥ २ ॥ ॥ सोरठा ॥ फुले फले नवेत ॥ जदपी
 सुधा वरपे जलद ॥ मुख हृदय न चेत ॥ जो गुरु
 मिलाहि विरंची शत ॥ ७१ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तात
 स्वर्ग अपवर्ग सुख ॥ धरिय तुला एक अंग ॥ तुलै न

* ओडुं जीवडां खेतरमां न आवे ते सारुं करे छे ते.

ताहि सकल मिलि ॥ जो मुख लव सतसंग ॥ ७२ ॥
 सखिव वैद्य गुरु तीनि जो ॥ बोलहिं प्रिय प्रभु
 आश ॥ राज धर्म तनु तीनि कर ॥ होइ वेगहीं नाश
 ॥ ७३ ॥ दंड यतिन कर भेद जहां ॥ नर्तक नृत्य
 समाज ॥ जीतेउ मन जग मुनिय अस ॥ रामचंद्रके
 राज ॥ ७४ ॥ सो परंतु दुख पावइ ॥ शिर धुनि धुनि
 पछिताइ ॥ कालहि कर्महि इश्वरहि ॥ मिथ्या दोष
 लगाइ ॥ ७५ ॥ विनु सतसंग न हरिकथा ॥ तेहि
 विनु मोहन भाग ॥ मोह गये विनु रामपद ॥ होइ
 न द्रव अनुराग ॥ ७६ ॥ श्रीमद बक्र नकीन्हकेहि ॥
 प्रभुता बधिरनकाहि ॥ मृगनयनीके नयनशर ॥
 को अस लागु न जाहि ॥ ७७ ॥ निर्गुण
 रूप सुलभ अति ॥ मगुण न जानै कोई ॥
 सुगम अगम नाना चरित ॥ मुनि मुनि मन भ्रम
 होइ ॥ ७८ ॥ संत पंथ अपवर्गके ॥ कामी भवकर
 पंथ ॥ कहहिं संत कवि कोविद ॥ श्रुति पुराण
 सद्ग्रंथ ॥ ७९ ॥ ब्रह्मज्ञान रत नारी नर ॥ करही
 न दुसरी बात ॥ कोडी उलागी लोभ बश ॥ करही
 विप्र गुरु घात ॥ ८० ॥ पशु घडतां नर घड्यो ॥
 भुल्या सींगने पुछ ॥ तुलसी हरिकी भक्ति विना
 ॥ धीक डाढी धीक मुछ ॥ ८१ ॥ जीमी पनहारी
 जेवरी, खेंचत कटे पखांन ॥ तुलसी रसना राम

कहूं ॥ पाप कितिक अनुमान ॥ ८२ ॥ तुलसी
 अपने रामकों ॥ रीझ भजोके खीज ॥ खेत परेतें
 जामीह ॥ उलटे सीधे बीज ॥ ८३ ॥ सीकहते सुख
 उपजे ॥ ता कहेंतें तम नाश ॥ तुलसी सीता जो
 कहत ॥ राम न छांडत पास ॥ ८४ ॥ तुलसी अघ
 सब दुरगे ॥ राअछरको लेत ॥ फिर नेरे आवत
 नही ॥ म अछरपढ़ देत ॥ ८५ ॥ काहुके धन धामहे
 ॥ काहुके परिवार ॥ तुलसी ऐसे दीनके ॥ सीता-
 राम आधार ॥ ८६ ॥ एक भरोसो एक बल ॥
 एक आश विश्वास ॥ स्वार्ती बृंद रघुनाथ हे ॥ चा-
 तक तुलसी दास ॥ ८७ ॥ ज्यों कामीके चीतमें ॥
 चढ़ी रहत नीत वाम ॥ ऐंसें—कब लागी हो ॥
 तुलसी के मन राम ॥ ८८ ॥ ज्यों गरीबकी देहमें
 ॥ माघ पुसकों घाम ॥ ऐंसें—कब लागीहो ॥ तु-
 लसीके मन राम ॥ ८९ ॥ तीन टुक कोपीनके,
 अरु भाजी विन लौन ॥ तुलसी रघुवर उरबसें ॥
 इंद्र बापुरा कौन ॥ ९० ॥ गुन सरूप बल द्रव्यको ॥
 प्रीति करे सब कोय ॥ तुलसी प्रीति सराहियें ॥
 जो इनतें बाहिर होय ॥ ९१ ॥ काम क्रोध मद
 लोभकी ॥ जबलग मनमें खान ॥ तबलग पंडित
 मुखही ॥ तुलसी एक समान ॥ ९२ ॥ जबलगी
 अंकुश शीशपें, तब लगी निर्मल देह ॥ तुलसी

अंकूश बाहिरे ॥ शिरपर डारत खेह ॥ ९३ ॥ तु-
 लसी काया खेतहे ॥ मनसा भयो किसान ॥ पाप
 पुन दोय बीजहै ॥ बोवे सो लुनै नीदान ॥ ९४ ॥
 स्वामीते सेवक बढौ ॥ जो निज धरम समान ॥ राम
 बांध उतमें जलथी ॥ कुदगये हनुमान ॥ ९५ ॥ स्वामी-
 कों सेवक घने ॥ सेवकको प्रभु एक ॥ तुलसी दोमें सो बडो
 ॥ ज्याके मनमें टेक ॥ ९६ ॥ होत भलेके अन भलो
 ॥ होत दानीके सुम ॥ होत कपुत सपुतके ज्यों पा-
 वक महीं धुम ॥ ९७ ॥ नीच नीचाई नां तजै ॥ साधन
 हुके संग ॥ तुलसी चंदन विट्पवसी ॥ विन विष भयो
 न भुजंग ॥ ९८ ॥ आशन दृढ आहारसु ॥ मती ग्यान
 दृढ मान ॥ तुलसी बिना उपासना ॥ विन दुलहकी
 जान ॥ ९९ ॥ तन मुकाय पंजर कई ॥ धरै रेन दिन
 ध्यान ॥ तुलसी मिटे न वासना ॥ विना विचारे ज्ञान
 ॥ १०० ॥ ॥ पद राग धोल ॥ संत पारश चंदन
 बावना ॥ काम धेनु कल्पतरु सार ॥ समागम संतनो
 ॥ १ ॥ संत समझ्यामां अंतर घणो ॥ तरु पारश त्रण
 प्रकार ॥ समागम संतनो ॥ २ ॥ एक पारसथी पारस
 बने ॥ एक पारसथी हेम होय ॥ समागम संतनो ॥ ३ ॥
 एक पारश लोहने कुंदनकरे ॥ सो वरसें लोह न होय
 ॥ समागम संतनो ॥ ४ ॥ एक चंदनथी विख उतरे ॥
 एक चंदनथी अग्री ओलाय ॥ समागम संतनो ॥ ५ ॥

एक तलभार ताता तेजसां ॥ फरि तेज तातु नवथाय
 ॥ समागम संतनो ॥६॥ सर्वं मन्यासुरी नव्य जाणीये
 ॥ सर्वं नारी प्रतिव्रता नहोय ॥ समागम संतनो ॥७॥
 सर्वं गजशिर सोती नव्य नीपजे ॥ नागे नागे मणि
 नव होय ॥ समागम संतनो ॥८॥ मृगे मृगे कस्तुरी नव
 नीपजे ॥ बने बने अगर नव होय ॥ समागम संतनो
 ॥९॥ जले जले कमल नव नीपजे ॥ तेनी विभति वि-
 चारी जोय ॥ समागम संतनो ॥१०॥ ज्ञानहीन गुरु न-
 व कीजीये ॥ वंड्या गाय सेवे सुं थाय ॥ समागम सं-
 तनो ॥११॥ कहे प्रीतिम ब्रह्मवेता भेटतां ॥ महा रोग
 समुलो जाय ॥ समागम संतनो ॥ १२ ॥ ॥ भवैया ॥
 ॥ ज्ञान घटे ठग चोरकी संगे ॥ ध्यान घटे विनुं धी-
 रज लाई ॥ मोक घटे माधुके संगत ॥ दरद घटे कलु
 ओषध खाई ॥ प्रीति घटे मुखमें कलु मांगत ॥ भाव
 घटे नित्यही वरजाई ॥ लाल कहे दारिद्र घटे ॥ गोविंद
 गोविंदके गुन गाई ॥१॥ उडगनकी बात सीचान ग्रही
 ॥ तल खेच कवान रह्यो भिलरे ॥ बपरी होलरी पि-
 युकुं मुमरे ॥ अवतो मुमरो मोरलीधररे ॥ कालकुं
 काल भोयंग डस्यो ॥ दगावाजकुं लाग गयो सररे
 ॥ जिनकुं रक्ष पाल गोपाल धनी ॥ तिनकुं बल भद्र
 कहा डररे ॥२॥ पेट पिशाच खजुरकी दुटीसो ॥ टांग
 गही एक दुटी ॥ मारनी भार सबे सुधरे ॥ फूटी सो

हांडी गही एक फूटी ॥ धुन उठाय लाये हनुमंतही ॥
 ॥ पीछे रहे शिपट नकी बूटी ॥ क्रोड निसान घुरेरावके-
 शब एक तांत न बजी तो कहा झांट दूटी ॥ ३ ॥
 कवित ॥ राजनकी रीत गई ॥ भित्रनकी प्रीत गई
 नारीकी प्रतीत गई जार मन भायोहे ॥ सज्जनको
 भाव गयो ॥ पंचनको नांव गयो ॥ साचको प्रभाव
 गयो ॥ जूठही मोहायोहे ॥ भेवनकी दृष्टि गई ॥
 ॥ पृथिवी अनिष्ट भई ॥ भव जगमांही विपरीत
 दरसायो हे ॥ कीर्त्तिये सहायज्युं कृपाल श्रीगेविद-
 लाल ॥ कठिन कराल कलिकाल चही आयोहे ॥ १ ॥
 ॥ सवैयो ॥ अटनं सद सांख्य पथि स्त्रीनरा ॥ व्रत-
 शील लटे होय जानजने ॥ झटितं तन त्याग तदा
 क्रियते ॥ अटनं तजि देश विदेश वने ॥ १० * दिक्
 ८ * शैल संवत ४ युगो ७ दधि वर्षमु ॥ मास मधु
 सुदि त्रीज दिने ॥ सुभ भोमरामानंद ज्युं लिखितं ॥
 शिव वट्टिपति प्रिय हे अपने ॥ १ ॥ अर्थ-साचा
 सांख्य योगने मारगे चालतां स्त्री के पुरुष शीलव्रत-
 मांथी एटले निष्काम वर्त्तमानमांथी पडी जाय छे.
 अने ते वातनु माणसोमां जाण थायछे ॥ सारे झट
 शरीरनो त्याग करेछे मतलबके आत्म हसा करेछे.
 ते करवी नही ॥ अने देश तर्जाने परदेशमां अथवा

* दिक् एटले दिशाओ दस. * शैल एटले अष्टकुल पर्वत.

वनमां अटन करवुं ॥ संवत १८४७ ना वर्षमां चैत्र
 महिनानी शुदि त्रीजने दिवसे ॥ सारा भोमवारे
 रामानंद स्वामिए आ पत्र लख्यो छे. अने शिव एटले
 कल्याणकारी नारायण आपणा इष्टदेवछे मतलब के
 ते आपणु कल्याण करशे ॥ ॥ साखी ॥ ॥ तनकी
 नाडी करगृही ॥ मनकी नांड़ी बेन ॥ अंतर गतकी
 फरस राम ॥ कही देतहे नेन ॥ १ ॥ हेत प्रीतको
 नेहरो नेननमें झलकाय ॥ शींचे पाणी मुलमें ॥ रयो
 पातमें आय ॥ २ ॥ सज्जन सब जग सरस हे ॥
 ॥ जवलन परयो न काम ॥ हेम हुताशन पारखीयो ॥
 पीतर नीकस्यो स्याम ॥ ३ ॥ हलदी जलदी न तजे
 खटरस तजे न आम ॥ गुनीजन गुनकु न तजे ॥
 अवगुन तजे न गुलाम ॥ ४ ॥ काजल तजे न स्या-
 मता ॥ मुक्ता तजे न स्वेत ॥ दुरिजन तजे न कुटिलता
 ॥ सज्जन तजे न हेत ॥ ५ ॥ जे ज्याकुं प्यारो लगे
 ॥ ताका करत बखान ॥ जेसे बख भरवखकुं ॥ मानत
 अमृत समान ॥ ६ ॥ सज्जन परघर जायके ॥ दुःख
 न दीजे रोय ॥ भर्म गमावे आपको ॥ बाट न लेवे कोय
 ॥ ७ ॥ सज्जन ॥ परघर जायके ॥ दुःखज दीजे रोय ॥ संपत
 होयतो बाटलेवे ॥ राह बतावत कोय ॥ ८ ॥ देश परदेशमें
 फस्या ॥ माणसका बौत सगाल ॥ जाके देखे छाती
 ठरे ॥ बाका पड्या दकाल ॥ ९ ॥ सज्जन दुर्जन

बोतहे ॥ ताली मित्र अनेक ॥ जिन दीठे छाती ठरे
 ॥ सो लाखनमें एक ॥ १० ॥ कागद लखु कपुरमें
 ॥ विधि विधि लखु सलाम ॥ जिस दिनसे विछरे पडे
 ॥ तिस दिनसे निंद हराम ॥ ११ ॥ तुम जानो प्रीति
 वीसरी ॥ मुज मनथी लगार ॥ रात दिवस तुम सां-
 भरो ॥ सपनेमें सोवार ॥ १२ ॥ आरे नाम नारायणरो
 ॥ जे नर नाम लयंत ॥ सां जमरा परहरे ॥ केशव
 सां आवंत ॥ १३ ॥ केणी मीशरी खांडहे ॥ रेणी
 तत्ता लोय ॥ केणी कहेवे रेणी रहेवे ॥ ऐसा विरला
 कोय ॥ १४ ॥ स्वामी सहजानंदरा ॥ जेने लवसतसंग
 लीया ॥ जमनेडा आवे नहीं ॥ वेडा पार किया
 ॥ १५ ॥ हरि किया बेलख्या ॥ छठीकेनका अंक ॥
 तल घटे न जब बधे न ॥ रहे रहे जीव निशंक ॥ १६ ॥
 सुरपुर नरपुर नागपुर ॥ ए तीनुमें नाही ॥ कां सुख
 हरिके चरनमें ॥ कां सुख संतनके मांही ॥ १७ ॥
 तनकी जाणे मनकी जाणे ॥ जाणे चितकी चोरी ॥
 इनके आगे क्या लुपाइये ॥ जिनके हाथ दोरि
 ॥ १८ ॥ समरणकी सुध लेतहो ॥ भीड पडनके काज ॥
 जाके जगमें कोई नहीं ॥ ताके हो महाराज ॥ १९ ॥
 कनक ने कामनी ॥ जेना वज्रमां गाला ॥ सांगोके
 सलवाइ रया ॥ कइक चड्या नेपाला ॥ २० ॥ पीपा
 पाप न कीजे ॥ पुन्य किया सो बार ॥ कोइका लिया

नहीं ॥ तो दिया वार हजार ॥ २१ ॥ जीव भारी
 झमेर करे ॥ खातां करे वखाण ॥ पीपो के प्रगट पा-
 रखुं ॥ भांणामां भशाण ॥ २२ ॥ जेसी नीती हरासकी
 ॥ ऐसी हरियें होय ॥ चला जाय वैकुंडमें ॥ पला न
 पकड़े कोय ॥ २३ ॥ ॥ मोरटा ॥ कालप मुके केश ॥
 मन कालप मुके नहीं ॥ विपरिन्तां थातां वेश ॥ वण
 जीवन बलखां करे ॥ २४ ॥ ॥ साखी ॥ मनकी
 ब्रती एकहे ॥ भावे सांहां लजाय ॥ जाने तो हरिकी
 भक्ति कर ॥ जाने तो विषयकमाय ॥ २५ ॥ जाके
 बोले बंध नहीं ॥ मर्म नहीं मनमांय ॥ ताके भंश न
 चालिये ॥ छोड चले वनमांय ॥ २६ ॥ बदल सीतल
 मुख प्रफुलित ॥ अंतर कपट अपार ॥ ब्रह्मानंद कहे
 ताकुं ॥ नमस्कार सतवार ॥ २७ ॥ चोरचोरके गो-
 ठीये ॥ साथसाथके भेन ॥ अंतरगतकी फरसरास ॥
 कही देतहे नेन ॥ २८ ॥ खेतर बगाड्यो खडमले ॥ सभा ब-
 गाडी कूड ॥ हरिभक्त बगड्यो लालचु ॥ केसर मल-
 ग्यो धूड ॥ २९ ॥ मत दीवे माने नहीं ॥ कुमते मन
 कोलाय ॥ आवेल अवले अक्षरे ॥ तेने सबला केम
 मोहाय ॥ ३० ॥ करत कुसंग चाहत कुसल ॥ एही
 बडो अपशोभ ॥ महिमा घटयो समुद्रको ॥ रावण
 बस्यो पडोस ॥ ३१ ॥ नीच संगतने खर सबद ॥ घटत
 घटत घट जाय ॥ साधु संगतने हरि रस ॥ बधत बधत

वध जाय ॥ ३२ ॥ सांया भेरे तुमहो ॥ तुम लग भेरी
 दोर ॥ जेमे कौवा झांझका ॥ ओर न मुझे टोर ॥
 ३३ ॥ अपनी पहुँच विचारके ॥ करतव करिये दोर ॥
 तेने पाव पसारीये ॥ जेती लंबी मोर ॥ ३४ ॥ श्लोक
 ॥ ॥ उपदेशो न दातव्यो ॥ यादशे तादशे जने ॥
 पश्यवानर मूर्खेण मुष्टही निष्टही कृता ॥ १ ॥
 हस्त पाद सभायुक्तो ॥ दृश्यमे पुरुषाकृतः ॥ शी-
 तवात हतो मूढ ॥ कथं न कुरुषे गृहम् ॥ २ ॥
 सूची मुखी दुराचारा ॥ रंडा पंडित वादिनी ॥ अ-
 समर्थो गृहारम्भे ॥ समर्थो गृहभंजने ॥ ३ ॥ लु-
 ब्धातां याचकः शत्रुश्चाराणां चन्द्रमरिषु ॥ जार-
 खीणां पतिः शत्रु मूर्खाणां बोधको रिपुः ॥ ४ ॥
 स्थान भ्रष्टा न शोभते ॥ दंताः केश नखानराः ॥
 स्थान भ्रष्टाः मुशोभते ॥ सिंहाः मत्पुरुषा गजाः ॥ ५ ॥
 पद राग गर्वि ॥ ॥ भाइ तेम समरो सामा ॥ जाणो
 जे आवशे कामा ॥ संभारथी मनहुं वालो ॥ साचे
 हवे मारगे चालो ॥ १ ॥ मिथ्या मन मोहथी टालो
 ॥ अहंकार अभिमान गालो ॥ रुदियामां रामने राखो
 हरिरस प्रेमेचाखो ॥ २ ॥ दुर्लभ छे मनुष्यदेह ॥ फरि
 नही आवे तेह ॥ ओर्चीतानो दुंपो देशे ॥ सगां सौ
 जेईने रेशे ॥ ३ ॥ संसारीओ जुवोकथी ॥ भायो
 कोइ कोईनुं नथी ॥ कथिां कर्म पोते शेशे ॥ भलो भुंडो

कोइ नकेशे ॥ ४ ॥ घोडाने बेल छे जुठी ॥ जावुं छे
 एकलुं ऊठी ॥ जुवानिमां आग लागी ॥ हरिसमरया
 नहीं जागी ॥ ५ ॥ वरणागीमां वाट उठी ॥ प्रभुसाथे
 प्रति दुट्टी ॥ चतुराई चुले चडी ॥ हरि समरयाने
 घडी ॥ ६ ॥ भण्यो पण भुंडो दीसे ॥ हरिसाथे मन
 नहींसे ॥ डापणे डाट वाल्यो ॥ धरमनो मारग टाल्यो
 ॥ ७ ॥ माला तो नगमे दीठी ॥ निंदा तो लागे मीठी
 ॥ साधु साथे बेर पाले ॥ पोतानुं जीवत वाले ॥ ८ ॥
 न लीधुं नाम धोरारी ॥ माताने भारे मारी ॥ एवानुं नहीं
 टाम ठेकाणुं ॥ तरणु जेम जाय तणाणुं ॥ ९ ॥
 एवानी शी पेर थासे ॥ रवी सूत मनवी मासे ॥
 कबुद्धि कामे राच्यो ॥ मुख ते मनमां माच्यो ॥
 ॥ १० ॥ बोलीने बल देखाडे ॥ भुंडाई मनमां का
 दे ॥ नारी साथे मनहुं मोयुं ॥ आवीने मुलगुं खो-
 युं ॥ ११ ॥ सज्यामां मुखे सुतो ॥ आव्यो तेम जाय
 वगुतो ॥ जीवेंतो माया जोडी ॥ साथे नहीं आवे
 कोडी ॥ १२ ॥ धनवंती पुरे कहावे ॥ अंते कोइ काम
 नहीं आवे ॥ जुवोने काची काया ॥ पडी रहेसे
 सघली माया ॥ १३ ॥ हैयाना फुटा लोको ॥ हरीनुं
 नाम कां चुको ॥ अवशर तो नावे फरी ॥ काल
 तो लेशे घेरी ॥ १४ ॥ ते माटे चेतो टाणे ॥ बाव-
 रो जमणे पाणे ॥ रसनाये हरीने भजो ॥ काणीतो

कर्मनी तजो ॥ १५ ॥ मुनेतो आशा तारी ॥ काया
माया नथी मारी ॥ रुदियामां चरणज झाली ॥ न-
रसीयो रियोछे माली ॥ १६ ॥

याज्ञवल्क्य स्मृतिमांथी चार उपाय ॥ श्लोक ॥

॥ उपायःसामदानंच भेदोदंडस्तथैवच ॥

सम्यक्प्रयुक्ताःसिध्येयुर्दंडस्त्वगतिकागतिः ॥ १ ॥

अर्थ-साम, दान, भेद, तथा दंड-साम १ एटले
प्रिय भाषणे करीने समझाववुं ॥ दान २ एटले द्रव्य
आपवुं ॥ भेद ३ एटले फूट पाडवी तथा परस्पर
वैरभाव कराववो ॥ दंड ४ एटले धन लूटी लेवुं
लडाई करवी विगेरे नुकसान करवुं. ए शत्रु विगेरने
वश करी लेवाना चार उपाय छे. तेमां दंडतो शेवट
बीजा उपाय चाली शके नहीं खांहां वापरवानो छे ॥ १ ॥

टीप-पंचतंत्रमांथी, १संधि एटले मित्राई करवी. २विग्रह एट-
ले युद्ध करवुं. ३यान एटले ठाम मुकी पाछुं हटवुं. ४आसन
एटले पोतानो ठाम मजबूत करवो. ५आश्रय एटले बीजा
राजानी मदद लेवी ६द्वैधी एटले कपट भावे करीने शत्रुने
जीतवो.

*છગુણ ॥ શ્લોક ॥ સંધિચ વિગ્રહંચૈવયાન માસન-
 સંશ્રયઃ ॥ દ્વૈધિભાવં ગુણાનેતાન્યથાવત્પરિકલ્પયેત્ ॥૨॥
 અર્થ-સંધિ, વિગ્રહ, યાન, આસન, સંશ્રય, તથા દ્વૈધિભાવ,
 એટલા ગુણ યથાયોગ્ય જાણવા ॥ હરેક વાતમાં પડે-
 લી તકરાર મટાડવા સારુ વેડજનની સમજૂતી થાય
 તેવી વ્યવસ્થા કરવાના કામને *સંધિ ૧ કહેછે ॥
 વિગ્રહ ૨ એટલે વગાડ કરવો અથવા લડાઈ કરવી ॥
 યાન ૩ એટલે શત્રુ સામે ચઢાઈ કરીને જવું ॥ આ-
 સન ૪ એટલે છાવણી નાંચી પડાવ કરવો ॥ સંશ્રય
 ૫ એટલે અધિક બલવાન રાજાની મદદ માગવી ॥
 દ્વૈધિભાવ ૬ એટલે પોતાના સૈન્યના બે વિભાગ કરવા
 ॥ એ છ ગુણ યથાયોગ્ય દેશકાલ શક્તિ મિત્ર ઇલા-
 દિને જેમ ઘટે તેવા વાપરવા ॥ ૨ ॥

રાજાના સાત અંગ ॥ શ્લોક ॥ સ્વામ્યમાત્યો જનો
 દુર્ગંકોશો દંડસ્તૈથૈવચ ॥ મિત્રાણ્યેતાઃપ્રકૃતયોરાજ્યંસ-
 ત્તાંગ મુચ્યેતે ॥ ૩ ॥ અર્થ-૧.સ્વામી એટલે રાજા ॥

*રાજાએ હકામનું સદા ચિંતન કરતા રહેવું. લડાઈ, તથા સ-
 યાહ તથા લડવાસારુ લશ્કરે તથા પોતે કેમ કૂચ કરવી,
 તથા છાવણી કરીને કેમ રહેવું, લશ્કરને કેવી રીતે ગોઠવી
 રાખવું અને પોતાનાથી બલવાન રાજાનો આશ્રય શીરીતે મે-
 લવવો. *વધી કરવી.

२ अमास एटले कामदार ॥ ३ प्रजा एटले लोक ॥
 ४ दुर्ग एटले कोट किल्ला वगेरे ॥ ५ कोश एटले
 धननो खजानो ॥ ६ दंड एटले हाथी घोडा रथ
 अने प्यादल एवी चार प्रकारनी फोज ॥ ७ मित्र
 एटले हितकारी ॥ ए राजा विगेरे राज्यनी प्रकृ-
 ति मूल कारणछे ॥ अने ए सातवडे राज्य सप्ताग
 कहेवायछे ॥ ३ ॥ कवित ॥ केते देश केते गाम
 केते ठाम लोक केते वामें फेर केते दुर केतेक ह-
 जूर हे ॥ केती मेरी *आमंद खरचको प्रमान के-
 तो केतनो विकार वामें केतो सांच कूरहे ॥ केतो
 मेरे सेन राजे, मेरो मुख चाहे केते केतो मेरे देन
 केतो खजानाको पुरहे ॥ राजनीती राजवंशी राजन-
 के जशुराम रोज उठ इतनो विचारवो जरूरहे ॥ १ ॥
 राजाने *चार एटले चार माणस जुदे जुदे ठे-
 काणे पगार आपीने राखवां ते चार थानकनी वि-
 गत ॥ पोतानो जे शत्रु होय सां एक माणस छानुं
 रहे ने तेनी बातनी खबर कहे ॥ १ ॥ मुख्य का-
 मदार पासि एक माणस छानुं रहे ने तेनी जे
 बात होय ते राजाने पहाँचाडे ॥ २ ॥ पोताना
 देशमां एक माणस छानुं फह्या करे अने वस्तीन
 कोई पीडा करतुं होय अगर कोई माणस लाच

खातो होय ते वात राजाने पहोचाडवी ॥ ३ ॥ एक
माणस छानुं पाणीआरा शेर विगेर रैयतमां फख्या
करे ते पोतानो जश के अपजश जे लोको बोल
ता होय तेवी वात राजाने कहे ॥ ४ ॥

ब्रह्मचारी अचिखानंदजी कृत ॥ श्लोक ॥

श्रीमद्भक्तिवृत्तात्मजेन सहजानंदेन सत्प्रेयसा ॥ यस्यैव
श्रीहरिणा स्वकीयजनता धर्मावनायक्षितौ ॥ दत्तं
भक्तजनैर्नृतं तमरुभिः सद्देशिकत्वं निजं ॥ वंदेहं सु-
धियं गुरुं विपुलयाऽयोध्याप्रसादमुदा ॥ १ ॥ अर्थ ॥
सारी वखाणया योग्य जेनी बुद्धिछे एवा गुरुश्रीआचा-
र्य अयोध्या प्रसादजी महाराजने हुं घणा हर्षवते नमस्का-
र करुंछुं जेवने श्रीहरि भक्ति धर्मना पुत्र एवाने साधु
पुरुषोने अतिशे वहाला एवा श्रीमहजानंदस्वामिये पोता
नुं सारुं आचार्य पदवीपणुं आप्युं एटछे श्रीस्वामीना-
रायण महा प्रभुये पोते पोतानी गादी उपर स्थापन
करेला एवा जेने मोटा मोटा भक्तजनो स्तुति करेछे
पृथ्वी उपर पोताना भक्तजनना समूहनो जे एकांतिक
धर्म तेनी रक्षा करवा वास्ते पोताने स्थाने श्रीहरि
कृश्न महाराजे स्थापन करेला एवा अयोध्या प्रसादजी
महाराजने नमस्कार करुंछुं एम स्तुति करनार पुरुष
कहेछे ॥ १ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ जनाना माप्तानां
स्वमिह शरणं स्थापनतया ॥ हरेरैकांतिक्यं जगति

ननु भक्तौ वृषभुवः ॥ हरिर्यस्मिन् प्रीतः सभृशम
भवत्तं शुभ गुणं ॥ नमाम्या चार्येदुं ममाहि रघुवीरं
गुरुमहम् ॥ २ ॥ अर्थ-आ जगतने विषे पोतानुं
शरण पामेला भक्तजनोने धर्मदेवना पुत्र एवा श्रीहरि
तेनी एकांतिक भक्तिने विषे स्थापन करवाथी जे
रघुवीरजी आचार्य महाराजनी उपर श्रीहरि घणुं
प्रसन्न थता हवा एवा ने कल्याणकारिछे गुण जेने
विषे एवा ने आचार्यने विषे चंद्रमा समान शांत
सुखकारी ने मारा गुरु एवा ते रघुवीरजी महाराजने
ग्रंथकर्त्ता कहेछे जे हुं नमस्कार करुहुं ॥ २ ॥
॥ श्लोक ॥ ॥ महाध्याना भ्यासं विदधतमजस्रं भग-
वतः ॥ पवित्रे संप्राप्तं स्थितिमति वरैकांतिक वृषे ॥
सदानंदं भारंपरम हरि वार्त्ता व्यसननं ॥ गुणाती
तानंदं मुनिवर महं नौमि सततम् ॥ ३ ॥ अर्थ-प्रत्यक्ष
पुरुषोत्तम भगवाननुं महा मोहुं जे ध्यान करवुं तेना
अभ्यास ने निरंतर करता एटले जाग्रत स्वप्न ने
सृष्टि ए त्रैणे अवस्थाभां प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिने
निरंतर देखता एवा ने पवित्र अतिशे श्रेष्ठ एवा जे
एकांतिक धर्म तेने विषे अचल निष्ठाने पामेला एवा
ने निरंतर भगवान संबंधि आनंदने विषे मग्न एवा
ने सारी उत्कृष्ट एवी जे भगवान संबंधि वार्त्ता
करवी तेनुं ज छे व्यसन जेमने एवा सहुरु श्रीगुणाती

तानंद स्वामिने हुं निरंतर नमस्कार करुं ॥ ३ ॥
 ॥ श्लोक ॥ ॥ रघुवीर देशिक सुताय प्रवर गुण
 नीति शालिने ॥ नौमि परम पद्वे गुरवे भगव-
 त्प्रसाद शुभ नाम धारिणे ॥ ४ ॥ अर्थ-श्री
 रघुवीरजी आचार्य महाराजना पुत्र एवा ने अतिशे
 श्रेष्ठ एवा जे गुण तथा नीति तेणे करीन अ-
 तिशे शोभता एवा ने सर्व कार्यने विषे अतिशे
 डायवा एवा ने भगवत्प्रसाद ए प्रकारे शुभ नामने
 धारण करता एवा गुरुश्री आचार्य भगवत् प्रसादजी
 महाराजने हुं नमस्कार करुं ॥ ४ ॥

॥ अथ दीनानाथ भट्ट कृत भजनाष्टकम् ॥ श्लोक ॥
 भुवि सदंगणे सर्व सद्गणे रचित खेलनं भक्त मेलनम्
 ॥ तव सुरंजनं दुःख भंजनं भज मनः सदा स्वामिनं
 मुदा ॥ १ ॥ अर्थ-आ अष्टक करनार पोताना मनने
 समझावेछे जे हे मन आ पृथ्वी उपर प्रगट पुरुषोत्तम
 श्री स्वामिनारायण देवनुं तुं अतिशे हर्षवते निरंतर
 भजन कस्य जोने तारुं रंजन करवा वास्ते एटले
 पोतानि मूर्तिने विषे भक्त जनना भनने सहज संलग्न
 करवा वास्ते पोताना एकांतिक भक्तना आंगणाने
 विषे सर्व साधुनो समुह एकठो मेलवीने तथा सर्व
 सत्संगी भक्त जननो समूह एकठो मेलवी
 ने नाना प्रकारनी लीलाने करता एटले रंग रमवो

इसादि खेल ने करताने सर्व दुःख मात्रनो नाश करता
 एवा श्री सहजानंद स्वामिने भज एटले हे मन जो
 सर्व दुःख मात्रनो नाश करवो होय तो बीजुं सर्व
 भजन छोडिने एक भगवाननीज लीलाने संभास्य
 तेथीज तने सुखशांति उत्पन्न थशे ए भाव छे ॥१॥
 ॥ श्लोक ॥ ॥ शुभनिकेतनं बंध भेदनं निगम मंडनं
 काल खंडनम् ॥ परमुखाश्रयं भक्त संश्रयं भज मनः
 सदा स्वामिने मुदा ॥ २ ॥ अर्थ-सर्व शुभ वस्तुने रहे-
 वानुं स्थान रूप एटले जेने विषे अनंत कल्याणकारी
 शुभगुण रह्या छे एवाने बंधनने नाश करनारा
 एटले जीवने अनादि कालनुं महा मोटुं
 मायानु बंधन रह्युं छे ते जेना दृढ आश्रयथी, नाश
 पामेछे एवा ने वेदनुं मंडन केतां आभूषण रूप एटले
 वेद पण जेने नेति नेति कही गायछे कर्मकांड उपास
 नाकांड ने ज्ञानकांड तेमां उत्तरोत्तर श्रेष्ठ जे ज्ञान
 कह्युं छे ते प्रत्यक्ष परमात्माना ज्ञान विना जीवनी
 मुक्ति नथी माटे ते ज्ञान वते जाणवा योग्य एवाने
 कालनुं पण खंडन करनार एटले कालना पण काल
 एवा ने परजे ब्रह्मादिक देव तेने पण सुखकारिछे आ-
 श्रय जेनो एवाने भक्त जनने एक आश्रयरूप एवा श्री स्वा-
 मिनारायण देवने हे मन तुं निरंतर आतिशे हर्षवते भ-
 जन कस्य ॥ २ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ अघ विधूननं

शोभिताननं प्रकटिताकृतिं सुंदराहृतिम् ॥ परम मंगल
मुक्त संकुलं ॥ भज मनःसदा स्वामिनं मुदा ॥ ३ ॥
अर्थ-पापने नाश करनारा ने शोभतुं छे मुख जेनुं एवा
ने प्रगट करि छे आकृति जेमणे एटले पोतानी मनुष्य
आकृतिने विषे पण दिव्याकृति दिव्यपणुं देखाडता
एवा ने सुंदर छे उपदेश जेमनो एवा ने परम मंगल
रूप एवा ने मुक्तनां मंडल जेनी सेवामां निरंतर रहेछे
एवा श्रीस्वामिनारायण देवनुं हे मन तुं निरंतर अतिशे
हर्षवते भजन कख्य ॥ ३ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ सकल
कारणं भक्त तारणं भय विदारणं मुक्ति धारणम् ॥
कुपथ वारणं कोप धारणं भज मनःसदा स्वामिनं मुदा
॥ ४ ॥ अर्थ-सकल ब्रह्मांडना कारण एवाने भक्त
जनने संसार समुद्रमांथी तारण करनारा ने भयनो
नाश करनारा ने मुक्तितुं धारण करनारा ने कुमार्ग
एटले पापंड मार्गनुं निवारण करनारा ने क्रोधनो
नाश करनारा एवा श्री स्वामिनारायण देवनुं हे मन
तुं निरंतर अतिशे हर्षवते भजन कख्य ॥ ४ ॥
॥ श्लोक ॥ ॥ भुवन मंडले कामनाकुले मरण भीषणे
पूर्ण दूषणे ॥ नाहि सुखं भवेद्यासि किं हठाद् भज
मनःसदा स्वामिनं मुदा ॥ ५ ॥ अर्थ-अनेक प्रकारनी
कामना एटले मनोरथ तेणे करिने आकुल व्याकुल
ने जेमां मरवानो महा मोटो भय छे ने जेने विषे

संपूर्ण दूषण रखां छे एवं आ सर्व जगत् छे तेने विषे कोइ
 प्रकारनुं सुख नथी तेमां तुं बलात्कारे सुख भोगवानी
 बुद्धिये पडे छे पण थुं तेमां तने सुख मलशे नहिज मले
 माटे हे मन जगत्तनां सर्व सुखनो त्याग करिने श्री
 स्वाभिनारायणनुं निरंतर अतिशे हर्षवते भजन करय
 ॥ ५ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ बहुल संशयं दुःख संश्रयं
 स्वजन वैभवं तेन तेऽ सुखम् ॥ हरण मापदां
 धाम संपदां भज मनःसदा स्वामिनं मुदा ॥ ६ ॥
 अर्थ-सगांसंबंधि तथा समस्त संसारिक वैभव
 ते सर्व दुःखदायि छे ने जेमां सुखनो आभास
 जणाय छे तेमां पण घणा संशय छे एटले व-
 स्तुताये स्त्री धनादिक पदार्थमां सुखज नथी
 तेणे करिने केवल तने दुःखज उत्पन्न थशे जे संपत्ति-
 योनो समूह छे ते केवल आपत्तियोने रहेवानुं धर छे
 एम जाणीं बेराग्य पामीने हे मन तुं निरंतर श्रीस्वामी-
 नारायण देवनुं अतिशे हर्षवते भजन करय ॥ ६ ॥
 ॥ श्लोक ॥ विषय सन्निधौ दुःखवारिधौ सुखधिया मुधा
 मंथिता मुधा ॥ नहि मृतिर्गता सा सुसेविता भजमनः
 सदा स्वामिनं मुदा ॥ ७ ॥ अर्थ-दुःखना समुद्र जेवुं
 विषयनुं समीप पणुं छे एटले जेम जेम पंच विषयनी
 प्राप्ति वधारे वधारे थती जाय छे तेम तेम दुःखना स-
 मुद्र वधारे वधारे उभराता जाय छे ते दुःखसमुद्रनु

मंथन करिने तेमांथी. मुखरूपि अमृत तेने क्यांथी
 मलशे केवल तारि मेहनत्य फोगट जशे. उलटुं तारु
 कांइक मुख हशे ते पण जशे केम जे प्राणि मात्रने
 अवश्य थनारु जे जन्ममरण तेनी ज्यांसुधी नि-
 वृत्ति नथी थई खां सुधी अमृत पान करयुं होय
 तो तेपण भिड्या छे तो केवल विषय रूपि विखनो
 समुद्र बलहोवीन तेमांथी मुखरूपी अमृत क्यांथी
 काढीश माटे जन्म मरणना दुखनी निवृत्ति
 करनार श्रीं स्वामिनारायण देवनुं हे मन तुं निरंतर
 अतिशे हर्षवते भजन कस्य ॥ ७ ॥ ॥ श्लोक
 ॥ ॥ हरिवचो मृतं सर्व संमतं पिव यतो हितं
 नाशिताहितम् ॥ इति सदैचितं दीनया चितं भज
 मनःसदा स्वामिनं मुदा ॥ ८ ॥ अर्थ-हे मन
 भगवानना वचनरूपी अमृत तेनुं पान कस्य ते
 अमृत सर्वने संमत छे एटले साचुं अमृत तो
 भगवानना वचनरूपि छे जेनुं पांन करिने जीव
 अजरामर पदवीने पामे छे माटे. जेथी अहित
 मात्रनो नाश थाय छे ने हित मात्रनी प्राप्ति था-
 य छे ए प्रकारे सत्पुरुषने मान्य करवा योग्यने
 दीनानाथ भट्टे स्तुति करेला एवा श्रीं स्वामिनारायण
 देवनुं निरंतर आतिशे हर्षवते भजन कस्य ॥ ८ ॥
 इति श्री लोत्रपुरावीश श्रीमदभयसिंह नृपाज्ञया

दीनानाथ भट्टात्मज रामचंद्र भट्ट विरचितो मनोरंजना
ष्टक भाषार्थःसंपूर्णः ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ॥



